अंगसुत्ताणि

१

आयारो · सूयगडो · ठाणं · समवाओ

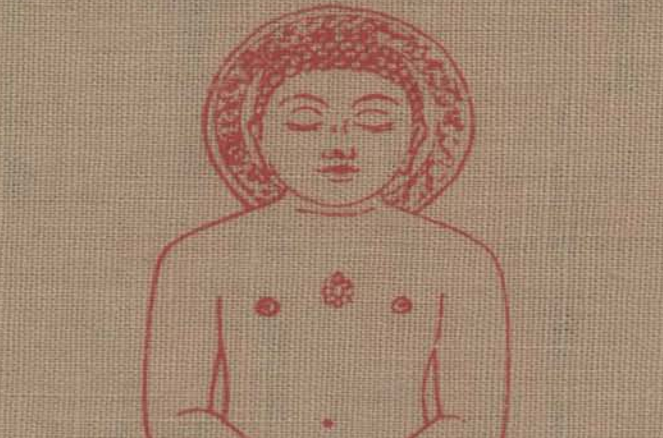

वाचना प्रमुख
आचार्य तुलसी

संपादक
मुनि नथमल

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवान् महावीर की पचीसवीं निर्वाण शताब्दी के उपलक्ष में

निग्गंथं पावयणं

अंगसुत्ताणि

१

आयारो • सूयगडो • ठाणं • समवाओ

वाचना प्रमुख
आचार्य तुलसी

संपादक
मुनि नथमल

प्रकाशक
जैन विश्व भारती
लाडनूं (राजस्थान)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रबंध सम्पादक :
श्रीचन्द रामपुरिया,
निदेशक
आगम और साहित्य प्रकाशन
(जैन विश्व भारती)

आर्थिक सहायक
श्री रामलाल हंसराज गोलछा
विराटनगर (नेपाल)

प्रकाशन तिथि :
विक्रम संवत् २०३१
कार्तिक कृष्णा १३
(२५०० वां निर्वाण दिवस)

पृष्ठांक । ११००

मूल्य : ८५/

मुद्रक :—
एस. नारायण एण्ड संस (प्रिंटिंग प्रेस)
७११७/१८, पहाड़ी धीरज, दिल्ली-६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ANGA SUTTĀNI

I

ĀYĀRO • SŪYAGADO • THANAM • SAMAWĀO •

(Original text Critically edited)

Vāćanā PRAMUKHA
ĀCĀRYA TULASI

EDITOR
MUNI NATHAMAL

Publisher
JAIN VISWA BHĀRATI
LADNUN (Rajasthan)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Managing Editor
Shreechand Rampuria.
Director :
Āgama and Sahitya Publication Dept.
JAIN VISHWA BHARATI, LADNUN

Financial Assistance
Sri Ramlal Hansraj Golchha
Biratnagar (Nepal)

V.S. 2031
Kārtic Kṛishnā 13
2500th Nirvaṇa Day

Pages 1100

Rs. 85/-

Printers :
S. Narayan & Sons (Printing Press)
7117/18, Pahari Dhiraj,
Delhi-6

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समर्पण

पुट्ठो वि पण्णा-पुरिसो सुदक्खो,
आणा-पहाणो जणि जस्स निच्चं।
सच्चप्पओगे पवरासयस्स,
भिक्खुस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं॥

जिसका प्रज्ञा-पुरुष पुष्ट पटु,
होकर भी आगम-प्रधान था।
सत्य-योग में प्रवर चित्त था,
उसी भिक्षु को विमल भाव से।

विलोडियं आगमदुद्धमेव,
लद्धं सुलद्धं णवणीयमच्छं।
सज्झाय - सज्झाण - रयस्स निच्चं,
जयस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं॥

जिसने आगम-दोहन कर कर,
पाया प्रवर प्रचुर नवनीत।
श्रुत-सद्ध्यान लीन चिर चिन्तन,
जयाचार्य को विमल भाव से।

पवाहिया जेण सुयस्स धारा,
गणे समत्थे मम माणसे वि।
जो हेउभूओ स्स पवायणस्स,
कालुस्स तस्स प्पणिहाणपुव्वं॥

जिसने श्रुत की धार बहाई,
सकल संघ में मेरे मन में।
हेतुभूत श्रुत - सम्पादन में,
कालुगणी को विमल भाव से।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अन्तस्तोष

अन्तस्तोष अनिर्वचनीय होता है उस माली का जो अपने हाथों से उप्त और सिंचित द्रुम-निकुंज को पल्लवित, पुष्पित और फलित हुआ देखता है, उस कलाकार का जो अपनी तूलिका से निराकार को साकार हुआ देखता है और उस कल्पनाकार का जो अपनी कल्पना को अपने प्रयत्नों से प्राणवान् बना देखता है। चिरकाल से मेरा मन इस कल्पना से भरा था कि जैन आगमों का शोध-पूर्ण सम्पादन हो और मेरे जीवन के बहुश्रमी क्षण उसमें लगे। संकल्प फलवान् बना और वैसा ही हुआ। मुझे केन्द्र मान मेरा धर्म-परिवार उस कार्य में संलग्न हो गया। अतः मेरे इस अन्तस्तोष में मैं उन सबको समभागी बनाना चाहता हूं, जो इस प्रवृत्ति में संविभागी रहे हैं। संक्षेप में वह संविभाग इस प्रकार है—

संपादक :		**मुनि नथमल**
	सहयोगी :	मुनि दुलहराज
पाठ-संशोधन :	,,	मुनि सुदर्शन
	,,	मुनि मधुकर
	,,	मुनि हीरालाल

संविभाग हमारा धर्म है। जिन-जिनने इस गुरुतर प्रवृत्ति में उन्मुक्त भाव से अपना संविभाग समर्पित किया है, उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूं और कामना करता हूँ कि उनका भविष्य इस महान् कार्य का भविष्य बने।

आचार्य तुलसी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशकीय

सन् १९६७ की बात है। आचार्यश्री बम्बई में विराज रहे थे। मैंने कलकत्ता से पहुँचकर उनके दर्शन किए। उस समय श्री ऋषभदासजी रांका, श्रीमती इन्दु जैन, मोहनलालजी कठौतिया आदि आचार्यश्री की सेवा में उपस्थित थे और 'जैन विश्व भारती' को बम्बई के आस-पास किसी स्थान पर स्थापित करने पर चिन्तन चल रहा था। मैंने सुझाव रखा कि सरदारशहर में 'गांधी विद्या-मन्दिर' जैसा विशाल और उत्तम संस्थान है। 'जैन विश्व भारती' उसी के समीप सरदारशहर में ही क्यों न स्थापित की जाये? दोनों संस्थान एक दूसरे के पूरक होंगे। सुझाव पर विचार हुआ। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ (सरदारशहर) को बम्बई बुलाया गया। सारी बातें उनके सामने रखी गई और निर्णय हुआ कि उनके साथ जाकर एक बार इसी दृष्टि से 'गांधी विद्या-मन्दिर' संस्थान को देखा जाए। निश्चित तिथि पर पहुंचने के लिए कलकत्ता से श्री गोपीचन्दजी चोपड़ा और मैं तथा दिल्ली से श्रीमती इन्दु जैन, लादूलालजी आच्छा सरदारशहर के लिए रवाना हुए। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ दिल्ली से हम लोगों के साथ हुए। श्री रांकाजी बम्बई से पहुंचे। सरदारशहर में भावभीना स्वागत हुआ। श्री दूगड़जी ने 'गांधी विद्या-मन्दिर' की प्रबन्ध समिति के सदस्यों को भी आमन्त्रित किया। 'जैन विश्व भारती' सरदारशहर में स्थापित करने के विचार का उनकी ओर से भी हार्दिक स्वागत किया गया। सरदारशहर 'जैन विश्व-भारती' के लिए उपयुक्त स्थान लगा। आगे के कदम इसी ओर बढ़े।

आचार्यश्री संतगण व साध्वियों के वृन्द सहित कर्नाटक में नंदी पहाड़ी पर आरोहण कर रहे थे। आचार्यश्री ने बीच में पैर थामे और मुझ से बोले "जैन विश्वभारती के लिए प्रकृति की ऐसी सुन्दर गोद उपयुक्त स्थान है। देखो, कैसा सुन्दर शान्त वातावरण है।"

'जैन विश्व भारती' की योजना को कार्य-रूप में आगे बढ़ाने की दृष्टि से समाज के कुछ और विचारशील व्यक्ति भी नंदी पहाड़ी पर आए थे। श्री कन्हैयालालजी दूगड़ भी थे। प्रतिक्रमण के बाद का समय था। पहाड़ी की तलहटी में दीपक और आकाश में तारे जगमगा रहे थे। आचार्यश्री गिरि-शिखर पर कांच महल में पूर्वाभिमुख होकर विराजित थे। मैं उनके सामने बैठा था। वचनबद्ध हुआ कि यदि 'जैन विश्व भारती' सरदारशहर में स्थापित होती है, तो उसके लिए मैं अपना जीवन लगाऊंगा। उस समय 'जैन विश्व भारती' की जैन श्वेताम्बर तेरापंथी महासभा के एक विभाग के रूप में परिकल्पना की गई थी। महासभा ने स्वीकार किया और

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मैं उसका संयोजक चुना गया। सरदारशहर में स्थान के लिए श्री कन्हैयालालजी दूगड़ और मैं प्रयत्नशील हुए। आचार्यश्री ऊटी (उटकमण्ड) पधारे। वहां महासभा के सभापति श्री हनुमानमलजी बैंगाणी तथा अन्य पदाधिकारी भी उपस्थित थे। जैन विश्व भारती की स्थापना प्राकृतिक दृष्टि से साधना के अनुकूल रम्य और शान्त स्थान में होने की बात ठहरी। इस तरह नंदी गिरि की मेरी प्रतिज्ञा से मैं मुक्त हुआ, पर मन ने मुझे कभी मुक्त नहीं किया। आखिर 'जैन विश्व भारती' की मातृ-भूमि बनने का सौभाग्य सरदारशहर से ६६ मील दूर लाडनूं (राजस्थान) को प्राप्त हुआ, जो संयोग से आचार्यश्री का जन्म-स्थान भी है।

आचार्यश्री ने आगम-संशोधन का कार्य सं० २०११ की चैत्र शुक्ला त्रयोदशी को हाथ में लिया। कुछ समय बाद उज्जैन में दर्शन किए। सं० २०१३ में लाडनूं में आचार्य श्री के दर्शन प्राप्त हुए। कुछ ही दिनों बाद सुजानगढ़ में दशवैकालिक सूत्र के अपने अनुवाद के दो फार्म अपने ढंग से मुद्रित कराकर सामने रखे। आचार्यश्री मुग्ध हुए। मुनिश्री नथमलजी ने फरमाया—"ऐसा ही प्रकाशन ईप्सित है।" आचार्यश्री की वाचना में प्रस्तुत आगम वैशाली से प्रकाशित हो, इस दिशा में कदम आगे बढ़े। पर अन्त में प्रकाशन कार्य महासभा से प्रारम्भ हुआ। आगम-सम्पादन की रूपरेखा इस प्रकार रही—

१. आगम-सुत्त ग्रन्थमाला : मूलपाठ, पाठान्तर, शब्दानुक्रम आदि सहित आगमों का प्रस्तुतीकरण।
२. आगम-अनुसन्धान ग्रन्थमाला : मूलपाठ, संस्कृत छाया, अनुवाद, पद्यानुक्रम, सूत्रानुक्रम तथा मौलिक टिप्पणियों सहित आगमों का प्रस्तुतीकरण।
३. आगम-अनुशीलन ग्रन्थमाला : आगमों के समीक्षात्मक अध्ययनों का प्रस्तुतीकरण।
४. आगम-कथा ग्रन्थमाला : आगमों से सम्बन्धित कथाओं का संकलन और अनुवाद।
५. वर्गीकृत-आगम ग्रन्थमाला : आगमों का संक्षिप्त वर्गीकृत रूप में प्रस्तुतीकरण।

महासभा की ओर से प्रथम ग्रंथमाला में—(१) दसवेआलियं तह उत्तरज्झयणाणि, (२) आयारो तह आयारचूला, (३) निसीहज्झयणं, (४) उववाइयं और (५) समवाओ प्रकाशित हुए। रायपसेणइयं एवं सूयगडो (प्रथम श्रुतस्कन्ध) का मुद्रण-कार्य तो प्रायः समाप्त हुआ पर वे प्रकाशित नहीं हो पाए।

दूसरी ग्रन्थमाला में—(१) दसवेआलियं एवं (२) उत्तरज्झयणाणि (भाग १ और भाग २) प्रकाशित हुए। समवायांग का मुद्रण-कार्य प्रायः समाप्त हुआ पर प्रकाशित नहीं हो पाया।

तीसरी ग्रंथमाला में दो ग्रंथ निकल चुके हैं : (१) दशवैकालिक : एक समीक्षात्मक अध्ययन और (२) उत्तराध्ययन : एक समीक्षात्मक अध्ययन।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चौथी ग्रंथमाला में कोई ग्रंथ प्रकाशित नहीं हुआ।

पाँचवीं ग्रंथमाला में दो ग्रंथ निकल चुके हैं: (१) दशवैकालिक वर्गीकृत (धर्म-प्रज्ञप्ति ख. १) और (२) उत्तराध्ययन वर्गीकृत (धर्म-प्रज्ञप्ति ख. २)।

उक्त प्रकाशन-कार्य में सरावगी चेरिटेबल फण्ड, कलकत्ता (ट्रस्टी रामकुमारजी सरावगी, गोविंदलालजी सरावगी एवं कमलनयनजी सरावगी) का बहुत बड़ा अनुदान महासभा को रहा। अनुदान स्वर्गीय महादेवलालजी सरावगी एवं उनके पुत्र पन्नालालजी सरावगी की स्मृति में प्राप्त हुआ था। भाई पन्नालालजी के प्रेरणात्मक शब्द तो आज भी कानों में ज्यों-के-त्यों गूंज रहे हैं—"धन देने वाले तो मिल सकते हैं, पर जो इस प्रकाशन-कार्य में जीवन लगाने का उत्तरदायित्व लेने को तैयार हैं, उनकी बराबरी कौन कर सकेगा ?" उन्हीं तथा समाज के अन्य उत्साहवर्धक सदस्यों के स्नेह-प्रदान से कार्य-दीपक जलता रहा।

कार्य के द्वितीय चरण में श्री रामलालजी हंसराजजी गोलछा (विराटनगर) ने अपना उदार हाथ प्रसारित किया।

आचार्यश्री की वाचना में सम्पादित आगमों के संग्रह और मुद्रण का कार्य अब 'जैन विश्व भारती' के अंचल से हो रहा है। प्रथम प्रकाशन के रूप में ११ अंगों को तीन खण्डों में 'अंगसुत्ताणि' के नाम से प्रकाशित किया जा रहा है:

प्रथम खण्ड में आचार, सूत्रकृत्, स्थान, समवाय—ये प्रथम चार अंग हैं।
दूसरे खण्ड में भगवती—पाँचवाँ अंग है।

तीसरे खण्ड में ज्ञाताधर्मकथा, उपासकदशा, अन्तकृतदशा, अनुत्तरोपपातिकदशा, प्रश्न-व्याकरण और विपाक—ये ६ अंग हैं।

इस तरह ग्यारह अंगों का तीन खण्डों में प्रकाशन 'आगम-सुत्त ग्रंथमाला' की योजना को बहुत आगे बढ़ा देता है।

ठाणांग सानुवाद संस्करण का मुद्रण-कार्य भी द्रुतगति से हो रहा है और वह आगम-अनुसन्धान ग्रंथमाला के तीसरे ग्रंथ के रूप में प्रस्तुत होगा।

केवल हिन्दी अनुवाद के संस्करण के रूप में 'दशवैकालिक और उत्तराध्ययन' का प्रकाशन हुआ है; जो एक नई योजना के रूप में है। इसमें सभी आगमों का केवल हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करने का निर्णय है।

दशवैकालिक एवं उत्तराध्ययन मूल पाठ मात्र को गुटकों के रूप में दिया जा रहा है।

'जैन विश्व भारती' की इस अंग एवं अन्य आगम प्रकाशन योजना को पूर्ण करने में जिन महानुभावों के उदार अनुदान का हाथ रहा है, उन्हें संस्थान की ओर से हार्दिक धन्यवाद है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुद्रण-कार्य में एस० नारायण एण्ड संस प्रिंटिंग प्रेस के मालिक श्री नारायणसिंह जी का विनय, श्रद्धा, प्रेम और सौजन्य से भरा जो योग रहा उसके लिए हम कृतज्ञता प्रगट किए बिना नहीं रह सकते। मुद्रण-कार्य को द्रुतगति देने में श्री देवीप्रसाद जायसवाल (कलकत्ता) ने रात-दिन सेवा देकर जो सहयोग दिया, उसके लिए वे धन्यवाद के पात्र हैं। इस सम्बन्ध में श्री मन्नालाल जी जैन (भूतपूर्व मुनि) की समर्पित सेवा भी स्मरणीय है।

इस अवसर पर मैं आदर्श साहित्य संघ के संचालकों तथा कार्यकर्त्ताओं को भी नहीं भूल सकता। उन्होंने प्रारम्भ से ही इस कार्य के लिए सामग्री जुटाने, धारने तथा अन्यान्य व्यवस्थाओं को क्रियान्वित करने में सहयोग दिया है। आदर्श साहित्य संघ के प्रबन्धक श्री कमलेश जी चतुर्वेदी सहयोग में सदा तत्पर रहे हैं, तदर्थ उन्हें धन्यवाद है।

'जैन विश्व भारती' के अध्यक्ष श्री खेमचन्दजी सेठिया, मंत्री श्री सम्पत्तरायजी भूतोड़िया तथा कार्य समिति के अन्यान्य समस्त बन्धुओं को भी इस अवसर पर धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकता, जिनका सतत सहयोग और प्रेम हर कदम पर मुझे बल देता रहा।

इस खण्ड के प्रकाशन के लिए विराटनगर (नेपाल) निवासी श्री रामलालजी हंसराजजी गोलछा से उदार आर्थिक अनुदान प्राप्त हुआ है, इसके लिए संस्थान उनके प्रति कृतज्ञ है।

सन् १९७३ में मैं जैन विश्व-भारती के आगम और साहित्य प्रकाशन विभाग का निदेशक चुना गया। तभी से मैं इस कार्य की व्यवस्था में लगा। आचार्यश्री यात्रा में थे। दिल्ली में मुद्रण की व्यवस्था बैठाई गई। कार्यारंभ हुआ, पर टाइप आदि की व्यवस्था में विलंब होने से कार्य में द्रुतगति नहीं आई। आचार्यश्री का दिल्ली पधारना हुआ तभी यह कार्य द्रुतगति से आगे बढ़ा। स्वल्प समय में इतना आगमिक साहित्य सामने आ सका उसका सारा श्रेय आगम संपादन के वाचनाप्रमुख आचार्यश्री तुलसी तथा संपादक-विवेचक मुनि श्री नथमलजी को है। उनके सहकर्मी मुनि श्री सुदर्शनजी, मधुकरजी, हीरालालजी तथा दुलहराजजी भी उस कार्य के श्रेयोभागी हैं।

ब्रह्मचर्य आश्रम में ब्रह्मचारी का एक कर्त्तव्य समिधा एकत्रित करना होता है। मैंने इससे अधिक कुछ और नहीं किया। मेरी आत्मा हर्षित है कि आगम के ऐसे सुन्दर संस्करण 'जैन विश्व भारती' के प्रारंभिक उपहार के रूप में उस समय जनता के कर-कमलों में आ रहे हैं, जबकि जगत्वंद्य श्रमण भगवान् महावीर की २५००वीं निर्वाण तिथि मनाने के लिए सारा विश्व पुलकित है।

४६८४, अंसारी रोड़
२१, दरियागंज
दिल्ली-६

श्रीचन्द रामपुरिया
निदेशक
आगम और साहित्य प्रकाशन
जैन विश्व-भारती

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सम्पादकीय

आयारो—

आचारांग का जो पाठ हमने स्वीकार किया है, उसका आधार कोई एक आदर्श नहीं है। हमने पाठ का स्वीकार प्रयुक्त आदर्शों, चूर्णि और वृत्ति के संदर्भ में समीक्षापूर्वक किया है। 'आयारो' के प्रथम अध्ययन के दूसरे उद्देशक के तीन सूत्र (२७–२९) शेष पांच उद्देशकों में भी प्राप्त होते हैं। पाठ-संशोधन में प्रयुक्त आदर्शों तथा आचारांग वृत्ति में यह प्राप्त नहीं है। आचारांग चूर्णि में 'लज्जमाणा पुढो पास' (आयारो, १।४०) सूत्र से लेकर 'अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्दवए' (आयारो, १।५३) तक ध्रुवकण्डिका (एक समान पाठ) मानी गई है[1]।

चूर्णि में प्राप्त संकेत के आधार पर हमने द्वितीय उद्देशक में प्राप्त तीन सूत्र (२७–२९) शेष पांचों उद्देशकों में स्वीकृत किए हैं।

आठवें अध्ययन के दूसरे उद्देशक (सू० २१) की चूर्णि[2] में 'कुंभारायतणंसि वा' के स्थान पर अनेक शब्द उपलब्ध होते हैं, जैसे—'उवट्टणगिहे वा, गामदेउलिए वा, कम्मगारसालाए वा, तंतु-वायगसालाए वा, लोहगारसालाए वा।' चूर्णिकार ने आगे लिखा है—'जचियाओ साला सव्वाओ भाणियव्वाओ[3]।'

यहां प्रतीत होता है कि 'कुंभारायतणंसि वा' शब्द अन्य अनेक शाला या गृहवाची शब्दों से युक्त था, किन्तु लिपि-दोष के कारण कालक्रम से शेष शब्द छूट गए। चूर्णि के आधार पर पाठ-पद्धति का निश्चय करना संभव नहीं था इसलिए उसे मूलपाठ में स्वीकृत नहीं किया गया।

हमने संक्षिप्त पाठ की पूर्ति भी की है। पाठ-संक्षेप की परम्परा श्रुत को कंठाग्र करने की पद्धति और लिपि की सुविधा के कारण प्रचलित हुई। पं० बेचरदास दोशी ने ८–१२–६६ को आचार्यश्री तुलसी के पास एक लेख भेजा था। उसमें इस विषय पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने

---

१. देखें—आयारो, पृ० ७ पादटिप्पण ७; पृ० ९ पादटिप्पण ३०;
पृ० १० पादटिप्पण १; पृ० ११ पादटिप्पण ६;
पृ० १२ पादटिप्पण १; पृ० १३ पादटिप्पण ५;
पृ० १४ पादटिप्पण ८; पृ० १५ पादटिप्पण १;

२. आचारांग चूर्णि, पृ० २६०-२६१।

३. वही, पृ० २६१।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लिखा है—'प्राचीन जैन-श्रमण लिखने-लिखाने की प्रवृत्ति को आरंभ-रूप समझते थे, फिर भी शास्त्रों की रक्षा के लिए उन्होंने लिखने-लिखाने के आरंभ-रूप मार्ग को भी अपवाद समझकर स्वीकार किया। पर जितना कम लिखना पड़े, उतना अच्छा, ऐसा समझकर उन्होंने शास्त्र की रक्षा के लिए ही, हो सके वहां तक कम आरंभ करना पड़े, ऐसा रास्ता शोधने का जरूर प्रयास किया। इस रास्ते की शोध से 'वण्णओ' और 'जाव' दो नए शब्द उनको मिले। इन दो शब्दों की सहायता से हजारों श्लोक व सैकड़ों वाक्य कम लिखने से उनका आरंभ कम हो गया और शास्त्र के आशय में भी किसी प्रकार की न्यूनता नहीं हुई।'

श्रुत को कंठस्थ करने की पद्धति, लिपि की सुविधा और कम लिखने की मनोवृत्ति—पाठ-सक्षेप के ये तीनों कारण संभाव्य हैं। इनसे भले ही आशय की न्यूनता न हुई हो, किन्तु ग्रंथ-सौन्दर्य अवश्य न्यून हुआ है। पाठक की कठिनाइयां भी बढ़ी हैं। जिन मुनियों के समग्र आगम-साहित्य कण्ठस्थ था, वे 'जाव' या 'वण्णग' द्वारा संकेतित पाठ का अनुसंधान कर पूर्वापर की सम्बन्ध-योजना कर सकते हैं। किन्तु प्रतिलिपियों के आधार पर पढ़ने वाला मुनि-वर्ग ऐसा नहीं कर सकता। उसके लिए 'जाव' या 'वण्णग' द्वारा संकेतित पाठ बहुत लाभदायी सिद्ध नहीं हुआ है। इसका हम प्रत्यक्ष अनुभव कर रहे हैं। इसी कठिनाई तथा ग्रन्थ-सौंदर्य की दृष्टि से हमारे वाचना-प्रमुख आचार्यश्री तुलसी ने चाहा कि संक्षेपीकृत पाठ की पुनः पूर्ति की जाए। हमने अधिकांश स्थलों में संक्षिप्त पाठ की पूर्ति की है। उसकी सूचना के लिए बिन्दु-संकेत दिया गया है। आयारो तथा आयार-चूला के पूर्ति-स्थलों के निर्देश की सूचना प्रथम परिशिष्ट में दी गई है।

पं० बेचरदास दोशी के अनुसार पाठ संक्षेपीकरण देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण ने किया था। उन्होंने लिखा है—'देवर्द्धिगणि क्षमाश्रमण ने आगमों को ग्रंथ-बद्ध करते समय कुछ महत्वपूर्ण बातें ध्यान में रखीं। जहां-जहां शास्त्रों में समान पाठ आए वहां-वहां उनकी पुनरावृत्ति न करते हुए उनके लिए एक विशेष ग्रन्थ अथवा स्थान का निर्देश कर दिया। जैसे—'जहा उववाइए' 'जहा पण्णवणाए' इत्यादि। एक ही ग्रन्थ में वही बात बार-बार आने पर उसे पुनः पुनः न लिखते हुए 'जाव' शब्द का प्रयोग करते हुए उसका अन्तिम शब्द लिख दिया। जैसे—'णागकुमारा जाव विहरन्ति', 'तेण कालेणं जाव परिसा णिग्गया' इत्यादि'[1]।

इस परम्परा का प्रारंभ भले ही देवर्द्धिगणि ने किया हो, किन्तु इसका विकास उनके उत्तर-वर्ती काल में भी होता रहा है। वर्तमान में उपलब्ध आदर्शों में संक्षेपीकृत पाठ की एकरूपता नहीं है। एक आदर्श में कोई सूत्र संक्षिप्त है तो दूसरे में वह समग्र रूप से लिखित है। टीकाकारों ने स्थान-स्थान पर इसका उल्लेख भी किया है। उदाहरण के लिए औपपातिक सूत्र में "अयपायाणि वा जाव अण्णयराइं वा" तथा 'अयबंधणाणि वा जाव अण्णयराइं वा'—ये दो पाठांश मिलते हैं। वृत्तिकार के सामने जो मुख्य आदर्श थे, उनमें ये दोनों संक्षिप्त रूप में थे, किन्तु दूसरे आदर्शों में ये

१. जैन साहित्य का बृहद् इतिहास, पृ० ८१।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समग्र रूप में भी प्राप्त थे। वृत्तिकार ने इसका उल्लेख किया है[1]। लिपिकर्त्ता अनेक स्थलों में अपनी सुविधानुसार पूर्वगत पाठ को दूसरी बार नहीं लिखते और उत्तरवर्ती आदर्शों में उनका अनुसरण होता चला जाता। उदाहरण स्वरूप—रायपसेणइय सूत्र में 'सव्विड्ढीय अकालपरिहीणा' (स्वीकृत पाठ—हीणं) ऐसा पाठ मिलता है[2]। इस पाठ में अपूर्णता-सूचक संकेत भी नहीं है। 'सव्विड्ढीए' और 'अकालपरिहीणं' के मध्यवर्ती पाठ की पूर्ति करने पर समग्र पाठ इस प्रकार बनता है— 'सव्विड्ढीए सव्वजुत्तीए सव्वबलेणं सव्वसमुदएणं सव्वादरेणं सव्वविभूसाए सव्वविभूइए सव्वसंभमेणं सव्वपुप्फ-वत्थ-गंध-मल्लालंकरेणं सव्वदिव्वतुडियसद्दसन्निवाएणं महया इड्ढीए महया जुइए महया बलेणं महया समुदएणं महया वरतुडियजमगसमयपडुप्पवाइयरवेणं संख-पणव-पडह-भेरि-झल्लरि-खरमुहि-हुडुक्क-मुरय-मुइंग-दुंदुभि-निग्घोस-नाइयरवेणं णियग परिवाल सद्धिं संपरिवुडा साइं-साइं जाणविमाणाइं दुरूढा समाणा अकालपरिहीणं।'

आयार-चूला ५।१४ में 'महद्धणमोल्लाइं' तथा १५।१६ में 'महव्वए' के आगे भी अपूर्णता सूचक संकेत नहीं हैं।

प्रमादवश कहीं-कहीं अपूर्णता सूचक 'जाव' का विपर्यय भी हुआ है, यथा—
फासुयं.................लाभे संते जाव पडिगाहेज्जा। (आयारचूला १।१०१)
बहुकंटगं...............लाभे संते जाव णो............। (आयारचूला १।१३४)

समर्पण-सूत्र—

संक्षिप्त पद्धति के अनुसार आयारचूला में समर्पण के अनेक रूप मिलते हैं—

जाव—अकिरियं जाव अभूतोवघाइयं (४।११)

तहेव—अक्कोसंति वा तहेव तेल्लादि सिणाणादि सीओदगवियडादि णिगिणाइ य (७।१६-२०)

अतिरिच्छच्छिन्नं तहेव तिरिच्छच्छिन्नं तहेव (७।३४,३५)

एवं—एवं णायव्वं जहा सद्दपडियाए सव्वा वाइत्तवज्जा रूवपडियाए वि (१२।२-१७)

जहा—पाणाइं जहा पिंडेसणाए (५।५)

संख्या—थूणंसि वा (४) (७।११)
असणं वा (४) (१।१२)
से भिक्खू वा २।

---

१. औपपातिक वृत्ति, पत्र १७७ :
पुस्तकान्तरे समग्रमिदं सूत्रद्वयमस्त्येवेति।

२. देखें—पं० बेचरदास दोशी द्वारा संपादित 'रायपसेणइयं,' पृष्ठ ७३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं चेव—तं चेव भाणियव्वं णवरं चउत्थाए णाणत्तं (१।१४९–१५४)
सेसं तं चेव एवं ससरक्खे (१।६५)

हेट्ठिमो—एवं हेट्ठिमो गमो पायादि भाणियव्वो (१३।४०–७५)

आचारांग का वाचना-भेद—

समवायांग में आचारांग की अनेक वाचनाओं का उल्लेख मिलता है[1]। वाचना का अर्थ है—अध्यापन या सूत्र और अर्थ का प्रदान। संक्षिप्त वाचना-भेद अनेक मिलते हैं, किन्तु वर्तमान में मुख्य दो वाचनाएं प्राप्त हैं—एक प्रस्तुत-वाचना और दूसरी नागार्जुनीय-वाचना। चूर्णि और टीका में नागार्जुनीय वाचना-सम्मत्त पाठों का उल्लेख किया गया है। देखें—'आयारो' पृष्ठ २० पादटिप्पण संख्यांक १०, पृष्ठ २१ पादटिप्पण संख्यांक २, पृष्ठ ३० पादटिप्पण संख्यांक २, पृष्ठ ३१ पादटिप्पण संख्यांक ७, पृष्ठ ३५ पादटिप्पण संख्यांक ५, पृष्ठ ५४ पादटिप्पण संख्यांक १, पृष्ठ ४० पादटिप्पण संख्यांक १, पृष्ठ ५० पादटिप्पण संख्यांक १, पृष्ठ ५२ पादटिप्पण संख्यांक ६ और ८, पृष्ठ ५४ पादटिप्पण संख्यांक ९, पृष्ठ ५५ पादटिप्पण संख्यांक ८, पृष्ठ ६९ पादटिप्पण संख्यांक २, पृष्ठ ७३ पादटिप्पण संख्यांक १, पृष्ठ ७५ पादटिप्पण संख्यांक ४।

आचारांग के उद्धृत पाठ—

उत्तरवर्ती अनेक ग्रंथों में आचारांग के पाठ उद्धृत किए गए हैं। अपराजितसूरि ने मूलाराधना की टीका में आचारांग के कुछ पाठ उद्धृत किए हैं[2]।

शोध करने पर ऐसा ज्ञात हुआ है कि कई पाठ आचारांग में नहीं हैं, कई पाठ शब्द-भेद से और कई पाठ आंशिक रूप में मिलते हैं। तुलनात्मक अध्ययन की दृष्टि से दोनों के पाठ नीचे दिए जा रहे हैं—

मूलाराधना		आचारांग
तथा चोक्तमाचाराङ्गे:—		
सुदं मे आउस्सन्तो भगवदा एव मक्खादं। इह खलु संयमाभिमुखा दुविहा इत्थी पुरिसा जादा भवंति। तं जहा—सव्व समण्णा गदे णो सव्व समागदे चेव। तत्थ जे सव्व समण्णागदे थिरागं हत्थ पाणि पादे सव्विंदिय समण्णागदे तस्स णं णो कप्पदि एगमवि वत्थं धारिउं	×	×

1. समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सू० १३६।
2. मूलाराधना ४।४२१, टीका पत्र ६१२।

एवं परिहिउं एवं अण्णत्थ एगेण पडि-
लेहगेण।

अह पुण एवं जाणिज्जा—उपातिकते हेमंते गिम्हे सुपडिवण्णे से अथ पडिजुण्ण-मुवधिं पदिट्ठावेज्ज।

—४।४२१ टीका, पत्र ६११

अह पुण एवं जाणेज्जा—उवाइक्कंते खलु हेमंते, गिम्हे पडिवण्णे अहापरि-जुन्नाइं वत्थाइं परिट्ठवेज्जा।

आयारो ८।५०, ६६, ७२।

पडिलेहणं, पादपुंछणं, उग्गहं कडासणं अण्णदरं उवधिं पावेज्ज।

—४।४२१ टीका, पत्र ६११

वत्थं पडिग्गहं कंबलं, पायपुंछणं उग्गहं च कडासणं एतेसु चेव जाणेज्जा।

आयारो २।११२।

तथावत्थेसणाए—वुत्तं तत्थ एसे हिरिमणे सेगं वत्थं वा धारेज्ज पडिलेहणगं विदियं, तत्थ एसे जुग्गिदे देसे दुवे वत्थाणि धारिज्ज पडिलेहणगं तदियं तत्थ एसे परिसाइं अणधिहासस्स तओ वत्थाणि धारेज्ज पडिलेहणं चउत्थं।

—४।४२१ टीका, पत्र ६११

जे णिग्गंथे तरुणे जुगवं बलवं अप्पायंके थिरसंघयणे से एगं वत्थं धारेज्जा णो बितियं।

आयारचूला ५।२।

तथा पाएसणाए कथितं —
हिरिमणे वा जुग्गिदे चाविअण्णगे वा तस्स ण कप्पदि वत्थादिकं पुनश्चोक्तं तत्रैव—पादचरित्तए।

से भिक्खु वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा पायं एसित्तए।

आलावु पत्तं वा दारुग पत्तं वा मट्टिग-पत्तं वा, अप्पाणं अप्पबीजं अप्पसरिदं तथा अप्पकारं पत्तलाभे सति पडिग्गहिस्सामि।

४।४२१ टीका, पत्र ६११

तं जहा—अलाउपायं वा दारुपायं वा, मट्टिया पायं वा तहप्पगारं पायं।—(आयारचूला ६।१) फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा।

आयारचूला ६·२२

भावनायां चोक्तं—
चरिमं चीवरधारी तेण परम चेलके तु जिणे।

४।४२१ टीका, पत्र ६११

× ×

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रति परिचय

(अ.) आचारांग (दोनों श्रुतस्कंध)

यह प्रति जैन-भवन, कलाकार स्ट्रीट, कलकत्ता-७ की श्री श्रीचन्द जी रामपुरिया द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र १८५ हैं। प्रत्येक पत्र १०$\frac{3}{4}$ इंच लम्बा तथा ४$\frac{1}{4}$ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पत्र में १-२७ तक पंक्तियां हैं। प्रत्येक पंक्ति में ४०-४५ तक अक्षर हैं। पत्र के चारों ओर वृत्ति लिखी हुई है। प्रति सुन्दर व कलात्मक है। संवत् आदि नहीं है।

(क.) आचारांग मूलपाठ दोनों श्रुतस्कन्ध

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से श्री मदनचन्द जी गोठी द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र ६७ हैं। प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा तथा ४ इंच चौड़ा है। पंक्तियां १३ हैं। प्रत्येक पंक्ति में ५०-५२ तक अक्षर हैं। प्रति के अंत में लिखा है---

संवत् १६७६ वर्षे आषाढ सुदि द्वितीय ४ भौम। श्री मालान्वये राक्याणगोत्रे सं० जटमल पुत्र सं० वेणीदास पुस्तक प्रदत्तं श्री मद्नागपुरीय तपागच्छ सं० श्रीमानकीर्तिसूरि शिष्य माधव ज्योतिविद्।

अंत के अक्षर किसी अन्य व्यक्ति के मालूम होते हैं। प्रति के बीच में बावड़ी तथा तीन बड़े-बड़े लाल टीके हैं।

(ख.) आचारांग टब्बा (प्रथम श्रुतस्कन्ध)

यह प्रति गधैया पुस्तकालय से गोठी जी द्वारा प्राप्त है। इसके ४६ पत्र हैं। पंक्तियां पाठ की ७ तथा टब्बे की १४ हैं। प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा तथा ४ इंच चौड़ा है। प्रत्येक पंक्ति में ४२ से ४५ तक पाठ के अक्षर हैं। अन्तिम प्रशस्ति निम्नोक्त है---

संवत् १७३२ वर्षे श्रावणमासे कृष्णपक्षे पंचमी तिथौ गुरु वासरे।
लिखितं पूज्य ऋषिश्री ५ अमराजी तत्शिष्येण लिपिकृतं मुनिविकी
आत्मार्थो शुभं भवतु कल्याणमस्तु। सेहुरीया ग्रामे संपूर्णं मस्ति॥

(ग.) आचारांग (प्रथमश्रुतस्कन्ध) पंच पाठी (बालावबोध)

यह प्रति गधैया पुस्तकालय से श्री गोठी जी द्वारा प्राप्त है। इसके ९० पत्र हैं। प्रथम ३ तथा छठा पत्र नहीं है। प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा तथा ४। इंच चौड़ा है। मूलपाठ की पंक्तियां ५ से १० तक हैं। अक्षर ३० से ३३ तक हैं। अन्तिम प्रशस्ति नहीं है।

(घ.) आचारांग दोनों श्रुतस्कन्ध (जीर्ण)

यह प्रति भारतीय संस्कृति विद्या-मन्दिर, अहमदाबाद से श्री गोठी जी द्वारा प्राप्त है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इसके ३७ पत्र हैं। प्रत्येक पत्र १३।। इंच लम्बा, ५ इंच चौड़ा है। पंक्तियां १७ तथा प्रत्येक पंक्ति में ६० से ६५ तक अक्षर हैं। अन्तिम प्रशस्ति निम्नोक्त है---

शुभं भवतु। कल्याणमस्तु ।।छ।। संवत् १५७३ वर्षे १० मंगलवार समस्तं ।।छ।। ।।छ।। श्री ।।छ।।

प्रति के दीमक लगने से अनेक स्थानों पर छिद्र होगए हैं।

(च.) आचारांग मूलपाठ दोनों श्रुतस्कन्ध,

यह प्रति भारतीय संस्कृति विद्या-मन्दिर, अहमदाबाद के लालभाई दलपतभाई ज्ञान भंडार से मदनचन्दजी गोठी द्वारा प्राप्त हुई है। इसके ७८ पत्र हैं। प्रत्येक पत्र में १३ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ४० से ४७ तक अक्षर हैं। प्रत्येक पत्र १० इंच लम्बा तथा ४।। इंच चौड़ा है। बीच में बावड़ी है।

(छ.) आचारांग दोनों श्रुतस्कन्ध, वृत्ति सहित (त्रिपाठी)

यह प्रति गधैया पुस्तकालय सरदारशहर से गोठीजी द्वारा प्राप्त है। इसके २९० पत्र हैं। प्रत्येक पत्र ११ इंच लम्बा तथा ४।। इंच चौड़ा है मूलपाठ की पंक्तियां १ से १७ तथा ४५ से ४७ तक अक्षर हैं। अन्तिम प्रशस्ति निम्नोक्त हैं—

संवत् १८९९ वर्षे श्रावणशुक्लपक्षे सप्तम्यां तिथौ श्रीविक्रमपुरमध्ये लिपिकृतं ।। श्रीरस्तु कल्याणमस्तु। शुभं भूयादिति ।।

(ब.) आचारांग द्वितीय श्रुतस्कन्ध टब्बा (पंचपाठी)

यह प्रति गधैया पुस्तकालय सरदारशहर से मदनचन्दजी गोठी द्वारा प्राप्त हुई है। इसके ८४ पत्र हैं। प्रत्येक पत्र १०$\frac{1}{4}$ इंच लम्बा तथा १०$\frac{1}{2}$ इंच चौड़ा है। मूलपाठ की पंक्तियां ४ से १३ हैं। प्रत्येक पंक्ति में २८ से ३३ तक अक्षर हैं। बीच-बीच में बावड़ियां हैं। अन्तिम प्रशस्ति निम्नोक्त है—

संवत् १७५२ वर्षे भादवदमासे पंचम्यां तिथौ ओरसगच्छे भट्टारक श्रीककचसूरि तत्पट्टे वर्तमानभट्टारकदेवगुप्तसूरिभिर्गृहीता नागोरी तपागच्छीय पं० श्री दयालदास पार्श्वात् पंचचत्वारिंशत् ४५ वर्षोत्तरात् महतोद्यमेन।

(वृ), (वृपा) मुद्रित, प्रकाशिका---श्रीसिद्धचक्र साहित्य प्रचारक समिति विक्रम संवत् १९९१।

(चू), (चूपा) मुद्रित—श्री ऋषभदेवजी केशरीमलजी, रतलाम, वि १९९८।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सूयगडो

हमने सूत्रकृत का पाठ किसी एक आदर्श को मान्य कर स्वीकार नहीं किया है। उसका स्वीकार पाठ-संशोधन में प्रयुक्त आदर्शों, चूर्णि तथा वृत्ति के पाठों के तुलनात्मक अध्ययन तथा समीक्षापूर्वक किया गया है।

प्राचीनकाल में लिखने की पद्धति बहुत कम थी। प्रायः सभी ग्रन्थ कंठस्थ परम्परा में सुरक्षित रहते थे। इसीलिए घोषशुद्धि (उच्चारणशुद्धि) को बहुत महत्त्व दिया जाता था। शिष्यों की घोषशुद्धि करना आचार्य का एक कर्त्तव्य था। दशाश्रुतस्कन्ध सूत्र में लिखा है[1]—'घोषशुद्धि कारक होना आचार्य की एक संपदा है।' पाठ और अर्थ के मौलिक रूप की सुरक्षा के लिए विशेष प्रकार की व्यवस्था थी। छेदसूत्रों से उसकी पूर्ण जानकारी मिलती है।

ज्ञानाचार के आठ प्रकार बतलाए गए हैं[2]। उनमें तीन आचारों का उक्त व्यवस्था से सम्बन्ध है। वे ये हैं[3]—

१. व्यंजन—सूत्रपाठ की भाषा, मात्रा, बिन्दु और शब्दों को यथावत् बनाए रखना।
२. अर्थ—सूत्र के आशय को यथावत् बनाए रखना।
३. व्यंजन-अर्थ—सूत्र और अर्थ—दोनों को मौलिक रूप में सुरक्षित रखना।

चूर्णिकार ने उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया है[4]—'धम्मो मंगलमुक्किट्ठं'—यह प्राकृत भाषा है। इसका 'धर्मो मंगलमुत्कृष्टम्' इस प्रकार संस्कृत में पाठ करना भाषागत व्यंजनातिचार है।

'सव्वं सावज्जं जोगं पच्चक्खामि'—इसकी मात्रा बदलकर जैसे—'सव्वे सावज्जे जोगे पच्चक्खामि', उच्चारण करना मात्रागत व्यंजनातिचार है। 'णमो अरहंताणं' का 'णमो अरहंताण' इस प्रकार प्राप्त बिन्दु को छोड़कर उच्चारण करना, 'णमो अरंहंताणं' इस प्रकार 'र' के साथ अप्राप्त बिन्दु का उच्चारण करना—यह बिन्दुगत व्यंजनातिचार है।

---

१. दशाश्रुतस्कन्ध, दशा ४।
२. निशीथभाष्य, गाथा ८, भाग–१, पृ० ६ :
काले विणये बहुमाने, उवधाने तहा अणिण्हवणे।
वंजणअत्थतदुभए, अट्ठविधो णाणमायारो॥
३. वही, गाथा १७, भाग १, पृ० १२।
सक्कयमत्ताबिंदू, अण्णाभिधाणेण वा वि तं अत्थं।
वंजेति जेण अत्थं, वंजणमिति भण्णते सुत्तं॥
४. निशीथभाष्य चूर्णि, भाग १, पृ० १२।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'धम्मो मंगल मुक्किट्ठं, अहिंसा संजमो तवो।' इनके मौलिक शब्दों को हटाकर वहां उनके पर्यायवाची शब्दों की योजना करना, जैसे—पुण्णं कल्लाणमुक्कोसं, दयासंवर-णिज्जरा। यह अन्याभिधान नामक व्यंजनातिचार है।

सूत्र के अक्षर-पदों का हीन या अतिरिक्त उच्चारण करना अथवा उनका अन्यथा उच्चारण करना भी व्यंजनातिचार है।

इस सारे विवरण का निष्कर्ष यह है कि सूत्रपाठ की भाषा, मात्रा, बिन्दु, शब्द, शब्द-संख्या और पाठ्य-क्रम मौलिकता सुरक्षित रहनी चाहिए। इस व्यवस्था के अतिक्रमण के लिए प्रायश्चित्त की व्यवस्था की गई। भाषा, मात्रा, बिन्दु आदि का परिवर्तन करने पर लघुमासिक प्रायश्चित प्राप्त होता है। सूत्रपाठ को अन्यथा करने पर लघु चातुर्मासिक प्रायश्चित्त प्राप्त होता है[1]।

चूर्णिकार ने विषय के उपसंहार में लिखा है[2]—सूत्रभेद से अर्थभेद, अर्थभेद से चरणभेद, चरणभेद से मोक्ष असंभव हो जाता है। वैसा होने पर दीक्षा आदि कर्म प्रयोजन-शून्य हो जाते है। इसलिए व्यंजन-भेद नहीं करना चाहिए।

इसी प्रकार अर्थभेद भी नहीं करना चाहिए। जो अर्थ अनुक्त और अघटित हो, वह नहीं करना चाहिए। अर्थ का परिवर्तन करने पर गुरु चातुर्मासिक प्रायश्चित प्राप्त होता है[3]।

सूत्र और अर्थ दोनों का एक साथ परिवर्तन करने पर पूर्वोक्त दोनों प्रायश्चित्त प्राप्त होते हैं।[4]

सूत्र और अर्थ के मौलिक स्वरूप के सुरक्षित रखने की दिशा में आगमों के रचना-काल में चिन्तन प्रारंभ हो गया था। प्रस्तुत सूत्र में इसका स्पष्ट निर्देश है। ग्रन्थाध्ययन में मुनि को सावधान किया गया है कि वह सूत्र और अर्थ की अन्यरूप में योजना न करे। अथवा

---

१. निशीथभाष्य, गाथा १८, चूर्णि भाग १, पृ० १२।

२. निशीथभाष्य, गाथा १८, चूर्णि भाग १, पृ० १२ :
सुत्तभेया अत्थभेओ। अत्थभेया चरणभेओ। चरणभेया अमोक्खो मोक्खाभावा दिक्खादयो किरियाभेदा अफला भवन्ति। तम्हा वंजणभेदो ण कायव्वो।

३. निशीथभाष्य चूर्णि, भाग १, पृ० १३।

४. वही;

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उसका अन्यथा प्रतिपादन न करे[१]। इसकी व्याख्या में चूर्णिकार ने लिखा है[२]—सूत्र को सर्वथा ही अन्यथा न करे। अर्थ वही करे जो स्वसिद्धान्त से अविरुद्ध है। वृत्तिकार ने लिखा है[३]—सूत्र में स्वमति से न जोड़े अथवा सूत्र और अर्थ को अन्यथा न करे।

उक्त विवरण से ज्ञात होता है कि सूत्र अर्थ के मौलिक स्वरूप की सुरक्षा का तीव्र प्रयत्न किया गया था। फलतः एक सीमा तक उसकी सुरक्षा भी हुई है। फिर भी हम यह नहीं कह सकते कि उसमें परिवर्तन नहीं हुआ है। वह उसके कारण भी प्राप्त हैं। जैसे—

१. विस्मृति, २. लिपिपरिवर्तन, ३. व्याख्या का मूल में प्रवेश, ४. देश-काल का व्यवधान।

शीलांकसूरि सूत्रकृतांग की वृत्ति लिख रहे थे तब उनके सामने उसके आदर्श और प्राचीन टीका—दोनों विद्यमान थे। दूसरे श्रुतस्कन्ध के दूसरे अध्ययन के एक स्थल में आदर्शों में एक जैसा पाठ नहीं था और टीका में जो पाठ व्याख्यात था उसका संवादी पाठ किसी भी आदर्श में नहीं था। इसलिए उन्होंने एक आदर्श को मान्य कर चर्चित अंश की व्याख्या की[४]।

कुछ स्थानों पर हमने चूर्णि के पाठ स्वीकृत किए हैं। आदर्शों और वृत्ति की अपेक्षा से वे अधिक संगत प्रतीत होते हैं।

२।६।४५ में 'णिहो णिसं' पाठ है। वह वृत्ति में 'णिवो णिसं' इस प्रकार व्याख्यात है। वहां हमने चूर्णि का पाठ स्वीकृत किया है।[५]

पादटिप्पणों में हमने पाठ-परिवर्तन व उनके कारणों की चर्चा की है। वैदिक परम्परा में भी वेदों के मौलिक पाठ की सुरक्षा के लिए तीव्र प्रयत्न किए थे। किन्तु उनके पाठों में भी कालजनित अतिक्रमण हुए हैं। डा० विश्वबन्धु ने लिखा है[६]—"यह सर्वमान्य तथ्य है

---

१. सूयगडो, १।१४।२६ :
णो सुत्तमत्थं च करेज्ज अण्णं।

२. सूत्रकृतांगचूर्णि, पृ० २६६ :
न सूत्रमन्यत् प्रद्वेषेण करोत्यन्यथा वा, जहा रण्णो भत्तंसिणो उज्ज्वलप्रश्नो नामार्थः तमपि नान्यथा कुर्यात्, जहा 'आवंती के आवंती—एके यावंती तं लोगो विप्परामसंति' सूत्रं सर्वथैवान्यथा न कर्त्तव्यं, अर्थविकल्पस्तु स्वसिद्धान्ताविरुद्धो अविरुद्धः स्यात्।

३. सूत्रकृतांगवृत्ति, पत्र २५८ :
न च सूत्रमन्यत् स्वमतिविकल्पनतः स्वपरत्रायी कुर्वीतान्यथा
वा सूत्रं तदर्थं वा संसारात्त्रायीत्राणशीलो जन्तूनां न विदधीत।

४. वही, पत्र ७६।
इह च प्रायः सूत्रादर्शे नानाभिधानि सूत्राणि दृश्यन्ते, न च टीकासंवाद्येकोप्यस्माभिरादर्शः समुपलब्धोऽत एकमादर्शमंगीकृत्यास्माभिर्विवरणं क्रियते।

५. देखें—२।६।४५ का पादटिप्पण।

६. अखिल भारतीय प्राच्य-विद्या-सम्मेलन, चौबीसवां अधिवेशन, वाराणसी १९६८, मुख्याध्यक्षीय भाषण, पृष्ठ ८, ९।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कि लगभग ५ हजार वर्षों से इस देश में वैदिक ग्रन्थों के प्राचीन पाठों को उनके मौलिक शुद्धरूप में सुरक्षित रखने के लिए उन्हें परम सावधानी और उत्कृष्ट श्रद्धा के साथ कण्ठस्थ करने का इतना घोर प्रयत्न होता रहा है कि जिसका किसी भी दूसरे देश के साहित्यिक इतिहास में उदाहरण नहीं है। किन्तु ऐसा होने पर भी, जैसा कि इस वैदिक अनुसन्धान के क्षेत्र में कार्य करने वाले हमारे पूर्ववर्ती विद्वानों को देखने में संयोगवश कुछ-कुछ और गत चालीस वर्षों के सतत शोध कार्य के मध्य में हमारे देखने में, विस्तृत रूप में आया है कि ये ग्रन्थ भी कालकृत विध्वंस और मानवकृत संक्रमण की अपूर्णता से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके। यदि ऐसा बहुधा होता तो सचमुच यह एक अविश्वसनीय चमत्कार ही होता।"

कण्ठस्थ-परंपरा से चलने वाले तथा प्रलंब अवधि में लिपि-परिवर्तन के युग में संक्रमण करने वाले प्रत्येक ग्रन्थ के कुछ स्थल मौलिकता से इतस्ततः हुए हैं।

प्रतिपरिचय

(क) सूत्रकृतांग मूलपाठ

यह प्रति 'धेवर पुस्तकालय' सुजानगढ़ की है। इसकी पत्र-संख्या ९४ व पृष्ठ संख्या १८८ है। प्रत्येक पत्र मे ११ पंक्तियां व प्रत्येक पंक्ति में ३२ से ३७ तक अक्षर है। प्रति की लम्बाई ११॥ इंच व चौड़ाई ४॥। इंच है। प्रति शुद्ध व बड़े अक्षरों में स्पष्ट लिखी हुई है। यह प्रति संवत् १५८१ में लिखी हुई है। इसके अन्त में निम्न प्रशस्ति है।——

संवत् १५८१ वर्षे पत्तन नगरे श्री खरतरगच्छे श्री जिनवर्द्धनसूरि श्री जिनचन्द्रसूरि। श्री जिनसागरसूरि। श्री जिनसुन्दरसूरि पट्ट पूर्वाचल सहस्रकरावतार श्री जिनहर्षसूरिपट्टे श्री जिनचन्द्रसूरीणामुपदेशेन ऊकेशवंशे साधुशाखायां। सो० जीवाभार्या श्रावारुपुत्ररत्न सो० महिपाल सो० गांगाख्यो सा० तंत्र सो गांगा भार्या श्रा० धीरुपुत्र सो० पदमसी सो० हरिचंदविद्यमानपुत्र सो० शिवचन्द सो० देवचंद्राभ्या श्री एकादशांगी सूत्राणि अलेखिषत तत्रेदं श्री सूत्रकृतांगसूत्रं। सम्पूर्णः ॥श्री रस्तु॥

(ख) सूत्रकृतांग बालावबोध प्रथमश्रुतस्कन्ध (त्रिपाठी)

यह प्रति 'गधैया पुस्तकालय' सरदारशहर की है। मध्य में पाठ व दोनों तरफ वार्तिका लिखी हुई है। इसके पत्र ४३ व पृष्ठ ८६ हैं। प्रत्येक पत्र में पाठ की पंक्तियां ५-६ करीब हैं व प्रत्येक पंक्ति में अक्षर ६०-६२ करीब हैं। प्रति की लम्बाई १०३/४ इंच व चौड़ाई ४१/२ इंच है। अनुमानतः यह प्रति १७वीं शताब्दि की लगती है। प्रति के अन्त में प्रशस्ति नहीं है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(ग) सूत्रकृतांग द्वितीय बालावबोध (त्रिपाठी)

यह प्रति 'चेवर पुस्तकालय' सुजानगढ़ की है। इसके पत्र ६५ व पृष्ठ १३० है। मध्य में पाठ व दोनों तरफ वार्तिका लिखी हुई है। प्रत्येक पत्र में पाठ की पंक्तियां ४ से १२ तक हैं व प्रत्येक में ४५ से ५० तक अक्षर हैं। प्रति की लम्बाई १० इंच व चौड़ाई ४½ इंच करीब है। प्रति के अन्त में निम्न प्रशस्ति है––

मूलपाठ प्रशस्ति––सूयगडस्स बीयं खंधो सम्मत्ते। श्री सूगडांग द्वितीय श्रुतस्कन्धः सूत्र संपूर्ण समाप्तः।। सुभं भवतु, कल्याणमस्तु। श्री रस्तुः।। ब।। ब।। पंड्या भवांन सूत मेघज्जी लक्षतं।। बालावबोध प्रशस्ति––सूत्रकृतं आदितः सर्वमध्ययनं।२३। श्री साधुरत्त-शिष्येण पाशचन्द्रेण वृत्तितः वालावबोधार्थं द्वितीयांगस्यवार्त्तिकं सम्पूर्णः।। ब।। सूभ भवतुः। कल्याणमस्तुः श्रीरस्तु।। संवत्।। १६६३ वर्षे फागुणवदि ८ बुधे प्रति सूगडांगनी पूरी कोधी प्रति ठीक है।

(ख) सूत्रकृतांग बालावबोध पंचपाठी

यह प्रति गधैया पुस्तकालय सरदारशहर से प्राप्त, पत्र संख्या ६८ व पष्ठ १३६। पाठ की पंक्तियां एक से १३ तक व प्रत्येक पंक्ति में ३४ से ३७ करीब अक्षर हैं। प्रति की लम्बाई १०¼ इंच व चौड़ाई ४½ इंच करीब है। संवत् व प्रशस्ति नहीं है। आनुमानिक सं० १७वीं शदी।

(ख) सूत्रकृतांग (मूलपाठ) निर्युक्ति सहित

यह प्रति 'गधैया पुस्तकालय' सरदारशहर से प्राप्त है। इसकी पत्र संख्या ४२ व पृष्ठ संख्या ८४ है। प्रत्येक पत्र में १६ पंक्तियां व प्रत्येक पंक्ति में ५२ से ६३ तक अक्षर हैं। प्रति की लम्बाई १३ इंच व चौड़ाई ४¾ इंच है। प्रति के अन्त में निम्न प्रशस्ति है––
सूयगडस्स निज्जुत्ती सम्मत्ता। पद्मोपमं पत्रपरं परान्वितं, वर्णोज्जलसूक्तमरदं सुन्दरं मुमुक्षु-भृंगप्रकरस्यवल्लभं, जीयाच्चिरं सूत्रकृदंग पुस्तकं।। संवत १५१२ वर्षे आसोज वदि दीपा।।
ऊएसगच्छे भट्टारक श्रीकक्कसूरीणां।। विक्रमपुरे।।

(ब) सूत्रकृतांग वृत्ति (हस्तलिखित)

यह प्रति 'गधैया पुस्तकालय' सरदारशहर की है। इसके पत्र ९० व पृष्ठ १८० हैं। प्रत्येक पत्र में १७ पंक्तियां व प्रत्येक पंक्ति में ६० से ६७ के करीब अक्षर है। इसकी लम्बाई १०¾ इंच व चौड़ाई ४।। इंच है। प्रति सुन्दर व सूक्ष्म अक्षरों में लिखी हुई है। प्रति के अन्त में निम्न प्रशस्ति है––

शुभं भवतु संवत् १५२५ वर्षे श्री यवनपुर नगरे। श्रीखरतरगच्छे। श्रीजिनभद्रसूरिपट्टालंकार श्री जिनचन्द्रसूरि विजयराज्ये। श्री कमल संयमे। महोपाध्यायैः स्ववाचनार्थं ग्रंथोयं लेखितः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

।।श्रीः।। ब ।।श्रीः।। श्री पद्मकीर्त्युपाठकेभ्यः पं० महिमसारगणिना प्रतिरियं प्रदत्ता स्वपुण्यार्थं ।।

(वृ०) सूत्रकृतांग वृत्ति मुद्रित श्री गोडीजी पार्श्वनाथ जैन देरासर पेढी।

(चू०) सूत्रकृतांग चूर्णि मुद्रित श्री ऋषभदेवजी केशरीमलजी श्वेताम्बर संस्था रतलाम।

ठाणं

प्राकृत में एक शब्द के अनेक रूप बनते हैं। आगमों में वे अनेक रूप प्रयुक्त भी हैं। आगम का संपादन करने वाले कुछ विद्वानों का यह आग्रह रहा है कि पाठ-संपादन में विभिन्न रूपों में एकरूपता लानी चाहिए। हमने पाठ-संपादन की इस पद्धति को मान्य नहीं किया है। यद्यपि प्रस्तुत सूत्र में 'नकार' और 'णकार' की एकता स्वीकार कर सर्वत्र 'णकार' का ही प्रयोग किया है; पर रूप-भेदों में एकता लाने के सिद्धान्त का सर्वत्र उपयोग नहीं किया है। ३।३७३ में 'सुगती' और 'सुग्गती'—ये दो रूप मिलते हैं। ३।३७५ में 'सोगता', 'सुगता' और 'सुग्गता'—ये तीन रूप मिलते हैं। हमने उन्हें यथावत् रखा है। ग्रंथकार प्रयोग करने में स्वतन्त्र हैं। वे एकरूपता के नियम से बंधे हुए नहीं हैं, फिर संपादन कार्य में एकरूपता का प्रयत्न अपेक्षित नहीं लगता।

आगमों में अनेक भाषाओं और वर्णादेशों के विविध प्रयोग मिलते हैं। उनमें एकरूपता लाने पर विविधता की विस्मृति की संभावना हो सकती है। 'वाएणं', 'कायसा'—ये दोनों रूप प्रयुक्त होते हैं। 'अंडजा' के 'अंडया' और 'अंडगा' तथा 'कर्मभूमिजा' के 'कम्मभूमिया' और 'कम्मभूमिगा'—ये दोनों रूप बनते हैं। जिस स्थल में जो रूप प्राप्त हो उस स्थल में उसे रखना संपादन की त्रुटि नहीं है।

प्रति परिचय

(क) ठाणांग मूलपाठ (हस्तलिखित)

गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त। इसके पत्र ७४ तथा पृष्ठ १४८ हैं। प्रत्येक पत्र में १२ पंक्तियां, प्रत्येक पंक्ति में ६० के करीब अक्षर हैं। यह प्रति १०।। इंच लम्बी ४।। इंच चौड़ी है। प्रति प्रायः शुद्ध है। लिपि संवत् १५६५। प्रशस्ति में लिखा है—

शुभं भवतु ।।छ।। श्री खरतरगच्छे श्री सागरचन्द्राचार्यान्वये वा० दयासागरगणिभिः स्वशिष्य वा० ज्ञानमन्दिरगणिवाचनार्थं ग्रंथोऽयं लेखयांचक्रे ।। संवत् १५६५ वर्षे जिनश्रीवर्धमानसंवत् २०३५ वर्षे चैत्रप्रथमाष्टम्यां श्री बोहिथिरागोत्रे मंत्रीश्वरवच्छराज नंदन प्रधानशिरोमणि मं० वरसिंहगेहिन्या मंत्रिणी बीऊलदेवी श्री विकया पुत्र मं० मेघराज मं० भोजराज मं० नगराज मं० हरिराज मं० अमरसिंह मं० डूंगरसिंह पुत्रिका बीराई

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रभृति पौत्रादि परिवारपरिवृतया सुपुण्यार्थं श्री ज्ञानभक्तिनिमित्तं श्री स्थानांग सूत्रवृत्तिसहितं लेखयित्वा विहारितं श्रीखरतरगच्छे वृहतिश्रीवीकानयरे श्रीजिनहंससूरि विजयिराज्ये वा० महिमराजगणीद्राणां शिष्य वा० दयासागगणीवराणां शिष्य वा० ज्ञानमन्दिरगणिदेवतिलकादिपरिवृतानां वाच्यमानं चिरं नंदतु। शुभं वोभोतु श्री चतुर्विध श्री संघाय ॥छ॥ श्री रस्तु ॥

(ख) ठाणांग मूलपाठ (हस्तलिखित)

वेवर पुस्तकालय सुजानगढ़ से प्राप्त। इसके पत्र १०८ और पृष्ठ २१६ है। प्रत्येक पत्र में १३ पंक्तियां। प्रत्येक पंक्ति में ४५ करीब अक्षर हैं। यह प्रति १० इंच लम्बी तथा ४½ इंच चौड़ी है। प्रति प्रायः शुद्ध तथा स्पष्ट है। लिपि संवत् १६८५ है।

गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त (वृत्ति की प्रति)।
इसके पत्र २८३ और पृष्ठ ५६६ हैं। इसकी लम्बाई १२ इंच है तथा चौड़ाई ४½ इंच है। प्रत्येक पत्र में १५ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ५८ से ६० तक अक्षर हैं।

(घ) ठाणांग (मूलपाठ)

यह प्रति लालभाई भाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामन्दिर (अहमदावाद) की है। इसके पत्र ६६ तथा पृष्ठ १३२ हैं। प्रत्येक पृष्ठ में १५ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ६० से ६५ तक अक्षर हैं। इसकी लम्बाई १२ इंच तथा चौड़ाई ५ इंच है। पत्रों के दोनों ओर कलात्मक वापिका है। अन्त में लिखा है—
संवत् १५१७ वर्षे ठाणांग सूत्रं लेखयित्वा तेषामेव गुरुणामुपकारिता। साधुजनैर्वा चिरं नंदतात् ॥छ॥ ॥०॥

समवाओ

प्रस्तुत सूत्र का पाठ-संशोधन तीन आदर्शों तथा वृत्ति के आधार पर किया गया है। कुल स्थलों में पाठ-संशोधन के लिए अन्य ग्रन्थों का भी उपयोग किया गया है। प्रकीर्ण समवाय (सूत्र २३४) में प्रयुक्त आदर्शों में 'अस्ससेणे' पाठ नहीं है। यह चतुर्थ चक्रवर्ती के पिता का नाम है। इसके बिना अगले नामों की व्यवस्था विसंगत हो जाती है। उल्लिखित सूत्र की संग्रह गाथाओं में पद्मोत्तर नाम अतिरिक्त है। इसे पाठान्तर रूप में स्वीकार किया गया है। आवश्यक निर्युक्ति (३९९) में 'अस्ससेणे' पाठ उपलब्ध है। उसके आधार पर 'अस्ससेणे' मूल-पाठ के रूप में स्वीकृत किया गया है।

प्रकीर्ण समवाय (सूत्र २३०) की संग्रह गाथा में बलदेव वासुदेव के पिता के नाम है। उक्त गाथा में स्थानांग (९।१९) तथा आवश्यक निर्युक्ति (४११)के आधार पर संशोधन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

किया गया है। तीसरे बलदेव-वासुदेव के पिता का नाम रुद्द है, किन्तु समवायांग की हस्तलिखित वृत्ति में 'रुद्द' के स्थान में 'सोम' है। वस्तुतः 'सोम' के बाद 'रुद्द' होना चाहिए[1]।

समवाय ३० (सूत्र १, गाथा २६) में सभी सभी आदर्शों में 'सज्झायवायं' पाठ मिलता है। वृत्तिकार ने भी उसकी स्वाध्यायवादं—इस रूप में व्याख्या की है। अर्थ की दृष्टि से यह संगत नहीं है। दशाश्रुतस्कन्ध (सूत्र २६) में उक्त गाथा उपलब्ध है। उसमें 'सज्झाय-वायं' के स्थान पर 'सब्भाववायं' पाठ है। दशाश्रुतस्कन्ध के वृत्तिकार ने इसका संस्कृत रूप 'सद्भाववादं' किया है। अर्थ-मीमांसा करने पर यह पाठ संगत प्रतीत होता है।[2]

प्राचीन लिपि में संयुक्त 'झकार' और संयुक्त 'भकार' एक जैसे लिखे जाते थे। इस प्रकार के लिपिहेतुक पाठ-परिवर्तन अनेक स्थानों में प्राप्त होते हैं।

प्रति परिचय

(क) समवायांग मूलपाठ

यह प्रति जैसलमेर भंडार की ताडपत्रीय (फोटोप्रिंट) मदनचन्दजी गोठी, सरदारशहर द्वारा प्राप्त है। इसके पत्र ६४ तथा पृष्ठ १२८ हैं किन्तु २४ वां पत्र नहीं है। प्रत्येक पृष्ठ में ४ या ५ पंक्तियां हैं तथा प्रत्येक पंक्ति में ११० अक्षर हैं। लिपि सं० १४०१।

(ख) समवायांग मूलपाठ (पंचपाठी)

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त है। बीच में मूलपाठ एवं चारों ओर वृत्ति लिखी हुई है। इसके पत्र १०६ तथा पृष्ठ २१२ हैं। प्रत्येक पृष्ठ में ९ पंक्तियां तथा प्रत्येक पंक्ति में ३०,३२ अक्षर हैं। यह प्रति १० इंच लम्बी तथा ४½ इंच चौड़ी है। इसके अन्त में संवत् दिया हुआ नहीं है। किन्तु पत्रों की जीर्णता व लिपि के आधार पर यह पन्द्रहवीं-सोलहवीं शताब्दी के लगभग की है। प्रति के अन्त में निम्न प्रशस्ति है—
॥छ॥ समवाउ चउत्थमंगं ॥छ॥ अंकतोपि ग्रंथाग्र १६६७ ॥छ॥

(ग) समवायांग मूलपाठ (पंचपाठी)

यह प्रति गधैया पुस्तकालय, सरदारशहर से प्राप्त है। बीच में मूलपाठ एवं चारों तरफ वृत्ति लिखी हुई है। इसके पत्र ८१ तथा पृष्ठ १६२ हैं। प्रत्येक पृष्ठ में ५ से १२ पंक्तियां हैं। प्रत्येक पंक्ति में ३२ से ४७ तक अक्षर हैं। यह प्रति १० इंच लम्बी तथा ४½ इंच चौड़ी है। लिपि संवत् १३४५ लिखा है; पर संवत् की लिखावट से कुछ संदिग्ध सा लगता है। फिर भी प्राचीन है। अन्तिम प्रशस्ति में लिखा है—

---

१. देखें, समवाओ, पइण्णगसमवाओ सू० २३० का पाद-टिप्पण।

२. देखें, समवाओ, समवाय ३०, सू० १, गाथा २६ का दूसरा पाद-टिप्पण।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

।।छ।। समवाउ चउत्थमंगं संमत्तं ।।छ।। ग्रंथाग्र १६६७ ।।छ।।

इस प्रति में पाठ बहुत संक्षिप्त है। अनेक स्थानों पर केवल प्रथम अक्षर ही लिखे गए हैं।

श्रीमदभयदेवसूरिवृत्तिः (मुद्रित)—

प्रकाशक—श्रेष्ठी माणिकलाल चुन्नीलाल, कान्तिलाल, चुन्नीलाल—अहमदाबाद।

संपादक—मास्टर नगीनदास, नेमचन्द।

सहयोगानुभूति—

जैन परम्परा में वाचना का इतिहास बहुत प्राचीन है। आज से १५०० वर्ष पूर्व तक आगम की चार वाचनाएं हो चुकी हैं। देवर्द्धिगणी के बाद कोई सुनियोजित आगम-वाचना नहीं हुई। उनके वाचना-काल में जो आगम लिखे गए थे, वे इस लम्बी अवधि में बहुत ही अव्यवस्थित हो गए हैं। उनकी पुनर्व्यवस्था के लिए आज फिर एक सुनियोजित वाचना की अपेक्षा थी। आचार्यश्री तुलसी ने सुनियोजित सामूहिक वाचना के लिए प्रयत्न भी किया था, परन्तु वह पूर्ण नहीं हो सका। अन्ततः हम इसी निष्कर्ष पर पहुंचे कि हमारी वाचना अनुसन्धानपूर्ण, गवेषणापूर्ण, तटस्थदृष्टि समन्वित तथा सपरिश्रम होगी तो वह अपने आप-सामूहिक हो जाएगी। इसी निर्णय के आधार पर हमारा यह आगमवाचना का कार्य प्रारम्भ हुआ।

हमारी इस वाचना के प्रमुख आचार्यश्री तुलसी हैं। वाचना का अर्थ अध्यापन है। हमारी इस प्रवृत्ति में अध्यापनकर्म के अनेक अंग हैं—पाठ का अनुसंधान, भाषान्तरण, समीक्षात्मक अध्ययन तुलनात्मक अध्ययन आदि-आदि। इन सभी प्रवृत्तियों में हमें आचार्यश्री का सक्रिय योग, मार्ग-दर्शन और प्रोत्साहन प्राप्त है। यही हमारा इस गुरुतर कार्य में प्रवृत्त होने का शक्ति-बीज है।

मैं आचार्यश्री के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन कर भार-मुक्त होऊं, उसकी अपेक्षा अच्छा है कि अग्रिम कार्य के लिए उनके आशीर्वाद का शक्ति-संबल पा और अधिक भारी बनूं।

प्रस्तुत ग्रन्थ के पाठ संपादन में मुनि सुदर्शनजी, मुनि मधुकरजी और मुनि हीरालालजी का पर्याप्त योग रहा है। मुनि शुभकरणजी इस कार्य में क्वचित् संलग्न रहे हैं। प्रति-शोधन में मुनि दुलहराजजी का पूर्ण योग मिला है। इसका ग्रंथ-परिमाण मुनि मोहनलाल जी (आमेट) ने तैयार किया है।

कार्य-निष्पत्ति में इनके योग का मूल्यांकन करते हुए मैं इन सबके प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

आगमविद् और आगम-संपादन के कार्य में सहयोगी स्व० श्री मदनचन्दजी गोठी को इस अवसर पर विस्मृत नहीं किया जा सकता। यदि वे आज होते तो इस कार्य पर उन्हें परम हर्ष होता।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आगम के प्रबंध-संपादक श्री श्रीचन्दजी रामपुरिया प्रारंभ से ही आगम कार्य में संलग्न रहे हैं। आगम साहित्य को जन-जन तक पहुंचाने के लिए ये कृत-संकल्प और प्रयत्नशील हैं। अपने सुव्यवस्थित वकालत कार्य से पूर्ण निवृत्त होकर अपना अधिकांश समय आगम-सेवा में लगा रहे हैं। 'अंगसुत्ताणि' के इस प्रकाशन में इन्होंने अपनी निष्ठा और तत्परता का परिचय दिया है।

जैन विश्व भारती के अध्यक्ष श्री खेमचन्दजी सेठिया, जैन विश्व भारती के कार्यालय तथा आदर्श साहित्य संघ के कार्यालय के कार्यकर्ताओं ने पाठ-सम्पादन में प्रयुक्त सामग्री के संयोजन में बड़ी तत्परता से कार्य किया है।

एक लक्ष्य के लिए समान गति से चलने वालों की समप्रवृत्ति में योगदान की परम्परा का उल्लेख व्यवहार-पूर्ति मात्र है। वास्तव में यह हम सबका पवित्र कर्त्तव्य है और उसी का हम सबने पालन किया है।

मुनि नथमल

अणुव्रत-विहार
नई दिल्ली
२५०० वां निर्वाण दिवस

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भूमिका

१. आगमों का वर्गीकरण

जैन साहित्य का प्राचीनतम भाग आगम है। समवायांग में आगम के दो रूप प्राप्त होते हैं—द्वादशांग गणिपिटक[1] और चतुर्दश पूर्व[2]। नन्दी में श्रुत-ज्ञान (आगम) के दो विभाग मिलते हैं—अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य[3]। आगम-साहित्य में साधु-साध्वियों के अध्ययन विषयक जितने उल्लेख प्राप्त होते हैं, वे सब अंगों और पूर्वों से संबंधित हैं। जैसे—

१. सामायिक आदि ग्यारह अंगों को पढ़ने वाले—'सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ' (अंतगड, प्रथम वर्ग)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि के शिष्य गौतम के विषय में प्राप्त है।

'सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ' (अंतगड, पंचम वर्ग, प्रथम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि की शिष्या पद्मावती के विषय में प्राप्त है।

'सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ' (अंतगड, अष्टम वर्ग, प्रथम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् महावीर की शिष्या काली के विषय में प्राप्त है।

'सामाइयमाइयाइं एक्कारसअंगाइं अहिज्जइ' (अंतगड, षष्ठ वर्ग १५वां अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् महावीर के शिष्य अतिमुक्तककुमार के विषय में प्राप्त है।

२. बारह अंगों को पढ़ने वाले—'बारसंगी' (अंतगड, चतुर्थ वर्ग, प्रथम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि के शिष्य जालीकुमार के विषय में प्राप्त है।

३. चौदह पूर्वों को पढ़ने वाले—चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ (अंतगड, तृतीय वर्ग, नवम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि के शिष्य सुमुखकुमार के विषय में प्राप्त है।

'सामाइयमाइयाइं चोद्दसपुव्वाइं अहिज्जइ' (अंतगड, तृतीय वर्ग, प्रथम अध्ययन)। यह उल्लेख भगवान् अरिष्टनेमि के शिष्य अणीयसकुमार के विषय में प्राप्त है।

---

१. समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सू० ८८।
२. वही, समवाय १४, सू० २।
३. नन्दी, सू० ४३।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भगवान् पार्श्व के साढ़े तीन सौ चतुर्दशपूर्वी मुनि थे[1]।

भगवान् महावीर के तीन सौ चतुर्दशपूर्वी मुनि थे[2]।

समवायांग और अनुयोगद्वार में अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य का विभाग नहीं है। सर्व प्रथम यह विभाग नन्दी में मिलता है। अंग-बाह्य की रचना अर्वाचीन स्थविरों ने की है। नंदी की रचना से पूर्व अनेक अंग-बाह्य ग्रन्थ रचे जा चुके थे और वे चतुर्दश-पूर्वी या दस-पूर्वी स्थविरों द्वारा रचे गये थे। इस लिए उन्हें आगम की कोटि में रखा गया। उसके फलस्वरूप आगम के दो विभाग किए गए--अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य। यह विभाग अनुयोगद्वार (वीर-निर्वाण छठी शताब्दी) तक नहीं हुआ था। यह सबसे पहले नंदी (वीर-निर्वाण दसवीं शताब्दी) में हुआ है।

नंदी की रचना तक आगम के तीन वर्गीकरण हो जाते हैं--पूर्व, अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य। आज 'अंग-प्रविष्ट' और 'अंग-बाह्य' उपलब्ध होते हैं, किन्तु पूर्व उपलब्ध नहीं हैं। उनकी अनुपलब्धि ऐतिहासिक दृष्टि से विमर्शनीय है।

२. पूर्व

जैन परम्परा के अनुसार श्रुत-ज्ञान (शब्द-ज्ञान) का अक्षयकोष 'पूर्व' है। इसके अर्थ और रचना के विषय में सब एक मत नहीं हैं। प्राचीन आचार्यों के मतानुसार 'पूर्व' द्वादशांगी से पहले रचे गए थे, इसलिए इनका नाम 'पूर्व' रखा गया[3]। आधुनिक विद्वानों का अभिमत यह है कि 'पूर्व' भगवान् पार्श्व की परम्परा की श्रुत-राशि है। यह भगवान् महावीर से पूर्ववर्ती है, इसलिए इसे 'पूर्व' कहा गया है[4]। दोनों अभिमतों में से किसी को भी मान्य किया जाए, किन्तु इस फलित में कोई अन्तर नहीं आता कि पूर्वों की रचना द्वादशांगी से पहले हुई थी या द्वादशांगी पूर्वों की उत्तरकालीन रचना है।

वर्तमान में जो द्वादशांगी का रूप प्राप्त है, उसमें 'पूर्व' समाए हुए हैं। बारहवां अंग दृष्टिवाद है। उसका एक विभाग है--पूर्वगत। चौदह पूर्व इसी 'पूर्वगत' के अन्तर्गत हैं। भगवान् महावीर ने प्रारंभ में पूर्वगत-श्रुत की रचना की थी। इस अभिमत से यह फलित होता है कि चौदह पूर्व और बारहवां अंग--ये दोनों भिन्न नहीं हैं। पूर्वगत-श्रुत बहुत गहन था। सर्वसाधारण के लिए वह

---

१. समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सू० १४।

२. वही, सू० १२।

३. समवायांग वृत्ति, पत्र १०१।
प्रथमं पूर्वं तस्य सर्वप्रवचनात् पूर्वं क्रियमाणत्वात्।

४. नन्दी, मलयगिरि वृत्ति, पत्र २४०:
अन्ये तु व्याचक्षते पूर्वं पूर्वगतसूत्रार्थमर्हन् भाषते, गणधरा अपि पूर्वं पूर्वगतसूत्रं विरचयन्ति, पश्चादाचारादिकम्।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुलभ नहीं था। अंगों की रचना अल्पमेधा व्यक्तियों के लिए की गई। जिनभद्रगणी क्षमाश्रमण ने बताया है कि 'दृष्टिवाद में समस्त शब्द-ज्ञान का अवतार हो जाता है। फिर भी ग्यारह अंगों की रचना अल्पमेधा पुरुषों तथा स्त्रियों के लिए की गई'[१]। ग्यारह अंगों को वे ही साधु पढ़ते थे, जिनकी प्रतिभा प्रखर नहीं होती थी। प्रतिभा सम्पन्न मुनि पूर्वों का अध्ययन करते थे। आगम-विच्छेद के क्रम से भी यही फलित होता है कि ग्यारह अंग दृष्टिवाद या पूर्वों से सरल या भिन्न-क्रम में रहे हैं। दिगम्बर परम्परा के अनुसार वीर-निर्वाण बासठ वर्ष बाद केवली नहीं रहे। उनके बाद सौ वर्ष तक श्रुत-केवली (चतुर्दश-पूर्वी) रहे। उनके पश्चात् एक सौ तिरासी वर्ष तक दशपूर्वी रहे। उनके पश्चात् दो सौ बीस वर्ष तक ग्यारह अंगधर रहे[२]।

उक्त चर्चा से यह स्पष्ट है कि जब तक आचार आदि अंगों की रचना नहीं हुई थी, तब तक महावीर की श्रुत-राशि 'चौदह पूर्व' या 'दृष्टिवाद' के नाम से अभिहित होती थी और जब आचार आदि ग्यारह अंगों की रचना हो गई, तब दृष्टिवाद को बारहवें अंग के रूप में स्थापित किया गया।

यद्यपि बारह अंगों को पढ़ने वाले और चौदह पूर्वों को पढ़ने वाले——ये भिन्न-भिन्न उल्लेख मिलते हैं,[३] फिर भी यह नहीं कहा जा सकता कि चौदह पूर्वों के अध्येता बारह अंगों के अध्येता नहीं थे और बारह अंगों के अध्येता चतुर्दश-पूर्वी नहीं थे। गौतम स्वामी को 'द्वादशांगवित्' कहा गया है[४]। वे चतुर्दश-पूर्वी और अंगधर दोनों थे। यह कहने का प्रकार-भेद रहा है कि श्रुत-केवली को कहीं 'द्वादशांगवित्' और कहीं 'चतुर्दश-पूर्वी' कहा गया है।

ग्यारह अंग पूर्वों से उद्धृत या संकलित हैं। इसलिए जो चतुर्दश-पूर्वी होता है, वह स्वाभाविक रूप से द्वादशांगवित् होता है। बारहवें अंग में चौदह पूर्व समाविष्ट हैं। इसलिए जो द्वादशांगवित् होता है, वह स्वभावतः चतुर्दश-पूर्व होता है। अतः हम इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि आगम के प्राचीन वर्गीकरण दो ही हैं——चौदह पूर्व और ग्यारह अंग। द्वादशांगी का स्वतन्त्र स्थान नहीं है। यह पूर्वों और अंगों का संयुक्त नाम है।

कुछ आधुनिक विद्वानों ने पूर्वों को भगवान् पार्श्वकालीन और अंगों को भगवान् महावीर-कालीन माना है, पर यह अभिमत संगत नहीं है। पूर्वों और अंगों की परम्परा भगवान् अरिष्टनेमि और भगवान् पार्श्व के युग में भी रही है। अंग अल्पमेधा व्यक्तियों के लिए रचे गए, यह पहले बताया जा चुका है। भगवान् पार्श्व के युग में सब मुनियों का प्रतिभा-स्तर समान था, यह कैसे

---

१. विशेषावश्यकभाष्य, गाथा ५५४ :

जइवि य भूतावाए, सव्वस्स वओगयस्स ओयारो।
निज्जूहणा तहावि हु, दुम्मेहे पप्प इत्थी य ॥

२. जयधवला, प्रस्तावना पृष्ठ ४९।

३. देखिए—भूमिका का प्रारम्भिक भाग।

४. उत्तराध्ययन, २३।७।

माना जा सकता है? प्रतिभा का तारतम्य अपने-अपने युग में सदा रहा है। मनोवैज्ञानिक और व्यावहारिक दृष्टि से विचार करने पर भी हम इसी बिन्दु पर पहुंचते हैं कि अंगो की अपेक्षा भगवान् पार्श्व के शासन में भी रही है, इसलिए इस अभिमत की पुष्टि में कोई साक्ष्य प्राप्त नहीं है कि भगवान् पार्श्व के युग में केवल पूर्व ही थे, अंग नहीं। सामान्य ज्ञान से यही तथ्य निष्पन्न होता है कि भगवान् महावीर के शासन में पूर्वों और अंगों का युग की भाव, भाषा, शैली और अपेक्षा के अनुसार नवीनीकरण हुआ। 'पूर्व' पार्श्व की परम्परा से लिए गए और 'अंग' महावीर की परम्परा में रचे गए, इस अभिमत के समर्थन में सम्भवतः कल्पना ही प्रधान रही है।

३. अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य

भगवान् महावीर के अस्तित्व-काल में गौतम आदि गणधरों ने पूर्वों और अंगों की रचना की, यह सर्व-विश्रुत है। क्या अन्य मुनियों ने आगम ग्रन्थों की रचना नहीं की। यह प्रश्न सहज ही उठता है। भगवान् महावीर के चौदह हजार शिष्य थे[1]। उनमें सात सौ केवली थे, चार सौ वादी थे। उन्होंने ग्रन्थों की रचना नहीं की, ऐसा सम्भव नहीं लगता। नंदी में बताया गया है कि भगवान् महावीर के शिष्यों ने चौदह हजार प्रकीर्णक बनाए थे[2]। ये पूर्वों और अंगो से अतिरिक्त थे। उस समय अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य ऐसा वर्गीकरण हुआ, यह प्रमाणित करने के लिए कोई साक्ष्य प्राप्त नहीं है। भगवान् महावीर के निर्वाण के पश्चात् अर्वाचीन आचार्यों ने ग्रंथ रचे तब संभव है उन्हें आगम की कोटि में रखने या न रखने की चर्चा चली और उनके प्रामाण्य और अप्रामाण्य का प्रश्न भी उठा। चर्चा के बाद चतुर्दश-पूर्वी और दश-पूर्वी स्थविरों द्वारा रचित ग्रन्थों को आगम की कोटि में रखने का निर्णय हुआ किन्तु उन्हें स्वतः प्रमाण नहीं माना गया। उनका प्रामाण्य परतः था। वे द्वादशांगी में अविरुद्ध है, इस कसौटी से कसकर उन्हें आगम की संज्ञा दी गई। उनका परतः प्रामाण्य था, इसीलिए उन्हें अंग-प्रविष्ट की कोटि से भिन्न रखने की आवश्यकता प्रतीत हुई। इस स्थिति के सन्दर्भ में आगम की अंग-बाह्य कोटि का उद्‌भव हुआ।

जिनभद्रगणि क्षमाश्रमण ने अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य के भेद-निरूपण में तीन हेतु प्रस्तुत किए हैं—

१. जो गणधर कृत होता है,

२. जो गणधर द्वारा प्रश्न किए जाने पर तीर्थंकर द्वारा प्रतिपादित होता है

---

१. समवाओ, समवाय १४, सू० ४।

२. नन्दी, सू० ७८ :
चोद्दसपइन्नग सहस्साणि भगवओ वद्धमाणस्स।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. जो ध्रुव—शाश्वत सत्यों से सम्बन्धित होता है, सुदीर्घकालीन होता है—वही श्रुत अंग-प्रविष्ट होता है[1]।

इसके विपरीत।

१. जो स्थविर-कृत होता है,

२. जो प्रश्न पूछे बिना तीर्थंकर द्वारा प्रतिपादित होता है,

३. जो चल होता है, तात्कालिक या सामयिक होता है—उस श्रुत का नाम अंग-बाह्य है।

अंग-प्रविष्ट और अंग-बाह्य में भेद करने का मुख्य हेतु वक्ता का भेद है[2]। जिस आगम के वक्ता भगवान् महावीर हैं और जिसके संकलयिता गणधर हैं, वह श्रुत-पुरुष के मूल अंगों के रूप में स्वीकृत होता है इसलिए उसे अंग-प्रविष्ट कहा गया है। सर्वार्थसिद्धि के अनुसार वक्ता तीन प्रकार के होते हैं—१. तीर्थंकर २. श्रुत-केवली (चतुर्दश-पूर्वी) और ३. आरातीय[3]। आरातीय आचार्यों के द्वारा रचित आगम ही अंग-बाह्य माने गए हैं। आचार्य अकलंक के शब्दों में आरातीय आचार्य-कृत आगम अंग-प्रतिपादित अर्थ से प्रतिबिम्बित होते हैं इसीलिए वे अंग-बाह्य कहलाते हैं[4]। अंग-बाह्य आगम श्रुत-पुरुष के प्रत्यंग या उपांग-स्थानीय हैं।

४. अंग

द्वादशांगी में संगर्भित बारह आगमों को अंग कहा गया है। अंग शब्द संस्कृत और प्राकृत दोनों भाषाओं के साहित्य में प्राप्त होता है। वैदिक साहित्य में वेदाध्ययन के सहायक-ग्रन्थों को अंग कहा गया है। उनकी संख्या छह है—

१. शिक्षा—शब्दों के उच्चारण-विधान का प्रतिपादक ग्रन्थ।

२. कल्प—वेद-विहित कर्मों का क्रमपूर्वक व्यवस्थित प्रतिपादन करने वाला शास्त्र।

३. व्याकरण—पद-स्वरूप और पदार्थ-निश्चय का निमित्त-शास्त्र।

४. निरुक्त—पदों की व्युत्पत्ति का निरूपण करने वाला शास्त्र।

५. छन्द—मन्त्रोच्चारण के लिए स्वर-विज्ञान का प्रतिपादक-शास्त्र।

६. ज्योतिष—यज्ञ-याग आदि कार्यों के लिए समय-शुद्धि का प्रतिपादक शास्त्र।

---

१. विशेषावश्यकभाष्य, गाथा ५५२ :

गणहर-थेरकयं वा, आएसा मुक्क-वागरणओ वा।
धुव-चल विसेसओ वा, अंगाणंगेसु नाणत्तं॥

२. तत्त्वार्थभाष्य, १।२० :

वक्तृ-विशेषाद् द्वैविध्यम्।

३. सर्वार्थसिद्धि, १।२० :

त्रयो वक्तारः—सर्वज्ञस्तीर्थंकरः, इतरो वा श्रुतकेवली आरातीयश्चेति।

४. तत्त्वार्थ राजवार्तिक, १।२० :

आरातीयाचार्यकृतांगार्थ प्रत्यासन्नरूपमंगबाह्यम्।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वैदिक साहित्य में वेद-पुरुष की कल्पना की गयी है। उसके अनुसार शिक्षा वेद की नासिका है, कल्प हाथ, व्याकरण मुख, निरुक्त श्रोत्र, छन्द पैर और ज्योतिष नेत्र है। इसीलिए ये वेद-शरीर के अंग कहलाते हैं[1]।

पालि-साहित्य में भी, 'अंग' शब्द का उपयोग किया गया है। एक स्थान में बुद्धवचनों को नवांग और दूसरे स्थान में द्वादशांग कहा गया है।

नवांग--

१. सुत्त—भगवान् बुद्ध के गद्यमय उपदेश।
२. गेय्य—गद्य-पद्य मिश्रित अंश।
३. वैय्याकरण—व्याख्यापरक ग्रन्थ।
४. गाथा—पद्य में रचित ग्रन्थ।
५. उदान—बुद्ध के मुख से निकले हुए भावमय प्रीति-उद्गार।
६. इतिवुत्तक—छोटे-छोटे व्याख्यान, जिनका प्रारम्भ 'बुद्ध ने ऐसा कहा' से होता है।
७. जातक—बुद्ध की पूर्व-जन्म-सम्बन्धी कथाएं।
८. अब्भुतधम्म —अद्भुत वस्तुओं या योगज-विभूतियों का निरूपण करने वाले ग्रन्थ।
९. वेदल्ल—वे उपदेश जो प्रश्नोत्तर की शैली में लिखे गए हैं[2]।

द्वादशांग—

१. सूत्र, २. गेय, ३. व्याकरण, ४. गाथा, ५. उदान, ६. अवदान ७. इतिवृत्तक, ८. निदान, ९. वैपुल्य, १०. जातक, ११. उपदेश-धर्म और १२. अद्भुत-धर्म[3]।

जैनागम बारह अंगो में विभक्त हैं—१. आचार, २. सूत्रकृत, ३. स्थान, ४. समवाय, ५. भगवती, ६. ज्ञाताधर्मकथा, ७. उपासकदशा, ८. अन्तकृतदशा, ९. अनुत्तरोपपातिकदशा, १०. प्रश्न-व्याकरण, ११. विपाक और १२. दृष्टिवाद।

'अंग' शब्द का प्रयोग भारतीय दर्शन की तीनों प्रमुख धाराओं में हुआ है। वैदिक और बौद्ध साहित्य में मुख्य ग्रन्थ वेद और पिटक हैं। उनके साथ 'अंग' शब्द का कोई योग नहीं है। जैन साहित्य में मुख्य ग्रन्थों का वर्गीकरण गणिपिटक है। उसके साथ 'अंग' शब्द का योग हुआ है। गणिपिटक के बारह अंग हैं—'दुवालसंगे गणिपिडगे'[4]।

---

१. पाणिनीयशिक्षा, ४१।१२।
२. सद्धर्मपुंडरीक सूत्र, पृ० ३४
३. बौद्ध संस्कृत ग्रन्थ 'अभिसमयालंकार' की टीका' पृ० ३५ :

सूत्रं गेयं व्याकरणं, गाथोदानावदानकम्।
इतिवृत्तकं निदानं, वैपुल्यं च सजातकम्।
उपदेशाद्भुतौ धर्मौ, द्वादशांगमिदं वचः।।

४. समवाओ पइण्णगसमवाओ, सूत्र ८८।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जैन-परम्परा में श्रुत-पुरुष की कल्पना भी प्राप्त होती है। आचार आदि बारह आगम श्रुत-पुरुष के अंगस्थानीय हैं। संभवतः इसीलिए उन्हें बारह अंग कहा गया[1]। इस प्रकार द्वादशांग 'गणिपिटक' और 'श्रुत-पुरुष'—दोनों का विशेषण बनता है।

आयारो

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशांगी का पहला अंग है। इसमें आचार का वर्णन है, इसलिए इसका नाम 'आयारो' (आचार) है। इसके दो श्रुतस्कन्ध हैं—आयरो और आयारचूला।

विषय-वस्तु

समवायांग और नन्दी में आचारांग का विवरण प्रस्तुत किया गया है। उसके अनुसार प्रस्तुत सूत्र आचार, गोचर, विनय, वैनयिक (विनय-फल), स्थान (उत्थितासन, निषण्णासन, और शयितासन), गमन, चंक्रमण, भोजन आदि की मात्रा, स्वाध्याय आदि में योग-नियुंजन, भाषा, समिति, गुप्ति, शय्या, उपधि, भक्त-पान, उद्‌गम-उत्थान, एषणा आदि की विशुद्धि, शुद्धाशुद्ध-ग्रहण का विवेक, व्रत, नियम, तप, उपधान आदि का प्रतिपादक है[2]।

आचार्य उमास्वाति ने आचारांग के प्रत्येक अध्ययन का विषय संक्षेप में प्रतिपादित किया है। वह क्रमशः इस प्रकार है[3]—

१. षड्जीवकाय यतना।
२. लौकिक संतान का गौरव-त्याग।
३. शीत-ऊष्ण आदि परीषहों पर विजय।
४. अप्रकम्पनीय सम्यक्त्व।
५. संसार से उद्वेग।
६. कर्मों को क्षीण करने का उपाय।
७. वैयावृत्य का उद्योग।
८. तपस्या की विधि।
९. स्त्री-संग-त्याग।

---

१. मूलाराधना, ४।५९९ विजयोदया :
श्रुतं पुरुषः मुखचरणाद्यंगस्थानीयत्वादंगशब्देनोच्यते।
२. (क) समवाओ, पइण्णग समवाओ, सू० ८९।
(ख) नंदी, सू० ८०।
३. प्रशमरति प्रकरण, ११४-११७।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०. विधि-पूर्वक भिक्षा का ग्रहण।
११. स्त्री, पशु, क्लीव आदि से रहित शय्या।
१२. गति-शुद्धि।
१३. भाषा-शुद्धि।
१४. वस्त्र की एषणा-पद्धति।
१५. पात्र की एषणा-पद्धति।
१६. अवग्रह-शुद्धि।
१७. स्थान-शुद्धि।
१८. निषद्या-शुद्धि।
१९. व्युत्सर्ग-शुद्धि।
२०. शब्दासक्ति-परित्याग।
२१. रूपासक्ति-परित्याग।
२२. परक्रिया-वर्जन।
२३. अन्योन्यक्रिया-वर्जन।
२४. पंच महाव्रतों की दृढ़ता।
२५. सर्वसंगों से विमुक्तता।

निर्युक्तिकार ने नव ब्रह्मचर्य अध्ययनों के विषय इस प्रकार बतलाए हैं—

१. सत्थपरिण्णा—जीव संयम।
२. लोगविजय—बंध और मुक्ति का प्रबोध।
३. सीओसणिज्ज—सुख-दुःख-तितिक्षा।
४. सम्मत्त—सम्यक्-दृष्टिकोण।
५. लोगसार—असार का परित्याग और लोक में सारभूत रत्नत्रयी की आराधना।
६. धुय—अनासक्ति।
७. महापरिण्णा—मोह से उत्पन्न परीषहों और उपसर्गों का सम्यक् सहन।
८. विमोक्ख—निर्याण (अंतक्रिया) की सम्यक्-आराधना।
९. उवहाणसुय—भगवान् महावीर द्वारा आचरित आचार का प्रतिपादन[1]।

---

१. आचारांग निर्युक्ति, गाथा ३३, ३४:
जिअसंजमी अ लोगो जह बज्झइ जह य तं पजहियव्वं।
सुहदुक्खतितिक्खाविय, सम्मत्तं लोगसारो य॥
निस्संगया य छट्ठे मोहसमुत्था परीसहुवसग्गा।
निज्जाणं अट्ठमए नवमे य जिणेण एवंति॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचार्य अकलंक के अनुसार आचारांग का समग्र विषय चर्या-विधान[1] तथा अपराजित सूरि के अनुसार रत्नत्रयी के आचरण का प्रतिपादन है[2]।

जैन-परम्परा में 'आचार' शब्द व्यापक अर्थ में व्यवहृत होता है। आचारांग की व्याख्या के प्रसंग में आचार के पांच प्रकार बतलाए गए हैं—१. ज्ञानाचार, २. दर्शनाचार, ३. चरित्राचार, ४. तपाचार और ५. वीर्याचार[3]। प्रस्तुत सूत्र में इन पांचों आचारों का निरूपण है

सूयगडो

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशांगी का दूसरा अंग है। इसका नाम 'सूयगडो' है। समवाय, नंदी और अनुयोगद्वार—तीनों आगमों में यही नाम उपलब्ध होता है[4]। निर्युक्तिकार भद्रबाहुस्वामी ने प्रस्तुत आगम के गुण-निष्पन्न नाम तीन बतलाए हैं[5]—

१. सूतगड—सूतकृत
२. सुत्तकड—सूत्रकृत
३. सूयगड—सूचाकृत

प्रस्तुत आगम मौलिक दृष्टि से भगवान् महावीर से सूत (उत्पन्न) है तथा यह ग्रन्थरूप में गणधर के द्वारा कृत है, इसलिए इसका नाम 'सूतकृत' है।

इसमें सूत्र के अनुसार तत्त्वबोध किया जाता है, इसलिए इसका नाम 'सूत्रकृत' है।

इसमें स्व और पर समय की सूचना कृत है, इसलिए इसका नाम 'सूचाकृत' है।

वस्तुतः सूत, सुत्त और सूय—ये तीनों सूत्र के ही प्राकृत रूप हैं। आकार भेद होने के कारण तीन गुणात्मक नामों की परिकल्पना की गई है।

---

१. तत्त्वार्थ राजवार्तिक, १।२० :
आचारे चर्याविधानं शुद्ध्यष्टकपंचसमितित्रिगुप्तिविकल्पं कथ्यते।

२. मूलाराधना, आश्वास २, श्लोक १३०, विजयोदया:
रत्नत्रयाचरणनिरूपणपरतया प्रथममंगमाचारशब्देनोच्यते।

३. समवाओ, पइण्णग समवाओ, सू० ८९ :
से समासओ पंचविहे पं० तं—णाणायारे दंसणायारे चरित्तायारे तवायारे वीरियायारे।

४. (क) समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सू० ८८
(ख) नंदी, सू० ८०।
(ग) अणुओगदाराइं, सू० ५०।

५. सूत्रकृतांगनिर्युक्ति, गाथा २ :
सूतगडं सुत्तकडं सूयगडं चेव गोण्णाइं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सभी अंग मौलिक रूप में भगवान् महावीर द्वारा प्रस्तुत और गणधर द्वारा ग्रन्थरूप में प्रणीत हैं। फिर केवल प्रस्तुत आगम का ही सूत्रकृत नाम क्यों? इसी प्रकार दूसरा नाम भी सभी अंगों के लिए सामान्य है। प्रस्तुत आगम के नाम का अर्थस्पर्शी आधार तीसरा है। क्योंकि प्रस्तुत आगम में स्वसमय और परसमय की तुलनात्मक सूत्रता के सन्दर्भ में आचार की प्रस्थापना की गई है। इसलिए इसका संबंध सूचना से है। समवाय और नंदी में यह स्पष्टतया उल्लिखित है—'सूयगडे णं ससमयासूइज्जंति परसमया सूइज्जंति ससमय-परसमया सूइज्जंति'[1]।

जो सूचक होता है उसे सूत्र कहा जाता है। प्रस्तुत आगम की पृष्ठभूमि में सूचनात्मक तत्त्व की प्रधानता है, इसलिए इसका नाम सूत्रकृत है।

सूत्रकृत के नाम के सम्बन्ध में एक अनुमान और किया जा सकता है। वह वास्तविकता के निकट प्रतीत होता है। दृष्टिवाद के पांच प्रकार हैं—परिकर्म, सूत्र, पूर्वानुयो।, पूर्वगत और चूलिका।

आचार्य वीरसेन के अनुसार सूत्र में अन्य दार्शनिकों का वर्णन है[2]। प्रस्तुत आगम की रचना उसी के आधार पर की गई इसलिए इसका सूत्रकृत नाम रखा गया। सूत्रकृत शब्द के अन्य व्युत्पत्तिक अर्थों की अपेक्षा यह अर्थ अधिक संगत प्रतीत होता है। 'सुत्तगड' और बौद्धों के 'सुत्तनिपात' में नामसाम्य प्रतीत होता है।

अंग और अनुयोग—

द्वादशांगी में प्रस्तुत आगम का स्थान दूसरा है। अनुयोग चार हैं –

१. चरणकरणानुयोग,

२. धर्मकथानुयोग,

३. गणितानुयोग।

४. द्रव्यानुयोग।

चूर्णिकार के अनुसार प्रस्तुत आगम चरणकरणानुयोग (आचार शास्त्र) है[3]। शीलांकसूरि ने इसे द्रव्यानुयोग (द्रव्य शास्त्र) की कोटि में रखा है। उनके अनुसार आचारांग प्रधानतया चरण-करणानुयोग तथा सूत्रकृतांग प्रधानतया द्रव्यानुयोग है[4]।

---

१. (क) समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सू० ९०।
   (ख) नंदी, सू० ८२।

२. कसायपाहुड, भाग १, पृ० १३४।

३. सूत्रकृतांगचूर्णि पृ० ५।
   इह चरणाणुओगे ण अधिकारो।

४. सूत्रकृतांग वृत्ति, पत्र १
   तत्राचाराङ्गे चरणकरणप्राधान्येन व्याख्यातम्, अधुना अवसरायातं द्रव्यप्राधान्येयसूत्रकृताख्यं द्वितीयमङ्गं व्याख्यातुमारभ्यते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समवाय तथा नन्दी में द्वादशांगी का विवरण दिया हुआ है। वहां सभी अंगों के विवरण के अंत में 'एवं चरणकरणपरूवणता' पाठ मिलता है। अभयदेवसूरी ने 'चरण' का अर्थ श्रमण धर्म और 'करण' का अर्थ पिण्डविशुद्धि, समिति आदि किया है[१]।

चूर्णिकार ने कालिकश्रुत को चरणकरणानुयोग तथा दृष्टिवादको द्रव्यानुयोग माना है।[२]

द्वादशांगी में मुख्यतः द्रव्यशास्त्र दृष्टिवाद है। शेष अंगों में द्रव्य का प्रतिपादन गौण है। द्रव्यशास्त्र में भी गौणरूप में आचार का प्रतिपादन हुआ है। चूर्णिकार ने मुख्यता की दृष्टि से प्रस्तुत आगम को आचार शास्त्र माना है और वह उचित भी है। वृत्तिकार ने इसमें प्राप्त द्रव्य विषयक प्रतिपादन को मुख्य मानकर इसे द्रव्यशास्त्र कहा है। इन दोनों वर्गीकरणों में सापेक्ष दृष्टिभेद है।

ठाणं

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशांगी का तीसरा अंग है। इसमें संख्या-क्रम से जीव, पुद्गल आदि की स्थापना की गई है इसलिए इसका नाम ठाणं है।

विषय-वस्तु

प्रस्तुत आगम में 'स्वसमय' (अर्हत् का दर्शन), 'परसमय' तथा स्वसमय और परसमय— दोनों की स्थापना की गई है। जीव और अजीव, लोक और अलोक की स्थापना की गई है।[३] इसमें संग्रह नय की दृष्टि से जीव की एकता और व्यवहार नय की दृष्टि से उसकी भिन्नता प्रतिपादित है। संग्रह नय के अनुसार चैतन्य की दृष्टि से जीव एक है। व्यवहार नय के दृष्टिकोण से प्रत्येक जीव विभक्त होता है, जैसे—ज्ञान और दर्शन की दृष्टि से वह दो भागों में विभक्त है। कर्मचेतना, कर्मफल चेतना और ज्ञान चेतना की दृष्टि से अथवा ध्रौव्य, उत्पाद और

---

१. समवायांग वृत्ति, पत्र १०२ :

चरणम्—व्रतश्रमणधर्मसंयमाद्यनेकविधम्।

करणम्—पिण्डविशुद्धिसमित्याद्यनेकविधम्।

२. सूत्रकृतांगचूर्णि, पृ० ५।

कालियसुयं चरणकरणाणुयोगो, इसिभासिओत्तरज्झयणाणि धम्माणुयोगो, सूरपण्णत्तादि गणितानुयोगो, दिट्ठवातो दव्वाणुजोगोत्ति।

३. समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सू० ९१॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विनाश की दृष्टि से वह तीन भागों में विभक्त है। गति-चतुष्टय में परिभ्रमण करने के कारण वह चार भागों में विभक्त है। पारिणामिकआदि पांच भावों की दृष्टि से वह पांच भागों में विभक्त है। भवान्तर में संक्रमण के समय पूर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षिण, उर्ध्व और अध:—इन छह दिशाओं में गमन करने के कारण वह छह भागों में विभक्त है। स्यादस्ति, स्याद्नास्ति की सप्तभंगी की दृष्टि से वह सात भागों में विभक्त है। आठ कर्मों की दृष्टि से वह आठ भागों में विभक्त है। नौ पदार्थों में परिणमन करने के कारण वह नौ भागों में विभक्त है। पृथिवीकायिक, जलकायिक, अग्निकायिक, वायुकायिक, प्रत्येक वनस्पतिकायिक, साधारण वनस्पतिकायिक, द्वीन्द्रियजाति, त्रीन्द्रियजाति, चतुरिन्द्रियजाति और पंचेन्द्रियजाति की दृष्टि से वह दस भागों में विभक्त है।[1] इसी प्रकार प्रस्तुत आगम पुद्गल आदि के एकत्व तथा दो से दस तक के पर्यायों का वर्णन करता है। पर्यायों की दृष्टि से एक तत्त्व अनन्त भागों में विभक्त हो जाता है और द्रव्य की दृष्टि से वे अनन्त भाग एक तत्त्व में परिणत हो जाते हैं। प्रस्तुत आगम में इस अभेद और भेद की व्याख्या उपलब्ध है।

समवाओ

नाम-बोध—

प्रस्तुत आगम द्वादशांगी का चौथा अंग है। इसका नाम समवाओ है। इसमें जीव-अजीव आदि पदार्थों का परिच्छेद या समवतार है, इसलिए इसका नाम समवाओ है[2]। दिगम्बर साहित्य के अनुसार इसमें जीव आदि पदार्थों का सादृश्य-सामान्य के द्वारा निर्णय किया गया है; इसलिए इसका नाम समवाओ है[3]।

समवाओ में द्वादशांगी का वर्णन है। यह द्वादशांगी का चौथा अंग है; इसलिए इसमें इसका विवरण भी प्राप्त है।

द्वादशांगी का क्रम-प्राप्त विवेचन नन्दी सूत्र में है। उसके अनुसार समवाओ की विषय-सूची इस प्रकार है—

१. जीव-अजीव, लोक-अलोक और स्वसमय-परसमय का समवतार।
२. एक से सौ तक की संख्या का विकास।

---

१. कसायपाहुड भाग पृ० १२३

२. समवायांग वृत्ति, पत्र १ :
समिति—सम्यक् अवेत्याधिक्येन अयनमय:—परिच्छेदो जीवाजीवादिविविधपदार्थसार्थस्य यस्मिन्नसौ समवाय:, समवयन्ति वा—समवसरन्ति संमिलन्ति नानाविधा आत्मादयो भावा अभिधेयतया यस्मिन्नसौ समवाय इति।

३. गोमटसार, जीवकाण्ड, जीवप्रबोधिनी टीका, गाथा ३५६ :
"सं—संग्रहेण सादृश्यसामान्येन अवेयंते ज्ञायन्ते जीवादिपदार्था द्रव्यकालभावनाश्रित्य अस्मिन्निति समवायाङ्गम्।"

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. द्वादशांग गणिपिटक का वर्णन[1]।

समवायांग के अनुसार समवाओ की विषय-सूची इस प्रकार है[2]—

१. जीव-अजीव, लोक-अलोक और स्वसमय-परसमय का समवतार।

२. एक से सौ तक की संख्या का विकास।

३. द्वादशांग-गणिपिटक का वर्णन।

४. आहार	१४. योग
५. उच्छ्वास	१५. इन्द्रिय
६. लेश्या	१६. कषाय
७. आवास	१७. योनि
८. उपपात	१८. कुलकर
९. च्यवन	१९. तीर्थंकर
१०. अवगाह	२०. गणधर
११. वेदना	२१. चक्रवर्ती
१२. विधान	२२. बलदेव-वासुदेव।
१३. उपयोग	

दोनों विषय-सूचियों का अध्ययन करने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि समवायांग की नदि- त विषय-सूची संक्षिप्त है और समवाओ-गत विषय-सूची विस्तृत। विषय-सूची के आधार पर प्रस्तुत सूत्र का आकार भी छोटा और बड़ा हो जाता है।

दोनों विवरणों में 'सौ तक एकोत्तरिका वृद्धि होती है' इसका उल्लेख है। अनेकोत्तरिका वृद्धि का दोनों में उल्लेख नहीं है। नन्दीचूर्णी, हारिभद्रीयावृत्ति तथा मलयगिरीयावृत्ति—इन तीनों में अनेकोत्तरिका वृद्धि का कोई उल्लेख नहीं है। समवायांग की वृत्ति में अभयदेवसूरि ने अनेकोत्तरिका वृद्धि की चर्चा की है। उनके अनुसार सौ तक एकोत्तरिका वृद्धि होती है और उसके पश्चात् अनेकोत्तरिका वृद्धि होती है[3]।

वृत्तिकार का यह उल्लेख समवायांग के विवरण के आधार पर नहीं, किन्तु उपलब्ध पाठ के आधार पर है—ऐसा प्रतीत होता है।

---

१. नन्दी, सू० ८३ :
से कि तं समवाए ? समवाए णं जीवा समासिज्जंति, अजीवा समासिज्जंति जीवाजीवा समासिज्जंति। ससमए समासिज्जइ, परसमए समासिज्जइ, ससमय-परसमए समासिज्जइ। लोए समासिज्जइ, अलोए समासिज्जइ, लोयालोए समासिज्जइ। समवाएणं एगाइयाणं एगुत्तरियाणं ठाणसयं-निवड्ढियाणं भावाणं पह्नवणा आघविज्जइ, दुवालसविहस्स य गणिपिडगस्स पल्लयग्गे समासिज्जइ।

२. समवाओ, पइण्णगसमवाओ, सू० ९२।

३. समवायांग, वृत्ति, पत्र १०५ :
'च शब्दस्य चान्यत्र सम्बन्धादेकोत्तरिका अनेकोत्तरिका च, तत्र शतं यावदेकोत्तरिका परतोऽनेकोत्तरिकेति।'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दोनों विवरणों की समीक्षा करने पर दो प्रश्न उपस्थित होते हैं—

१. नन्दी में समवायांग का जो विवरण है, उससे उपलब्ध समवायांग क्या भिन्न नहीं है ?

२. क्या उपलब्ध समवायांग देवर्धिगणी की वाचना का है ? यदि है तो समवायांग के दोनों विवरणों में इतना अन्तर क्यों ?

प्रथम प्रश्न के समाधान में यह कहा जा सकता है कि नन्दीगत समवायांग-विवरण के अनुसार समवायांग सूत्र का अन्तिमविषय द्वादशांगी के आगे अनेक विषय प्रतिपादित हैं। इससे ज्ञात होता है कि समवायांग का वर्तमान आकार नन्दीगत समवायांग-विवरण से भिन्न है।

दूसरे प्रश्न का निश्चयात्मक उत्तर देना कठिन है, फिर भी इतना कहा जा सकता है कि आगमों की अनेक वाचनाएं रही हैं। इसीलिए प्रत्येक अंग के विवरण में अनेक वाचनाओं (परित्ता वायणा) का उल्लेख किया गया है। अभयदेवसूरि ने समवायांग की बृहद्-वाचना का उल्लेख किया है[1]। इससे अनुमान किया जा सकता है कि नन्दी में लघु वाचना वाले समवायांग का विवरण है।

अभयदेवसूरि को प्रस्तुत-सूत्र के वाचनान्तर प्राप्त थे, ऐसा उनकी वृत्ति से ज्ञात होता है[2]।

समवायांग परिवर्धित आकार के विषय में दो अनुमान किये जा सकते हैं—

१. प्रस्तुत सूत्र देवर्धिगणी की वाचना से भिन्न वाचना का है।

२. अथवा द्वादशांगी के उत्तरवर्ती अंश देवर्धिगणी के पश्चात् इसमें जोड़े गए हैं।

यदि प्रस्तुत सूत्र भिन्न वाचना का होता तो इस विषय में कोई अनुश्रुति मिल जाती। ज्योतिष्करण्ड माथुरी वाचना का है--यह अनुश्रुति बराबर चलती आ रही है। उपलब्ध समवायांग भी यदि माथुरी वाचना का होता तो उस विषय की कोई अनुश्रुति मिल जाती।

प्रथम अनुमान की पुष्टि की संभावना कम होने पर दूसरे अनुमान की संभावना बढ़ जाती है। किन्तु भगवती तथा स्थानांग से दूसरे अनुमान का भी निरसन हो जाता है। भगवती में कुलकर, तीर्थंकर आदि के पूरे विवरण के लिए समवायांग के अन्तिम भाग को देखने की सूचना दी गई है[3]। इसी प्रकार स्थानांग में भी बलदेव-वासुदेव के पूरे विवरण के लिए समवायांग के अन्तिम भाग को देखने की सूचना दी गई है[4]। इससे ज्ञात होता है कि परिशिष्ट-भाग देवर्धिगणी के समय में ही जोड़ा गया था।

---

१. (क) समवायांग वृत्ति, पत्र ५८ : बृहद्वाचनायामनन्तरोक्तमतिशयद्वयं नाधीयते।

(ख) वही, पत्र ५९ : बृहद्वाचनायामिदमन्यदतिशयद्वयमधीयते।

२. समवायांग वृत्ति, पत्र १४४ : वाचनान्तरे तु पर्युषणाकल्पोक्तक्रमेणेत्यभिहितम

३. भगवई शतक ५, उद्देशक ५।

४. ठाणं ६।१९,२०।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक आगम के लिए एक संकलनकार के द्वारा दो प्रकार के विवरण (समवायांग तथा नंदी में) दिए गए—यह विचित्र बात है।

माथुरी और वल्लभी—ये दो मुख्य वाचनाएं थीं। गौण वाचनाएं अनेक थीं। इसीलिए अनेक वाचनान्तर मिलते हैं। ये वाचनान्तर संभवतः व्याख्यांश या परिशिष्ट जोड़ने से हो जाते। समवायांग में द्वादशांगी का उत्तरवर्ती भाग उसका परिशिष्ट भाग है—ऐसी कल्पना की जा सकती है। परिशिष्ट का विवरण समवायांग के विवरण में परिवर्धित किया गया, इसलिए उसकी विषय-सूची नन्दीगत समवायांग की विषय-सूची से लम्बी हो गई। परिशिष्ट भाग में प्रज्ञापना के ग्यारह पदों का संक्षेप है, ये किस हेतु से यहां जोड़े गए, यह अन्वेषण का विषय है।

कार्य-संपूर्ति

प्रस्तुत आगमों के पाठ-संशोधन में अनेक मुनियों का योग रहा है। उन सबको मैं आशीर्वाद देता हूँ कि उनकी कार्यजा शक्ति और अधिक विकसित हो।

इसके सम्पादन का बहुत कुछ श्रेय शिष्य मुनि नथमल को है, क्योंकि इस कार्य में अहर्निश वे जिस मनोयोग से लगे हैं, उसी से यह कार्य सम्पन्न हो सका है। अन्यथा यह गुरुतर कार्य बड़ा दुरूह होता। इनकी वृत्ति मूलतः योगनिष्ठ होने से मन की एकाग्रता सहज बनी रहती है। सहज ही आगम का कार्य करते-करते अन्तर्रहस्य पकड़ने में इनकी मेधा काफी पैनी हो गई है। विनयशीलता, श्रम-परायणता और गुरु के प्रति पूर्ण समर्पण भाव ने इनकी प्रगति में बड़ा सहयोग दिया है। यह वृत्ति इनकी बचपन से ही है। जब से मेरे पास आए, मैंने इनकी इस वृत्ति में क्रमशः वर्धमानता ही पाई है। इनकी कार्य-क्षमता और कर्त्तव्य-परता ने मुझे बहुत संतोष दिया है।

मैंने अपने संघ के ऐसे शिष्य साधु-साध्वियों के बल-बूते पर ही आगम के इस गुरुतर कार्य को उठाया है। अब मुझे विश्वास हो गया है कि अपने शिष्य साधु-साध्वियों के निस्वार्थ, विनीत एवं समर्पणात्मक सहयोग से इस बृहत् कार्य को असाधारण रूप से सम्पन्न कर सकूँगा।

भगवान् महावीर की पचीसवीं निर्वाण शताब्दी के अवसर पर उनकी वाणी को जनता के समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अनिर्वचनीय आनन्द का अनुभव हो रहा है।

अणुव्रत विहार, नई दिल्ली-१
२५००वां निर्वाण दिवस

आचार्य तुलसी

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Editorial

Ayaro

The text of the Āćārānga, adopted by us, does not depend on one specimen only. We have adopted it on the review with reference to the specimens in use, the Ćūrṇi and the Vṛitti. The three sūtras (27-29) in the second 'Uddeśaka' of the first Adhyayana of the 'Āyāro' are found in all the other five Uddeśakas also. In the specimens used in the redemption of the text as well as in the Āćārānga Vṛitti they are not found. In the Āćārānga Ćurṇi, commencing from the Sūtrā 'lajjamāṇā puḍhopasa' (Āyāro, Sū. 16, page 4) to the Sūtra 'Appege Sampamārae, Appege Uddawae' (Āyāro, Sū. 29, page 6), it is considered as 'Dhruvakanḍikā' (the one and the same text)[1].

On the basis of the indications found in the Čūrṇi, we have adopted the three Sūtras in the second Uddeśaka in the rest five Uddeśakas.

In place of 'Kumbhārāyataṇamsi wā, in the Ćūrṇi[2] of the second Uddeśaka (Sū. 21) of the eighth Adhyayana, many a word is found, e.g. 'uwattaṇagihe wā, gāmdeulie wā, kammagārasālāe wā, tantuwāyagasālāe wā, lohagārasālāe wā'. The Čūrṇikāra further writes—'Jaćiyāo Sālā Sawwāo māṇiyawwāo'[3].

Here it appears that the word 'Kumbhārāyataṇamsi wā' was added with many other words meaning 'Śālā' or house but, in the course of time due to the faulty scribing, all the other words were left out. It is not possible to decide the text-system on the basis of the Čūrṇi only. This is why it has not been included in the text.

1. See—Ayaro, page 8, footnote no 2, page 11 ; footnote no. 2, page 14 ; footnote no 1, page 16 ; footnote no. 3, page 19 ; footnote no. 4.
2. Acaranga Curni, page 260–261
3. Acaranga Curni, page 261.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

We have completed the abridged text, too. The tradition to abridge the text was in vouge due to learning of the Śruta by heart and making the scribing easy. Pandit Bećar Das Joshi had written to Āćarya Tulsi, throwing light on this topic in an article, on 8th December 1966. He observes, "The traditional Jain Śramaṇas considered the tendency to write and get written as sinful activities. They, nevertheless, adopted this path as an acception to safe-guard the scriptures. The less writing, the better. Taking this they, surely, tried to search out the way to reduce the sinful activity to the least for the safeguard of the scriptures. In the search of this path they found two novel words as 'Waṇṇao' and 'Jāwa'. With the help of these two words, they could abridge thousands of Ślokas and hundreds of sentences and their beginning was shortened as well as no deficiency occured in understanding the meaning of the scripture."

Three reasons—the system to learn the Śruta by heart, convenience by the script and the intention to write briefly, are probable to cause the abridgement of the text. It has undoubtly, caused no deficiency in the meaning, but it has marred the charm of the text. The difficulties of the reader have also increased. The Munis, having the whole Āgama literature learnt by heart, can make out the antecedents and precedents referred to by the words 'Jāwa' and 'Waṇṇaga' but the class of Munis learning with the help of the manuscripts cannot do so. The text, having the references of 'Jāwa' and 'Waṇṇaga', has not proved to be much beneficial to them. We, too have been experiencing this difficulty apparently. To solve this difficulty and bring back the beauty of the text Āćarya Tulsi, our Vāćanā-head, desired that the abridged text be recompleted. We have accordingly, completed the abridged text in most places. To indicate that 'dot-marks' have been given. In the first and the second appendices, the tables to point out the places of completion in the 'Āyāro' and the 'Āyāra-ćūla' have been added.

According to Bećara Das Joshi, the text-abridgement was done by Devardhigaṇi Kśamāśramaṇa. He writes—"Devardhigaṇi Kśamāśramaṇa, while reducing the Āgamas in writing, kept some important points in mind. Where ever he found similar readings he avoided the later one by using the words e.g. 'Jahā Uwawāie', 'Jahā Paṇṇawaṇae' etc. to denote the omitted text. When some statement occured again and again in a work, he used the word 'Jāwa' and wrote the last word of it refraining from the repetition, e. g. 'Nāga Kumārā Jāwa wiharanti', 'Teṇa Kāleṇa Jāwa Parisā Niggaya' etc.'[1]

1. Jain Sahitya ka Vrihat Itihas, page 81.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

The process of abridgement might have been started by Devardhigaṇi, but it developed in later period. In the specimens, available at present, the abridged text is not uniformal. A Sūtra has been abridged in one specimen but written in its full version in the other. The commentators have also mentioned it in many places. In the Āupapatik Sūtra, for example, these two passages, "Ayapāyāṇi wā Jāwa Aṇṇayarāin wā" and 'Ayabandhaṇaṇi wā Jāwa Aṇṇayarāin wā' are found. They were in the abridged form in the main specimens the Vṛittikāra had, but their ful version too, was found in other specimens. The commentator himself has noted it[1]. Many a time, the scribes, according to their own convenience did not write the preceding text again others followed them in the later specimens.

SŪYAGADO

We have adopted the text of the Sūtra Kṛita depending not on one specimen only. It has been redeemed after the comparative study, based on the specimens used in the text-redemption, the Ćūrṇi and the readings of the Vṛitti, and their critical review as well.

The system to write was little popular in ancient times. Almost all the scriptures were maintained traditionally learnt by heart. This is why the 'Ghośa-Suddhi' (correctness of pronounciation) was much stressed upon. This was a pious duty of the Āćārya to correct the seat of utterence of the disciples. The Daśāśrutaskandha Sūtra says[2]—to become 'Ghośa-Sudhi-Kārka' is one of the virtues of an Āćārya. Special arrangement was there to maintain the text and the meaning in the original form. The Ćhedasūtras throws full light on it.

Eight kinds of the Jñānāćāra have been enumerated[3]. Of them, the three Āćāras are concerned with the said arrangement.
They are[4]—

---

1. (a) Aupapatika Vritti, patra 177.
   (b) Pustakantare Samagramidam Sutradwayamastyeveti.
2. Dasasrutaskandha, Dasa 4.
3. Nisithabhasya, Gatha 8, part 1, page 6:
   Kale vinaye bahumane, uwadhane taha aninhawane,
   wanjana-atthatadubhae, atthawidho nanamayaro.
4. Ibid, gatha 17, part 1, page 12:
   Sakkayamattabindu Annabhidhanena wa witam Attham,
   Wanjeti Jena Attham, wanjanamiti bhannate suttam.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1. Vyanjana—To maintain the language, vowel-marks, nasal points and words of the text of Sūtra, as it is.

2. Artha—To maintain the purport (meaning) of the sutra as it is.

3. Vyanjana as well as artha—To maintain the Sūtra and its meaning both in the original form.

The Ćūrṇikāra makes it clear with examples[1]. 'Dhammoma ngalam mukkiṭṭham' is expressed in Prākṛit language. To render this reading in Sanskṛit 'Dharmo Mangalamutkṛiṣṭam' as such is a dialectical sin of Vyanjana.

In the same way, to utter 'Sawwam sāwwajjam Jogam paććakkhāami' as 'Sawwesāwajje joge paććakkhami' by changing its vowels is a diacritical sin of Vyanjana.

likewise, to utter 'Namo arahantāṇani' as 'Namo arahantāṇa' omitting the therepotent point of nasal sound and also to pronounce 'Namo aramhantāṇam' adding the point of nasal sound with 'ra' when it is not there, is a nasal-point-change sin of Vyanjana.

To bring in the synonyms, in place of the original words of 'Dhammo mangalam mukkittham', such as 'Puṇam Kallāṇa mukk osam' is also a different-word-sin of Vyanjana.

The conclusion of all this account is to stress upon that the originality of language, vowel mark, point of nasal sound, word, word-number, and text-order must be maintained in all respects. Rules were laid down to expiate the sin against this arrangement. On changing the language, the vowel-mark or the point of nasal sound one has to undergo the specified atonement. On doing the Sūtra-Pātha otherwise an expiation of four months followed.[2]

In the conclusion of the topic, the Ćūrnikāra writes[3]—A change of Sūtra causes a change of meaning, a change of meaning causes a change of

---

1. Nisithabhasya curni, Part I, page 12.
2. Ibid.
3. Nisithbhasya, Gatha 18, Curnibhasya I, page 12.
Suttabheya atthabheo, atthabheya caranabheyo, caranabheya amokkho. Mokkhabhawat dikkhadayo Kiriyabheda aphala bhawanti. Taha vanjanabhedo na kayawwo.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

conduct and the change of conduct makes the salvation impossible. In that case all the rites, such as Dīkšā etc. become futile. A change of Vyanjana, therefore, be not done.

Likewise, a change of meaning also be not made. The meaning that is uncouth and not applicable be not carried out. On changing the meaning, an expiation for four months follows[1].

Similarly, on changing the Sūtra and its meaning together, both the aforesaid expiations fall on[2].

A deep thinking had taken place to maintain the originality of the Sūtras and their meaning even in the period of composition of the Āgamas. In the present Sūtra, it is clearly stated. A muni studying the work has been alerted that he in no way is set up a Sūtra and its meaning differently or expound it otherwise.[3] The Ćūrṇikāra annotates it thus[4]. In no way a Sūtra be done otherwise. The meaning and that meaning only be carried out which is consistant with its own principle. The Vṛittikara writes[5]—A Sūtra be not added to intentionally or a Sūtra or its meaning be not done otherwise.

From the aforesaid account it is learnt that it was keenly endeavoured to maintain the Sūtra and its meaning in its original form. As a result, it has been maintained also to some extent. We can, nevertheless, not say that it has not been changed. It has been done and the reasons for it are also there, e.g.

1. Forgetfulness

---

1. Nisithbhasya Curni, part 1, page 13.
2. Ibid.
3. Sutrakrita 1/14/26.
   No Suttamattha cakarejja annam.
4. Sutrakrita Curni, page 296.
   Na Sutramanyat praddhesena karotyanyathawa. Jaha ranno bhattansino ujjawalaprasno namarthas tamapi nanyatha kuryat; Jaha 'Awantike Awantieke Yawanti tamtogo wipparmsanti'. Sutram sarwathaiwanyatha na Kartawyam, arthavikalpastu swasiddhantavinuddho aviruddah syat.
5. Suttrarkitavrtti, page 258.
   Na ca Sutramanyat Swamativikalpanatah swarparatrayi Kuritanyatha wa suttram todartha wa sansarattrayitrana sito jantunam na vidadhita.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

2. Change of script
3. Assimilation of the commentary with the text.
4. Intervention of time and place.

When Sīlāṅkarsūri wrote his Vṛitti on the 'Sūtrakṛita', he had its specimens and ancient commentary (Tīka) both. In one place of the second Addhyayna of the second Śrutāskandha, the reading was not similar to that of the specimens, and the reading, that was commented on, was not found consistant with that of any specimen. He, therefore, commented on the said passage honouring only one specimen.[1]

We have adopted the readings of the Ćūrṇī in some places. In comparision to that of the specimens and the Vṛitti they appear more relevant.

In 2/6/45 the reading is 'ṇiho nisam'. It has been commented on in the Vṛitti as 'ṇiwo ṇisam'. We have adopted the reading of the Ćūrṅi there[2].

We have discussed the changes in the text and their causes under the footnotes. It was keenly endeavoured in the Vedic tradition also to maintain the originality of the text of the Vedas. But in their texts, too, there have been timely violations. Dr. Viśwabandhu writes[3]—"It is a fact accepted by all that great pains, which know no parallel in the world history of literature, were taken in this country to maintain the texts of the Vedic literature in their original and correct form by learning them by heart with great care and utmost reverence during the past five thousand years. Nevertheless, as the scholars, preceding to us, inicidently found here and there as we have largely seen during our incessant research work for the past forty years, these works, too, could not be saved from the effects of time bound damages and insufficient human hurlings. Had it been mostly the other way, truly, it would be an incredible miracle."

Continuing with the tradition of cramming and passing from one to the other age of script-change in the prolonged period. Some places of every work have deviated from their originality

---

1. Suttrakritavritti, page 79 :
   Iha ca prayah suttradarsesu nanabhidhani Suttrani drisyante, na ca tika sambadhekapyasmabhiradarsah samuphabdhot ekamadarsamangikrityasmabhi viwaranam kriyate.
2. See, Footnote on 2/6/45.
3. Akhilabharatiya praciya-vidya Sammelan, Twentifourth gathering, Varanasi 1968, Mukhyadyaksiya speech, page, 8-9.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

THĀNAM

A word has different forms in Prākṛit, and these different forms are used, too, in the Āgamas. Some scholars, engaged in the editing work of the Āgamas, have stressed upon that the uniformity in the form of words should be brought up. We have not adopted this method of editing. Although accepting the sameness of the sound 'na' and 'ṇa', only 'ṇa' has been used in all the places, the principle to bring up uniformity in different forms everywhere has not been observed. In 3/373 two forms 'Sugati' and 'Suggati' are found; in 3/375 'Sogata', 'Sugata' and 'Suggata', three forms are found. We have adopted them as they are. The authors are free in their usages. As they are not the bondsmen of the rule of uniformity, to try to bring uniformity in the editing-work does not seem desirable.

The Āgamas contain the usages of different languages and syllable changes. In bringing up uniformity in them, the probability to forget the multiformity may arise. 'Wayeṇam' as well as 'Kamasā' both the forms are used. 'Aṇḍaya' as well as 'Aṇḍagā' for 'Aṇḍajāh' and 'Kammabhumiyā' as well as 'Kammabhūmigā' for 'Karmabhumijāh' both the forms are formed. To keep up the form as found in a particular place is not a fault of editing.

SAMAWĀO

The text redemption of this Sūtra is based on three specimens and the Vṛitti as well. In some places other works, too, have been used to redeem the text. In the specimens of the 'Prakīrṇa Samawāya' (Sūtra 234) the reading 'Assaseṇe' is not found. This is the name of the father of fourth Cakrawarti. In the absence of it, the arrangement of further names becomes inconsistent. In the Sangraha Gathas of the said Sūtra, the name 'Padmottara' is in excess. It has been taken as a recension. The reading 'Assaseṇe' is found in the Āwaśyaka Niryukti (399). Basing on it 'Assaseṇe' has been adopted as the text-reading.

In the Sangraha Gatha of the Prakirṇa Samawāya (Sūtra 230) Baldeva-Vasudeva's father's name are given. Basing on the Sthānānga (9/19) and the Āwaśyaka Niryukti the amendment has been carried out. The name of the third Baladeva-Vāsudeva's father is 'Rudda', but the manuscript of the Vṛitti of Samawāyānga mentions it as 'Soma' instead of 'Rudda'. In fact, 'Rudda' should follow 'Soma'.

1. See, Samawao, painnagasamawao, Sutra. 230, the first footnote.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

In all the specimens of the Samawāya 30 (Sūtra 1, gatha 26) it reads 'Sajjhayawāyam'. The vrittikāra, too, explains it as 'Swādhyāyawādam'. But it is not relevent as far as the meaning is concerned. The said 'gāthā' is found in the Daśāṣrutaskandha (Sūtra 26) where the reading is 'Sabbhāwawāyam' instead of 'Sajjhayawāyam'. The Vṛittikāra of 'Daśāsrutaskandha' has given its Sanskrit form as 'Sadbhāwa wādam'. On reviewing the meaning critically, this reading appears to be relevent[1].

---

1. See, Saṃawao, Saṃawaya 30, Suṭra. 1, the second footnote of Sutra 230.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Forward

The Classification of the Agamas

The most ancient part of the Jain literature is the Āgama. The Samawāyānga mentions two forms of the Āgama, such as, 1. Dwadaśanga gaṇipitaka[2] and 2. Ćaturadaśapūrwa[3], In the Nandi, two divisions of the Śrūta-Jyāña (Āgama) have been given. 1. Anga Pravişṭa and Anga-vāhya[3]. The accounts, found regarding the Adhyayanas of the Sādhus and Sadhwis (monks and nuns), pertain to the Angas and pūrwas, as

1. The readers of the eleven Angas beginning from the Sāmayika—

Sāmāiyamāiyāin ekkarasa-angāin ahijajai (Antagaḍa, Prathama Varga). This statement is found regarding Gautama, the disciple of lord Ariṣtanemi.

Sāmāiyamāiyāin ekkarasa angāin Ahijajai (Antāgaḍa, Panćam Varga, Prathama Adhyayana). This statement relates to Padmavati, the disciple of lord Ariṣtānemi.

Sāmāiyamāiyāin ckkarasa-angāin (Antagaḍa, Aṣtama Varga, Prathama Adhyayana). This statement pertains to Kāli, the disciple of lord Mahavīra.

Sāmāiyamāiyāin ekkarasa-angāin Ahijajai (Antagaḍa Saṣṭa Varga, 15th Adhyayana). This statement has been given regarding Atimukta-kumara, the disciple of lord Mahavīra.

2. The readers of the twelve Angas—

The statement regarding Jālīkumāra, the disciple of lord Ariṣtanemi, is given as such Bārasangī (Antagaḍa, Ćaturtha Varga, Prathama Adhyayana).

1. Samawayanga, Prakirnaka, Samawaya, Sutra. 88.
2. Ibid, Samawaya 14, Sutra. 2.
3. The Nandi, Sutra. 43.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

3. The readers of the fourteen Pūrwas—

Čauddasapuwwāin ahijjai (Antagaḍa, tritiya Varga, Navama Adhyayana). This is the statement found regarding Sumukhakumāra the disciple of lord Ariṣtanemi.

Sāmāiyamāiyāin Čauddasapuwwāin ahijjai (Antagaḍa, tritīya Varga, Prathama Adhyayana). This statement is found regarding Aṇiyasakumāra, the disciple of lord Ariṣtanemi.

There were three hundred and fifty ćaturdaśa-pūrwī munis of lord Pārśwa.[1]

There were three hundred ćaturdaṣa- pūrwī munis of lord Mahāvirā.[2]

The division, Anga-Praviṣta and Anga-Vāhya, have not been given in the Samawāyānga and Anuyogadwāra. This division first have been made in the Nandi. The later sthaviras composed the Anga-Vāhya. Many anga-vāhyas had been composed before the composition of the Nandi and they were done by the ćatūrdaśa-pūrwi or daśa-pūrwi sthaviras. They were, therefore, taken as solemn as the Āgama and two divisions were made of it such as, 1. Anga-praviṣta and 2. Anga-Vāhya. This division is not found in the Anuyogdwāra (sixth century of the Vira-Nirwaṇa). This was first done in the Nandi (tenth century of the Vira-Nirwaṇa)

When the Nandi was composed, the Āgama was classified threefold, 1. Pūrwa, 2. Anga-Praviṣta and 3. Anga-Vahya. What we have today is only 'Anga-Pravista and 'Anga-vahya'. The 'purwas' are extinct. Their extinction is a subject of delibration from the historical point of view.

PŪRWA

According to the Jaina tradition, the Pūrwa is the Akśaya-Koṣa (in exhaustible lexicon) of the Śruta-Jyaña (word knowledge). All do not hold one and the same view about the meaning of the title and their composition. The ancient Āćāryas hold that as they were composed before the 'Dwādaśāngī' they were given the title 'Purwa'[3] But the modern, scholars

1. Samawayanga, Prakirnaka Samawaya, Sutra. 14.
2. Ibid, Sutra. 12.
3. Samawayanga vritti, Patra 101:

   Prathamam Purwam tasya Sarwa pravacnat purwam Kriyamanatwat.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

view that the 'Pūrwa' was the Śruta-Rāśi of the tradition of lord 'Pārśwa and preceding to Lord Mahāvīra, it was, therefore called 'Pūrwa'. Whatever view of the two is accepted, the conclusion is the same that the 'Pūrwas' were composed before the 'Dwadaśāngī' or the 'Dwādaśangi' is a later composition than the 'Pūrwas'[1].

In the form the 'Dwādaśāngi' is now found, the 'Pūrwas' are assimilated. The twelfth Anga is 'Driṣṭiwāda'. One of its divisions is 'Pūrwagata'. The fourteen 'Pūrwas' are included in it. The opinion that lord Mahāvira first composed the 'Pūrwagata 'Śruta', leads us to the conclusion that the forteen 'Pūrwas' and the twelfth Anga are one and the same. The 'Pūrwa-śruta was very difficult to understand. The common people could not follow it. The Angas were composed for the benefit of less intelligent persons. Jinabhadra-gaṇī Kśamāśramaṇa says 'The Dṛiṣṭiwāda contains all the word-knowledge (śabda-Jyaña). The eleven Angas, nevertheless, have been composed for the good of less intelligent people.[2] The eleven Angas were studied only by those monks (Sadhus) who were not very intelligent. The intelligent munis studied the 'Pūrwas'. From the order of classification of the Āgama, it is concluded that the eleven Angas are easier than Dṛiṣṭiwāda or Pūrwas or have been in a different order from theirs.

According to the Digambara tradition the Kewalis became extinct after 62 years of 'Vīra-nirwāṇa'. After that, for a hundred years only Srūta-Kewalis (Caturdaśa-Pūrwis) were found. Beyond that for one hundred and eightythree years only Daśapūrvīs were found. And, later to them for a period of two hundred and twenty years only the eleven-Angadharas were found.[3]

The discussion, given above, makes it quite clear that so long as the Āćāra etc. Angas were not composed, the Śruta-Raśī of lord Mahavira was called 'Ćaudaha Pūrwaś or 'Dṛiṣṭīwāda'. When the eleven Āćāra

---

1. Nandi, Malayagiri vritti, Patra 240.
   Anye tu wyacaksate purwam purwagatasutrarthamarhan bhaste, Ganadhara api purwam purwagata Sutram Viracayanti, Pascadaearadikam.
2. Visesawasyaka Bhasya, Gatha 554.
   Ja-i-wi ya Bhutawa-e sawwassa waogayassa Nijjuhana Tahawi hu, dummehe pappa itthi oyaro ya.
3. Jayadhawala, Prastawana, Page 49.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

etc. Angas were composed, the Dṛiṣṭiwāda was given in the form of the twelfth Anga.

Though the two different accounts[1], such as, 'readers of the twelve Angas' and 'readers of the fourteen Pūrwas' are found, it cannot be said that the scholars in the fourteen Pūrwas were not scholars in the twelve Angas and vice-versa. Gautama Swami was called 'Dwādaśāngavit'[2]. He was a 'ćaturdaśa-pūrvī' as well as 'Angadhara'. A 'śruta-kewali' was somewhere called 'Dwādaśāngavit' and sometimes 'ćaturdaśa-pūrvī' as well.

As the eleven Angas are taken from or a collection of the Pūrwas, a 'ćaturdasa-pūrvi' is, of course, a 'Dwādaśangī' also. As the fourteen Pūrwas are incorporated in the twelfth Anga, a 'Dwādaśāngavit' too. We, therefore, reach this conclusion that the Āgama had only two ancient classifications 1. the Fourteen Pūrwas and 2. the eleven Angas. The 'Dwādaṣangi' had no independent standing. This is the title given to the Pūrwas and the Angas jointly.

Some modern scholars hold the Pūrwas, to be of the period of lord Pārśwa and the Angas of lord Mahāvīra. But this view is not correct. The tradition of the Pūrwas and the Angas was prevelent at the time of lord Ariṣṭanemi and lord Pārśwa too. That the Angas were composed for the use of less intelligent people has been told before. That the intelligence quotient of all the Munis at the time of lord Pārśwa was equal is incredible. The intelligence quotients have always differed in each and every age. Considering from the psychological and practical view, we reach the conclusion that the necessity of the Angas prevailed in the order of lord Pārśwa too. To support this view that at the time of lord Pārśwa only the Pūrwas and not the Angas existed, no evidence is, therefore, found. By common sense this fact is estabilished that the Pūrwas and the Angas were renovated according to the purport, language, style and necessity of the age in the order of lord Mahāvīra. Fancy has, perhaps, played a main role to support the view that the Pūrwas were received traditionally from lord Pārswa and the Angas were composed in the tradition of Lord Mahāvīra.

3. Anga-Praviṣṭa and Anga-Vāhya

It is heard by all that the gaṇadharas Gautama etc., composed the Pūrwas and the Angas at the time of lord Mahāvīra. A simple question

---

1. See the beginning of the preface.
2. Uttaradhyayana 23/7

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

arises if other Munis did not compose the Āgama works. There had been fourteen thousand desciples of lord Mahāvīra[1]. Of them seven hundred were 'Kewalīs' and four hundred 'Wādīs'. That they did not take part in the composition of the Āgamas does not seem credible. The Nandī says that the disciples of Lord Mahāvīra composed fourteen thousand 'Prakīrṇakas'[2] besides the aforesaid 'Pūrwas' and 'Angas'. Nothing proves that the classification, such as 'Anga-Praviṣṭa' and 'Anga-Vāhya' was done at that time. When the later Ācāryas compiled the works after the 'Nirwana' of lord Mahāvīra, the discussion was, perhaps, held to classify them under the Āngamas or not and the question of their authenticity, too, arose. After the discussion it was decided to classify the works, composed by the 'ċaturdasa-pūrvī' and the 'Dasa-pūrvī' sthaviras, under the Āgama but they were not considered authentic by themselves. Their authenticity depended on others. That they are consistent with the 'Dwādaśāngī' was the touch-stone to give them the title of the Āgama. As their authenticity was dependent, the necessity was felt to keep them out of the class of the 'Anga Praviṣṭā' and, in this content only, the 'Anga-Vahya' class of the Āgama took place.

Jinabhadragaṇi Kṣmāṣramaṇa ascertains the kinds of 'Anga-Praviṣṭa and 'Anga-Vahya' on three grounds, such as—

1. That which is composed by a gaṇadhara.

2. That which is expounded by a Tīrthankara on the query of a gaṇadhara.

3. That which is pertaining to the firm-eternal truths, and is perpetual and permanent; and that Śruta only is entitled as 'Anga-Praviṣṭa'.

Contrary to this 1. that Śruta which is composed by a Sthavira, temporary or suited to the times only is entitled as 'Anga-Vāhya'[3].

The main ground to differenciate the Anga-Praviṣṭa from the Anga-

1. Samawayanga, Samawaya 14, Sutra 4.
2. Nandi, Sutra. 78.
   Coddaspa-i-nnagasasahassani Bhagwa-O Baddhamanassa.
3. Visesavasyakabhasya, Gatha 552.
   Ganahara-therakatham wa, Aesa. Mukka-wagarana-O wa. Dhuva-cala visesa-O wa, Anganamgesu Nanattam.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

vāhya is based on the difference of the person who has spoken it[1]. The Āgama delivered by Lord Mahavira and compiled by the gaṇadharas, is accepted as the basic Angas of the Śruta-Puruṣa. It is, therefore called the 'Anga-Praviṣṭa.' According to Sarvārthsiddhi the speakers are of three kinds, 1. the Tīrthankara, 2. the Śruta-Kewali and 3. the Ārātiya[2]. The Āgamas Composed by the Ārātīya Āćāryas are regarded as 'Anga-Vāhya'. According to Āćārya Akalanka, the Āgamas composed by the Ārātiya-Āćārya reflect the meaning supported by the Angas[3]. They are, therefore, called the 'Anga-Vāhyas.'[3] The Anga-Vāhya Agamas are as good as the Pratyanga or Upānga of the Śruta-purusa.

ANGA

The twelve Āgamas incorporated in the Dwādaśāngī are called Angas. The word 'Anga' is found in the literature of Sanskrit and Prakrit both. In the Vedic literature the works assisting the study of Vedas are given the title of 'Anga' They are six—

1. **Siksa**—The work that expounds the rules of utterence of the words.
2. **Kalpa**—The scripture that expounds the vedic rites and rituals in an order and agreement.
3. **Vyakarana**—The scripture that expounds the theories of morphology and meaning of the words.
4. **Nirukta**—The scripture that expounds etamology of the words.
5. **Chandas**—The scripture that expounds the theories of morpheme to recite the Mantras.
6. **Jyotis**—The scripture that expounds the theories to find correct time for the rites of Yajna-Yāga etc.

The Vedas have been personified in the Vedic-literature. Accordingly the 'Sikṣā' has been regarded as nose, the' kalpa' as hands, the 'Vyākaraṇa' as mouth, the 'Nirukta' as ears, the Čhandas as feet and the Jyotiṣ as eyes of the Veda-person. They are therefore, called the parts of the body of Vedas[4]. In the Pali-literature, too, the word 'Anga' has beenu sed. At one place the 'Buddha-Vaćanas' have been called 'Nawānga' and 'Dwādaṣānga' at the other.

---

1. Tatwartha-bhasya, 1/20.
   Waktri-visesad dwaividhyam.
2. Sarvarthasiddhi, 1/20
   Trayo waktarah - Sarvajna Tirthankarah, itaro wa Srutakewali Aratiyasceti.
3. Tattwartha - Rajavarttika, 1/20.
   Aratiayacarya Kritangarthapratyasannarupamangavahyam.
4. Paniniyasiksa, 41, 12.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Nawanga

1. **Sutta**—The sermons of lord Buddha in prose.
2. **Geyya**—The mixed portion of prose and verse.
3. **Vaiyyakarana**—The works containing explanation.
4. **Gatha**—The works composed in verse.
5. **Udana**—The gistful and affectionate expressions delivered from the mouth of lord Buddha.
6. **Itibuttaka**—Small lectures beginning with the words, 'Lord Buddha said thus'.
7. **Jataka**—The stories of the former births of lord Buddha.
8. **Abbhutadhamma**—The work that explains the mysterious things or the superhuman powers born of the 'Yoga'.
9. **Vedalla**—Those sermons which have written in the form of dialogues.[1].

Dwadasanga

1. The Sutra, 2. the Geyya, 3. the Vyākarane, 4. the Gatha, 5. the Udana, 6. the Awadana, 7. The Itivṛittāka, 8. The Niduna, 9. the Vaipālya 10. The Jataka, 11. the Upadeśa-dharma and, 12. the Adbhuta-dharma.[2]

The Jaināgama has been divided into twelve Angas—

1. The Aćara 2. The Sūtrakṛita 3. The Sthāna 4. The Samawāya 5. The Bhagawati 6. The Jynātā Dharmekatha 7. the Upāsakadaśa 8. the Antakṛita 9. the Anuttaropapātika 10. the Praśna-Vyākaraṇa 11. the Vipāka and 12. the Dṛiṣtiwāda.

The word 'Anga' has been used in the three chief Indian philosophical schools. The main works of the Vedic and Buddhist literature are the Vedas and the Pitakas respectively. Nowhere the word 'Anga' has been added to them. The main works in the Jain literature have been classified as the Gaṇipitaka. The Gaṇipitaka has the twelve Angas—'Duwālasange gaṇipitage[3].

---

1. Saddharma Pundakrika Sutra, page 34.
2. Buddha Sanskrit Grantha 'Achisamayalankar' Ki tika, Page, 35.
   Sutram Geyam Vyakaranam, Gathoanavadanakam.
   Itibrittakam Nidanam, Vaipulayam ca Sajatakam.
   Upadesadbhutau dharman, Dwadasangamidam vacah.
3. Samawayanga, Prakirnaka Samawaya, Sutra 88.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

The personification of 'Śruta-Puruṣa' too, is found in the Jain-tradition. The twelve Āgamas, Āćara etc., are like the parts of the 'Śruta Puruṣa'. They are, therefore, called the twelve Angas[1]. So the Dwādaśānga becomes the adjective of the Gaṇipitaka and the Śruta-Puruṣa' both.

ĀYĀRO

The title

This Āgama is the first Anga of the 'Dwādaśāngī'. As it contains the account of the conduct (Āćāra), the title 'ĀYĀRO'. It has two Śruta-skandhas—1. ĀYĀRO, 2. ĀYĀRAČULA

The Contents

The Samawāyānga and the Nandi give an account of the Āćārānga. According to that the present Sūtra explains the Āćara, Goćar, Vinaya, Vainayika (fruit of vinaya), (Utthitāsana, Niṣaṇāsana and Śayitāsana), Gamana, ćamkramaṇa. Dose of food etc., application of Yoga in self study etc., language, Samiti, Gupti, Śayya, Upadhi, Bhakta-Pāna (edibles and drinks), Udgama-Utthana, the purity of 'eṣṇā' (motives) etc[1]. the discernment of taking Śuddhāśuddha, Vṛita, Niyama, Tapas, Updhan etc[2].

Āćārya Umāswāti has expounded the topics of every Adhyayana in the Āćārānga in brief That is given in the order as under :[3]

1. Ṣaḍajīvakāya Yātnā.
2. Renunciating the glory of the wordly off-springs.
3. Winning over of the Pariṣahas, such as cold-hot etc.
4. Undaunted Samyaktwa.
5. Udvegas of the world.
6. The means of nullifying the 'Karmas' (deeds).
7. The endeavour to 'Vaiyavṛitya'.
8. The way to penance.

---

1. Mularadhna 4/599, Vijayodaya :
   Srutam Purusah Mukhcaranadyangasthaniyatwadangasabdenocyate.
2. (a) Samawayanga, Prakirnaka Samawaya, Sutra. 89.
   (b) Nandi, Sutra. 80.
3. Prasamarati Prakarana,114-117.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

9. Renunciation of passion for woman.
10. Rules to receive the alms.
11. Bed without woman, Creature, eunuch etc.
12. Purity in movement.
13. Purity of language.
14. Method of begging cloth.
15. Method of begging bowls.
16. Purity of habit (Avagraha).
17. Purity of Place (Sthāna).
18. Purity of 'Visadya'.
19. Purity of 'Vyutsarga'.
20 Renunciation of attachment to sound
21. Renunciation of attachment to form.
22. Giving up 'Parakriya'.
23. Giving up 'Anyonya-kriya'.
24. Steadfastness to the Five Mahāvṛitas.
25. Libration from 'Sarvasangas' (all associations).

The Niryuktikāra has enumerated the topics of the nine Adhyayanas of Brahmaćarya as under :

1. *Satya Parinna*—Jiva Samyama.
2. *Loga Vijaya*—Knowledge of bondage and libration.
3. *Siosanijja*—Equanimity of pleasure and pain.
4. *Sammatta*—Right vision.
5. *Loga-Sara*—Renunciation of worthless and adoration of the Ratnatrayi, worthy in the world.

---

1. Acaranga Niryukti, Gatha 33-34 :
Jiyasamjamo a logo jaha bajjhai jaha ya am pajahiyav vam,
Suhadukkhatitikkhaviya sammattam logasaro ya.
Nissangaya ya chatthe mohasamuttha parisahuwasagga,
Nijjanam atthamae nawame ya jinena evamti.

2, Tatwartha Rajavarttika, 1/20.
Acare carya-vidhanam sudhyastaka paniasamiti-triguptivikalpam kathyate,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

6. *Dhuya*—non-attachment.
7. *Mahaparinna*—Enduring properly the Parișahas and Upsargas born of 'Moha'.
8. *Vimokkha*—Proper observanes of 'Niravaṇā' (the final state).
9. *Uvahanasuya*—Explanation of the conduct observed by lord Mahāvira[1].

Āćārya Akalaṅka holds that the total matter of the Āćārānga is concerning the 'Ćarya-Vidhana' (mode of behaviour and conduct)[2]. While Aparājit Suri opines that it is the ascertainment of the conduct of the 'Ratna-trayī'[1].

SŪYAGADO

The Title

This Āgāma, the second part of the Dwādasāngi, is given the title as 'Sūyagaḍo'. The Samawāya, the Nandi and the Anuyogadwār, all the three Āgāmas have this title only for it.[2] Bhadrawāhu-Swāmi, the Niryuktikāra has given three titles of this Āgama according to its tributes.[3]

1. Sūtagaḍa—Sūtakṛita
2. Suttakaḍa—Sūtrakrita
3. Sūyagaḍa—Sūćākrita

Originally this Āgama is 'Sūta' (hails from) by lord Mahāvīra and was given the form of a work by gaṇadhara. This is, therefore, entitle as 'Sutakrita'.

As the truth in it has been ascertained according to the 'Sūtrā', it is 'Sutrakṛita'.

As the 'Sūćanā' of 'Swa' and 'Para' Samaya has been given in it, it is called 'Sūćā-krita.'

---

1. Mularadhna, Aswasa 2, Sloka 130, vijayodaya : Ratnatrayacarana nirupanaparataya prathamabhangamacare sabdenocyate.
2. (a) Samawao, Paissagamawao, Sutra. 88.
   (b) Nandi, Sutra. 80.
   (c) Anuogadwarain, Sutra. 50.
3. Sutrakritanga-niryukti, Gatha 2: Sutagadam, suttakadam, suyagadam cewa gonna-in.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

'Sūta', 'Sutta' and 'Sūya' are as a matter of fact, the Prakṛit forms of 'Sūtra' only. These different formations led to the imagination of the three attributive titles.

Originally, all the Angas were delivered by lord Mahāvīra and brought into a composed form by Gaṇadhara. Then, how can this Āgama only be called 'Sūtrakṛita'? Similarly, the second title, too, is common to all the Angas. The third is the significant basis of the title of this 'Āgama'. As the conduct has been ascertained in the context of a comparative preception (Sūtrnā) in this Āgama, it is concerned with 'Sūćana'. The Samawāya and the Nandi clearly state this—

Sūyagaḍe ṇam sasamayāsūhajjanti, Parasamaya Sūhajjanti sasamaya-parasamayā suhajjanti.[1] What is preceptive is called a 'Sutra'. The background of this Āgama mainly consists of preceptive element. Its title is, therefore, 'Sūtrakṛita'.

Another thought, which seems to touch the 'reality more closely, can be put forth regarding the title 'Sutrakṛita'. The Drisṭiwāda is five fold—

1. Parikarma
2. Sūtra
3. Pūrwānuyoga
4. Pūrwāgata
5. Ćūlikā

According to Āćarya Vīrasena the Sūtra has an account of other philosophers[2]. As this Āgama was composed on that basis only, it was given the title 'Sūtrakṛita.' This meaning seems to be more logical than the other etomological meanings of the word 'Sūtrakṛita'. The 'Suttagaḍa' and the 'Suttanipāta' of the Budhists seem to be identical in their titles.

Anga and Anuyoga—

This Āgama has the second place in the Dwādāśāngi. There are four kinds of Anuyoga—

1. Ćaranakaranānuooga.
2. Dharmakathānuyoga.
3. Ganitānuyoga.
4. Drawyānuyoga.

---

1. (a) Samawao, paissagasamawao, Sutra 90.
   (b) Nandi, Sutra. 82.
2. Kasayapahuda, Part I, page 134.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

The Ćurṇikāra holds that this Āgama is 'ćaraṇakaraṇānuyoga (treatise on conduct).[1] Sīlānkasūri has classified it under 'Drawyānuyoga' (treatise on substances). According to him the Āćārānga is primarily a ćaraṇakaraṇayoga while 'Sūtrakṛitānga' is primarily a 'Drawyānuyoga'[2].

The Samawāya and the Nandi give an account of the 'Dwādaśāngī.' At the end of the account of the Angas, the lines read 'ewam ćarṇakaraṇa-paruwaṇayā'. Abhayadeva Sūri connotes the meaning of 'ćaraṇa' as 'Sramaṇa-dharma' and of 'Karaṇa' as 'Piṇḍa-viśuddhi, Samiti etc.'[3]

The ćūrṇikara has regarded the Kālikasruta as a 'ćaraṇakaranayoga' and the 'Driṣṭiwāda' as a 'drawyanuyoga'.[4]

The Dwādaśāngī primarily expounds the Driṣṭiwāda, treatise on substances and secondarily the code of conduct. The Ćurṇikara legimately regards this Āgama primarily as a treatise on the code of conduct while the Vrittikāra lying stress upon its ascertainment of Dravya (substance), calls it Dravyā-śaśtra (a treatise on substance). Both of these classifications have a dialectical variation.

ṬHANAṂ

The title

This Āgama is the third part of the Dwādaśāngī. It sets up the Jīva, Pudgala etc., in number-order. Hence the title , 'Ṭhaṇam'.

The Contents

Swa-samaya (Arhat-philosophy), Para-Samaya as well as swa-samaya and Para-samaya both have been set up in this Āgama. The Jīva and the Ajīva, the Loka and the Aloka have been founded here.[5]

One-ness of the Jīva and its sevarality, according to the views of the 'Sangraha Naya' and the 'Vyavahāra Naya,' have been expounded

---

1. Sutrakritainga Curni, page 5.
   iha carananu-o-gena adhikaro.
2. Srtrakritangaritti, page, 1.
   Tatracaranga carnakaranam pradhanyena Vyakhyatam, adhuna awasarayatam drawya pradhanyena sutrakritakhyam dwitiyamangam Vyakhyatumarabhyate.
3. Samawayangavritti, Patra 102.
   Caranam—Vratasramanadharma Samyamadyanekavidham.
   Karanam-Pindavisuddhi Samityadyaneka vidham.
   Sutrakritanga Curni—
4. Kaiyasuyam caranakarananuyogo isibhsiottar ajjhayanani dhammanuyogo, Surpannattadi ganitanuyogo; ditthiwado dawwanujogotti.
5. Samawao, painnagasamawao, Sutra. 92

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

in it. According to the Sangraha Naya, the Jīva is one and the same far as the soul is concerned. From the view point of the 'vyavahāra-naya' each and every Jīva is parted with, i.e. it is divided into two parts according to the knowledge and appaerance, into three parts according to the 'Karma-ćetnā' or 'Phrowge-utpāda' and 'Vināśa', into four parts because of its wandering in the four-fold motion; into five parts from the view point of 'Pariṇāmikādi' five states; into six parts due to the accession to the six directions, such as the East, West, North, South, up-ward and down-ward at the time of transgression to other birth; into seven parts according to the seven kinds of 'Syādasti-Syādnāsti'; into eight parts according to the eight 'Karmas'; into nine parts as it changes into the nine substances; and into ten parts from the view point of the 'Prithivi-Kāyika', 'Jala Kāyika', 'Agni-Kāyika', 'Wāyu-Kāyika', 'Pratyeka Vanaspati-Kāyika', 'Sādhāraṇa Vanaspati-Kāyika' species having two organs, species having three organs, species having four organs, and species having five organs.[1] Likewise, this Āgama gives an account of one-ness of 'Pudgala' etc. and their various 'Paryāyas' (modifications) counting from two to ten. From the viiew of 'Paryāyas', one and the same element parts with into innumerable and unlimited parts, and, from the view point of the matter (Dravya), these innumerable parts conform into one and the same element. This exposition of conformity and deformity is well found in this Āgama.

Samawāo

The title

The Āgama is the fourth part of the 'Dwādaśāngī' having the title 'Samawāo'. The substances, Jīva-Ajiva etc., have been put into divisions or brought down properly in this Āgama, therefore, the title 'Samawāo'.[2] According to the Digamber literature, this Āgama speaks of similarity of the Jivadi substances therfore, called the 'Samawāo'.[3] The 'Samawāo'

---

1. Kasayapahuda, part I, page 123.
2. Samawao-Vrithi, patra 1,
   Samit-Samyaka avetyadhikyena ayanamayah Paticchedo Jivajivadi-vividha-padartha Sarthasya yasaminnasan Samawayah
   Samawayanti wa, Samawasaranti Sammilanti nanawidha Atmadayo Bhawa Bhawa abhidheya.aya Yasminnasan Samawaya iti.
3. Gommatasara Jivakanda Jivaprabodhni Tika, gatha 356.
   "Sam-Sangrahena Sadrisya-Samanyena Avayante jnayante jivadipadartha dravya kalabhavan a sritya asmitnniti 'Samawayangam.
   Nandi, Sutra. 83

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

gives an aocount of the 'Dwādaśangī'. And, as it is the fourth part of the 'Dwādaśangī', it narrates the 'Samawāo', too.

The Nandi-Sūtra discusses the 'Dwadaśangī in order. The table of contents of the 'Samawāo' has been given in it as under:

1. The description of the Jīva-Ajīva, Loka-Aloka and Swa-Samaya as the well as Para-samaya.

2. The evolution of the number beginning from one to hundred.

3. The account of the Dwadaśanga ganipitaka.[1]

According to the 'Samawāyānga' the table of contents of the 'Samawā-o' is as follows:

1. The description of Jīva-Ajīva, Loka-Aloka and swa-samaya as well as Para-samaya,
2. The evolution of the number beginning from one to hundred
3. The account of the 'Dwādaśānga-gaṇi- pitaka'.
4. Āhāra
5. Uććhwāsa
6. Leśyā
7. Āwāsa
8. Upapāta
9. Čyawana
10. Awagāha
11. Vedanā
12. Vidhāna
13. Upayoga
14. Yoga
15. Indriya (organs)
16. Kaṣāya
17. Yoni
18. Kulakara

---

1. Se kim tam samawae nam jiva samasijjanti, ajiva samaanjsa jti jivajiva samasijjanti.
Sasamae samasijjai, para-samaye samasijjai, sasamaya para sama-e samasijja-i. Loe sa masijjai, aloe samasijjai, lo-a-loe samasijjai, samawaenam ega-i-yanam eguttariyanam thanasaya-niwaddhiyanam bhawanam paruwana adhhawijja-i duwalasa vihassa ya ganipidagssa pallawagge samasijja-i.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

19. Tīrathankara
20. Gaṇadhara
21. Čakrawarti
22. Baladeva-Vasudeva[1].

A comparative study of both the tables of contents makes it clear that the table of contents given in the Nandi is a brief one, and that of the 'Samawa-o' large. The volume of the Sūtra, too, becomes short and long according to the tables of contents.

That the 'ekottarika Vṛiddhi' (Increasing one by one) takes place upto hundred is mentioned in both the accounts. In either of them, there is no mention of the 'Anekottarika Vriddhi'. The Anekottarika Vriddhi has not at all been mentioned in the Nandī Čūrnī, Hāribhadrīyā Vṛitti and the Malaya Girīyavṛitti, all the three Abhayadeva Sūri has discuss the Anekottarikā Vṛiddhi in his Vṛitti of Samawāyānga. According to him, the Ekottarika Vṛiddhi takes place upto hundred and beyond that the Anekottarikā Vṛiddhi.[2]

It appears that the Vṛittikāra has discussed it not on the account given in the 'Samawāyānga' but on the text then available to him.

On reviewing both the accounts, two questions arise—

1. Is not the present Samawāyānga different from the account of the Samawāyānga given in the Nandi ?

2. Is the present Samawāyānga is of the Vaćna by Devardhigaṇī ? If so, why then such a variation in both the accounts of the 'Samawāyānga' ?

In reply to the first question, it can be said that 'Dwādasānngi' is the final content of the Samawāyānga-Sutra according to the account, relating to the Samawāyānga, given in the Nandi. Many a content has been expounded beyond the 'Dwadaśāngī' in the present Samawāyānga. It is therefore, established that the present volume of the 'Samawāyānga' is different from that of the account of the Samawāyānga given in the Nandi.

---

1. Samawa-o, pa-i-nnagasamawo, Sutra. 92.
2. Samawa-o Vritti, patra 105.
'ca sabdasya canyatra sambandhatdkottarika anekottarika ca, tatra satam yawadekottarika parato gnekottariketi.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Difficult it is to give an assertive answer to the second question. So much, nevertheless, can be said that there had been various Vāćanās of the Āgamas. This is why a mention of various Vāćanās (Parittā Vāyaṇā) has been made while giving the account of each and every 'Anga'. Abhayadeva Sūri gives a mention of the large (Brihat) Vāćanā of the Samawāyānga[1]. From it, this may be inferred that the Nandī gives an account of the Samawāyānga relating to the short 'Vāćanā.'

It is established from the Vṛitti[2] written by him, that Abhayadeva Sūri had with him various Vāćanās of this Sūtra.

There can be two likelihoods regarding the enlarged edition of the 'Samawāyānga.'

1. That this Sūtra is based upon the Vāćanā different from that of the Vāćanā of Dewardhigaṇī,' or 2. That the portions beyond the 'Dwadasāngī' have been added to it after 'Devardhigaṇī'. Had this Sūtra depended on some different 'Vāćanā,' there would have been some tradition mentioned. This agelong traditional mention has been coming down that the Jyotiś-Kanḍa is based upon the 'Māthurī Vāćanā'. Had the present Samawāyānga, too, been based on the Māthurī Vāćanā, there would have been some traditional mention of it.

The first likelihood lacking the probablity of its support, the second likelihood gains the ground. But it too, is refuted by the Bhagwati, and the Sthānānga. The Bhagwati refers to the final part of the Samawāyānga for the full account of Kulakar, Tirathankar etc.[3] Likewise, the final part of the Samawāyānga has been referred to for the full account of the Baldeva-Vasudeva by the Sthānānga also[4]. It is, therefore, obvious that the appendix

---

1. (a) Samawao Vritti, Patra 58 : Brihadvacanayamanantaroktamatisayadwayamcradhi yate.
   (b) Ibid, Patra 69: Brihadvacanayamidamanyadatisayadwayamadhiyate.
2. Samawao Vritti, Patra 144 : Vacanantaretu paryasana Kalpo tasramentyabhi hitam.
3. Bhagwati Satara 5; Uddesaka 5.
4. Sthananga, 9/19-20.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

was added in the time of Devardhigaṇī only.

It is strange that one and the same editor gave two different accounts (in the Samawāyānga and the Nandi) of one and the same Āgama.

There were two main Vācanās, the Māthuri and the Vallabhi. There were many other secondary Vāćanās also. This is why there are many different readings. These different readings, probabily occured on adding the explanation or appendix portions. This can well be inferred that the later part of the Dwādasāngi in the Samawāyānga is its appendix. The account of the appendix was added to the account of the Samawāyānga with the result that its table of contents swelled more than the table of the Samawāyānga found in the Nandi. There is a summary of eleven stenzas of the 'Prajñāpnā' in the appendix. It is a matter of investigation why they were added here ?

Accomplishment of the work

In the accomplishment of this task, there has been the contribution of many a Muni. I bless them that their devotedness to the performance be ever more developed.

For the editing of this Āgama major amount of credit goes to my learned disciple Muni Shri Nath Mali. Day in and day out he has devoted himself to this arduous task. It is because of his concentrated efforts that the work has got such a nice accomplishment. Otherwise, it would not have been an easy job. On account of his in-born Yogic temperament he was capable of attaining that concentration of mind which was essential for achieving the end. On account of his constant devotion to the work of research in the field of Āgamic literature his intellect has achieved sufficient sharpness in finding out immediately the hidden meaning and mysteries of Āgamic expositions. His keen sense of obedience, perseverance and absolute dedication have contributed much in developing his personality. The above qualities are seen in him since his early age. Right from the time when he joined the Sangha I have been an observor of these qualities of his, which have so developed. His capacity to undertake to a big task has given me ever increasing satisfaction.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

I have undertaken this hard and tremendous task of editing the Āgamas relying on the strength of such learned disciples in the Sangha. I am now, quite confident that I shall be able to complete this hazardous work with the help and assistance of my obedient, selfless and devout disciples.

On the holy occasion of this 25th centinary of Lord Mahavira, I have a feeling of great pleasure in presenting to the people the teachings of the Lord.

Anuvrata Vihar
Delhi

Ācharya Tulasi

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विसयाणुक्कम

आयारो

पढमं अज्झयणं सू० १-१७७ पृ० १-१६

अप्पणो अत्थित्त-पदं १, आस्सव-पदं ६, संवर-पदं ७, आस्सव-परिणाम-पदं ८, कम्म-सोय-पदं ६, संवर-साहणा-पद ११, अण्णाण-पदं १३, पुढवि-काइयाहिंसा-पदं १५, पुढविकाइयाणं जीवत्त-वेदनाबोध-पदं २८, हिंसाविवेग-पदं पद-३१, समप्पण-पदं ३५, आउकाइयाणं अत्थित्त-अभयदाण-पदं ३८, आउकाइयहिंसा-पदं ४०, आउकाइयाणं जीवत्त-वेदणाबोध-पदं ५१, हिंसाविवेग-पदं ५४, तेउकाइयाणं अत्थित्त-पदं ६६, तेउकाइयहिंसा-पदं ६६, तेउकाइयाणं जीवत्त-वेदणाबोध-पदं ८२, हिंसाविवेग-पदं ८५, गिहचाइणो वि गिहवास-पदं ६३, वणस्सइ-काइयहिंसा-पदं ६६, वणस्सइकाइयाणं जीवत्त-वेदणाबोध-पदं ११०, वणस्सइजीवाणं माणुस्सेण तुलणा-पदं ११३, हिंसाविवेग-पदं ११४, संसार-पदं ११८, तसकाइयहिंसा-पदं १२३, तसकाइयाणं जीवत्त-वेदणाबोध-पदं १३७, हिंसाविवेग पदं १४०, अत्ततुला-पदं १४५, वाउकाइयहिंसा-पदं १५०, वाउकाइयाणं जीवत्त-वेदणावोध-पदं १६१, हिंसाविवेग-पदं १६४, मुणि-संबोध-पदं १६६, हिंसाविवेग-पदं १७६ ।

बीयं अज्झयणं सू० १-१८६ पृ० १७-२७

आसत्ति-पदं १, असरणाणुपेहापुव्वं अप्पमाद-पदं ४, अरति-निवत्तण-पदं २७, अणगार-पदं ३६, दंड-समादाण-पदं ४०, हिंसाविवेग-पदं ४६, अणासत्ति-पदं ४७, समत्त-पदं ४६, परिग्गह-तद्दोस-पदं ५७, भोग-भोगि-दोस-पदं ७५, आहारस्स अणासत्ति-पदं १०४, काम-अणासत्ति-पदं १२१, तिगिच्छा-पदं १४०, परिग्गह-परिच्चाय-पदं १४८, अणासत्तस्स ववहार-पदं १६०, बंध-मोक्ख-पदं १७१, धम्मकहा-पदं १७४ ।

तइयं अज्झयणं सू० १-८७ पृ० २८-३३

सुत्त-जागर-पदं १, परमबोध-पदं २६, अणेगचित्त-पदं-४२, संजमाचरण-पदं ४४, अज्झत्थ-पदं ५१, कसायविरइ-पदं ७१ ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउत्थं अज्झयणं सू० १-५३ पृ० ३४-३८

सम्मावाए अहिंसा-पदं १, सम्मानाणे अहिंसापरिक्खा-पदं १२, सम्मातव-पदं २७, कसाय-विवेग-पदं ३४, सम्माचरित्त-पदं ४० ।

•

पंचमं अज्झयणं सू० १-१४० पृ० ३९-४७

काम-पदं १, अप्पमादमग्ग-पदं १६, परिग्गह-पदं ३१, अपरिग्गह-कामनिव्वेयण-पदं ३६, अवियत्तस्स एगल्लविहार-पदं ६२, इरिया-पदं ६६, कम्मणो बंध-विवेग-पदं ७१, बंभचेर-पदं ७५, आयरिय-पदं ८६, सद्धा-पदं ९३, मज्झत्थ-पदं ९६, अहिंसा-पदं ९९, आय-पदं १०४, मग्गदंसण-पदं १०७, सच्चस्स अणुसीलण-पदं ११६, परमप्प-पदं १२३ ।

•

छट्ठं अज्झयणं सू० १-११३ पृ० ४८-५६

नाणस्स निरूवण-पदं १, अणत्तपण्णाणं अवसाद-पदं ५, पाणि-किलेस-पदं १२, तिगिच्छापसंगे अहिंसा-पदं १५, सयणपरिच्चायधुत-पदं २४, कम्मपरिच्चायधुत-पदं ३०, उवगरणपरिच्चाय-धुत-पदं ५६, सरीरलाघवधुत-पदं ६६, संजमधुत-पदं ७०, विणयधुत-पदं ७४, गोरवपरि-च्चायधुत-पदं ७६, तितिक्खाधुत-पदं ९९, धम्मोवदेसधुत-पदं १००, कसायपरिच्चायधुत-पद १०६ ।

•

अट्ठमं अज्झयणं सू० १-१३० श्लोक १-२५ पृ० ५७-७१

असमणुण्णविमोक्ख-पदं १, असम्मायार-पदं ३, विवेग-पदं ९, अहिंसा-पदं १७, अणाचरणीय-विमोक्ख-पदं २१, पव्वज्जा-पदं ३०, अपरिग्गह-पदं ३२, आहारहेउ-पदं ३४, अगणि-असेवण-पदं ४१, उवगरण-विमोक्ख-पदं ४३, शरीर-विमोक्ख-पदं ५७, उवगरण-विमोक्ख-पदं ६२, गिलाणस्स भत्तपरिण्णा-पदं ७५, वेयावच्चपकप्प-पदं ७६, उवगरण-विमोक्ख-पदं ८५, एगत्तभावणा-पदं ९७, अणासाय-लाघव-पदं १०१, संलेहणा-पदं १०५, इंगिणिमरण-पदं १०६, उवगरण-विमोक्ख-पदं १११, वेयावच्चपकप्प-पदं ११६, पाओवगमण-पदं १२५, अण-सण-पदं श्लो० १, भत्तपच्चक्खाण-पदं श्लो० २, इंगिणिमरण-पदं श्लो० १२, पाओवगमण-पदं श्लो० १९ ।

•

नवमं अज्झयणं श्लोक ७० पृ० ७२-७९

पढमो उद्देसो—भगवओ चरिया-पदं श्लोक १-२३, बीओ उद्देसो—भगवओ सेज्जा-पदं श्लोक १-१६, तइओ उद्देसो—भगवओ परीसह-उवसग्ग-पदं श्लोक १-१४, चउत्थो उद्देसो—भगवओ अतिगिच्छा-पदं श्लोक १-३, भगवओ आहार-चरिया-पदं श्लोक ४-१७ ।

•

आयारचूला

पढमं अज्झयणं सू० १-१५६ पृ० ८३-११९

सचित्त-संसत्त-असणादि-पदं १, ओसहि-आदि-पदं ४, अण्णउत्थिय-गारत्थिय-सद्धि-पदं ८,

अस्सिपडियाए-पदं १२, समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-पद १६, कुल-पदं १६, अट्ठमी-आदि-पव्व-पदं २१, कुल-पदं २३, महामह-पदं २४, संखडि-पदं २६, विचिगिच्छा-समावण्ण-पदं ३६ सव्वभंडगमायाए-पदं ३७, कुल-पदं ४१, संखडि-पदं ४२, खीरिणी-गावी-पदं ४४, माइट्ठाण-पदं ४६, विसमट्ठाण-परक्कम-पदं ५०, वियाल-परक्कम-पदं ५२, विसमट्ठाण-परक्कम-पदं ५३, कंटक-बोंदिय-पदं ५४, अणावायमसंलोय-चिट्ठण-पदं ५५, परिभायण-संभुंजण-पदं ५७, पुव्व-पविट्ठसमणादि-उवाइक्कमण-पदं ५८, भत्तट्ठ-समुदितपाणाणं उज्जुगमण-पदं ६१, गाहावइकुल-पविट्ठस्स अकरणिज्ज-पदं ६२, पुरेकम्म-आदि-पदं ६३, पिहुय-आदि-कोट्टण-पदं ८२, लोण-पदं ८३, अगणि-णिक्खित्त-पदं ८४, मालोहड-पदं ८७, मट्टिओलित्त-पदं ९०, पुढविकाय-पइट्ठिय-पदं ९२, आउकाय-पइट्ठिय-पदं ९३, अगणिकाय-पइट्ठिय-पदं ९४, अच्चुसिण-वीयण-पदं ९६, वणस्सइकाय-पइट्ठिय-पदं ९७, तसकाय-पइट्ठिय-पदं ९८, पाणग-जाय-पदं ९९, गंध-आघायण-पदं १०५, सालुय-आदि-पदं १०६, पिप्पलि-आदि-पदं १०७, पलंब-जाय-पदं १०८, पवाल-जाय-पदं १०९, सरडुय-जाय-पदं ११०, मंथु-जाय-पदं १११, आमडाग-आदि-पदं ११२, उच्छु-मेरग-आदि-पदं ११३, उप्पल-आदि-पदं ११४, अग्गबीय-आदि-पदं ११५, उच्छु-पदं ११६, लसुण-पदं ११७, अत्थिय-आदि-पदं ११८, कण-आदि-पदं ११९, पच्छाकम्म-पदं १२१, पुरापच्छासंथुय-कुल-पदं १२२, गिलाण पदं १२४, माइट्ठाण-पदं १२५, बहियानीहड-पदं १२८, माइट्ठाण-पदं १३०, बहुउज्झिय-धम्मिय-पदं १३३, अजाणया-लोण-दाण-पदं १३६, माइट्ठाण-पदं १३८, मणुण्ण-भोयण-जाय-पदं १३९, सत्त पिंडेसणा सत्त पाणेसणा-पदं १४० । ●

बीयं अज्झयणं सू० १-७७ पृ० १२०-१३८

उवस्सयएसणा-पदं १, अस्सिपडियाए उवस्सय-पदं ३, समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-उवस्सय-पदं ७, परिकम्मिय-उवस्सय-पदं १०, बहिया निस्सारिय-उवस्सय-पदं १४, अंतलिक्ख-जाय-उवस्सय-पदं १८, सागारिय-उवस्सय-पदं २०, तण-पलालाच्छाइय-उवस्सय-पदं ३१, वज्जियव्व-उवस्सय-पदं ३३, कालाइक्कंत-किरिया-पदं ३४, उवट्ठाण-किरिया-पदं ३५, अभिक्कंत-किरिया-पदं ३६, अणभिक्कंत-किरिया-पदं ३७, वज्ज-किरिया-पदं ३८, महावज्ज-किरिया-पदं ३९, सावज्ज-किरिया-पदं ४०, महासावज्ज-किरिया-पदं ४१, अप्पसावज्ज-किरिया-पदं ४२, उवस्सय-छलण-पदं ४४, उवस्सय-जयण-पदं ४५, उवस्सय-जायणा-पदं ४७, सेज्जायर-नाम-गोय-जायणा-पदं ४८, उवस्सय-विसुद्धि-पदं ४९, संथारग-पदं ५७, संथारग-पडिमा-पदं ६२, संथारग-पच्चप्पण-पदं ६८, उच्चारपासवण-भूमि-पदं ७०, सयण-विहि-पदं ७२ । ●

तइयं अज्झयणं सू० १-६२ पृ० १३९-१५२

वासावास-पदं १, गामाणुगाम-विहार-पदं ४, नावा विहार-पदं १४, नावा-विहार-पदं २४, जंघासंतारिम-उदग-पदं ३४, विसमट्ठाण-परक्कम-पदं ४१, अभिणिचारिय-पदं ४४, पडिपहिय-पदं ४५, अंगचेट्ठापुव्वं निज्झाण-पदं ४७, आयरिय-उवज्झाय-सद्धिं विहार-पदं ५०, आहारातिणिय-सद्धिं-विहार-पदं ५२, पाडिपहिय-पदं ५४, वियाल-पदं ५९, आमोसग-पदं ६० । ●

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउत्थं अज्झयणं सू० १-३९ पृ० १५३-१६०

वइ-अणायार-पदं १, सोडस-वयण-पदं ३, अणुवीइ-णिट्ठाभासि-पदं ५, भासज्जात-पदं ६, सावज्ज-भासा-पदं १०, असावज्ज-भासा-पदं ११, आमंतणी-भासा-पदं १२, विधि-निसिद्ध-भासा-पदं १६, कक्कस-भासा-पदं १९, अकक्कस-भासा-पदं २०, सावज्ज-असावज्ज-भासा-पद २१, अणुवीइ-णिट्ठाभासि-पदं ३८ । •

पंचमं अज्झयणं सू० १-५१ पृ० १६१-१७२

वत्थजाय-पदं १, अद्धजोयण-मेरा-पदं ४, अस्सि पडियाए वत्थ-पदं ५, समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-वत्थ-पदं ९, भिक्खु-पडियाए-कीयमाइ-वत्थ-पदं १२, महद्धणमुल्लवत्थ-पदं १४, अजिणवत्थ-पदं १५, वत्थपडिमा-पदं १६, संगार-वयणपुव्वं वत्थ-पदं २२, वत्थ-आघंसण पदं २३, वत्थ-उच्छोलण-पदं २४, वत्थ-विसोहण-पदं २५, वत्थ-पडिलेहण-पदं २६, सअंडाइ-वत्थ-पदं २८, अप्पंडाइ-वत्थ-पदं २९, वत्थ-परिकम्म-पदं ३१, वत्थ-आयावण-पदं ३५, णो धोएज्जा रएज्जा-पदं ४१, सव्वचीवरमायाए-पदं ४२, पाडिहारिय-वत्थ-पदं ४६, वत्थ-विक्किया-पदं ४८, आमोसग-पदं ४९ । •

छट्ठं अज्झयणं सू० १-५९ पृ० १७३-१८४

पायजाय-पदं १, एगपाय-पदं २, अद्धजोयण-मेरा-पदं ३, अस्सिपडियाए पाय-पदं ४, समण-माहणाइ समुद्दिस्स पाय-पदं ८, भिक्खु-पडियाए कीयमाइ-पदं ११, महद्धणमुल्लपाय-पदं १३, पाय-बंधण-पदं १४, पाय-पडिमा-पदं १५, संगार-वयणपुव्वं पाय-पदं २१, पाय अब्भंगण-पद २२, पाय-आघंसण-पद २३, पाय-उच्छोलण-पदं २४, पाय-विसोहण-पदं २५, सपाण-भोयण-पडिग्गह-पदं २६, पडिग्गह-पडिलेहण-पदं २७, सअंडाइ-पाय-पदं २९, अप्पंडाइ-पाय-पदं ३०, पाय-परिकम्म-पदं ३२, पाय-आयावण-पदं ३८, पडिग्गह-पेहा-पदं ४४, सीओदगादि-संजुत्तपाय-पदं ४६, सपडिग्गहमायाए-पदं ५०, पाडिहारिय-पडिग्गह-पदं ५४, पायविक्किया-पदं ५६, आमोसग-पदं ५७ । •

सत्तमं अज्झयणं सू० १-५८ पृ० १८५-१९४

अदिन्नादाण-पच्चक्खाण-पदं १, ओग्गह-पद ३, अंबओग्गह-पदं २५, उच्छुओग्गह-पदं ३२, लसुण-ओग्गह-पदं ३९, ओग्गह-पदं ४६, ओग्गह-पडिमा-पदं ४८, पंचविह-ओग्गह-पदं ५७ । •

अट्ठमं अज्झयणं सू० १-३१ पृ० १९५-१९९

ठाण एसणा-पदं १, अस्सिपडियाए ठाण-पदं ३, समण-माहणाइ समुद्दिस्स-ठाण-पदं ७, परिकम्मिय-ठाण-पदं १०, बहियता-निस्सारिय ठाण-पदं १४, ठाण-पडिमा-पदं १६, संथारग-पच्चप्पण-पदं २२, उच्चारपासवणभूमि-पदं २४, ठाण-विहि-पद २६ । •

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवमं अज्झयणं सू० १-१७ पृ० २००-२०३

णिसीहिया-एसणा-पदं १. अप्पिसपडियाए णिसीहिया-पदं ३, समण-माहणाइं-समुद्दिस्स णिसीहिया-पदं ७. परिकम्मिय-णिसीहिया-पदं १०, बहिया निस्सारिय-णिसीहिया-पदं १४।

•

दसमं अज्झयणं सू० १-२९ पृ० २०४-२०८

पाय-पुंछण-पदं १, थंडिल-पदं २।

•

एक्कारसमं अज्झयणं सू० १-२० पृ० २०९-२१२

वितत-सद्द-कण्णसोय-पडिया-पदं १, तत-सद्द-कण्णसोय-पडिया-पदं २, ताल-सद्द-कण्णसोय-पडिया-पदं ३, झुसिर-सद्द-कण्णसोय-पडिया-पदं ४, विविह-सद्द-कण्णसोय-पडिया-पदं ५, सद्दासत्ति-पदं १९।

•

बारसमं अज्झयणं सू० १-१७ पृ० २१३-२१५

विविह-रूव-चक्खुदंसण-पडिया-पदं १. रूवासत्ति-पदं १६।

•

तेरसमं अज्झयणं सू० १-८० पृ० २१३-२२३

किरिया-पदं १, पाद-परिकम्म-पदं २, काय-परिकम्म-पदं १२, वण-परिकम्म-पदं १९, गंड-परिकम्म-पदं २८, मल-णीहरण-पदं ३५, वाल-रोम-पदं ३७, लिक्ख-जूया-पदं ३८, पाद-परिकम्म-पदं ३९, काय-परिकम्म-पदं ४९, वण-परिकम्म-पदं ५६, गंड-परिकम्म-पदं ६५, मल-णीहरण पदं ७२, वाल-रोम-पदं ७४, लिक्ख-जूया-पदं ७५, आभरण-आविंधण-पदं ७६, पाद-परिकम्म-पदं ७७, तिगिच्छा-पदं ७८।

•

चउद्दसमं अज्झयणं सू०१-८० पृ० २२४-२३०

किरिया-पदं १, पाद-परिकम्म-पदं २, काय-परिकम्म पदं १२, वण-परिकम्म-पदं १९, गंड-परिकम्म-पदं २८, मल-णीहरण-पदं ३५, बाल-रोम-पदं ३७, लिक्ख-जूया-पदं ३८. पाद-परिकम्म पदं ३९, काय-परिकम्म-पदं ४९, वण-परिकम्म-पदं ५६, गंड-परिकम्म-पदं ६५, मल-णीहरण-पदं ७२, बाल-रोम-पदं ७४, लिक्ख-जूया-पदं ७५, आभरण-आविंधण-पदं ७६, पाद-परिकम्म-पदं ७७, तिगिच्छा-पदं ७८।

•

पनरसमं अज्झयणं सू० १-७८ पृ०२३१-२४८

भगवओ-चवणादि-णक्खत्त-पदं १, गब्भ-पदं ३, चवण-पदं ४, गब्भसाहरण-पदं ५, जम्म-पदं ८, नामकरण-पदं १२, बाल-पदं १४, विवाह-पदं १५, नाम-पदं १६, परिवार-पदं १७, माउ-पिउ-काल-पदं २५, अभिणिक्खमणाभिप्पाय-पदं २६, देवागमण-पदं २७, अलंकरण-सिविया करण-पदं २८, अभिणिक्खमण-पदं २९, लोय-पदं ३०, सामाइय-चरित्त-गहण-पदं ३२, मणपज्जवनाण-लद्धि-पदं ३३, अभिग्गह-पदं ३४, विहार-पदं ३५,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

केवलनाण-लद्धि-पदं ३८, देवागमण-पदं ४०, धम्मोवदेस-पदं ४१, अहिंसामहव्वय-पदं ४३, अहिंसामहव्वयस्स भावणा-पदं ४४, सच्चमहव्वय-पदं ५०, सच्चमहव्वयस्स भावणा-पदं ५१, अतेणगमहव्वय-पदं ५७, अतेणगमहव्वयस्स भावणा-पदं ५८, बंभचेरमहव्वय-पदं ६४, बंभचेरमहव्वय-स्सभावणा-पदं ६५, अपरिग्गहमहव्वय-पदं ७१, अपरिग्गहमहव्वयस्स भावणा-पदं ७२ ।

•

आयारो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पढमं अज्झयणं

सत्थपरिण्णा

पढमो उद्देसो

अप्पणो अत्थित्त-पदं

१. सुयं मे आउसं! तेणं भगवया एवमक्खायं[1]—इहमेगेसिं नो सण्णा भवइ, तं जहा—

पुरत्थिमाओ	वा	दिसाओ	आगओ	अहमंसि,
दाहिणाओ	वा	दिसाओ	आगओ	अहमंसि,
पच्चत्थिमाओ	वा	दिसाओ	आगओ	अहमंसि,
उत्तराओ	वा	दिसाओ	आगओ	अहमंसि,
उड्ढाओ	वा	दिसाओ	आगओ	अहमंसि,
'अहे	वा	दिसाओ'[2]	आगओ	अहमंसि,
'अण्णयरीओ	वा	दिसाओ	आगओ	अहमंसि,
अणुदिसाओ	वा'[3]		आगओ	अहमंसि,

२. एवमेगेसिं णो णातं भवति[4]—अत्थि मे आया ओववाइए[5], णत्थि मे आया ओववाइए, के अहं आसी? के वा इओ चुओ[6] इह पेच्चा भविस्सामि?

---

१. °मक्खायं (ख)।

२. अहे दिसाओ वा (क, ख, ग, घ, च) अहो दिसाओ वा (छ)।

३. अण्णयरीओ वा दिसाओ वा अणुदिसाओ (क, ग, छ); अण्णयरीओ दिसाओ वा अणुदिसाओ वा (घ); अण्णतराए दिसाओ वा अणुदिसाओ वा (च)।

४. भवति, तं जहा (चू)।

५. ओववातिते (क); उववादिए (च)।

६. चुते (घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३. सेज्जं पुण जाणेज्जा—सहसम्मुइयाए[1], परवागरणेणं, अण्णेसिं वा अंतिए सोच्चा तं जहा—

पुरत्थिमाओ[2]	वा	दिसाओ	आगओ	अहमंसि,[3]
•दक्खिणाओ	वा	दिसाओ	आगओ	अहमंसि,
पच्चत्थिमाओ	वा	दिसाओ	आगओ	अहमंसि,
उत्तराओ	वा	दिसाओ	आगओ	अहमंसि,
उड्ढाओ	वा	दिसाओ	आगओ	अहमंसि,
अहे	वा	दिसाओ	आगओ	अहमंसि°,
अण्णयरीओ	वा	दिसाओ	आगओ	अहमंसि,
अणुदिसाओ	वा		आगओ	अहमंसि,

४. एवमेगेसिं जं णातं[4] भवइ—अत्थि मे आया ओववाइए। जो इमाओ 'दिसाओ अणुदिसाओ वा'[5] अणुसंचरइ[6], सव्वाओ दिसाओ सव्वाओ अणुदिसाओ 'जो आगओ अणुसंचरइ,'[7] सोहं ॥

५. से आयावाई, लोगावाई, कम्मावाई, किरियावाई ॥

आस्सव-पदं

६. अकरिस्सं चहं, कारवेसुं[8] चहं, करओ यावि समणुण्णे भविस्सामि ॥

संवर-पदं

७. एयावंति सव्वावंति लोगंसि कम्म-समारंभा परिजाणियव्वा भवंति ॥

आस्सव-परिणाम-पदं

८. अपरिण्णाय-कम्मे[9] खलु अयं पुरिसे, जो इमाओ दिसाओ वा अणुदिसाओ वा अणुसंचरइ, सव्वाओ दिसाओ सव्वाओ अणुदिसाओ सहेति, अणेगरूवाओ जोणीओ संधेइ[10], विरूवरूवे फासे य[11] पडिसंवेदेइ[12] ॥

---

१. संमदियाए (क); सहसंमुइयाओ (घ); सहस्समुइए (च)।
२. पुरित्थि° (ख, च)।
३. सं० पा०—अहमंसि जाव अण्णयरी।
४. णाणं (ख); णायं (घ)।
५. दिसाओ वा अणुदिसाओ (ख, छ); दिसाओ वा अणुदिसाओ य (चू, वृ)।
६. अणुसंसरइ; अणुसंभरति (चूपा); अणुसंसरइ (वृपा)।
७. × (क, ख, ग, च)।
८. काराविस्सं (क, ख, ग); कारावेस्सं (घ); कारावेस्सुं (च)।
९. कम्मा (क, घ)।
१०. संधावती (चू); संधेइ (चूपा); संधावइ (वृपा)।
११. × (ख, ग, घ, च)।
१२. °संवेतेइ (क); °संवेदयइ (घ, च)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कम्म-सोय-पदं

९. तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेइया ।।

१०. इमस्स चेव जीवियस्स, परिवंदण-माणण-पूयणाए, जाई-मरण-मोयणाए[1], दुक्खपडिघायहेउं ।।

संवर-साहणा-पदं

११. एयावंति सव्वावंति लोगंसि कम्म-समारंभा परिजाणियव्वा भवंति ।।

१२. जस्सेते लोगंसि कम्म-समारंभा परिण्णाया भवंति, से हु मुणी परिण्णाय-कम्मे ।
—त्ति बेमि ।।

बीओ उद्देसो

अण्णाण-पदं

१३. अट्टे लोए परिजुण्णे, दुस्संबोहे अविजाणए ।।

१४. अस्सिं लोए पव्वहिए[2] ।।

पुढविकाइयहिंसा-पदं

१५. तत्थ तत्थ पुढो पास[3], आतुरा[4] परितावेंति ।।

१६. संति पाणा पुढो सिया ।।

१७. लज्जमाणा पुढो पास ।।

१८. अणगारा मोत्ति एगे पवयमाणा ।।

१९. जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं पुढवि-कम्म-समारंभेणं पुढवि-सत्थं समारंभेमाणे[5] अण्णे वणेगरूवे[6] पाणे विहिंसति ।।

२०. तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेइया ।।

२१. इमस्स चेव जीवियस्स, परिवंदण-माणण-पूयणाए, जाई-मरण-मोयणाए, दुक्खपडिघायहेउं ।।

२२. से सयमेव पुढवि-सत्थं समारंभइ, अण्णेहिं वा पुढवि-सत्थं समारंभावेइ, अण्णे वा पुढवि-सत्थं समारंभंते[7] समणुजाणइ ।

२३. तं से अहियाए, तं से अबोहीए ।।

२४. से तं संबुज्झमाणे, आयाणीयं समुट्ठाए ।।

---

१. °मोयणाए (चू, वृपा) ।
२. पव्वविए (च) ।
३. पासे (क, घ) ।
४. आतुरा अस्सिं (वृ) ।
५. संभारंभमाणा (ख, ग, छ) ।
६. अणेग° (घ, च) ।
७. समारंभमाणे (घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२५. सोच्चा खलु भगवओ अणगाराणं वा[1] अंतिए इहमेगेसिं णातं भवति—एस खलु गंथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु णरए[2] ।।

२६. **इच्चत्थं गढिए लोए ।।**

२७. जमिणं 'विरूवरूवेहिं सत्थेहिं'[3] पुढवि-कम्म-समारंभेणं पुढवि-सत्थं समारंभेमाणे[4] अण्णे वणेगरूवे पाणे विहिंसइ ।।

पुढविकाइयाणं जीवत्त-वेदणाबोध-पदं

२८. से बेमि—अप्पेगे अंधमब्भे[5], अप्पेगे अंधमच्छे[6] ।।

२९. अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे, अप्पेगे 'गुप्फमब्भे, अप्पेगे गुप्फमच्छे, अप्पेगे जंघमब्भे, अप्पेगे जंघमच्छे, अप्पेगे जाणुमब्भे'[7] अप्पेगे जाणुमच्छे, अप्पेगे ऊरुमब्भे, अप्पेगे ऊरुमच्छे, अप्पेगे कडिमब्भे, अप्पेगे कडिमच्छे, अप्पेगे णाभिमब्भे, अप्पेगे णाभिमच्छे, अप्पेगे उयरमब्भे, अप्पेगे उयरमच्छे, अप्पेगे पासमब्भे, अप्पेगे पासमच्छे, अप्पेगे पिट्ठमब्भे[8], अप्पेगे पिट्ठमच्छे, अप्पेगे उरमब्भे, अप्पेगे उरमच्छे, अप्पेगे हिययमब्भे, अप्पेगे हिययमच्छे, अप्पेगे थणमब्भे, अप्पेगे थणमच्छे, अप्पेगे खंधमब्भे, अप्पेगे खंधमच्छे, अप्पेगे बाहुमब्भे, अप्पेगे बाहुमच्छे, अप्पेगे हत्थमब्भे, अप्पेगे हत्थमच्छे, अप्पेगे अंगुलिमब्भे, अप्पेगे अंगुलिमच्छे, अप्पेगे णहमब्भे, अप्पेगे णहमच्छे, अप्पेगे गीवमब्भे, अप्पेगे गीवमच्छे, अप्पेगे हणुयमब्भे[9] अप्पेगे हणुयमच्छे, अप्पेगे होट्ठमब्भे[10], अप्पेगे होट्ठमच्छे, अप्पेगे दंतमब्भे, अप्पेगे दंतमच्छे, अप्पेगे जिब्भमब्भे, अप्पेगे जिब्भमच्छे, अप्पेगे तालुमब्भे, अप्पेगे तालुमच्छे, अप्पेगे गलमब्भे, अप्पेगे गलमच्छे, अप्पेगे गंडमब्भे, अप्पेगे गंडमच्छे, अप्पेगे कण्णमब्भे, अप्पेगे कण्णमच्छे, अप्पेगे णासमब्भे[11], अप्पेगे णासमच्छे, अप्पेगे अच्छिमब्भे, अप्पेगे अच्छिमच्छे, अप्पेगे भमुहमब्भे, अप्पेगे भमुहमच्छे, अप्पेगे णिडालमब्भे, अप्पेगे णिडालमच्छे, अप्पेगे सीसमब्भे[12], अप्पेगे सीसमच्छे ।।

३०. अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्दवए ।।

---

१. × (घ) ।
२. निरए (क, ख, घ, च) ।
३. °रूवेसु सत्थेसु (क, च, छ) ।
४. समारंभमाणे (क, ख, ग, च, छ) ।
५. अत्त° (च) ।
६. °मच्चे (घ) ।
७. पुप्फमब्भे अप्पेगे एवं जंघापुप्फगमब्भे अप्पेगे जाणुमब्भे (च) ।
८. पुट्ठि° (क); पिट्ठि° (ख, ग, च); पट्ठि° (घ) ।
९. हणुम° (क, घ, च, छ) ।
१०. उट्ठ° (घ) ।
११. नक्क° (घ, च) ।
१२. सिर° (च) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिंसाविवेग-पदं

३१. एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाता भवंति ।।

३२. एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाता भवंति ।।

३३. **तं परिण्णाय मेहावी** नेव सयं पुढवि-सत्थं समारंभेज्जा, नेवण्णेहिं पुढवि-सत्थं समारंभावेज्जा, नेवण्णे पुढवि-सत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा ।।

३४. जस्सेते पुढवि-कम्म-समारंभा[1] परिण्णाता भवंति, से हु मुणी परिण्णात-कम्मे ।

—त्ति बेमि ।।

तइओ उद्देसो

समप्पण-पदं

३५. से बेमि—से[2] जहावि अणगारे उज्जुकडे, णियागपडिवण्णे[3], अमायं कुव्वमाणे वियाहिए ।।

३६. **जाए सद्धाए णिक्खंतो, तमेवअणुपालिया**[4] । **'विजहित्तु विसोत्तियं'**[5] ।।

३७. **पणया वीरा महावीहिं ।**

आउकाइयाणं अत्थित्त-अभयदाण-पदं

३८. लोगं च आणाए अभिसमेच्चा[6] अकुतोभयं ।।

३९. से बेमि—णेव सयं लोगं अब्भाइक्खेज्जा, णेव अत्ताणं अब्भाइक्खेज्जा ।

जे लोयं अब्भाइक्खइ, से अत्ताणं अब्भाइक्खइ ।

जे अत्ताणं अब्भाइक्खइ, से लोयं अब्भाइक्खइ ।।

आउकाइयहिंसा-पदं

४०. **लज्जमाणा[7] पुढो पास** ।।

४१. अणगारा मोत्ति एगे पवयमाणा ।।

४२. जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं उदय-कम्म-समारंभेणं उदय-सत्थं समारंभमाणे अण्णे वणेगरूवे[8] पाणे विहिंसति ।।

---

१. °काय° (च) ।

२. × (क, छ) ।

३. निकाय° (चू, वृपा) ।

४. तामेव° (घ, च); °अणुपालेज्जा (वृ) ।

५. विजहित्ता° (ख, ग, घ, च); तिन्नोहुसि विसोत्तियं (चू); विजहित्ता पुव्वसंजोगं (वृपा) ।

६. °समिच्चा (ख, घ) ।

७. अट्टे लोए परिजुण्णे, दुस्संबोहे अविजाणए, अस्सिं लोए पव्वहिए, तत्थ-तत्थ पुढो पास, आतुरा परितावेंति । एस आढत्तं पुढविक्काइय-उद्देसयगमेणं धुवगंडिया सुत्तत्थतो भाणियव्वा अप्पेगे अंधमब्भे (चू) ।

८. अणेग° (ग, घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४३. तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेदिता ।।

४४. इमस्स चेव जीवियस्स, परिवंदण-माणण-पूयणाए, जाई-मरण-मोयणाए, दुक्खपडिघायहेउं ।।

४५. से सयमेव उदय-सत्थं समारंभति, अण्णेहिं वा उदय-सत्थं समारंभावेति, अण्णे वा[1] उदय-सत्थं समारंभंते समणुजाणति ।।

४६. तं से अहियाए, तं से अबोहीए ।।

४७. से तं संबुज्झमाणे, **आयाणीयं समुट्ठाए** ।।

४८. सोच्चा खलु[2] भगवओ अणगाराणं वा[3] अंतिए इहमेगेसिं णायं भवति—एस खलु गंथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु णरए ।।

४९. **इच्चत्थं गढिए लोए** ।।

५०. जमिणं 'विरूवरूवेहिं सत्थेहिं'[4] उदय-कम्म-समारंभेणं उदयसत्थं समारंभमाणे अण्णे वणेगरूवे[5] पाणे विहिंसति ।।

आउकाइयाणं जीवत्त-वेदणाबोध-पदं

५१. से बेमि—'अप्पेगे अंधमब्भे, अप्पेगे अंधमच्छे ।।

५२. अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे ।।

५३. अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्दवए'[6] ।।

हिंसाविवेग-पदं

५४. से बेमि—संति पाणा उदय-निस्सिया जीवा अणेगा ।।

५५. इहं[7] च खलु भो ! अणगाराणं उदय-जीवा वियाहिया ।।

५६. सत्थं चेत्थ[8] अणुवीइ पासा[9] ।।

५७. **'पुढो सत्थं'[10] पवेइयं** ।।

५८. **अदुवा अदिण्णादाणं** ।।

५९. कप्पइ णे[11], कप्पइ णे पाउं, अदुवा विभूसाए ।।

---

१. × (ख, ग)
२. × (घ, च) ।
३. × (क, ख, ग) ।
४. ०रूवेसु सत्थेसु (च) ।
५. अणेग० (घ, च) ।
६. × (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ); एतानि त्रीणि सूत्राणि वृत्तौ न व्याख्यातानि प्रतिष्वपि नोपलभ्यन्ते, केवलं चूर्णावेव ध्रुवकण्डिका निर्देशेन गृहीतानि सन्ति । पूर्णपाठार्थं द्रष्टव्यम्—१।२८-३० ।
७. इह (छ) ।
८. चेत्थं (क, ख, छ) ।
९. पास (घ, च) ।
१०. पुढोऽपासं (वृपा) ।
११. णो (घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६०. पुढो सत्थेहिं विउट्टंति ।।

६१. एत्थवि तेसिं णो णिकरणाए ।।

६२. एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाया भवंति ।।

६३. एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाया भवंति ।।

६४. **तं परिण्णाय मेहावी** णेव सयं उदय-सत्थं समारंभेज्जा, णेवण्णेहिं उदय-सत्थं समारंभावेज्जा, उदय-सत्थं समारंभंतेवि अण्णे ण समणुजाणेज्जा ।।

६५. जस्सेते उदय-सत्थ-समारंभा परिण्णाया भवंति, से हु मुणी परिण्णात-कम्मे ।

—त्ति बेमि ।।

चउत्थो उद्देसो

तेउकाइयाणं अत्थित्त-पदं

६६. 'से बेमि'[1]—णेव सयं लोगं अब्भाइक्खेज्जा, णेव अत्ताणं अब्भाइक्खेज्जा ।।
जे लोगं अब्भाइक्खइ, से अत्ताणं अब्भाइक्खइ ।
जे अत्ताणं अब्भाइक्खइ, से लोगं अब्भाइक्खइ ।।

६७. जे दीहलोग-सत्थस्स खेयण्णे, से असत्थस्स खेयण्णे ।
जे असत्थस्स खेयण्णे, से दीहलोग-सत्थस्स खेयण्णे ।।

६८. **वीरेहिं एयं अभिभूय दिट्ठं**, संजतेहिं सया जतेहिं सया अप्पमत्तेहिं ।।

तेउकाइयहिंसा-पदं

६९. **जे पमत्ते गुणट्ठिए[2], से हु दंडे पवुच्चति ।।**

७०. **तं परिण्णाय मेहावी** इयाणिं णो जमहं पुव्वमकासी पमाएणं ।।

७१. **लज्जमाणा पुढो पास[3] ।।**

७२. अणगारा मोत्ति एगे पवयमाणा ।।

७३. जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं अगणि-कम्म-समारंभेणं अगणि-सत्थं समारंभमाणे, अण्णे वणेगरूवे पाणे विहिंसति ।।

७४. तत्थ खलु[4] भगवया परिण्णा पवेइया ।।

७५. इमस्स चेव जीवियस्स, परिवंदण-माणण-पूयणाए, जाई-मरण-मोयणाए, दुक्खपडिघायहेउं ।।

७६. से सयमेव अगणि-सत्थं समारंभइ, अण्णेहिं वा अगणि-सत्थं समारंभावेइ, अण्णे वा अगणि-सत्थं समारंभमाणे समणुजाणइ ।।

---

१. सेयं मिणं (च) ।
२. गुणट्ठो (क, वृ); गुणट्ठीए (ख, ग) ।
३. धुवगंडियं भणिऊणं जाव से बेमि (च) ।
४. × (च) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७७. तं से अहियाए, तं से अबोहीए ।।

७८. से तं संबुज्झमाणे, **आयाणीयं समुट्ठाए** ।।

७९. सोच्चा खलु भगवओ अणगाराणं वा अंतिए इहमेगेहिं णायं भवति—एस खलु गंथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु णरए ।।

८०. **इच्चत्थं गढिए लोए** ।।

८१. जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं अगणि-कम्म-समारंभेणं अगणि-सत्थं समारंभमाणे अण्णे वणेगरूवे पाणे विहिंसति ।।

तेउकाइयाणं जीवत्त-वेदणाबोध-पदं

८२. से बेमि—अप्पेगे अंधमब्भे, अप्पेगे अंधमच्छे ।।

८३. अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे[1] ।।

८४. अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्दवए ।।

हिंसाविवेग-पदं

८५. से बेमि—संति पाणा पुढवि-णिस्सिया, तण-णिस्सिया, पत्त-णिस्सिया, कट्ठ-णिस्सिया, गोमय-णिस्सिया, कयवर-णिस्सिया ।

संति संपातिमा पाणा, आहच्च संपयंति य[2] ।
अगणिं च खलु पुट्ठा, एगे संघायमावज्जंति ।।

जे तत्थ संघायमावज्जंति, ते तत्थ परियावज्जंति[3] ।
जे तत्थ परियावज्जंति, ते तत्थ उद्दायंति ।।

८६. एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाया भवंति ।।

८७. एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाया भवंति ।।

८८. **तं परिण्णाय मेहावी** नेव सयं अगणि-सत्थं समारंभेज्जा, नेवण्णेहिं अगणि-सत्थं समारंभावेज्जा, अगणि-सत्थं समारंभमाणे अण्णे न समणुजाणेज्जा ।।

८९. जस्सेते अगणि-कम्म-समारंभा परिण्णाया भवंति, से हु मुणी परिण्णाय-कम्मे ।

—त्ति बेमि ।।

---

१. द्रष्टव्यम्— १।५३ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
२. × (क, ख, ग, च) ।
३. ० विज्जंति (क, ख, छ) ।

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

पंचमो उद्देसो

अणगार-पदं

९०. **तं[1] णो करिस्सामि समुट्ठाए ॥**

९१. **मंता[2] मइमं अभयं विदित्ता ॥**

९२. तं जे णो करए एसोवरए, एत्थोवरए एस **अणगारेत्ति पवुच्चइ ॥**

गिहचाइणो वि गिहवास-पदं

९३. **जे गुणे से आवट्टे, जे आवट्टे से गुणे ॥**

९४. उड्ढं अहं[3] तिरियं पाईणं 'पासमाणे रूवाइं पासति'[4], 'सुणमाणे सद्दाइं सुणेति'[5] ॥

९५. उड्ढं अहं तिरियं पाईणं मुच्छमाणे रूवेसु मुच्छति, सद्देसु आवि ॥

९६. एस लोए वियाहिए ॥

९७. एत्थ अगुत्ते अणाणाए ॥

९८. **पुणो-पुणो गुणासाए,** वंकसमायारे, **पमत्ते गारमावसे ॥**

वणस्सइकाइय हिंसा-पदं

९९. **लज्जमाणा पुढो पास[6] ॥**

१००. अणगारा मोत्ति एगे पवयमाणा ॥

१०१. जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं वणस्सइ-कम्म-समारंभेणं वणस्सइ-सत्थं समारंभमाणे अण्णे वणेगरूवे[7] पाणे विहिंसति ॥

१०२. तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेदिता ॥

१०३. इमस्स चेव जीवियस्स, परिवंदण-माणण-पूयणाए, जाती-मरण-मोयणाए, दुक्खपडिघायहेउं ॥

१०४. से सयमेव वणस्सइ-सत्थं समारंभइ, अण्णेहिं वा वणस्सइ-सत्थं समारंभावेइ, अण्णे वा वणस्सइ-सत्थं समारंभमाणे समणुजाणइ ॥

१०५. तं से अहियाए, तं से अबोहीए ॥

१०६. से तं संबुज्झमाणे, **आयाणीयं समुट्ठाए ॥**

१०७. सोच्चा भगवओ, अणगाराणं वा अंतिए इहमेगेसिं णायं भवति—एस खलु गंथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु णिरए ॥

---

१. ते (च)।

२. मत्ता (क, घ, च)।

३. अवं (चू); अहे य (ख)।

४. पासियाइं दरिसेति (चू); पस्समाणो रूवाइं पासइ (चूपा)।

५. सुणिमाणि सुणेति (चू); सुणमाणो सद्दाइं सुणेति। एवं गंधरसफासेहि वि भाणियव्वं (चूपा)।

६. धुवगंडिया (चू)।

७. अणेग° (ख, ग, च)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०८. इच्चत्थं गढिए लोए ।

१०९. जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं वणस्सइ-कम्म-समारंभेणं वणस्सइ-सत्थं समारंभेमाणे अण्णे वणेगरूवे पाणे विहिंसति ।।

वणस्सइकाइयाणं जीवत्त-वेदणाबोध-पदं

११०. से बेमि—अप्पेगे अंधमब्भे, अप्पेगे अंधमच्छे ।।

१११. अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे[1] ।।

११२. अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्दवए ।।

वणस्सइजीवाणं माणुस्सेण तुलणा-पदं

११३. से बेमि—इमंपि जाइधम्मयं, एयंपि जाइधम्मयं । इमंपि बुड्ढिधम्मयं, एयंपि बुड्ढिधम्मयं । इमंपि चित्तमंतयं, एयंपि चित्तमंतयं । इमंपि छिन्नं मिलाति, एयंपि छिन्नं मिलाति । इमंपि आहारगं, एयंपि आहारगं । इमंपि अणिच्चयं, एयंपि अणिच्चयं । इमंपि असासयं, एयंपि असासयं । इमंपि चयावचइयं, एयंपि चयावचइयं[2] । इमंपि विपरिणामधम्मयं, एयंपि विपरिणामधम्मयं ।।

हिंसाविवेग-पदं

११४. एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाया भवंति ।।

११५. एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाया भवंति ।।

११६. **तं परिण्णाय मेहावी**—णेव सयं वणस्सइ-सत्थं समारंभेज्जा, णेवण्णेहिं वणस्सइ-सत्थं समारंभावेज्जा, णेवण्णे वणस्सइ-सत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा ।।

११७. जस्सेते वणस्सइ-सत्थ-समारंभा परिण्णाया भवंति, से हु मुणी परिण्णाय-कम्मे ।

—त्ति बेमि ।।

छट्ठो उद्देसो

संसार-पदं

११८. से बेमि—संतिमे तसा पाणा, तं जहा—अंडया पोयया जराउया रसया संसेयया संमुच्छिमा उब्भिया ओववाइया ।।

११९. एस **संसारेत्ति[3] पवुच्चति** ।।

---

१. द्रष्टव्यम्—१।५३ सूत्रस्य पादटिप्पणम् । (ख, ग) ।

२. चओवचइयं (क, घ, च, छ, चू); चयावचयं ३. संसारित्ति (क, ख) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२०. **मंदस्स अवियाणओ ॥**
१२१. णिज्झाइत्ता पडिलेहित्ता पत्तेयं परिणिव्वाणं ॥
१२२. सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अस्सायं[1] अपरिणिव्वाणं महब्भयं दुक्खं ति बेमि ॥

तसकाइयहिंसा-पदं

१२३. **तसंति पाणा पदिसोदिसासु य ॥**
१२४. **तत्थ-तत्थ पुढो पास, आउरा परितावेंति[2] ॥**
१२५. **संति पाणा पुढो सिया ॥**
१२६. **लज्जमाणा पुढो पास ॥**
१२७. अणगारा मोत्ति एगे पवयमाणा ॥
१२८. जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं तसकाय-समारंभेणं तसकाय-सत्थं समारंभमाणे अण्णे वणेगरूवे पाणे विहिंसति ॥
१२९. तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेइया ॥
१३०. इमस्स चेव जीवियस्स, परिवंदण-माणण-पूयणाए, जाई-मरण-मोयणाए, दुक्खपडिघायहेउं ॥
१३१. से सयमेव तसकाय-सत्थं समारंभति, अण्णेहिं वा तसकाय-सत्थं समारंभावेइ, अण्णे वा[3] तसकाय-सत्थं समारंभमाणे समणुजाणइ ॥
१३२. तं से अहियाए, तं से अबोहीए ॥
१३३. से तं संबुज्झमाणे, **आयाणीयं समुट्ठाए ॥**
१३४. सोच्चा भगवओ, अणगाराणं 'वा अंतिए'[4] इहमेगेसिं णायं भवइ—एस खलु गंथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु णरए ॥
१३५. **इच्चत्थं गढिए लोए ॥**
१३६. जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं तसकाय-समारंभेणं तसकाय-सत्थं समारंभमाणे अण्णे वणेगरूवे पाणे विहिंसति ॥

तसकाइयाणं जीवत्त-वेदणाबोध-पदं

१३७. से बेमि—अप्पेगे अंधमब्भे, अप्पेगे अंधमच्छे ॥
१३८. अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे[5] ॥
१३९. अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्दवए ॥

---

१. आसयं (ख)।
२. अट्टा 'ते जाव परितावेंति' धुवगंडिया (चू)।
३. वि (घ)।
४. × (क)। सर्वत्र नास्ति।
५. द्रष्टव्यम्—१।५३ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हिंसाविवेग-पद

१४०. से बेमि—अप्पेगे अच्चाए वहंति, अप्पेगे अजिणाए वहंति,[1] अप्पेगे मंसाए वहंति, अप्पेगे सोणियाए वहंति,[2] •अप्पेगे हिययाए[3] वहंति, अप्पेगे पित्ताए वहंति, अप्पेगे वसाए वहंति, अप्पेगे पिच्छाए वहंति, अप्पेगे पुच्छाए वहंति, अप्पेगे बालाए वहंति, अप्पेगे सिंगाए वहंति, अप्पेगे विसाणाए वहंति, अप्पेगे दंताए वहंति, अप्पेगे दाढाए वहंति, अप्पेगे नहाए वहंति, अप्पेगे ण्हारुणीए वहंति, अप्पेगे अट्ठीए वहंति, अप्पेगे अट्ठिमिंजाए वहंति, अप्पेगे अट्ठाए वहंति, अप्पेगे अणट्ठाए• वहंति, अप्पेगे 'हिंसिसु मेत्ति वा'[4] वहंति, अप्पेगे हिंसंति मेत्ति वा वहंति, अप्पेगे हिंसिस्संति मेत्ति वा वहंति ॥

१४१. एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाया भवंति ॥

१४२. एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाया भवंति ॥

१४३. **तं परिण्णाय मेहावी** णेव सयं तसकाय-सत्थं समारंभेज्जा, णेवण्णेहिं तसकाय-सत्थं समारंभावेज्जा, णेवण्णे तसकाय-सत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा ॥

१४४. जस्सेते तसकाय-सत्थ-समारंभा परिण्णाया भवंति, से हु मुणी परिण्णाय-कम्मे ।

—त्ति बेमि ॥

सत्तमो उद्देसो

अत्ततुला-पदं

१४५. **'पहू एजस्स'[5] दुगंछणाए** ॥

१४६. **आयंकदंसी अहियं ति नच्चा** ॥

१४७. जे अज्झत्थं जाणइ, से बहिया जाणइ । जे बहिया जाणइ, से अज्झत्थं जाणइ ॥

१४८. **एयं तुलमण्णेसिं** ॥

१४९. **इह[6] संतिगया दविया, णावकंखंति वीजिउं[7]** ॥

वाउकाइयहिंसा-पदं

१५०. **लज्जमाणा[8] पुढो पास** ॥

---

१. हणंति (च); वधंति (क); हिंसंति (ध) ।

२. सं० पा०—एवं हिययाए पित्ताए वसाए पिच्छाए पुच्छाए बालाए सिंगाए विसाणाए दंताए दाढाए नहाए ण्हारुणीए अट्ठीए अट्ठिमिंजाए अट्ठाए अणट्ठाए ।

३. हितयाए (क, च) ।

४. हिंसिसु इति वा (ख, ग) ।

५. पहू य एगस्स (वृ); पभू एयस्स (क) ।

६. इति (चूपा) ।

७. जीवियं (क, छ); जीविउं (ख, ग, घ, च, वृ); मूलपाठः चूर्ण्याधारेण स्वीकृतोस्ति । 'दसवेआलिय' सूत्रस्य (६।३७) श्लोकेनास्य पुष्टिर्जायते ।

८. अट्टा, परिजुण्णा आकंपिता जाव आतुरा परितावितां धुवगंडिया (चू) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५१. अणगारा मोत्ति एगे पवयमाणा ॥

१५२. जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं वाउकम्म-समारंभेणं वाउ-सत्थं समारंभमाणे अण्णे वणेगरूवे पाणे विहिंसति ॥

१५३. तत्थ खलु भगवया परिण्णा पवेइया ॥

१५४. इमस्स चेव जीवियस्स, परिवंदण-माणण-पूयणाए, जाई-मरण-मोयणाए, दुक्खपडिघायहेउं ॥

१५५. से सयमेव वाउ-सत्थं समारंभति, अण्णेहिं वा वाउ-सत्थं समारंभावेति, अण्णे वा वाउ-सत्थं समारंभंते समणुजाणइ ॥

१५६. तं से अहियाए, तं से अबोहीए ॥

१५७. से तं संबुज्झमाणे, **आयाणीयं समुट्ठाए** ॥

१५८. सोच्चा भगवओ, अणगाराणं वा अंतिए इहमेगेसिं णायं भवइ—एस खलु गंथे, एस खलु मोहे, एस खलु मारे, एस खलु णिरए ॥

१५९. **इच्चत्थं गढिए लोए** ॥

१६०. जमिणं विरूवरूवेहिं सत्थेहिं वाउकम्म-समारंभेणं वाउ-सत्थं समारंभमाणे अण्णे वणेगरूवे पाणे विहिंसति ॥

वाउकाइयाणं जीवत्त-वेदणाबोध-पदं

१६१. से बेमि—अप्पेगे अंधमब्भे, अप्पेगे अंधमच्छे।

१६२. अप्पेगे पायमब्भे, अप्पेगे पायमच्छे[1] ॥

१६३. अप्पेगे संपमारए, अप्पेगे उद्दवए ॥

हिंसाविवेग-पदं

१६४. से बेमि—**संति संपाइमा पाणा, आहच्च संपयंति य ॥**
फरिसं च खलु पुट्ठा, एगे संघायमावज्जंति ॥
जे तत्थ संघायमावज्जंति, ते तत्थ परियावज्जंति,
जे तत्थ परियावज्जंति, ते तत्थ उद्दायंति ॥

१६५. एत्थ सत्थं समारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा अपरिण्णाया भवंति ॥

१६६. एत्थ सत्थं असमारंभमाणस्स इच्चेते आरंभा परिण्णाया भवंति ॥

१६७. **तं परिण्णाय मेहावी** णेव सयं वाउ-सत्थं समारंभेज्जा, णेवण्णेहिं वाउ-सत्थं समारंभावेज्जा, णेवण्णे वाउ-सत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा ॥

१६८. जस्सेते वाउ-सत्थ-समारंभा परिण्णाया भवंति, से हु मुणी परिण्णाय-कम्मे त्ति बेमि ॥

---

१. द्रष्टव्यम्—१।५३ सूत्रस्य पादटिप्पणम्।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मुणि-संबोध-पदं

१६९. **एत्थं पि जाणे उवादीयमाणा ॥**

१७०. **जे आयारे न रमंति ॥**

१७१. **आरंभमाणा विणयं वियंति ॥**

१७२. **छंदोवणीया अज्झोववण्णा ॥**

१७३. **'आरंभसत्ता पकरेंति संगं'[1] ॥**

१७४. से वसुमं सव्व-समन्नागय-पण्णाणेणं अप्पाणेणं अकरणिज्जं पावं कम्मं ॥

१७५. तं[2] णो अण्णेसिं ॥

हिंसाविवेग-पदं

१७६. **तं परिण्णाय मेहावी** णेव सयं छज्जीव-णिकाय-सत्थं समारंभेज्जा, णेवण्णेहिं छज्जीव-णिकाय-सत्थं समारंभावेज्जा, णेवण्णे छज्जीवणिकाय-सत्थं समारंभंते समणुजाणेज्जा ॥

१७७. जस्सेते छज्जीव-णिकाय-सत्थ-समारंभा परिण्णाया भवंति, से हु मुणी परिण्णाय-कम्मे ।

—त्ति बेमि ॥

---

१. 'आरंभसत्ता पकरेंति संगं', अस्य पाठस्यानन्तरं चूर्णौ निम्नः पाठ उपलभ्यते—'एत्थ वि जाण अणुवाइयमाणा, जे आयारे रमंति, अणारंभमाणा विणयं वदंति, पसत्थछंदोवणीता, तत्थेव अज्झोववण्णा आरंभे असत्ता णो पगरेंति संगं' ।

२. × (ख, ग, छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बीअं अज्झयणं

लोगविजओ

पढमो उद्देसो

आसत्ति-पदं

१. जे गुणे से मूलट्ठाणे, जे मूलट्ठाणे से गुणे ।।

२. इति से गुणट्ठी महता परियावेणं[1] वसे पमत्ते[2]—माया मे, पिया मे, भाया मे, भइणी मे, भज्जा मे, पुत्ता मे, धूया मे, सुण्हा मे[3], सहि-सयण-संगंथ-संथुया मे, विवित्तोवगरण[4]-परियट्टण-भोयण-अच्छायणं[5] मे, **इच्चत्थं[6] गढिए लोए**—वसे पमत्ते ।।

३. **अहो य[7] राओ य परितप्पमाणे, कालाकाल-समुट्ठाई, संजोगट्ठी अट्ठालोभी, आलुंपे सहसक्कारे[8]**, विणिविट्ठचित्ते[9], **एत्थ सत्थे[10] पुणो-पुणो** ।।

असरणाणुपेहापुव्वं अप्पमाद-पदं

४. अप्पं च खलु आउं इहमेगेसिं[11] माणवाणं, तं जहा—सोय-परिण्णाणेहिं[12] परिहायमाणेहिं, चक्खु-परिण्णाणेहिं परिहायमाणेहिं, घाण-परिण्णाणेहिं परिहायमाणेहिं, रस-परिण्णाणेहिं परिहायमाणेहिं, फास-परिण्णाणेहिं परिहायमाणेहिं ।।

---

१. °वेणं पुणो पुणो (छ); चूर्णौ वृत्तौ च नैतत् पदं व्याख्यातमस्ति ।

२. पमत्ते, तं जहा (क, ख, ग, घ, च) ।

३. मे, सहाया मे (घ) ।

४. विवित्तो° (ख,च) ।

५. च्छायणं (क); अच्छादयणं (चू) ।

६. इच्चत्थं से (क); इच्चत्थं इत्थं से (ग); इच्चत्थं एत्थ से (च) ।

७. × (क,ख,ग,घ) ।

८. सहसाकारे (क,ख,ग,छ); सहस्सकारे (च) ।

९. °चिट्ठे (चू,वृ,च) ।

१०. सत्ते (चू, वृपा); सत्थे (चूपा) ।

११. इधम्मेकेसिं चि (च) ।

१२. °पण्णाणेणं (चू,क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५. अभिक्कंतं[1] च खलु वयं संपेहाए[2] ।।

६. तओ से एगया मूढभावं जणयंति[3] ।।

७. जेहिं वा सद्धिं संवसति[4] 'ते वा णं'[5] एगया णियगा तं पुव्वि परिवयंति, सो वा ते णियगे पच्छा परिवएज्जा ।।

८. **नालं ते तव ताणाए** वा, सरणाए वा ।
तुमं पि तेसिं नालं ताणाए वा, सरणाए वा ।।

९. से ण हस्साए[6], ण किड्डाए, ण रतीए, ण विभूसाए ।।

१०. इच्चेवं समुट्ठिए अहोविहाराए ।।

११. अंतरं च खलु इमं संपेहाए[7]—धीरे मुहुत्तमवि णो पमायए ।।

१२. **वओ[8] अच्चेइ जोव्वणं व** ।।

१३. **जीविए इह जे पमत्ता** ।।

१४. से हंता छेत्ता भेत्ता लुंपित्ता विलुंपित्ता उद्दवित्ता उत्तासइत्ता ।।

१५. अकडं करिस्सामित्ति मण्णमाणे ।।

१६. जेहिं वा सद्धिं संवसति 'ते वा णं'[9] एगया णियगा तं पुव्विं पोसेंति, सो वा ते नियगे पच्छा पोसेज्जा ।।

१७. **नालं ते तव ताणाए** वा, सरणाए वा ।।
तुमंपि तेसिं नालं ताणाए वा, सरणाए वा ।।

१८. उवाइय[10]-सेसेण[11] वा सन्निहि-सन्निचओ कज्जइ[12], इहमेगेसिं असंजयाणं[13] भोयणाए ।।

१९. तओ से एगया रोग-समुप्पाया समुप्पज्जंति ।।

२०. जेहिं वा सद्धिं संवसति ते वा णं एगया णियगा तं[14] पुव्विं परिहरंति, सो वा ते णियगे पच्छा परिहरेज्जा ।।

२१. **नालं ते तव ताणाए** वा, सरणाए वा ।।
तुमंपि तेसिं नालं ताणाए वा, सरणाए वा ।।

---

१. अहिक्कंतं (क); अहिकंतं (घ); अतिकंतं (च) ।
२. सपेहाए (क, घ, छ); वृत्तौ 'स पेहाए' इति पदद्वयं पृथग् व्याख्यातम्—प्रेक्ष्य पर्यालोच्य से इति प्राणी (वृ) ।
३. जणयति (वृ); जणयंति (वृपा) ।
४. सवसंति (घ,च,छ) ।
५ ते वणं (क,छ); ते विणं (घ); त एव णं (वृ)।
६ हासाए (क,ख,ग,छ) ।
७. सपेहाए (क, ख, च); वृत्तिकृता पचमसूत्रे स प्रेक्ष्य इति व्याख्यातम्, अत्र च संप्रेक्ष्य ।
८. वओ (क,ख,ग) ।
९. त एव वा णं (वृ); ते व णं (ख) ।
१०. उवादीत (क, च) ।
११. सेसं तेण (क, ख, घ, च, छ) ।
१२. किज्जइ (ख, ग, छ) ।
१३. माणवाणं (च) ।
१४. × (क, ख, ग, घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२२. जाणित्तु दुक्खं पत्तेयं[1] सायं ॥
२३. अणभिक्कंतं[2] च खलु वयं संपेहाए[3] ॥
२४. **खणं जाणाहि पंडिए !**
२५. जाव सोय-'पण्णाणा अपरिहीणा,[4]
जाव णेत्त-पण्णाणा अपरिहीणा,
जाव घाण-पण्णाणा अपरिहीणा,
जाव जीह-पण्णाणा अपरिहीणा,
जाव फास-पण्णाणा अपरिहीणा ॥
२६. इच्चेतेहिं विरूवरूवेहिं पण्णाणेहिं अपरिहीणेहिं[5] आयट्ठं सम्मं समणुवासिज्जासि ।

—त्ति बेमि ॥

बीओ उद्देसो

अरति-निव्वत्तण-पदं

२७. अरइं आउट्टे से मेहावी ॥
२८. खणंसि मुक्के ॥
२९. अणाणाए पुट्ठा 'वि एगे'[6] णियट्टंति ॥
३०. **मंदा मोहेण पाउडा ॥**
३१. "**अपरिग्गहा भविस्सामो**" समुट्ठाए, **लद्धे कामेहिगाहंति**[7] ॥
३२. अणाणाए मुणिणो पडिलेहंति ॥
३३. **एत्थ मोहे पुणो पुणो** सण्णा ॥
३४. **णो हव्वाए णो पाराए ॥**
३५. **विमुक्का[8] हु ते जणा, जे जणा पारगामिणो ॥**

अणगार-पदं

३६. **लोभं अलोभेण दुगंछमाणे, लद्धे कामे नाभिगाहइ**[9] ॥
३७. **विणइत्तु[10] लोभं निक्खम्म,** एस अकम्मे जाणति-पासति ॥

---

१. पत्तेय (क, ख, ग, घ, च) ।
२. अणतिक्कंतं (क) ।
३. सपेहाए (क, ख, ग, घ, च) ।
४. परिण्णाणेहिं अपरिहायमाणेहिं (क,ख,ग,घ,छ) सर्वत्र ।
५. अपरिहीयमाणेहिं (क,ख,ग,घ,छ,वृ) ।
६. × (चू) ।
७. °अभिग्गाहति (क); °अभिग्गहति (ख,छ); अभिगाहति (ग) ।
८. विमुत्ता (क,ख,ग,घ,छ) ।
९. णोभिगाहइ (क, च) ।
१०. विणावि (क, ग, छ, वृ) ।

३८. पडिलेहाए णावकंखति ।।

३९. एस **अणगारेत्ति पवुच्चति** ।।

दंड-समादाण-पदं

४०. **अहो य राओ य[1] परितप्पमाणे, कालाकालसमुट्ठाई, संजोगट्ठी अट्ठालोभी, आलुंपे सहसक्कारे,**[2] विणिविट्ठचित्ते, **एत्थ सत्थे पुणो-पुणो** ।।

४१. से आय-बले, से णाइ-बले[3], से मित्त-बले, से पेच्च-बले, से देव-बले, से राय-बले, से चोर-बले, से अतिहि-बले, से किवण[4]-बले, से समण-बले ।।

४२. इच्चेतेहिं विरूवरूवेहिं कज्जेहिं 'दंड-समायाणं ।।

४३. सपेहाए[5] भया कज्जति'[6] ।।

४४. पाव-मोक्खोत्ति मण्णमाणे ।।

४५. अदुवा आसंसाए ।।

हिंसाविवेग-पदं

४६. **तं परिण्णाय मेहावी** णेव सयं एएहिं कज्जेहिं दंडं समारंभेज्जा, णेवण्णं[7] एएहिं कज्जेहिं दंडं समारंभावेज्जा, 'णेवण्णं एएहिं कज्जेहिं दंडं समारंभंतं समणुजाणेज्जा'[8] ।।

अणासत्ति-पदं

४७. एस मग्गे **आरिएहिं**[9] **पवेइए** ।।

४८. जहेत्थ कुसले णोवलिंपिज्जासि ।

—त्ति बेमि ।।

तइओ उद्देसो

समत्त-पदं

४९. 'से असइं उच्चागोए, असइं णीयागोए। णो हीणे, णो अइरित्ते'[10], णो पीहए[11] ।।

---

१. × (क,ख) ;

२. सहसाकारे (क, ख, ग) ।

३. बले, से सयण-बले (क, ख, ग, घ, च) ।

४. किविण (क, ख, ग) ।

५. संपेहाए (क, ख, ग, घ, च, छ); 'संप्रेक्षया' पर्यालोचनया एवं संप्रेक्ष्य वा (वृ) ।

६. दंडं समारभंति (चू); दंड-समायाणं··· कज्जइ (चूपा) ।

७. णेव अन्नेहिं (छ) ।

८. एएहिं कज्जेहिं दंडं समारंभंते वि अण्णे ण समणुजाणिज्जा (क, ख, ग, घ, च) ।

९. आयरिएहिं (क, ख, घ) ।

१०. नागार्जुनीया—एगमेगे खलु जीवे अईअद्धाए असइं उच्चागोए असइं णीयागोए कंडगट्ठयाए णो हीणे नो अइरित्ते (चू, वृ) ।

११. पीहेइ (ख, ग) ।

Jain Education International　　For Private & Personal Use Only　　www.jainelibrary.org

५०. इति[1] संखाय के गोयावादी ? के माणावादी ? कंसि वा एगे गिज्झे ?

५१. तम्हा पंडिए णो हरिसे, णो कुज्झे ॥

५२. **भूएहिं जाण पडिलेह सातं**[2] ॥

५३. **समिते एयाणुपस्सी** ॥

५४. तं जहा—अंधत्तं बहिरत्तं मूयत्तं काणत्तं कुंटत्तं खुज्जत्तं वडभत्तं सामत्तं सबलत्तं ॥

५५. सहपमाएणं अणेगरूवाओ जोणीओ संधाति[3], विरूवरूवे फासे पडिसंवेदेइ[4] ॥

५६. से अबुज्झमाणे 'हतोवहते जाइ-मरणं अणुपरियट्टमाणे'[5] ॥

परिग्गह-तद्दोस-पदं

५७. जीवियं पुढो पियं इहमेगेसिं माणवाणं, खेत्त-वत्थु ममायमाणाणं ॥

५८. आरत्तं विरत्तं मणिकुंडलं सह हिरण्णेण, इत्थियाओ परिगिज्झ तत्थेव रत्ता ॥

५९. ण एत्थ तवो वा, दमो वा, णियमो वा दिस्सति ॥

६०. संपुण्णं बाले जीविउकामे लालप्पमाणे मूढे विप्परियासुवेइ[6] ॥

६१. **इणमेव णावकंखंति, जे जणा धुवचारिणो ।**
जाती-मरणं परिण्णाय, चरे संकमणे दढे ॥

६२. **णत्थि कालस्स णागमो** ॥

६३. **सव्वे पाणा पियाउया**[7] सुहसाया दुक्खपडिकूला अप्पियवहा पियजीविणो जीविउकामा ॥

६४. **सव्वेसिं जीवियं पियं** ॥

६५. तं परिगिज्झ दुपयं चउप्पयं अभिजुंजियाणं संसिंचियाणं तिविहेणं जा वि से तत्थ मत्ता भवइ—अप्पा वा बहुगा वा ॥

६६. से तत्थ गढिए चिट्ठइ, भोयणाए ॥

६७. तओ से एगया विपरिसिट्ठं[8] संभूयं महोवगरणं भवइ ॥

---

१. एवं (चू) ।

२. नागार्जुनीया :—पुरिसेणं खलु दुक्खविवाग-गवेसएणं पुव्विं ताव जीवाभिगमे कायव्वे, जाइं च इच्छिताणिच्छे, तं सातासातं वियाणिया हिंसोवरती कायव्वा (चू) । नागार्जुनीया :—पुरिसे णं खलु दुक्खुव्वयसुहेसए (वृ) ।

३. संधाएति (ख, ग, च) ।

४. परि० (घ, वृ) ।

५. हतोवहते विणिविट्ठचित्ते एत्थ सत्ते पुणो पुणो (चू) ।

६. विप्परियासमुवेइ (ख, ग, घ, छ) ।

७. पियायया (वृपा) ।

८. विविहं परिसिट्ठं (क, ख, ग, घ, च) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६८. तं पि से एगया दायाया विभयंति, अदत्तहारो[1] वा से अवहरति,[2] रायाणो वा से विलुंपंति, णस्सति वा से, विणस्सति वा से, अगारदाहेण वा से डज्झइ ।।

६९. इति से परस्स अट्ठाए कूराइं कम्माइं बाले पकुव्वमाणे तेण दुक्खेण मूढे[3] विप्परियासुवेइ[4] ।।

७०. मुणिणा हु एयं पवेइयं ।।

७१. **अणोहंतरा एते, नो य ओहं तरित्तए।**
अतीरंगमा एते, नो य तीरं गमित्तए।
अपारंगमा एते, नो य पारं गमित्तए ।।

७२. **आयाणिज्जं च आयाय, तम्मि ठाणे ण चिट्ठइ।**
वितहं पप्पखेयण्णे[5], तम्मि ठाणम्मि चिट्ठइ ।।

७३. उद्देसो पासगस्स णत्थि ।।

७४. बाले पुण णिहे कामसमणुण्णे असमियदुक्खे दुक्खी दुक्खाणमेव आवट्टं अणुपरियट्टइ।

—त्ति बेमि ।।

चउत्थो उद्देसो

भोग-भोगि-दोस-पदं

७५. तओ से एगया रोग-समुप्पाया समुप्पज्जंति ।।

७६. जेहिं वा सद्धिं संवसति ते वा णं एगया णियया पुव्विं परिवयंति, सो वा ते णियगे पच्छा परिवएज्जा ।।

७७. **नालं ते तव ताणाए** वा, सरणाए वा।
तुमंपि तेसिं नालं ताणाए वा, सरणाए वा ।।

७८. **जाणित्तु दुक्खं पत्तेयं सायं ।।**

७९. भोगामेव अणुसोयंति ।।

८०. इहमेगेसिं माणवाणं ।।

८१. तिविहेण जावि से तत्थ मत्ता भवइ—अप्पा वा बहुगा वा ।।

८२. से तत्थ गढिए चिट्ठति, भोयणाए ।।

८३. ततो से एगया विपरिसिट्ठं संभूयं महोवगरणं भवति ।।

---

१. अदत्ताहारा (ख, ग)।
२. अवहरंति (ख, ग)।
३. संमूढे (क, घ)।
४. विप्परियासमुवेति (ख, ग, घ, च, छ)।
५. °अखेतण्णो (चू)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८४. तं पि से एगया दायाया विभयंति, अदत्तहारो वा से अवहरति[1], रायाणो वा से विलुंपंति, णस्सइ वा से, विणस्सइ वा से, अगारडाहेण वा डज्झइ ।।

८५. इति से परस्स अट्ठाए कूराइं कम्माइं बाले पकुव्वमाणे तेण दुक्खेण मूढे[2] विप्परियासुवेइ ।।

८६. **आसं च छंदं च विगिंच[3] धीरे** ।।

८७. तुमं चेव तं सल्लमाहट्टु ।।

८८. जेण सिया तेण णो सिया ।।

८९. **इणमेव णावबुज्झंति, जे जणा मोहपाउडा** ।।

९०. **थीभि लोए पव्वहिए** ।।

९१. ते भो वयंति--एयाइं आयतणाइं ।।

९२. से दुक्खाए मोहाए माराए णरगाए णरग-तिरिक्खाए[4] ।।

९३. सततं मूढे धम्मं णाभिजाणइ[5] ।।

९४. उदाहु वीरे—**अप्पमादो महामोहे** ।।

९५. अलं कुसलस्स पमाएणं ।।

९६. संति-मरणं संपेहाए[6], भेउरधम्मं संपेहाए ।।

९७. णालं पास ।।

९८. अलं ते एएहिं ।।

९९. एयं पास मुणी ! महब्भयं ।।

१००. **णाइवाएज्ज कंचणं** ।।

१०१. **एस वीरे पसंसिए**[7], जे ण णिविज्जति आदाणाए ।।

१०२. **"ण मे देति" ण कुप्पिज्जा, थोवं लद्धुं न खिंसए ।**
'पडिसेहिओ' परिणमिज्जा'[8] ।।

१०३. एयं मोणं समणुवासेज्जासि ।

—त्ति बेमि ।।

---

१. हरति (क, छ) ।
२. संमूढे (क, घ, च) ।
३. विविञ्च (क) ।
४. तिरियाए (घ) ।
५. न जानाति (वृ) ।
६. सपेहाए (क, च) ।
७. नमंसिते (चूपा) ।
८. पडिलाभिओ (वृपा) ।
९. पडिलाभितो परिणमे, णवोवासं चेव कुज्जा (चूपा) ।

पंचमो उद्देसो

आहारस्स अणासत्ति-पदं

१०४. जमिणं विरूवरूवेहिं 'सत्थेहिं लोगस्स कम्म-समारंभा'[1] कज्जंति, तं जहा—अप्पणो से पुत्ताणं धूयाणं सुण्हाणं णातीणं धातीणं राईणं दासाणं दासीणं कम्मकराणं कम्मकरीणं आएसाए, पुढो पहेणाए, सामासाए, पायरासाए ।।

१०५. सन्निहि-सन्निचओ कज्जइ इहमेगेसिं माणवाणं भोयणाए ।।

१०६. समुट्ठिए अणगारे आरिए आरियपण्णे आरियदंसी 'अयं संधीति अदक्खु'[2] ।।

१०७. से णाइए, णाइआवए, ण समणुजाणइ ।।

१०८. सव्वामगंधं[3] परिण्णाय, णिरामगंधो परिव्वए ।।

१०९. **अदिस्समाणे कय-विक्कएसु** । से ण किणे, ण किणावए, किणंतं ण समणुजाणइ ।।

११०. से भिक्खू कालण्णे बलण्णे[4] मायण्णे खेयण्णे खणयण्णे[5] विणयण्णे समयण्णे[6] भावण्णे, परिग्गहं अममायमाणे, कालेणुट्ठाई, अपडिण्णे ।।

१११. दुहओ छेत्ता नियाइ ।।

११२. वत्थं पडिग्गहं, **कंबलं पायपुंछणं, उग्गहं च कडासणं ।**
एतेसु चेव जाएज्जा[7] ।।

११३. लद्धे आहारे अणगारे मायं जाणेज्जा, से जहेयं भगवया पवेइयं ।।

११४. लाभो त्ति न मज्जेज्जा ।।

११५. अलाभो त्ति ण सोयए[8] ।।

११६. बहुं पि लद्धुं ण णिहे ।।

११७. परिग्गहाओ अप्पाणं अवसक्केज्जा ।।

११८. 'अण्णहा णं पासए परिहरेज्जा'[9] ।।

११९. एस मग्गे **आरिएहिं पवेइए** ।।

१२०. जहेत्थ कुसले णोवलिंपिज्जासि त्ति बेमि ।।

कामं-अणासत्ति-पदं

१२१. कामा दुरतिक्कमा ।।

---

१. सत्थेहिं विरूवरूवाणं अट्ठाए (चूपा) ।
२. अयं संधिमदक्खु (वृपा); ०अद्दक्खु (क, ख, ग, छ) ।
३. ०गंधे, (घ, च) ।
४. बालण्णे (क, घ, च, वृ) ।
५. खणण्णो (चू) ।
६. समयण्णे परसमयण्णे (घ, च); ससमयण्णे परसमयण्णे (छ) ।
७. जाणेज्जा (क, ख, ग, घ, च, वृ) ।
८. सोएज्जा (ख, ग, च, छ) ।
९. अण्णतरेण पासाएण परिहरिज्जा (चूपा) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२२. **जीवियं दुप्पडिवूहणं**[1] ।।
१२३. कामकामी खलु अयं पुरिसे ।।
१२४. से सोयति जूरति तिप्पति[2] पिड्डति[3] परितप्पति ।।
१२५. **आयतचक्खू लोग-विपस्सी** लोगस्स अहो भागं जाणइ, उड्ढं भागं जाणइ, तिरियं भागं जाणइ ।।
१२६. गढिए[4] अणुपरियट्टमाणे ।।
१२७. **संधि विदित्ता इह मच्चिएहिं** ।।
१२८. **एस वीरे पसंसिए, जे बद्धे पडिमोयए** ।।
१२९. **जहा अंतो तहा बाहिं, जहा बाहिं तहा अंतो** ।।
१३०. **अंतो अंतो पूतिदेहंतराणि,** पासति पुढोवि सवंताइं ।।
१३१. **पंडिए पडिलेहाए** ।।
१३२. **से मइमं परिण्णाय, मा य हु लालं पच्चासी** ।।
१३३. मा तेसु तिरिच्छमप्पाणमावातए ।।
१३४. कासंकसे[5] खलु अयं पुरिसे, बहुमाई, **कडेण मूढे पुणो तं करेइ** लोभं ।।
१३५. **वेरं वड्ढेति अप्पणो** ।।
१३६. **जमिणं परिकहिज्जइ,** इमस्स चेव पडिवूहणयाए[6] ।।
१३७. **अमरायइ[7] महासड्ढी** ।।
१३८. **अट्टमेतं पेहाए[8]** ।।
१३९. **अपरिण्णाए कंदति** ।।

तिगिच्छा-पदं

१४०. 'से तं जाणह जमहं बेमि'[9] ।।
१४१. 'तेइच्छं पंडिते'[10] पवयमाणे ।।
१४२. से[11] हंता 'छेत्ता भेत्ता'[12] 'लुंपइत्ता विलुंपइत्ता'[13] उद्दवइत्ता ।।

---

१. °वूहगं (ध. चू) ।
२. तप्पति (चू) ।
३. पिट्टइ (क, ख, ग); × (च, चू) ।
४. गढिए लोए (ख, ग, घ) ।
५. कासंकसे य (घ); कासंकासे (वृ); इमं अज्ज करेमि इमं हिज्जो काहामि (चू) ।
६. पडिवूहणट्ठाए (वृ, छ) ।
७. अमराइ (घ, च) ।
८. उपेहाए (चू); तु पेहाए (क, घ, च, छ) ।
९. से एव मायाणह जं बेमि (चू); से एव मायाणह जमहं बेमि (क, ख, ग) ।
१०. तेइच्छपंडितो (चू) ।
११. × (चू) ।
१२. भेत्ता छेत्ता (ख, ग, घ, च, छ) ।
१३. लुंपित्ता विलुंपित्ता (ख, ग, च, छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४३. अकडं करिस्सामित्ति मण्णमाणे ।।
१४४ जस्स वि य णं करेइ ।।
१४५. अलं बालस्स संगेणं ।।
१४६. जे वा से कारेइ बाले ।।
१४७. 'ण एवं'[1] अणगारस्स जायति ।

—त्ति बेमि ।।

छट्ठो उद्देसो

परिग्गह-परिच्चाय-पदं

१४८. से तं संबुज्भमाणे **आयाणीयं समुट्ठाए ।।**
१४९. तम्हा पावं कम्मं, णेव कुज्जा न कारवे ।।
१५०. सिया से[2] एगयरं विप्परामुसइ[3], छसु अण्णयरंसि कप्पति ।।
१५१. सुहट्ठी लालप्पमाणे सएण दुक्खेण मूढे विप्परियासमुवेति ।।
१५२. सएण विप्पमाएण, पुढो वयं पकुव्वति ।।
१५३. जंसिमे पाणा पव्वहिया । पडिलेहाए णो णिकरणाए[4] ।।
१५४. एस परिण्णा पवुच्चइ ।।
१५५. कम्मोवसंती ।।
१५६. जे ममाइय-मतिं जहाति, **से जहाति[5] ममाइयं ।।**
१५७. से हु दिट्ठपहे[6] मुणी, जस्स णत्थि ममाइयं ।।
१५८. तं परिण्णाय मेहावी ।।
१५९. विदित्ता लोगं, वंता लोगसण्णं, 'से मतिमं'[7] परक्कमेज्जासि[8] त्ति बेमि ।।

अणासत्तस्स ववहार-पदं

१६०. णारतिं[9] सहते वीरे, वीरे णो सहते रतिं ।
जम्हा अविमणे वीरे, तम्हा वीरे ण रज्जति ।।
१६१. सद्दे य[10] फासे अहियासमाणे ।।
१६२. णिव्विंद णंदिं इह जीवियस्स ।।

---

१. ण हु एवं (चू) ।
२. तत्थ (क, ख, ग, घ, छ, वृ) ।
३. विपरामुसति (क) ।
४. णिकरणयाए (ख, ग) ।
५. चयइ (क, ख, ग, च) ।
६. दिट्ठभये (घ, च, चूपा, वृपा) ।
७. स मइमं (ख); स इति मुनिः (वृ) ।
८. परक्कमेज्जा (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
९. णो रइं (क, च) ।
१०. × (ख, ग, च, छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६३. **मुणी मोणं समादाय, धुणे[1] कम्म-सरीरगं ।।**
१६४. **पंतं लूहं सेवंति, वीरा समत्तदंसिणो[2] ।।**
१६५. **एस ओघंतरे मुणी, तिण्णे मुत्ते विरते,** वियाहिते त्ति बेमि ।।
१६६. **दुव्वसु मुणी अणाणाए ।।**
१६७. **तुच्छए गिलाइ वत्तए ।।**
१६८. **एस वीरे पसंसिए ।।**
१६९. **अच्चेइ लोयसंजोयं ।।**
१७०. **एस णाए पवुच्चइ[3] ।।**

बंध-मोक्ख-पदं

१७१. जं दुक्खं पवेदितं इह माणवाणं, तस्स दुक्खस्स कुसला परिण्णमुदाहरंति[4] ।।
१७२. इति कम्म परिण्णाय सव्वसो ।।
१७३. जे अणण्णदंसी, से अणण्णारामे,
जे अणण्णारामे, से अणण्णदंसी ।।

धम्मकहा-पदं

१७४. **जहा पुण्णस्स कत्थइ, तहा तुच्छस्स कत्थइ ।**
जहा तुच्छस्स कत्थइ, तहा पुण्णस्स कत्थइ ।।
१७५. अवि य हणे अणादियमाणे[5] ।।
१७६. एत्थंपि जाण, सेयंति णत्थि ।।
१७७. **के यं पुरिसे ? कं च णए ?**
१७८. **एस वीरे पसंसिए, जे बद्धे पडिमोयए ।।**
१७९. **उड्ढं अहं तिरियं दिसासु, से सव्वतो सव्वपरिण्णचारी ।।**
१८०. **ण लिप्पई छणपएण वीरे ।**
१८१. से मेहावी अणुग्घायणस्स खेयण्णे, जे य **बंधप्पमोक्खमण्णेसी ।।**
१८२. कुसले पुण णो बद्धे, णो मुक्के ।।
१८३. से जं च आरभे, जं च णारभे, **अणारद्धं च णारभे ।।**
१८४. **छणं छणं परिण्णाय, लोगसण्णं च सव्वसो ।।**
१८५. उद्देसो पासगस्स णत्थि ।।
१८६. बाले पुण णिहे कामसमणुण्णे असमियदुक्खे दुक्खी दुक्खाणमेव आवट्टं अणुपरियट्टइ ।

—त्ति बेमि ।।

१. धुण (चू) ।
२. सम्मत्त° (वृपा, चू) ।
३. स वच्चइ (घ) ।
४. परिण्ण° (छ) ।
५. × (चू) ।

तइयं अज्झयणं

सीओसणिज्जं

पढमो उद्देसो

सुत्त-जागर-पदं

१. **सुत्ता अमुणी सया[1], मुणिणो सया[2] जागरंति ।।**

२. **लोयंसि जाण अहियाय दुक्खं ।।**

३. **समयं लोगस्स जाणित्ता**, एत्थ सत्थोवरए ।।

४. जस्सिमे सद्दा य रूवा य गंधा य रसा य फासा य अभिसमन्नागया भवंति, से 'आयवं नाणवं वेयवं धम्मवं बंभवं'[3] ।।

५. पण्णाणेहिं परियाणइ लोयं, 'मुणीति वच्चे'[4], धम्मविउत्ति अंजू[5] ।।

६. आवट्टसोए संगमभिजाणति ।।

७. सीओसिणच्चाई से निग्गंथे अरइ-रइ-सहे फरुसियं[6] णो वेदेति ।।

८. जागर-वेरोवरए वीरे[7] ।।

९. **एवं दुक्खा पमोक्खसि[8] ।।**

१०. जरामच्चुवसोवणीए णरे, सययं मूढे धम्मं णाभिजाणति ।

११. **पासिय आउरे[9] पाणे, अप्पमत्तो परिव्वए ।।**

---

१. × (चू, च) ।

२. सततमनवरतम् (वृ) ।

३. आतवि वेदवि धम्मवि बंभवि (चू); आतवं० (चूपा); आयवी णाणवी वेदवी धम्मवी बंभवी (वृपा) ।

४. मुणी वच्चे (वृ, छ) ।

५. उज्जू (क, च, छ) ।

६. फरुसयं (चू) ।

७. धीरे (छ) ।

८. पमुच्चसि (क, ख, ग, घ, छ) ।

९. आतुरे मो (चू) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१२. **मंता एयं मइमं ! पास ॥**

१३. **आरंभजं दुक्खमिणं ति णच्चा ॥**

१४. **माई पमाई[1] पुणरेइ गब्भं ॥**

१५. **उवेहमाणो सद्द-रूवेसु अंजू, माराभिसंकी[2] मरणा पमुच्चति ॥**

१६. अप्पमत्तो कामेहिं, उवरतो पावकम्मेहिं, वीरे आयगुत्ते 'जे खेयण्णे'[3] ॥

१७. जे पज्जवजाय-सत्थस्स खेयण्णे, से असत्थस्स खेयण्णे,
जे असत्थस्स खेयण्णे, से पज्जवजाय-सत्थस्स खेयण्णे ॥

१८. अकम्मस्स ववहारो न विज्जइ ॥

१९. कम्मुणा[4] उवाही[5] जायइ ॥

२०. **कम्मं च पडिलेहाए ॥**

२१. **'कम्ममूलं च'[6] जं छणं ॥**

२२. पडिलेहिय सव्वं समायाय ॥

२३. दोहिं अंतेहिं अदिस्समाणे ॥

२४. **तं परिण्णाय मेहावी ॥**

२५. विदित्ता लोगं, वंता लोगसण्णं से मइमं[7] परक्कमेज्जासि ।

—त्ति बेमि ॥

बीओ उद्देसो

परमबोध-पदं

२६. **जातिं[8] च वुड्ढि च इहज्ज ! पासे ॥**

२७. **भूतेहिं जाणे पडिलेह सातं ॥**

२८. **तम्हा तिविज्जो[9] परमंति णच्चा, समत्तदंसी[10] ण करेंति पावं ॥**

२९. **उम्मुंच पासं इह मच्चिएहिं ॥**

३०. **आरंभजीवी 'उ भयाणुपस्सी'[11] ॥**

---

१. पमाया (घ) ।

२. मारावसक्की (चूपा) ।

३ × (चू०) ।

४. कम्मणा (क, ख, ग) ।

५. उवही (चू) ।

६. कम्ममाहूय (चूपा, वृपा) ।

७. मेहावी (ख, ग, च) ।

८. आदर्शेषु २६ सूत्रादारभ्य ३५ सूत्रपर्यन्तं गाथाचतुष्कमङ्कितमस्ति ।

९. चूर्णौ एतत् पदं द्विधा व्याख्यातमस्ति—विज्जत्ति हे विद्वन् ! अहवा अतिविज्जू । वृत्तौ केवलं 'अतिविज्जं' पदं व्याख्यातमस्ति—अतीव विद्या—तत्त्वपरिच्छेत्री यस्यासावतिविद्यः ।

१०. सम्मत्त° (क, वृपा) ।

११. उभयाणुपस्सी (वृ) ।

३१. कामेसु गिद्धा णिचयं करेंति, संसिच्चमाणा पुणरेंति गब्भं ।।

३२. अवि से हासमासज्ज, हंता णंदीति मन्नति ।
अलं बालस्स संगेण, वेरं वड्ढेति[1] अप्पणो ।।

३३. तम्हा तिविज्जो परमंति णच्चा, आयंकदंसी ण करेति पावं ।।

३४. 'अग्गं च मूलं च विगिंच धीरे'[2] ।।

३५. पलिच्छिंदिया णं णिक्कम्मदंसी ।।

३६. एस मरणा पमुच्चइ ।।

३७. से हु दिट्ठपहे[3] मुणी ।।

३८. लोयंसी परमदंसी विवित्तजीवी उवसंते,
समिते[4] सहिते सया जए कालकंखी परिव्वए ।।

३९. बहुं च खलु पावकम्मं पगडं ।।

४०. सच्चंसि धितिं कुव्वह ।।

४१. एत्थोवरए मेहावी सव्वं पावकम्मं झोसेति[5] ।।

अणेगचित्त-पदं

४२. अणेगचित्ते खलु अयं पुरिसे, से केयणं अरिहए पूरइत्तए ।।

४३. से अण्णवहाए अण्णपरियावाए[6] अण्णपरिग्गहाए, जणवयवहाए[7] जणवय-परियावाए[8] जणवयपरिग्गहाए ।।

संजमाचरण-पदं

४४. आसेवित्ता एतमट्ठं, इच्चेवेगे समुट्ठिया, तम्हा तं बिइयं[9] नो सेवए[10] ।।

४५. णिस्सारं पासिय णाणी, उववायं चवणं[11] णच्चा । अणण्णं चर माहणे !

४६. से ण छणे ण छणावए, छणंतं णाणुजाणइ[12] ।।

४७. णिव्विंद णंदिं अरते पयासु ।।

४८. अणोमदंसी 'णिसन्ने पावेहिं कम्मेहिं'[13] ।।

---

१. वड्ढति (क, ख, ग) ।
२. °वीरे (क, ग, च, चू); मूलं च अग्गं च विइत्तु वीरो (चूपा) । नागार्जुनीयाः—मूलं च अग्गं च विएत्तु वीरे, कम्मासवं चेइ विमोक्खणं च (चू) ।
३. दिट्ठभए (क, ख, ग, घ, च, छ, चूपा, वृ); दिट्ठवहे (चूपा) ।
४. समिते अप्पमाई (ती) (घ, छ) ।
५. सोसेइ (घ) ।
६. °परियावणाए (च, छ); °परियावए (क, ख, ग) ।
७. जाणवय° (ख, ग, च) ।
८. ° परिवायाए (क, ख, ग, च, वृ) ।
९. बीयं (ख, ग, घ, च) ।
१०. सेवे (क, ख, ग, घ) ।
११. चयणं (क, ख, ग, घ, चू) ।
१२. णाणुमोदए (चू) ।
१३. तेसु कम्मेसु पावं (चूपा) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४९. **कोहाइमाणं हणिया य वीरे, लोभस्स पासे णिरयं महंतं ।**
तम्हा हि[1] वीरे विरते वहाओ, 'छिंदेज्ज सोयं लहुभूयगामी'[2] ।।

५०. **गंथं परिण्णाय इहज्जेव वीरे[3], सोयं परिण्णाय चरेज्ज दंते ।**
उम्मग्ग[4] लद्धुं इह माणवेहिं, णो पाणिणं पाणे समारभेज्जासि ।

—त्ति बेमि ।।

तइओ उद्देसो

अज्झत्थ-पदं

५१. **संधिं लोगस्स जाणित्ता ।।**

५२. **आयओ बहिया पास ।।**

५३. तम्हा ण हंता ण विघायए ।।

५४. जमिणं अण्णमण्णवितिगिच्छाए पडिलेहाए ण करेइ पावं कम्मं, किं तत्थ मुणी कारणं सिया ?

५५. **समयं तत्थुवेहाए, अप्पाणं विप्पसायए ।।**

५६. **अणण्णपरमं नाणी, णो पमाए कयाइ वि ।**
आयगुत्ते सया वीरे, जायामायाए जावए ।।

५७. **'विरागं रूवेहिं[5] गच्छेज्जा, महया खुड्डएहि वा'[6,7] ।।**

५८. **आगतिं गतिं परिण्णाय, दोहिं वि अंतेहिं अदिस्समाणे[8] ।**
से ण छिज्जइ ण भिज्जइ ण डज्झइ, ण हम्मइ कंचणं सव्वलोए ।।

५९. **'अवरेण पुव्वं ण सरंति एगे, किमस्सतीतं ? किं वागमिस्सं ?**
भासंति एगे इह माणवा उ, जमस्सतीतं[9] आगमिस्सं'[10] ।।

६०. **णातीतमट्ठं[11] ण य आगमिस्सं, अट्ठं नियच्छंति तहागया उ ।**
विधूत-कप्पे एयाणुपस्सी, णिज्झोसइत्ता 'खवगे महेसी'[12] ।।

---

१. य (ख, ग, घ) ।
२. छिंदिज्ज सोतं न हु भूतगाम (चूपा) ।
३. धीरे (क, ख, ग, घ, छ) ।
४. उम्मुज्ज (क, ख, ग); उम्मुग (घ, छ) ।
५. रूवेसु (क, ख, ग) ।
६. य (ख, ग, घ, च) ।
७. नागार्जुनीयाः—विसयपंचगम्मि वि, दुविहम्मि तियं तियं । भावओ सुट्ठु जाणित्ता, से न लिप्पइ दोसु वि (चू); नागार्जुनीयाः—विसयंमि° (वृ) ।
८. अदिस्समाणेहिं (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ) ।
९. °तीतं त (ख); °तीतं किं (घ) ।
१०. अवरेण पुव्वं किह से अईयं,
किह आगमिस्सं न सरंति एगे ।
भासंति एगे इह माणवा उ,
जह से अईयं तह आगमिस्सं ।।
(चूपा, वृपा) ।
११. °मट्ठं (च) ।
१२. × (क, घ, च) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६१. का अरई ? के आणंदे ? एत्थंपि अग्गहे[1] चरे।
सव्वं हासं परिच्चज्ज, आलीण-गुत्तो परिव्वए ॥

६२. पुरिसा ! तुममेव तुमं मित्तं, किं बहिया मित्तमिच्छसि ?

६३. जं जाणेज्जा उच्चालइयं, तं जाणेज्जा दूरालइयं।
जं जाणेज्जा दूरालइयं, तं जाणेज्जा उच्चालइयं ॥

६४. पुरिसा ! अत्ताणमेव अभिणिगिज्झ, एवं दुक्खा पमोक्खसि ॥

६५. पुरिसा ! सच्चमेव समभिजाणाहि[2] ॥

६६. सच्चस्स आणाए 'उवट्ठिए से'[3] मेहावी मारं तरति ॥

६७. सहिए धम्ममादाय, सेयं समणुपस्सति ॥

६८. दुहओ जीवियस्स, परिवंदण-माणण-पूयणाए, जंसि एगे पमादेंति ॥

६९. 'सहिए दुक्खमत्ताए'[4] पुट्ठो णो झंझाए ॥

७०. पासिमं दविए[5] लोयालोय-पवंचाओ मुच्चइ।

—त्ति बेमि ॥

चउत्थो उद्देसो

कसायविरइ-पदं

७१. से वंता कोहं च, माणं च, मायं च, लोभं च ॥

७२. एयं पासगस्स दंसणं 'उवरयसत्थस्स पलियंतकरस्स'[6] ॥

७३. आयाणं [णिसिद्धा[7] ?] सगडब्भि[8] ॥

७४. जे एगं जाणइ, से सव्वं जाणइ, जे सव्वं जाणइ, से एगं जाणइ ॥

७५. सव्वतो पमत्तस्स भयं, सव्वतो अप्पमत्तस्स नत्थि भयं ॥

७६. 'जे एगं नामे, से बहुं नामे, जे बहुं नामे, से एगं नामे'[9] ॥

७७. दुक्खं लोयस्स जाणित्ता ॥

७८. वंता लोगस्स संजोगं, जंति वीरा[10] महाजाणं।
परेण परं जंति, नावकंखंति जीवियं ॥

---

१. अगरहे (चू)।

२. °जाणहि (क); °जाणेहि (च)।

३. से उवट्ठिए से (क, ख, ग); से समुट्ठिए (घ); से उवट्ठिए (च)।

४. सहिते धम्ममादाय (चू); सहिते दुक्खमत्ताते (चूपा); °मेत्ताते (क); °माताते (च)।

५. दविए लोए (छ)।

६. °कडस्स (क)।

७. द्रष्टव्यम् सू० ८६।

८. × (चू)।

९. जे एगनामे, से बहुनामे, जे बहुनामे, से एगनामे (क); द्वादशारनयचक्रवृत्तौ 'एगणामे बहुणामे' इति पाठो विवृतोस्ति—यद् एकस्य भावः तत् सर्वस्यापि, यत् सर्वस्य तद् एकस्यापि (पृ० ३७५)।

१०. धीरा (क)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७९. एगं विगिंचमाणे पुढो विगिंचइ, पुढो विगिंचमाणे एगं विगिंचइ ।।

८०. **सड्ढी आणाए मेहावी ।।**

८१. लोगं च आणाए अभिसमेच्चा अकुतोभयं ।।

८२. **अत्थि सत्थं परेण परं, णत्थि असत्थं परेण परं ।।**

८३. **जे कोहदंसी से माणदंसी, जे माणदंसी से मायदंसी ।**
जे मायदंसी से लोभदंसी, जे लोभदंसी से पेज्जदंसी ।
जे पेज्जदंसी से दोसदंसी, जे दोसदंसी से मोहदंसी ।
जे मोहदंसी से गब्भदंसी, जे गब्भदंसी से जम्मदंसी ।
जे जम्मदंसी से मारदंसी, जे मारदंसी से निरयदंसी ।
जे निरयदंसी से तिरियदंसी, जे तिरियदंसी से दुक्खदंसी ।।

८४. से मेहावी अभिनिवट्टेज्जा[1] कोहं च, माणं च, मायं च, लोहं च, पेज्जं च, दोसं च, मोहं च, गब्भं च, जम्मं च, मारं[2] च, नरगं च, तिरियं च, दुक्खं च ।।

८५. एयं पासगस्स दंसणं उवरयसत्थस्स पलियंतकरस्स ।।

८६. आयाणं णिसिद्धा सगडब्भि ।।

८७. किमत्थि उवाही[3] पासगस्स ण विज्जइ[4] ?
णत्थि[5] ।

—त्ति बेमि ।।

---

१. ०निव्वट्टेज्जा (क, घ, छ) ।

२. मरणं (ख, ग) ।

३. उवही (धी) (क, घ, छ) ।

४. × (चू) ।

५. चतुर्थाध्ययनस्य ५३ सूत्रस्य 'अह णत्थि'० 'णत्थि वा'० इति पाठान्तरद्वयं लभ्यते । तदाधारेण 'पासगस्स' इति पदानन्तरं 'अह' इति पदं अध्याहार्यम् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउत्थं अज्झयणं

सम्मत्तं

पढमो उद्देसो

सम्मावाए अहिंसा-पदं

१. से बेमि—जे[1] अईया, जे य पडुप्पन्ना, जे य आगमेस्सा अरहंता[2] भगवंतो[3] ते सव्वे एवमाइक्खंति, एवं भासंति, एवं पण्णवेंति, एवं परूवेंति—सव्वे पाणा सव्वे भूता सव्वे जीवा सव्वे सत्ता ण हंतव्वा, ण अज्जावेयव्वा, ण परिघेतव्वा, ण परितावेयव्वा, ण उद्दवेयव्वा ।।

२. एस धम्मे सुद्धे[4] णिइए सासए समिच्च लोयं **खेयण्णेहिं[5] पवेइए** ।।

३. तं जहा—उट्ठिएसु वा, अणुट्ठिएसु वा । उवट्ठिएसु वा, अणुवट्ठिएसु वा । उवरयदंडेसु वा, अणुवरयदंडेसु वा । सोवहिएसु वा, अणोवहिएसु वा । संजोगरएसु वा, असंजोगरएसु वा ।।

४. **तच्चं चेयं तहा चेयं, अस्सिं चेयं पवुच्चइ** ।।

५. तं आइइत्तु[6] ण णिहे ण णिक्खिवे, जाणित्तु धम्मं जहा[7] तहा ।।

६. दिट्ठेहिं णिव्वेयं गच्छेज्जा ।।

७. **णो लोगस्सेसणं चरे** ।।

८. **जस्स णत्थि इमा णाई, अण्णा तस्स कओ[8] सिया ?**

९. दिट्ठं सुयं मयं विण्णायं, जमेयं[9] परिकहिज्जइ ।।

---

१. जे य (ख, ग, घ, छ) ।
२. अरिहंता (ख, ध) ।
३. भगवंता (घ, च) ।
४. सुद्धे धुवे (घ) ।
५. खेत्तन्नेहिं (च) ।
६. आइत्तु (ख, ग, च, छ, वृ) ।
७. अहा (घ) ।
८. कुतो (च) ।
९. जं लोए (चू) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०. **समेमाणा पलेमाणा**[1], पुणो-पुणो जातिं पकप्पेंति ।।
११. **अहो य राओ य**[2] **'जयमाणे, वीरे**[3]'[4] **सया आगयपण्णाणे ।**
पमत्ते बहिया पास, अप्पमत्ते सया परक्कमेज्जासि ।

—त्ति बेमि ।।

बीओ उद्देसो

सम्मानाणे अहिंसापरिक्खा-पदं

१२. जे आसवा ते परिस्सवा, जे परिस्सवा ते आसवा,
जे अणासवा ते अपरिस्सवा, जे अपरिस्सवा ते अणासवा—एए पए संबुज्झमाणे,
लोयं च आणाए अभिसमेच्चा पुढो पवेइयं ।।
१३. आघाइ[5] **णाणी इह माणवाणं** संसारपडिवन्नाणं संबुज्झमाणाणं विण्णाणपत्ताणं ।।
१४. **अट्टा वि संता अदुआ पमत्ता ।।**
१५. अहासच्चमिणं ति बेमि ।।
१६. **नाणागमो मच्चुमुहस्स अत्थि, इच्छापणीया वंकाणिकेया**[6] **।**
कालग्गहीआ णिचए णिविट्ठा, 'पुढो-पुढो जाइं पकप्पयंति'[7] ।।
१७. 'इहमेगेसिं तत्थ-तत्थ संथवो भवति । अहोववाइए फासे पडिसंवेदयंति ।।
१८. **चिट्ठं कूरेहिं कम्मेहिं चिट्ठं परिचिट्ठति**[8] **।**
अचिट्ठं कूरेहिं कम्मेहिं, णो चिट्ठं परिचिट्ठति[9] ।।'[10]
१९. **एगे वयंति अदुवा वि णाणी, णाणी वयंति अदुवा वि एगे ।।**

---

१. पालेमाणा (क, च); चलेमाणा (शु) ।
२. × (ख, ग, छ) ।
३. धीरे (ख, ग, घ, वृ) ।
४. जताहि एवं वीरे (चू) ।
५. अक्खाइ (घ); नागार्जुनीयाः आघाइ धम्मं खलु से जीवाणं, तंजहा—संसारपडिवन्नाणं मणुस्सभवत्थाणं आरंभविणईणंदु दुक्खुव्वे-असुहेसगाणं धम्मसवणगवेसगाणं निक्खित्त-सत्थाणं सुस्सूसमाणाणं पडिपुच्छमाणाणं विन्नाणपत्ताणं (चू, वृ) ।
६. अत्रैकपदे दीर्घत्वम्, वक्रक=वंका ।
७. पुढो पुढो जाइं पकरेंति (चू); एत्थ मोहे पुणो पुणो, पुढो पुढो जाइं पगप्पेंति (चूपा); °पकप्पेंति (क); °पकप्पन्ति (ख, ग, च;) °पकुप्पंति (छ) ।
'पुढो पुढो जाइं पकप्पयन्ति' पंक्तिस्थाने शुब्रिंग संपादिते पुस्तके एतादृश पाठान्तरम्—एत्थ मोहे पुणो पुणो, इहमेगेसिं तत्थ तत्थ संथवो भवइ, अहोववाइए फासे पडिसंवेय-यन्ति ;
चित्तं कूरेहिं कम्मेहिं, चित्तं परिविचिट्ठइ,
अचित्तं कूरेहिं कम्मेहिं, नो चित्तं परिवि-चिट्ठइ ।
८. परिविचिट्ठई (क, चू) ।
९. परिविचिट्ठई (क) ।
१०. × (शु) ।

२०. आवंति केआवंति लोयंसि समणा य माहणा य पुढो विवादं वदंति—से दिट्ठं च णे, सुयं च णे, मयं च णे, विण्णायं च णे, **उड्ढं अहं[1] तिरियं दिसासु** सव्वतो सुपडिलेहियं च णे—"सव्वे पाणा 'सव्वे भूया सव्वे जीवा'[2] सव्वे सत्ता हंतव्वा, अज्जावेयव्वा, परिघेतव्वा, परियावेयव्वा[3], उद्दवेयव्वा।

एत्थ[4] वि जाणह णत्थित्थ दोसो।।"

२१. अणारियवयणमेयं ।।

२२. तत्थ जे ते आरिया, ते एवं वयासी—से दुद्दिट्ठं च भे, दुस्सुयं च भे, दुम्मयं च भे, दुव्विण्णायं च भे, **उड्ढं अहं तिरियं दिसासु** सव्वतो दुप्पडिलेहियं च भे, जण्णं तुब्भे एवमाइक्खह, एवं भासह, एवं 'परूवेह, एवं पण्णवेह'[5]—"सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता हंतव्वा, अज्जावेयव्वा, परिघेतव्वा, परियावेयव्वा, उद्दवेयव्वा।

एत्थ वि जाणह 'णत्थित्थ दोसो'[6] ।।"

२३. वयं पुण एवमाइक्खामो, एवं भासामो, एवं परूवेमो, एवं पण्णवेमो—"सव्वे पाणा सव्वे भूया सव्वे जीवा सव्वे सत्ता ण हंतव्वा, ण अज्जावेयव्वा, ण परिघेतव्वा, ण परियावेयव्वा, ण उद्दवेयव्वा।

एत्थ वि जाणह णत्थित्थ दोसो।।"

२४. आरियवयणमेयं ।।

२५. पुव्वं निकाय समयं पत्तेयं[7] पुच्छिस्सामो—हंभो पावादुया[8] ! किं भे सायं दुक्खं उदाहु असायं ?

२६. समिया पडिवन्ने[9] यावि एवं बूया—सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं असायं अपरिणिव्वाणं महब्भयं दुक्खं। —त्ति बेमि ।।

तइओ उद्देसो

सम्मत्त-पदं

२७. उवेह[10] एणं बहिया य लोयं, से सव्वलोगंसि जे केइ विण्णू।
अणुवीइ[11] पास णिक्खित्तदंडा, जे केइ सत्ता पलियं चयंति[12] ।।

२८. नरा[13] मुयच्चा धम्मविदु त्ति अंजू ।।

---

१. अहेयं (क)।
२. सव्वे जीवा सव्वे भूया (वृ, क, घ, छ)।
३. परियावेयव्वा किलामेयव्वा (क, ख, ग)।
४. एत्थं पि (ख, ग, घ)।
५. पन्नवेह, एवं परूवेह (चू, क)।
६. नत्थित्थ दोसो। अणारियवयणमेयं (क, ख, ग, घ, च, छ)।
७. पत्तेयं-पत्तेयं (ख, ग, च, छ)।
८. पवादिया (छ); समणा माहणा (चू)।
९. पडिवण्णे (चू)।
१०. उवेहणं (क, घ); उवेहेणं (ख, ग); उव्वेहेणं (च, छ)।
११. अणुविंतिय (क, च); अणुचिंतिय (छ)।
१२. जहंति (चू, छ)।
१३. नरे (क, ख, ग, घ, च)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२९. **आरंभजं दुक्खमिणंति णच्चा, एवमाहु समत्तदंसिणो**[1] ॥
३०. ते सव्वे पावाइया दुक्खस्स कुसला परिण्णमुदाहरंति ॥
३१. इति कम्म परिण्णाय सव्वसो ॥
३२. इह आणाकंखी पंडिए अणिहे एगमप्पाणं संपेहाए धुणे सरीरं,[2] कसेहि[3] अप्पाणं, जरेहि अप्पाणं ॥
३३. **जहा जुण्णाइं कट्ठाइं, हव्ववाहो**[4] **पमत्थति, एवं अत्तसमाहिए अणिहे** ॥

कसाय-विवेग-पदं

३४. **विगिंच कोहं अविकंपमाणे, इमं णिरुद्धाउयं संपेहाए** ॥
३५. **दुक्खं च जाण**[5] **अदुवागमेस्सं** ॥
३६. **पुढो फासाइं च फासे**[6] ॥
३७. **लोयं च पास विप्फंदमाणं** ॥
३८. **जे णिव्वुडा पावेहिं कम्मेहिं, अणिदाणा ते वियाहिया** ॥
३९. तम्हा तिविज्जो[7] णो पडिसंजलिज्जासि ।

—त्ति बेमि ॥

चउत्थो उद्देसो

सम्माचरित्त-पदं

४०. आवीलए पवीलए निप्पीलए[8] **जहित्ता पुव्वसंजोगं,** हिच्चा उवसमं ॥
४१. **तम्हा अविमणे वीरे** सारए समिए सहिते सया जए ॥
४२. दुरणुचरो मग्गो वीराणं अणियट्टगामीणं ॥
४३. **विगिंच मंस-सोणियं** ॥
४४. **एस पुरिसे दविए वीरे, आयाणिज्जे वियाहिए ।**
जे धुणाइ समुस्सयं, वसित्ता बंभचेरंसि ॥
४५. **णेत्तेहिं पलिछिन्नेहिं, आयाणसोय-गढिए बाले ।**
अव्वोच्छिन्नबंधणे, अणभिक्कंतसंजोए ।
तमंसि[9] **अविजाणओ** आणाए लंभो णत्थि त्ति बेमि ॥
४६. **जस्स नत्थि पुरा पच्छा, मज्झे तस्स कओ**[10] **सिया ?**
४७. से हु पण्णाणमंते बुद्धे आरंभोवरए ॥

---

१. सम्मत्त° (क, वृपा) ।
२. सरीरगं (वृ) ।
३. किसेहि (चू); कम्मेहिं जरेहिं (ख) ।
४. हव्ववाहू (घ, च, छ) ।
५. बहु (क) ।
६. फासए (क, छ) ।
७. द्रष्टव्यम्—३।२८ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
८. निप्फीलए (क, घ) ।
९. अंधस्स तमस्स (चू); तमंसि (चूपा) ।
१०. कुओ (क, च, छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४८. **सम्ममेयंति पासह ॥**

४९. **जेण बंधं वहं घोरं, परितावं च दारुणं ॥**

५०. **पलिछिंदिय बाहिरगं च सोयं, णिक्कम्मदंसी इह मच्चिएहिं ॥**

५१. **'कम्मुणा सफलं'[1] दट्ठुं, तओ णिज्जाइ वेयवी ॥**

५२. जे खलु भो ! वीरा समिता सहिता सदा जया संघडदंसिणो[2] आतोवरया अहा-तहा[3] लोगमुवेहमाणा, पाईणं पडीणं दाहिणं उदीणं इति सच्चंसि परिचिट्ठिंसु[4], साहिस्सामो[5] णाणं वीराणं समिताणं सहिताणं सदा जयाणं संघडदंसिणं आतोवरयाणं अहा-तहा लोगमुवेहमाणाणं ॥

५३. किमत्थि उवाधी[6] पासगस्स 'ण विज्जति ?
णत्थि'[7] ॥

त्ति बेमि ॥

---

१. कम्माण सफलत्तं (वृ) ।
२. सत्थड° (च); संथड° (चू) ।
३. तहं (क) ।
४. परिविचिट्ठिंसु (क, ख, ग, च, छ); विपरिचिट्ठिंसु (चू) ।
५. अग्घातिस्सामो (च) ।
६. उवही (क, घ, च, छ) ।
७. अह णत्थि ? ण विज्जति (चू); णत्थि वा ण विज्जति (छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचमं अज्झयणं

लोगसारो

पढमो उद्देसो

काम-पदं

१. 'आवंती केआवंति लोयंसि विप्परामुसंति, अट्ठाए अणट्ठाए वा'[1], एएसु चेव विप्परामुसंति ॥

२. गुरू से कामा ॥

३. तओ से मारस्स अंतो, जओ से मारस्स अंतो, तओ से दूरे ॥

४. णेव से अंतो, णेव से दूरे[2] ॥

५. से पासति फुसियमिव, कुसग्गे पणुन्नं णिवतितं वातेरितं ।
एवं बालस्स जीवियं, मंदस्स अविजाणओ ॥

६. कूराणि कम्माणि बाले पकुव्वमाणे, तेण दुक्खेण मूढे विप्परियासुवेइ[3] ॥

७. मोहेण गब्भं 'मरणाति एति'[4] ॥

८. एत्थ मोहे पुणो-पुणो ॥

९. संसयं परिजाणतो, संसारे परिण्णाते भवति,
संसयं अपरिजाणतो, संसारे अपरिण्णाते भवति ॥

१०. जे छेए से सागारियं ण सेवए ॥

---

१. × (ख, ग, घ, च, छ); नागार्जुनीया :— जावंति केइ लोए छक्कायवहं समारभंति अट्ठाए अणट्ठाए वा (वृ) ।

२. बाहिं (चू) ।

३. विप्परियासमुवेति (क, ख, ग, छ); °समेति (च, चू) ।

४. मरणादुवेति (चूपा) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११. **'कट्टु एवं अविजाणओ'[1] बितिया मंदस्स बालया ॥**

१२. लद्धा हुरत्था पडिलेहाए आगमित्ता आणविज्जा अणासेवणयाए—त्ति बेमि ॥

१३. पासह एगे रूवेसु गिद्धे परिणिज्जमाणे ॥

१४. **'एत्थ फासे'[2] पुणो-पुणो ॥**

१५. आवंती केआवंती लोयंसि आरंभजीवी, एएसु चेव आरंभजीवी ॥

१६. एत्थ वि बाले परिपच्चमाणे[3] रमति पावेहिं कम्मेहिं, 'असरणे सरणं' ति मण्णमाणे ॥

१७. इहमेगेसिं एगचरिया भवति—से बहुकोहे बहुमाणे बहुमाए बहुलोहे बहुरए बहुनडे बहुसढे[4] बहुसंकप्पे, **आसवसक्की पलिउच्छन्ने,**
उट्ठियवायं पवयमाणे "मा मे केइ अदक्खू"
अण्णाण-पमाय-दोसेणं, सययं मूढे धम्मं णाभिजाणइ ॥

१८. **अट्टा पया माणव ! कम्मकोविया**[5] जे अणुवरया, अविज्जाए पलिमोक्खमाहु, आवट्टं[6] अणुपरियट्टंति ।

—त्ति बेमि ॥

बीओ उद्देसो

अप्पमादमग्ग-पदं

१९. आवंती केआवंती लोयंसि अणारंभजीवी, एतेसु[7] चेव मणारंभजीवी[8] ॥

२०. एत्थोवरए तं झोसमाणे 'अयं संधी' ति अदक्खु ॥

२१. जे 'इमस्स विग्गहस्स अयं खणे त्ति मन्नेसी[9] ॥

२२. एस मग्गे **आरिएहिं पवेदिते ॥**

२३. **उट्ठिए णो पमायए ॥**

२४. **जाणित्तु दुक्खं 'पत्तेयं सायं'[10] ॥**

२५. **पुढोछंदा इह माणवा, पुढो दुक्खं पवेदितं ॥**

---

१. °अवयाणतो (चू); °अवियाणतो (चूपा); नागार्जुनीयाः—जे खलु विसए सेवई सेवित्ता वा णालोएइ, परेण वा पुट्ठो निण्हवइ अहवा तं परं सएण वा दोसेण उवलिंपिज्जा (वृ, चू) ।

२. एत्थ मोहे (चू, वृपा); तत्थ फासे (चूपा) ।

३. परिवच्चमाणे (च); परितप्पमाणे (छ,चू,वृ); परिपच्चमाणे (चूपा, वृपा) ।

४. चूर्णिकृता 'बहुसढे' इति न व्याख्यातम् ।

५. कम्मअकोविता (चू) ।

६. आवट्टमेव (ख, ग, च) ।

७. तेसु (वृ) ।

८. अणारंभ° (ग, च) ।

९. अन्नेसि (ख, ग, च) ।

१०. पत्तेय-सायं (क, च, छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२६. से अविहिंसमाणे अणवयमाणे, पुट्ठो[1] फासे विप्पणोल्लए ॥
२७. एस समिया-परियाए वियाहिते ॥
२८. जे असत्ता पावेहिं कम्मेहिं, उदाहु ते आयंका फुसंति ॥
इति उदाहु वीरे[2] 'ते फासे पुट्ठो हियासए' ॥
२९. से पुव्वं पेयं पच्छा पेयं भेउर-धम्मं, विद्धंसण-धम्मं, अधुवं, अणितियं, असासयं, चयावचइयं[3], विपरिणाम-धम्मं, पासह एयं 'रूवं ॥
३०. संधिं[4] समुप्पेहमाणस्स एगायतण[5]-रयस्स इह विप्पमुक्कस्स, णत्थि मग्गे विरयस्स त्ति बेमि ॥

परिग्गह-पदं

३१. आवंती केआवंती लोगंसि परिग्गहावंती—से अप्पं वा, बहुं[6] वा, अणुं वा, थूलं वा, चित्तमंतं वा, अचित्तमंतं वा, एतेसु चेव परिग्गहावंती ॥
३२. एतदेवेगेसिं[7] महब्भयं भवति, लोगवित्तं[8] च णं उवेहाए ॥
३३. एए संगे अविजाणतो ॥
३४. से 'सुपडिबुद्धं सूवणीयं ति णच्चा'[9], पुरिसा ! परमचक्खू ! विपरक्कमा[10] ॥
३५. एतेसु चेव बंभचेरं ति बेमि ॥
३६. से सुयं च मे अज्झत्थियं[11] च मे, "बंध-पमोक्खो तुज्झ[12] अज्झत्थेव" ॥
३७. एत्थ विरते अणगारे, दीहरायं तितिक्खए ।
पमत्ते बहिया पास, 'अप्पमत्तो परिव्वए'[13] ॥
३८. एयं मोणं सम्मं अणुवासिज्जासि ।

—त्ति बेमि ॥

तइओ उद्देसो

अपरिग्गह-कामनिव्वेयण-पदं

३९. आवंती केआवंती लोयंसि अपरिग्गहावंती, एएसु चेव अपरिग्गहावंती ॥

१. पुढो (ख, ग, घ) (अशुद्धम्) ।
२. धीरे (क, ख, ग, छ, चू) ।
३. चयो° (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
४. रूव-संधिं (क, च, छ, वृ, चू) ।
५. एगायण (घ) ।
६. बहुयं (क, घ, च, छ) ।
७. एयमेगेसिं (ख, ग); एयमेवेगेसिं (घ) ।
८. लोगं वित्तं (ख, ग, छ) ।
९. सुपडिबद्धं° (क, घ, छ, वृ); सुतं अणुविचिंतेति णच्चा (चूपा) ।
१०. विपरक्कम (ख, ग, च) ।
११. अज्झत्थं (क, ख, ग, घ, च); अज्झत्थयं (वव) ।
१२. × (ख, ग, घ, छ) ।
१३. अप्पमाय सुसिक्खेज्जा (चू) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४०. **सोच्चा वई[1] मेहावी, पंडियाणं णिसामिया।**
समियाए[2] धम्मे, आरिएहिं पवेदिते॥

४१. जहेत्थ मए संधी झोसिए, एवमण्णत्थ संधी दुज्झोसिए भवति, तम्हा बेमि—
णो णिहेज्ज[3] वीरियं॥

४२. जे पुव्वुट्ठाई, णो पच्छा-णिवाई।
जे पुव्वुट्ठाई, पच्छा-णिवाई।
जे णो पुव्वुट्ठाई, णो पच्छा-णिवाई॥

४३. **सेवि तारिसए सिया[4], जे परिण्णाय लोगमणुस्सिओ[5]॥**

४४. **एयं णियाय मुणिणा पवेदितं—इह आणाकंखी पंडिए अणिहे,**
पुव्वावररायं जयमाणे, सया सीलं संपेहाए,
सुणिया भवे अकामे अझंझे॥

४५. **इमेणं चेव जुज्झाहि, किं ते जुज्झेण बज्झओ?**

४६. **'जुद्धारिहं खलु दुल्लहं'[6]॥**

४७. जहेत्थ कुसलेहिं परिण्णा-विवेगे भासिए॥

४८. चुए हु बाले गब्भाइसु रज्जइ[7]॥

४९. **अस्सिं चेयं पव्वुच्चति, रूवंसि वा छणंसि वा॥**

५०. से हु एगे संविद्धपहे[8] मुणी, अण्णहा लोगमुवेहमाणे॥

५१. **इति कम्मं परिण्णाय, सव्वसो से ण हिंसति। संजमति णो पगब्भति॥**

५२. उवेहमाणो पत्तेयं सायं॥

५३. वण्णाएसी णारभे कंचणं सव्वलोए॥

५४. **एगप्पमुहे विदिसप्पइण्णे, णिव्विण्णचारी अरए पयासु॥**

५५. से वसुमं सव्व-समन्नागय-पण्णाणेणं अप्पाणेणं[9] अकरणिज्जं पावं कम्मं॥

५६. तं णो अन्नेसिं[10]॥

५७. **जं सम्मं ति पासहा[11], तं मोणं ति पासहा।**
जं मोणं ति पासहा, तं सम्मं ति पासहा॥

---

१. वतिं (क, ख, ग); वातं (छ)।
२. समया (घ, च)।
३. णिहणिज्ज (ख, ग); निण्हवेज्ज (शु)।
४. चेव (चू)।
५. °मण्णेसति (चू, क); °मण्णुसिया (ख, ग, छ); °मण्णेसिति (च); °मणुस्सिते (चूपा)।
६. जुद्धारियं च दुल्लहं (वृपा)।
७. रिज्जइ (वृ, चूपा)।
८. संविद्धभए (चू, वृपा); संविद्धपहे (चूपा)।
९. × (चू, घ, च)।
१०. अन्नेसी (क, ख, ग, घ, च)।
११. पासह (ख, ग) (सर्वत्र)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५८. ण इमं सक्कं सिढिलेहिं अद्दिज्जमाणेहिं[1] गुणासाएहिं वंकसमायारेहिं पमत्तेहिं गारमावसंतेहिं ।।

५९. मुणी मोणं समायाए, धुणे कम्म-सरीरगं[2] ।।

६०. पंतं लूहं सेवंति, वीरा समत्तदंसिणो[3] ।।

६१. एस ओहंतरे मुणी, तिण्णे मुत्ते विरए वियाहिए ।

—त्ति बेमि ।।

चउत्थो उद्देसो

अवियत्तस्स एगल्लविहार-पदं

६२. गामाणुगामं दूइज्जमाणस्स दुज्जातं दुप्परक्कंतं भवति **अवियत्तस्स[4] भिक्खणो ।।**

६३. वयसा वि एगे बुइया कुप्पंति माणवा ।।

६४. उन्नयमाणे य णरे, महता मोहेण मुज्झति[5] ।।

६५. संबाहा बहवे भुज्जो-भुज्जो दुरतिक्कमा अजाणतो अपासतो ।।

६६. एयं ते मा होउ ।।

६७. एयं कुसलस्स दंसणं ।।

६८. **तद्दिट्ठीए तम्मोत्तीए[6]** तप्पुरक्कारे, **तस्सण्णी तन्निवेसणे ।।**

इरिया-पदं

६९. जयंविहारी चित्तणिवाती[7] पंथणिज्झाती पलीवाहरे,[8] पासिय पाणे गच्छेज्जा ।।

७०. से अभिक्कममाणे पडिक्कममाणे संकुचेमाणे[9] पसारेमाणे विणियट्टमाणे संपलिमज्जमाणे[10] ।।

कम्मणो बंध-विवेग-पदं

७१. एगया गुणसमियस्स रीयतो कायसंफासमणुचिण्णा एगतिया पाणा उद्दायंति ।।

७२. इहलोग-वेयण-वेज्जावडियं ।।

७३. जं 'आउट्टिकयं कम्मं'[11], तं परिण्णाए[12] विवेगमेति ।।

७४. एवं से अप्पमाएणं, विवेगं किट्टति वेयवी ।।

---

१. आदिज्ज० (क); अदिज्ज० (ख, ग, घ, च, छ) ।
२. 'कम्म' नास्ति (क, घ, च, छ) ।
३. सम्मत्त० (क, वृपा, चू) ।
४. अव्वत्तस्स (क) ।
५. वुज्झति (चू पा) ।
६. तम्मुत्तिए (क, च) ।
७. चित्तणिधायी (चूपा) ।
८. पलिबहिरे (क, ग); पलिबाहरे (च); बलिबाहिरे (शु); पलिबाहिरे (ख, घ, छ, वृ) ।
९. संकुच० (च) ।
१०. संपलिज्ज० (ख) ।
११. आउट्टीकम्मं (क, च); आवट्टीकम्मं (घ) ।
१२. परिन्नाय (क, ख, ग, ध, च, छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बंभचेर-पदं

७५. से पभूयदंसी पभूयपरिण्णाणे उवसंते समिए सहिते सया जए दट्ठुं विप्पडिवेदेति अप्पाणं—

७६. किमेस जणो करिस्सति ?

७७. **'एस से'[1] परमारामो, जाओ लोगम्मि इत्थीओ ।।**

७८. मुणिणा हु एतं पवेदितं, उब्बाहिज्जमाणे गामधम्मेहिं—

७९. अवि णिब्बलासए ।।

८०. **अवि ओमोयरियं कुज्जा ।।**

८१. अवि उड्ढंठाणं ठाइज्जा ।।

८२. अवि गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।।

८३. अवि आहारं वोच्छिदेज्जा ।।

८४. अवि चए इत्थीसु मणं ।।

८५. **पुव्वं[2] दंडा पच्छा फासा, पुव्वं फासा पच्छा दंडा ।।**

८६. इच्चेते कलहासंगकरा भवंति । पडिलेहाए आगमेत्ता आणवेज्जा अणासेवणाए त्ति बेमि ।।

८७. से णो काहिए णो पासणिए णो संपसारए णो ममाए[3] णो कयकिरिए वइगुत्ते अज्झप्प-संवुडे परिवज्जए सदा पावं ।।

८८. एतं मोणं समणुवासिज्जासि ।

—त्ति बेमि ।।

पंचमो उद्देसो

आयरिय-पदं

८९. से बेमि—तं जहा ।

अवि हरए पडिपुण्णे, 'चिट्ठइ समंसि भोमे'[4] ।
उवसंतरए सारक्खमाणे, से चिट्ठति सोयमज्झगए ।।

९०. **से पास सव्वतो गुत्ते, पास लोए महेसिणो,**
जे य पण्णाणमंता पबुद्धा आरंभोवरया ।।

९१. **सम्ममेयंति पासह[5] ।।**

९२. कालस्स कंखाए परिव्वयंति त्ति बेमि ।।

---

१. एसे (सो) (क, घ, च) ।
२. पुव्विं (घ) ।
३. ममायए (छ); मामए (शु) ।
४. समंसि भोमे चिट्ठइ (च) ।
५. पासहा (क, च, छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सद्धा-पदं

९३. वितिगिच्छ[1]-समावन्नेणं अप्पाणेणं णो लभति समाधिं ।।
९४. सिया वेगे अणुगच्छंति, असिया वेगे अणुगच्छंति,
अणुगच्छमाणेहिं अणणुगच्छमाणे कहं ण णिव्विज्जे ?
९५. तमेव सच्चं णीसंकं, जं जिणेहिं पवेइयं ।।

मज्झत्थ-पदं

९६. सड्ढिस्स णं समणुण्णस्स संपव्वयमाणस्स—
समियंति मण्णमाणस्स एगया समिया होइ ।
समियंति मण्णमाणस्स एगया असमिया होइ ।
असमियंति मण्णमाणस्स एगया समिया होइ ।
असमियंति मण्णमाणस्स एगया असमिया होइ ।
समियंति मण्णमाणस्स समिया वा, असमिया वा, समिया होइ उवेहाए ।
असमियंति मण्णमाणस्स समिया वा, असमिया वा, असमिया होइ उवेहाए ।।
९७. उवेहमाणो अणुवेहमाणं बूया **उवेहाहि समियाए ।।**
९८. इच्चेवं तत्थ संधी झोसितो भवति ।।

अहिंसा-पदं

९९. उट्ठियस्स ठियस्स गतिं समणुपासह ।।
१००. एत्थवि बालभावे अप्पाणं णो उवदंसेज्जा ।।
१०१. तुमंसि नाम सच्चेव[2] जं 'हंतव्वं' ति मन्नसि,
तुमंसि नाम सच्चेव जं 'अज्जावेयव्वं' ति मन्नसि,
तुमंसि नाम सच्चेव जं 'परितावेयव्वं' ति मन्नसि,
[3]•तुमंसि नाम सच्चेव जं 'परिघेतव्वं' ति मन्नसि,
तुमंसि नाम सच्चेव॰ जं 'उद्दवेयव्वं' ति मन्नसि ।।
१०२. अंजू चेय[4]-पडिबुद्ध[5]-जीवी, तम्हा **ण हंता ण विघायए ।।**
१०३. अणुसंवेयणमप्पाणेणं, जं 'हंतव्वं' ति[6] णाभिपत्थए ।।

आय-पदं

१०४. जे आया से विण्णाया, जे विण्णाया से आया । जेण विजाणति से आया ।।

---

१. वितिगिंछ (छ); विगिंछ (शु) ।
२. तं चेव (क, घ, च) ।
३. सं॰ पा॰—एवं जं 'परिघेतव्वं' ति मन्नसि जं ।
४. चेयं (क, ख, ग, च, चू, छ) ।
५. पडिबुज्झ (क, च, चू) ।
६. × (ख, ग, घ, च, छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०५. तं पडुच्च पडिसंखाए ।।

१०६. एस आयावादी समियाए-परियाए वियाहिते ।

—त्ति बेमि ।।

छट्ठो उद्देसो

मग्गदंसण-पदं

१०७. अणाणाए एगे सोवट्ठाणा, आणाए एगे निरुवट्ठाणा ।।

१०८. एतं ते मा होउ ।।

१०९. एयं कुसलस्स दंसणं ।।

११०. तद्दिट्ठीए तम्मुत्तीए, तप्पुरक्कारे **तस्सण्णी तन्निवेसणे ।।**

१११. अभिभूय अदक्खू, अणभिभूते पभू निरालंबणयाए ।।

११२. जे महं[1] अबहिमणे ।।

११३. पवाएणं पवायं जाणेज्जा ।।

११४. सहसम्मइयाए[2], परवागरणेणं अण्णेसिं वा अंतिए सोच्चा ।।

११५. णिद्देसं णातिवट्टेज्जा मेहावी ।।

सच्चस्स अणुसीलण-पदं

११६. सुपडिलेहिय[3] सव्वतो सव्वयाए[4] सम्ममेव[5] समभिजाणिया[6] ।।

११७. इहारामं परिण्णाय, अल्लीण-गुत्तो परिव्वए ।।
णिट्ठियट्ठी वीरे, आगमेण सदा परक्कमेज्जासि त्ति बेमि ।।

११८. उड्ढं सोता अहे सोता, तिरियं सोता वियाहिया,
एते सोया वियक्खाया, जेहिं संगंति पासहा ।।

११९. 'आवट्टं तु उवेहाए'[7], 'एत्थ विरमेज्ज वेयवी'[8] ।।

१२०. **विणएत्तु[9] सोयं णिक्खम्म[10]**, एस महं अकम्मा जाणति पासति ।।

१२१. पडिलेहाए णावकंखति, इह आगतिं गतिं परिण्णाय ।।

१२२. अच्चेइ जाइ-मरणस्स वट्टमग्गं[11] वक्खाय[12]-रए ।।

---

१. अहं (चू) ।

२. °सम्मुइ (ति) याए (क, घ, च, छ) ।

३. °लेहियं (चू) ।

४. सव्वत्ताए (चू); सर्वात्मना (वृ) ।

५. °मेतं (चू) ।

६. °ज्जा (घ) ।

७. आवट्टमेयं तु पेहाए (ख, ग, घ); अट्टमेयं उवेहाए (चू) ।

८. विवेगं किट्टइ वेदवी (चू, वृपा); एत्थ विरमेज्ज वेयवी (चूपा) ।

९. विणएत्ता (चूपा) ।

१०. णिक्कम्म (घ, छ) ।

११. वदुमग्गं (क); वड्डुमग्गं (च, वृ) ।

१२. विक्खाय (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परमप्प-पदं

१२३. सव्वे सरा णियट्टंति ।।

१२४. तक्का जत्थ ण विज्जइ ।।

१२५. मई तत्थ ण गाहिया ।।

१२६. ओए अप्पतिट्ठाणस्स[1] खेयन्ने ।।

१२७. से ण दीहे, ण हस्से[2], ण वट्टे, ण तंसे, ण चउरंसे, ण परिमण्डले ।।

१२८. ण किण्हे, न णीले, ण लोहिए, ण हालिद्दे, ण सुक्किल्ले ।।

१२९. ण सुब्भिगंधे[3], ण दुरभिगंधे ।।

१३०. ण तित्ते, ण कडुए, ण कसाए, ण अंबिले, ण महुरे ।।

१३१. ण कक्खडे[4], ण मउए, ण गरुए, ण लहुए, ण सीए, ण उण्हे, ण णिद्धे, ण लुक्खे ।।

१३२. ण काऊ ।।

१३३. ण रुहे ।।

१३४. ण संगे ।।

१३५. ण इत्थी, ण पुरिसे, ण अण्णहा ।।

१३६. परिण्णे सण्णे[5] ।।

१३७. उवमा ण विज्जए ।।

१३८. अरूवी सत्ता ।।

१३९. अपयस्स पयं णत्थि ।।

१४०. से ण सद्दे, ण रूवे, ण गंधे, ण रसे, ण फासे, इच्चेताव ।

—त्ति बेमि ।।

---

१. वृत्तिकृता एतत्पदं षष्ठ्यन्तं व्याख्यातम्, तेन अर्थस्य जटिलता जाता । प्राकृतशैल्या एतद् विभक्तिपरिवर्तनपूर्वकं प्रथमान्तं व्याख्यायते, तदा अर्थसारल्यं स्यात् ।

२. हुस्से (क, घ, च); रहस्से (ख);हरस्से(छ) ।

३. सुरहि ° (क, ख, ग) ।

४. कक्कडे (घ, छ) ।

५. सव्वओ (चू); × (घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छट्ठं अज्झयणं

धुयं

पढमो उद्देसो

णाणस्स निरूवण-पदं

१. **ओबुज्झमाणे इह माणवेसु** आघाइ[1] से णरे ॥

२. जस्सिमाओ जाईओ सव्वओ सुपडिलेहियाओ भवंति,
अक्खाइ से णाणमणेलिसं ॥

३. से किट्टति तेसिं समुट्ठियाणं णिक्खित्तदंडाणं समाहियाणं पण्णाणमंताणं इह मुत्तिमग्गं ॥

४. **एवं पेगे महावीरा** विप्परक्कमंति ॥

अणत्तपण्णाणं अवसाद-पदं

५. पासह एगेवसीयमाणे[2] अणत्तपण्णे ॥

६. से बेमि—से जहा वि कुम्मे हरए विणिविट्ठचित्ते, पच्छन्न-पलासे, उम्मग्गं[3] से णो लहइ ॥

७. भंजगा इव सन्निवेसं णो चयंति, एवं पेगे[4]—
'अणेगरूवेहिं कुलेहिं'[5] जाया,
'रूवेहिं सत्ता'[6] कलुणं थणंति,
णियाणाओ ते ण लभंति मोक्खं ॥

---

१. अक्खाति (क, ख, ग, घ); अग्घाति (चू) ।
२. विसीय॰ (क, ख, ग, घ, चू) ।
३. उम्मुग्गं (क, घ, छ) ।
४. वेगे (च) ।
५. अणेगगोत्तेसु कुलेसु (चू) ।
६. रूवेसु गिद्धा (च) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. अह पास 'तेहिं-तेहिं'[1] कुलेहिं आयत्ताए[2] जाया—

गंडी अदुवा कोढी[3], रायंसी अवमारियं।
काणियं झिमियं चेव, कुणियं खुज्जियं तहा॥
उदरिं पास मूयं[4] च, सूणिअं च गिलासिणिं।
वेवइं[5] पीढसप्पिं च, सिलिवयं[6] महुमेहणिं[7]॥
सोलस एते रोगा, अक्खाया अणुपुव्वसो।
अह णं फुसंति आयंका, फासा य असमंजसा॥
मरणं तेसिं संपेहाए[8], उववायं चयणं च णच्चा।
परिपागं[9] च संपेहाए, तं सुणेह जहा तहा॥

९. संति पाणा अंधा तमंसि[10] वियाहिया॥

१०. तामेव सइं असइं अतिअच्च[11] उच्चावयफासे पडिसंवेदेंति[12]॥

११. बुद्धेहिं एयं पवेदितं॥

पाणि-किलेस-पदं

१२. संति पाणा वासगा, रसगा, उदए उदयचरा, आगासगामिणो॥

१३. पाणा पाणे किलेसंति॥

१४. पास लोए महब्भयं॥

तिगिच्छापसंगे अहिंसा-पदं

१५. बहुदुक्खा हु जंतवो॥

१६. सत्ता कामेहिं[13] माणवा॥

१७. अबलेण वहं गच्छंति, सरीरेण पभंगुरेण॥

१८. अट्टे से बहुदुक्खे, इति बाले पगब्भइ[14]॥

---

१. तेहिं (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ)।
२. × (चू)।
३. कोट्ठी (ग, छ)।
४. मूइं (क, घ, चू)।
५. वेवयं (क, ख, ग, च); वेवइयं (घ)।
६. सिलेवइं (घ, च)।
७. मधुमेहणं (छ)।
८. सपेहाए (क, घ, च); पेहाए (ख, ग)।
९. परियागं (ख, ग, घ) (अशुद्ध); पलिपागं (चू)।
१०. तमसि (क, घ)।
११. अतिगच्च (क)।
१२. °वेदेति (क, ख, घ, च, छ)।
१३. कामेसु (च)।
१४. पकुव्वइ (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ, चू); पगब्भइ (चूपा); वृत्तौ चूर्णौ च 'पकुव्वइ' पाठो व्याख्यातोस्ति। किन्तु उत्तराध्ययनस्य पञ्चमाध्ययने सप्तमे श्लोके 'इइ बाले पगब्भई' एवं पाठोस्ति। चूर्णिकृता पाठान्तरत्वेन एष पाठो व्याख्यातः। अर्थ-मीमांसयासौ अधिकं संगच्छते। तेनासौ मूले स्वीकृतः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१९. एते रोगे बहू णच्चा, आउरा परितावए ।।

२०. णालं पास ।।

२१. अलं तवेएहिं ।।

२२. एयं पास मुणी ! महब्भयं ।।

२३. णातिवाएज्ज कंचणं ।।

सयणपरिच्चायधुत-पदं

२४. आयाण भो ! सुस्सूस भो ! 'धूयवादं पवेदइस्सामि'[1] ।।

२५. इह खलु अत्तत्ताए तेहिं-तेहिं कुलेहिं अभिसेएण[2] अभिसंभूता, अभिसंजाता, अभिणिव्वट्टा, अभिसंवुड्ढा[3], अभिसंबुद्धा अभिणिक्खंता, **अणुपुव्वेण महामुणी** ।।

**२६. तं परक्कमंतं परिदेवमाणा, "मा णे चयाहि"[4] इति ते वदंति ।।
छंदोवणीया अज्झोववन्ना, अक्कंदकारी जणगा रुवंति ।**

२७. अतारिसे मुणी, णो[5] ओहंतरए, जणगा जेण विप्पजढा ।।

२८. सरणं तत्थ णो समेति । किह णाम से तत्थ रमति ?

२९. एयं[6] णाणं सया समणुवासिज्जासि ।

—त्ति बेमि ।।

बीओ उद्देसो

कम्मपरिच्चायधुत-पदं

३०. **आतुरं लोयमायाए, 'चइत्ता पुव्वसंजोगं'**[7] हिच्चा[8] उवसमं वसित्ता बंभचेरंमि वसु वा अणुवसु वा जाणित्तु धम्मं अहा[9] तहा, **'अहेगे तमचाइ कुसीला ।।**

३१. वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं विउसिज्जा[10] ।।

३२. अणुपुव्वेण अणहियासेमाणा परीसहे दुरहियासए ।।

३३. कामे ममायमाणस्स इयाणिं वा मुहुत्ते[11] वा अपरिमाणाए भेदे ।।

---

१. नागार्जुनीयाः—धूयोवायं पवेयइस्सामि (चू); धूतोवायं पवेयंति (वृ) ।

२. × (घ, च) ।

३. × (क, छ); °संवड्ढा (ख, ग); अभिबुद्धा (घ) ।

४. जहाहि (चू) ।

५. × (क, घ, च, छ) ।

६. एवं (च) (अशुद्धं) ।

७. जहित्ता पुव्वमायतणं (चू) ।

८. हिच्चा इह (चू) ।

९. जहा (ख) ।

१०. विओ° (छ) ।

११. मुहुत्तेण (ख, ग, च, छ, वृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३४. एवं से अंतराइएहिं कामेहिं आकेवलिएहिं[1] अवितिण्णा[2] चेए[3]।

३५. 'अहेगे धम्म मादाय'[4] 'आयाणप्पभिइं सुपणिहिए'[5] चरे[6] ॥

३६. अपलीयमाणे[7] दढे ॥

३७. सव्वं गेहिं[8] परिण्णाय, एस पणए महामुणी ॥

३८. अइअच्च सव्वतो संगं "ण महं अत्थित्ति इति एगोहमंसि ॥"

३९. जयमाणे एत्थ विरते अणगारे सव्वओ मुंडे रीयंते[9] ॥

४०. जे अचेले परिवुसिए[10] संचिक्खति[11] ओमोयरियाए ॥

४१. से **अक्कुट्ठे व**[12] हए व **लूसिए**[13] **वा** ॥

४२. **पलियं पगंथे** अदुवा पगंथे[14] ॥

४३. अतहेहिं सद्द-फासेहिं, इति संखाए ॥

४४. एगतरे अण्णयरे अभिण्णाय, **तितिक्खमाणे परिव्वए** ॥

४५. जे य हिरी, जे य अहिरीमणा[15] ॥

४६. चिच्चा सव्वं विसोत्तियं, 'फासे फासे'[16] **समियदंसणे** ॥

४७. एते भो ! णगिणा वुत्ता, जे लोगंसि अणागमणधम्मिणो ॥

४८. आणाए मामगं धम्मं ॥

४९. एस उत्तरवादे, इह माणवाणं वियाहिते ॥

५०. एत्थोवरए तं झोसमाणे ॥

५१. आयाणिज्जं परिण्णाय, परियाएण विगिंचइ ॥

५२. 'इहमेगेसिं एगचरिया होति'[17] ॥

५३. तत्थियराइयरेहिं कुलेहिं सुद्धेसणाए सव्वेसणाए ॥

५४. से मेहावी परिव्वए ॥

---

१. अकेवलि० (चू)।

२. अवतिन्ना (ग, छ, वृ)।

३. एताणि विवज्जतेण पढिज्जंति अत्थआसावातो—अहेगे तं चाई सुसीले वत्थं पडिग्गहं कंबलं पाय-पुंछणं अविउसिज्ज, अणुपुव्वेण अहियासमाणो परीसहे दुरहियासओ, कामे अममायमाणस्स इदाणिं वा मुहुत्ते वा अपरिमाणाए भेदे। एवं से अंतराइएहिं कामेहिं आकेवलिएहिं वितिन्ना चेए (चू)।

४. सहिए धम्ममायाय (चूपा)।

५. °पभितिसु पणि° (क, ख, ग, च, छ, वृ)।

६. उवदेसमेव चर (चू)।

७. अप्प° (क, ग, घ, छ)।

८. गिहिं (ग, घ); गंथं (थं) (चू)।

९. रीयते (क, घ, च)।

१०. °जुसिते (छ); × (चू)।

११. संचिट्ठति (छ)।

१२. वा (ख, च, छ)।

१३. लुंचिए (ख, ग, छ, वृ)।

१४. पकत्थ (क); पकंथे (ख, ग, च); पगत्थ (छ)।

१५. °माणे (णा) (ख, घ, च, छ)।

१६. फासे (ख, घ); संफासे फासे (च)।

१७. × (चू)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५५. सुब्भि अदुवा दुब्भि ।।
५६. अदुवा तत्थ भेरवा ।।
५७. पाणा पाणे किलेसंति ।।
५८. ते फासे पुट्ठो धारो[1] अहियासेज्जासि ।

—त्ति बेमि ।।

तइओ उद्देसो

उवगरणपरिच्चायधुत-पदं

५९. 'एयं खु मुणो'[2] आयाणं सया सुअक्खायधम्मे विधूतकप्पे णिज्झोसइत्ता[3] ।।
६०. जे अचेले परिवुसिए, तस्स णं भिक्खुस्स णो एवं भवइ—परिजुण्णे[4] मे वत्थे वत्थं जाइस्सामि, सुत्तं जाइस्सामि, सूइं जाइस्सामि, संधिस्सामि, सीवीस्सामि, उक्कसिस्सामि, वोक्कसिस्सामि, परिहिस्सामि[5], पाउणिस्सामि ।।
६१. अदुवा तत्थ परक्कमंतं भुज्जो अचेलं तणफासा फुसंति, सीयफासा फुसंति, तेउफासा फुसंति, दंसमसगफासा फुसंति ।।
६२. एगयरे अण्णयरे विरूवरूवे फासे अहियासेति अचेले ।।
६३. 'लाघवं आगममाणे'[6] ।।
६४. तवे से अभिसमण्णागए भवति ।।
६५. जहेयं[7] भगवता पवेदितं तमेव अभिसमेच्चा सव्वतो[8] सव्वत्ताए समत्तमेव[9] समभिजाणिया[10] ।।

सरीरलाघवधुत-पदं

६६. एवं तेसिं महावीराणं चिरराइं पुव्वाइं वासाणि रीयमाणाणं दवियाणं पास अहियासियं ।।
६७. आगयपण्णाणाणं किसा बाहा[11] भवंति, पयणुए य मंससोणिए ।।
६८. विस्सेणिं कट्टु, परिण्णाए[12] ।।

---

१. वीरो (रे) (क, च) ।
२. एस मुणी (चू) ।
३. °सइत्ता (क, ख, ग, छ, वृ) ।
४. °जिण्णे (घ, छ) ।
५. × (क, घ, च) ।
६. नागार्जुनीयाः—एवं खलु से उवगरण-लाघवियं तवं कम्मक्खयकारणं करेइ (चू, वृ) ।
७. से जहेयं (चू) ।
८. नागार्जुनीयाः—सव्वं ।
९. सम्मत्तमेव (ख, ग, घ, च, छ, वृ); समत्तमेव (वृपा) ।
१०. °जाणित्ता (ख, ग, च) ।
११. बाधा (क, च); बाहवो (छ) ।
१२. °ण्णाय (ख, ग, च, छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६९. एस तिण्णे मुत्ते विरए वियाहिए त्ति बेमि ।।

संजमधुत-पदं

७०. **विरयं भिक्खुं रीयंतं,** चिरराओसियं, अरती तत्थ किं विधारए[1] ?

७१. **संधेमाणे[2] समुट्ठिए[3]** ।।

७२. **जहा से दीवे असंदीणे,** एवं से धम्मे **'आयरिय-पदेसिए'[4]** ।।

७३. 'ते अणवकंखमाणा'[5] अणतिवाएमाणा[6] दइया[7] मेहाविणो पंडिया ।।

विणयधुत-पदं

७४. एवं तेसिं भगवओ अणुट्ठाणे[8] जहा से दिया[9]-पोए ।।

७५. एवं ते **सिस्सा दिया य राओ य, अणुपुव्वेण वाइय ।**

—त्ति बेमि ।।

चउत्थो उद्देसो

गोरवपरिच्चायधुत-पदं

७६. एवं ते **सिस्सा दिया य राओ य, अणुपुव्वेण वाइया** 'तेहिं महावीरेहिं'[10] पण्णाणमंतेहिं ।।

७७. तेसिंतिए[11] पण्णाणमुवलब्भ[12] हिच्चा उवसमं 'फारुसियं समादियंति'[13] ।।

७८. **वसित्ता बंभचेरंसि** आणं 'तं णो' त्ति मण्णमाणा ।।

७९. अग्घायं[14] तु सोच्चा णिसम्म **समणुण्णा जीविस्सामो** एगे णिक्खम्म ते—
असंभवंता विडज्झमाणा, कामेहिं गिद्धा अज्झोववण्णा ।
समाहिमाघायमझोसयंता, सत्थारमेव फरुसं वदंति ।।

८०. **सीलमंता उवसंता, संखाए रीयमाणा । असीला अणुवयमाणा ।।**

८१. **बितिया मंदस्स बालया ।।**

---

१. न धारए (चूपा) ।
२. संधणाए (चू); संधेमाणे (चूपा) ।
३. °ट्ठाय (ख, ग, च, छ) ।
४. आरिय-देसिए (क, च, चू) ।
५. ते अवयमाणा भावसोया (चू); ते अणवकंखेमाणा (चूपा) ।
६. पाणे अणति° (ख, ग, छ, वृ); अणतिवरतेमाणा जाव अपरिगिण्हेमाणा (चू) ।
७. चियत्ता (चू) ।
८. आणुट्ठाणे (चू) ।
९. दिय (ग) ।
१०. तेसिं महावीराणं (चू) ।
११. तेसंतिए (क, च); तेसिमंतिए (छ) ।
१२. °पइलब्भ (चू) ।
१३. अहेगे फारुसियं समारभंति (चूपा); अहेगे फारुसियं समारुहंति (वृपा) ।
१४. आघायं (क, ख, घ, च) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८२. णियट्टमाणा वेगे आयार-गोयरमाइक्खंति णाणभट्ठा दंसणलूसिणो ॥
८३. णममाणा एगे जीवितं विप्परिणामेंति ॥
८४. पुट्ठा वेगे णियट्ठंति, जीवियस्सेव कारणा[1] ॥
८५. णिक्खंतं पि तेसिं दुन्निक्खंतं भवति ॥
८६. बालवयणिज्जा हु ते नरा, पुणो-पुणो जातिं[2] **पकप्पेंति** ॥
८७. अहे संभवंता विद्दायमाणा, **अहमंसी**[3] **विउक्कसे** ॥
८८. उदासीणे[4] **फरुसं वदंति** ॥
८९. पलियं पगंथे अदुवा **पगंथे** अतहेहिं ॥
९०. तं मेहावी जाणिज्जा धम्मं ॥
९१. अहम्मट्ठी तुमंसि णाम बाले, आरंभट्ठी, अणुवयमाणे, हणमाणे[5], घायमाणे, हणओ यावि समणुजाणमाणे, **घोरे धम्मे उदीरिए, उवेहइ णं अणाणाए** ॥
९२. एस विसण्णे वितद्दे वियाहिते त्ति बेमि ॥
९३. किमणेण भो ! जणेण करिस्सामित्ति मण्णमाणा[6] —'एवं पेगे वइत्ता'[7],
मातरं पितरं हिच्चा, णातओ य परिग्गहं ।
'वीरायमाणा[8] समुट्ठाए, अविहिंसा सुव्वया दंता'[9] ॥
९४. अहेगे[10] पस्स दीणे उप्पइए पडिवयमाणे[11] ॥
९५. वसट्टा कायरा जणा लूसगा भवंति ॥

---

१. कारणाए (क, घ, छ) ।
२. गब्भाइ (चू) ।
३. °मंसीति (ख, ग, च) ।
४. उदासीणा (छ) ।
५. हण पाणे (क, ख, ग, घ च); हयमाणे (छ); 'छ' प्रतौ 'हयमाणे' इति पाठान्तरं लभ्यते । अस्याधारेण 'हणमाणे' इति पाठस्य कल्पना जायते । अर्थसमीक्षयापि 'हणमाणे' इति पाठः समीचीनः प्रतिभाति । 'घायमाणे' अत्र कारितस्य 'हणओयावि समणुजाणमाणे' अत्रानुमोदनस्यार्थोस्ति । अस्मिन् संदर्भे यदि 'हणमाणे' पाठः स्यात् तदा कृतकारितानुमोदनस्य संगतिर्जायते । चूर्णावपि (पृ० २३०) अस्य पाठस्य संवादिविवरणं लभ्यते—'पुढविकाइयादि जीवे हणसि हणावेसि हणंतोवि' योगत्रिककरणत्रिगेण ।
६. मण्णमाणे (क, ख, घ, च, छ) ।
७. एवमेगे विदित्ता (क); एवं एगे विभत्ता (चूपा); विदित्ता (छ) ।
८. °माणे (क, घ, च, छ) ।
९. नागार्जुनीया—समणा भविस्सामो अणगारा अकिंचणा अपुत्ता अपसूया अविहिंसगा सुव्वया दंता परदत्तभोइणो पावं कम्मं न करिस्सामो समुट्ठाए (चू, वृ) ।
१०. × (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ) ।
११. पडियमाणे (च, छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९६. अहमेगेसिं सिलोए[1] पावए भवइ, "से समणविब्भंते समणविब्भंते"[2] ।।

९७. पासहेगे[3] समण्णागएहिं असमण्णागए[4], णममाणेहिं अणममाणे, विरतेहिं अविरते, दविएहिं अदविए ।।

९८. अभिसमेच्चा पंडिए मेहावी णिट्ठियट्ठे वीरे आगमेणं सया परक्कमेज्जासि[5] ।

—त्ति बेमि ।।

पंचमो उद्देसो

तितिक्खाधुत-पदं

९९. से गिहेसु वा गिहंतरेसु वा, गामेसु वा गामंतरेसु वा, नगरेसु वा नगरंतरेसु वा, जणवएसु वा 'जणवयंतरेसु वा'[6], संतेगइया जणा लूसगा भवंति, अदुवा—
फासा फुसंति ते फासे, पुट्ठो वीरोहियासए[7] ।।

धम्मोवदेसधुत-पदं

१००. **ओए समियदंसणे** ।।

१०१. **दयं लोगस्स जाणित्ता** पाईणं पडीणं दाहिणं उदीणं, आइक्खे[8] विभए किट्टे वेयवी ।।

१०२. से उट्ठिएसु वा अणुट्ठिएसु[9] वा सुस्सूसमाणेसु पवेदए—संतिं, विरतिं, उवसमं, णिव्वाणं[10], सोयवियं[11], अज्जवियं, मद्दवियं, लाघवियं, अणइवत्तियं[12] ।।

१०३. सव्वेसिं पाणाणं सव्वेसिं भूयाणं सव्वेसिं जीवाणं सव्वेसिं सत्ताणं अणुवीइ भिक्खू धम्ममाइक्खेज्जा ।।

---

१. लोए (च, छ) ।
२. समणवितंते (क, घ, चू); समणे भवित्ता समणविब्भंते (ख, ग); समणे भवित्ता विब्भंते विब्भंते (छ) ।
३. पास एगे (क); पासवेगे (च) ।
४. सह असमण्णागए (ख, ग, छ) ।
५. सव्वओ परिव्वएज्जासि (चू) ।
६. जणवयंतरेसु वा जाव रायहाणीसु वा रायहाणीअंतरेसु वा गामणयरतरे वा गाम जणवयंतरे वा णगरजणवयंतरे वा जाव गाम-रायहाणीअंतरे वा उज्जाणे वा उज्जाणंतरे वा विहारभूमी गयस्स वा गच्छंतस्स वा अद्धाणपडिवन्नस्स अच्छंतस्स वा जाव काउसग्गं ठाणं वा ठियस्स (चू, वृ) ।
७. धीरो ° (च) ।
८. नागार्जुनीया :—'जे खलु समणे बहुस्सुए बब्भागमे आहारणहेउकुसले धम्मकहालद्धि-संपन्ने खेत्तं कालं पुरिसं समासज्ज केयं पुरिसे कं वा दरिसणमभिसंपन्नो ? एवं गुण जाइए पभू धम्मस्स आघवित्तए' ।
९. अणुट्ठिएसु वा जाव सोवट्ठिएसु वा (चू) ।
१०. णेव्वाणं (क, च) ।
११. सोयं (ख, ग) ।
१२. अणतिवातियं (चू) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०४. अणुवीइ भिक्खू धम्ममाइक्खमाणे—णो अत्ताणं आसाएज्जा, णो परं आसाएज्जा, णो अण्णाइं पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं आसाएज्जा ।।

१०५. से अणासादए अणासादमाणे वुज्झमाणाणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं, **जहा से दीवे असंदीणे**, एवं से **भवइ सरणं महामुणी** ।।

कसायपरिच्चायधुत-पदं

१०६. **एवं से उट्ठिए ठियप्पा[1], अणिहे अचले चले, अबहिलेस्से परिव्वए** ।।

१०७. **संखाय पेसलं धम्मं, दिट्ठिमं परिणिव्वुडे** ।।

१०८. **तम्हा संगं ति पासह** ।।

१०९. **गंथेहिं गढिया[2] णरा, विसण्णा कामविप्पिया[3]** ।।

११०. 'तम्हा लूहाओ णो परिवित्तसेज्जा'[4] ।।

१११. जस्सिमे आरंभा सव्वतो सव्वत्ताए सुपरिण्णाया भवंति, 'जेसिमे लूसिणो णो परिवित्तसंति'[5], से वंता कोहं च माणं च मायं च लोभं च ।।

११२. **एस तुट्टे[6] वियाहिते** त्ति बेमि ।।

११३. **कायस्स विओवाए,[7] एस संगामसीसे वियाहिए ।**
से हु पारंगमे मुणी, अवि हम्ममाणे[8] फलगावयट्ठि[9],
कालोवणीते कंखेज्ज कालं, जाव सरीरभेउ ।

—त्ति बेमि ।।

---

१. उट्ठितप्पा (चू, च) ।
२. गहिता (छ) ।
३. कामक्कंता (क, ख, ग, च, छ, वृ) ।
४. जंसि इमे लूसिणो णो परिवित्तसंति (चू); तम्हा लूहाओ णो परिवित्तसिज्जा (चूपा) ।
५. × (चू); जस्सि० (च, छ) ।
६. तिउट्टे (चू) ।
७. विवाघाए (ख, ग); विघाए (छ); विवायाए (च), व्याघातः (विआघाए) (वृ) ।
८. हन्न० (क) ।
९. ०तट्ठि (क, छ) ।

अट्ठमं अज्झयणं

विमोक्खो

पढमो उद्देसो

असमणुण्णविमोक्ख-पदं

१. से बेमि—समणुण्णस्स[1] वा असमणुण्णस्स[2] वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा णो पाएज्जा, णो णिमंतेज्जा, णो कुज्जा वेयावडियं—परं आढायमाणे त्ति बेमि ॥

२. धुवं चेयं जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा, पायपुंछणं वा लभिय णो लभिय, भुंजिय णो भुंजिय, पंथं विउत्ता[3] विउकम्म विभत्तं धम्मं झोसेमाणे[4] समेमाणे पलेमाणे[5], पाएज्ज वा, णिमंतेज्ज वा, कुज्जा वेयावडियं—परं अणाढायमाणे त्ति बेमि ॥

असम्मायार-पदं

३. इहमेगेसिं आयार-गोयरे णो सुणिसंते भवति, ते इह आरंभट्ठी अणुवयमाणा हणमाणा[6] घायमाणा, हणतो यावि समणुजाणमाणा ॥

४. अदुवा अदिन्नमाइयंति ॥

५. अदुवा वायाओ विउंजंति[7], तं जहा—अत्थि लोए, णत्थि लोए, धुवे लोए, अधुवे लोए, साइए[8] लोए, अणाइए[9] लोए, सपज्जवसिते लोए, अपज्जवसिते

---

१. अतः पूर्वं 'से भिक्खू' इति गम्यमस्ति ।
२. अमणु° (क, ख, ग ।
३. वियत्ता (क, छ); विवत्ताणं (ख, ग); विइयत्ता (च); विवत्तूण (चू) ।
४. जोसे° (च) ।
५. मलेमाणा (घ); बलेमाणे (च); चलेमाणे (छ); मालेमाणा (चू) ।
६. द्रष्टव्यम्—६।९१ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।
७. विप्पउंजंति (क, ख, ग, च, छ) ।
८. साइ (घ) ।
९. अणाइ (घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लोए, सुकडेत्ति वा दुक्कडेत्ति वा, कल्लाणेत्ति वा पावेत्ति[1] वा, साहुत्ति वा असाहुत्ति वा, सिद्धीति वा असिद्धीति वा, णिरएत्ति वा अणिरएत्ति वा ।।

६. जमिणं विप्पडिवण्णा मामगं धम्मं पण्णवेमाणा ।।

७. एत्थवि जाणह[2] अकस्मात्[3] ।।

८. 'एवं तेसिं णो सुअक्खाए, णो सुपण्णत्ते धम्मे भवति'[4] ।।

विवेग-पदं

९. से जहेयं भगवया पवेदितं आसुपण्णेण जाणया पासया ।।

१०. अदुवा गुत्ती वओगोयरस्स त्ति बेमि ।।

११. सव्वत्थ सम्मयं पावं ।।

१२. तमेव उवाइकम्म ।।

१३. एस महं विवेगे वियाहिते ।।

१४. गामे वा अदुवा रण्णे ?

णेव गामे णेव रण्णे धम्ममायाणह—पवेदितं **माहणेण मईमया ।।**

१५. जामा तिण्णि उदाहिया[5], जेसु इमे आरिया[6] संबुज्झमाणा समुट्ठिया ।

१६. जे णिव्वुया पावेहिं[7] कम्मेहिं, अणियाणा ते वियाहिया ।।

अहिंसा-पदं

१७. **उड्ढं अहं तिरियं दिसासु,** सव्वतो सव्वावंति च णं पडियक्कं[8] 'जीवेहिं **कम्म-**समारंभे णं'[9] ।।

१८. **तं परिण्णाय मेहावी** णेव सयं एतेहिं काएहिं दंडं समारंभेज्जा, णेवण्णेहिं एतेहिं काएहिं दंडं समारंभावेज्जा, नेवण्णे एतेहिं काएहिं दंडं समारंभंते वि समणुजाणेज्जा ।।

१९. जेवण्णे एतेहिं काएहिं दंडं समारंभंति, तेसिं पि वयं लज्जामो ।।

२०. **तं परिण्णाय मेहावी** तं वा दंडं, अण्णं वा दंडं, णो दंडभी[10] दंडं समारंभेज्जासि ।

—त्ति बेमि ।।

---

१. पावइत्ति (क); पावएत्ति (घ, च, छ) ।
२. जाण (क, च); जाणे (घ) ।
३. अकम्हा (चू) ।
४. न एस धम्मे सुयक्खाए सुपन्नत्ते भवइ (चू) ।
५. उदाहडा (घ, छ, चू); उदाहुया (ख, ग) ।
६. आयरिया (घ, छ) ।
७. निव्वुडा (चू) ।
८. पाडेक्कं (क); पाडियक्कं (घ, चू) ।
९. दंडं समारभंते (चू) ।
१०. दंडभीरू (चू) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बीओ उद्देसो

अणाचरणीय-विमोक्ख-पद

२१. से भिक्खू परक्कमेज्ज वा, चिट्ठेज्ज वा, णिसीएज्ज वा, तुयट्टेज्ज वा, सुसाणंसि वा, सुन्नागारंसि वा, गिरिगुहंसि वा, रुक्खमूलंसि वा, कुंभारायतणंसि वा, हुरत्था वा कहिंचि विहरमाणं तं भिक्खुं उवसंकमित्तु गाहावती बूया—आउसंतो समणा ! अहं खलु तव अट्ठाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं[1] अभिहडं आहट्टु[2] चेतेमि[3], आवसहं[4] वा समुस्सिणोमि, से भुंजह वसह आउसंतो समणा !

२२. भिक्खू तं गाहावतिं समणसं सवयसं पडियाइक्खे—आउसंतो गाहावती ! णो खलु ते वयणं आढामि, णो खलु ते वयणं परिजाणामि, जो तुमं मम अट्ठाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पाय-पुंछणं वा पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएसि, आवसहं वा समुस्सिणासि, से विरतो आउसो गाहावती ! एयस्स अकरणाए ॥

२३. से भिक्खू परक्कमेज्ज वा[5], चिट्ठेज्ज वा, णिसीएज्ज वा, तुयट्टेज्ज वा सुसाणंसि वा, सुन्नागारंसि वा, गिरिगुहंसि वा, रुक्खमूलंसि वा, कुंभारायतणंसि वा°, हुरत्था वा कहिंचि विहरमाणं तं भिक्खुं उवसंकमित्तु गाहावती आयगयाए पेहाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ, आवसहं वा समुस्सिणाति[6] तं भिक्खुं परिघासेउं ॥

२४. तं च भिक्खू जाणेज्जा—सहसम्मइयाए[7], परवागरणेणं, अण्णेसिं वा अंतिए[8] सोच्चा अयं खलु गाहावई मम अट्ठाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ[9] °समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु°

---

१. °सिट्ठं (ख, ग, घ)।
२. आफुडं (च)।
३. वेतेमित्ति केयि भणंति करेमि, तं तु ण युज्जति (चू)।
४. आवसधं (ख, ग); आवसथं (छ)।
५. सं० पा०—परक्कमेज्ज वा जाव हुरत्था।
६. °स्सिणोति (क)।
७. सम्मु° (क, घ, च, छ)।
८. × (क, ग, घ, च, छ)।
९. सं० पा०—समारब्भ जाव चेएइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चेएइ, आवसहं वा समुस्सिणाति[1], तं च भिक्खू पडिलेहाए[2] आगमेत्ता आणवेज्जा अणासेवणाए[3] त्ति बेमि ॥

२५. भिक्खुं च खलु पुट्ठा वा अपुट्ठा वा जे इमे आहच्च गंथा फुसंति—"से हंता ! हणह, खणह, छिंदह, दहह, पचह, आलुंपह, विलुंपह, सहसाकारेह[4], विप्परामुसह"—ते फासे **'धीरो पुट्ठो'[5] अहियासए** ॥

२६. अदुवा **आयार-गोयरमाइक्खे, तक्किया ण मणेलिसं।** 'अणुपुव्वेण सम्मं पडिलेहाए आयगुत्ते ॥

२७. अदुवा गुत्ती गोयरस्स'[6] ॥

२८. **बुद्धेहिं एयं पवेदितं**—से समणुण्णे असमणुण्णस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा नो पाएज्जा, नो निमंतेज्जा, नो कुज्जा वेयावाडियं—परं आढायमाणे[7] त्ति बेमि ॥

२९. **धम्ममायाणह, पवेइयं माहणेण मतिमया**—समणुण्णे समणुण्णस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वत्थं वा पडिग्गहं वा कंबलं वा पायपुंछणं वा पाएज्जा, णिमंतेज्जा, कुज्जा वेयावडियं—परं आढायमाणे[8] ।

—त्ति बेमि ॥

तइओ उद्देसो

पव्वज्जा-पदं

३०. **मज्झिमेणं[9] वयसा एगे[10], संबुज्झमाणा समुट्ठिता ॥**

---

१. °स्सिणोति (क) ।
२. संपडिलेहाए (ख, ग, घ) ।
३. °सेवणयाए (घ) ।
४. सहसक्कारेह (क) ।
५. पुट्ठो धीरो (ख, ग, घ); पुट्ठो वीरो (घ) । वीरो पुट्ठो (च) ।
६. अदुवा वइगुत्तीए गोयरस्स अणुपुव्वेण सम्मं पडिलेहाए आयगुत्ते (क, ख, ग, घ, छ, वृ); चूर्णिव्याख्यातः पाठः सङ्गतोस्ति, यथा—'असरिसं जं भणितं—अणण्णतुल्लं, अणुव्वणाणि सम्मं, जं भणितं—कम्मेण कित असरिसं, पडिलेहा पेक्खिता, आयगुत्ते तिहिं गुत्तीहिं उवउत्तो उत्तरेवि दिज्जमाणे कुप्पति ण वा, सतं उत्तरसमत्थो भवति ताहे, अह गुत्ती एगंतेणं गुत्ती वयोगोयरे'। आदर्शेषु पाठपरिवर्तनं जातम्। वृत्तिकृतापि परिवर्तितपाठानुसारेण विवरणं कृतम्, किन्तु अर्थमीमांसया नैतत् समीचीनं प्रतिभाति । अस्यैवाध्ययनस्य दशमे सूत्रे 'अदुवा गुत्ती वओगोयरस्स' इति पाठो लभ्यते। तेनास्माभिः चूर्णिसम्मतः पाठः स्वीकृतः ।
७. °मीणे (क, च) ।
८. °मीणे (क, च) ।
९. मज्झ° (ख) ।
१०. वि एगे (क, ख,ग,च,छ,वृ); मिह एगे (घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३१. 'सोच्चा वई मेहावी'[1], पंडियाणं निसामिया ।
समियाए[2] धम्मे, आरिएहिं[3] पवेदिते ।।

अपरिग्गह-पदं

३२. ते अणवकंखमाणा अणतिवाएमाणा अपरिग्गहमाणा णो 'परिग्गहावंती सव्वावंती'[4] च णं लोगंसि ।।

३३. **णिहाय दंडं पाणेहिं,** पावं कम्मं अकुव्वमाणे, एस महं अगंथे वियाहिए ।।

आहारहेउ-पदं

३४. **ओए जुतिमस्स[5] खेयण्णे उववायं[6] चवणं[7] च णच्चा ।।**

३५. **आहारोवचया देहा, परिसह-पभंगुरा ।।**

३६. पासहेगे सव्विदिएहिं परिगिलायमाणेहिं ।।

३७. ओए दयं दयइ ।।

३८. जे सन्निहाण[8]-सत्थस्स खेयण्णे ।।

३९. से भिक्खू कालण्णे बलण्णे मायण्णे खणण्णे विणयण्णे समयण्णे परिग्गहं अममायमाणे कालेणुट्ठाई अपडिण्णे ।।

४०. दुहओ छेत्ता नियाइ ।।

अगणि-असेवण-पदं

४१. तं भिक्खुं सीयफास-परिवेवमाणगायं उवसंकमित्तु गाहावई बूया—आउसंतो समणा ! णो[9] खलु ते गामधम्मा उव्वाहंति ?
आउसंतो गाहावई ! णो[10] खलु मम गामधम्मा उव्वाहंति । सीयफासं[11] णो खलु अहं संचाएमि अहियासित्तए । णो खलु मे कप्पति अगणिकायं उज्जालेत्तए वा पज्जालेत्तए वा, कायं आयावेत्तए वा पयावेत्तए वा अण्णेसिं वा वयणाओ ।।

४२. सिया से एवं वदंतस्स परो अगणिकायं उज्जालेत्ता पज्जालेत्ता कायं आयावेज्ज वा पयावेज्ज वा, तं च भिक्खू पडिलेहाए आगमेत्ता आणवेज्जा अणासेवणाए ।

—त्ति बेमि ।।

---

१. सोच्चा मेहावी वयणं (क, ख, ग, घ, छ); सोच्चा मेहावी णं वयणं (चू) ।
२. समयाए (क) ।
३. आयरिएहिं (घ, छ) ।
४. ०वंति सव्वावंति (ख, ग, घ, च, छ); ०वंती स सव्वा० (चू); चूर्णिकृता 'स सव्वावंति च णं लोगंसि' इति पाठस्य सम्बन्धः णिहाय दंडं पाणेहिं' अनेन सूत्रेण सह योजितोस्ति ।
५. जुइमंतस्स (ख, ग, च); अहवा जुत्तिमं (चू) ।
६. ओवायं (क, घ) ।
७. चयणं (घ, च) ।
८. संनिहाणस्स (चू) ।
९. × (चू) ।
१०. अप्पं (चू) ।
११. ० फासं च (क, ख, च) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउत्थो उद्देसो

उवगरण-विमोक्ख-पदं

४३. जे भिक्खू तिहिं वत्थेहिं परिवुसिते[1] पायचउत्थेहिं, तस्स णं णो एवं भवति—चउत्थं वत्थं जाइस्सामि[2] ।।

४४. से अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाएज्जा ।।

४५. अहापरिग्गहियाइं वत्थाइं धारेज्जा ।।

४६. णो धोएज्जा[3], णो रएज्जा, णो धोय-रत्ताइं वत्थाइं धारेज्जा ।।

४७. अपलिउंचमाणे[4] गामंतरेसु ।।

४८. ओमचेलिए[5] ।।

४९. एयं खु वत्थधारिस्स सामग्गियं ।।

५०. अह पुण एवं जाणेज्जा—उवाइक्कंते खलु हेमंते, गिम्हे पडिवन्ने, अहापरिजुण्णाइं वत्थाइं परिट्ठवेज्जा, अहापरिजुण्णाइं वत्थाइं परिट्ठवेत्ता—

५१. अदुवा संतरुत्तरे[6] ।।

५२. अदुवा एगसाडे ।।

५३. 'अदुवा अचेले'[7] ।।

५४. लाघवियं आगममाणे ।।

५५. तवे से अभिसमन्नागए भवति ।।

५६. जमेयं[8] भगवया पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा सव्वतो सव्वत्ताए[9] समत्तमेव[10] समभिजाणिया ।।

सरीर-विमोक्ख-पदं

५७. जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—पुट्ठो खलु अहमंसि, नालमहमंसि सीय-फासं अहियासित्तए, से वसुमं सव्व-समन्नागय-पण्णाणेणं अप्पाणेणं केइ अकरणाए आउट्टे ।।

---

१. °उसिते (घ, छ) ।

२. धारिस्सामि (चू) ।

३. धावेज्जा (ग); धाएज्जा (घ) ।

४. °ओवमाणे (ख, च, छ) ।

५. अवम° (क, ख, ग) ।

६. अथवावमचेल एककल्पपरित्यगात् द्विकल्पधारीत्यर्थः (वृ) ।

७. × (चू) ।

८. जहेयं (घ) ।

९. सव्वथाए (घ); सव्वताए (च); आवट्टे (ख, ग) ।

१०. सम्मत्त° (ख, ग, घ, च, छ, वृ); समत्त° (वृपा) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५८. तवस्सिणो हु तं सेयं, जमेगे[1] विहमाइए[2] ॥

५९. तत्थावि तस्स कालपरियाए ॥

६०. से वि तत्थ विअंतिकारए ॥

६१. इच्चेतं विमोहायतणं हियं, सुहं, खमं, णिस्सेयसं[3], आणुगामियं ।

—ति बेमि ॥

पंचमो उद्देसो

उवगरण-विमोक्ख-पदं

६२. जे भिक्खू दोहिं वत्थेहिं परिवुसिते पायतइएहिं, तस्स णं णो एवं भवति—तइयं वत्थं जाइस्सामि ॥

६३. से अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाएज्जा[4] ॥

६४. °अहापरिग्गहियाइं वत्थाइं धारेज्जा ॥

६५. णो धोएज्जा, णो रएज्जा, णो धोय-रत्ताइं वत्थाइं धारेज्जा ॥

६६. अपलिउंचमाणे गामंतरेसु ॥

६७. ओमचेलिए° ॥

६८. एयं खु तस्स भिक्खुस्स सामग्गियं ॥

६९. अह पुण एवं जाणेज्जा—उवाइक्कंते खलु हेमंते, गिम्हे पडिवन्ने, अहापरिजुण्णाइं वत्थाइं परिट्ठवेज्जा, अहापरिजुण्णाइं वत्थाइं परिट्ठवेत्ता—

७०. अदुवा एगसाडे ॥

७१. अदुवा अचेले ॥

७२. लाघवियं आगममाणे ॥

७३. तवे से अभिसमन्नागए भवति ॥

७४. जमेयं भगवता[5] पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा सव्वतो सव्वत्ताए समत्तमेव[6] समभिजाणिया ॥

गिलाणस्स भत्तपरिण्णा-पदं

७५. जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—"पुट्ठो अबलो अहमंसि, नालमहमंसि 'गिहंतर-संकमणं'[7] भिक्खायरिय[8]-गमणाए" 'से एवं वदंतस्स परो अभिहडं असणं वा

---

१. जंसेगे (क, घ, च) ।

२. वेहसादिए (छ) ।

३. निस्सेसं (ख, ग, घ, च); निस्सेसियं (चू) ।

४. सं० पा० —जाएज्जा जाव एयं ।

५. जहेयं (घ, छ) ।

६. सम्मत्त ° (ख,ग,घ,च,छ,वृ); समत्त ° (वृपा) ।

७. गृहाद्गृहान्तरं सङ्क्रमितुम्' इति वृत्तौ ।

८. भिक्खायरियं (क, घ, च, छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्टु दलएज्जा, से पुव्वामेव[1] आलोएज्जा आउसंतो ! गाहावती ! णो खलु मे कप्पइ 'अभिहडे असणे'[2] वा पाणे खाइमे वा साइमे वा भोत्तए[3] वा, पायए[4] वा, अण्णे वा एयप्पगारे[5]'[6] ॥

वेयावच्चपकप्प-पदं

७६. जस्स णं भिक्खुस्स अयं पगप्पे—अहं च खलु पडिण्णत्तो अपडिण्णत्तेहिं, गिलाणो अगिलाणेहिं, अभिकंख साहम्मिएहिं कीरमाणं वेयावडियं सातिज्जिस्सामि। अहं वा वि खलु अपडिण्णत्तो पडिण्णत्तस्स, अगिलाणो गिलाणस्स, अभिकंख साहम्मिअस्स कुज्जा वेयावडियं करणाए[7] ॥

७७. आहट्टु पइण्णं[8] आणक्खेस्सामि[9], आहडं च सातिज्जिस्सामि, आहट्टु पइण्णं आणक्खेस्सामि, आहडं च णो सातिज्जिस्सामि, आहट्टु पइण्णं णो आणक्खेस्सामि, आहडं च सातिज्जिस्सामि, आहट्टु पइण्णं णो आणक्खेस्सामि, आहडं च णो सातिज्जिस्सामि ॥

७८. 'लाघवियं आगममाणे ॥

७९. तवे से अभिसमण्णागए भवति ॥

८०. जमेयं भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा सव्वतो सव्वत्ताए समत्तमेव समभिजाणिया'[10] ॥

८१. एवं से अहाकिट्टियमेव धम्मं समहिजाणमाणे संते विरते सुसमाहितलेसे ॥

८२. तत्थावि तस्स कालपरियाए ॥

८३. से तत्थ विअंतिकारए ॥

८४. इच्चेतं विमोहायतणं हियं, सुहं, खमं, णिस्सेयसं, आणुगामियं[11] ।

—ति बेमि ॥

---

१. पुव्व° (ख, ग, घ)।

२. अभिहडं असण (ख, ग, च)।

३. भोइत्तए (ख, ग)।

४. पायत्तए (ख); पित्तए (घ); पातुए (छ); पात्तए (च)।

५. तहप्पगारे (छ)।

६. तं भिक्खुं केइ गाहावई उवसंकमित्तु बूया—आउसंतो समणा ! अहन्नं तव अट्ठाए असणं वा (४) अभिहडं दलामि, से पुव्वामेव जाणेज्जा—आउसंतो गाहावई ! जन्नं तुमं मम अट्टाए असणं (४) अभिहडं चेतेसि, णो य खलु मे कप्पइ एयप्पगारं असण वा (४) भोत्तए वा पायए वा अन्ने वा तहप्पगारे (वृपा)।

७. करणयाए (क, च)।

८. परिण्णं (क, ख, ग, घ, च, छ); चूर्णिवृत्त्यनुसारेण स्वीकृतोऽयं पाठः (सर्वत्र)।

९. आणिक्खि° (ख, ग); अणिक्खि° (चू)।

१०. चिन्हान्तर्वर्ती पाठः चूर्णौ वृत्तौ च समस्ति, प्रतिषु नोपलभ्यते। चूर्ण्यनुसारेणायं पाठः स्वीकृतः, वृत्तौ 'समभिजाणमाणे' एतस्य पश्चादसौ स्वीकृतोऽस्ति।

११. अणु° (क ख, ग, च, छ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छट्ठो उद्देसो

८५. जे भिक्खू एगेण वत्थेण परिवुसिते पायबिइएण, तस्स णो एवं भवइ—बिइयं वत्थं जाइस्सामि ।।

८६. से अहेसणिज्जं वत्थं जाएज्जा ।।

८७. अहापरिग्गहियं वत्थं धारेज्जा[1] ।।

८८. •णो धोएज्जा, णो रएज्जा, णो धोय-रत्तं वत्थं धारेज्जा ।।

८९. अपलिउंचमाणे गामंतरेसु ।।

९०. ओमचेलिए ।।

९१. एयं खु वत्थधारिस्स सामग्गियं ।।

९२. अह पुण एवं जाणेज्जा—उवाइक्कंते खलु हेमंते॰, गिम्हे पडिवन्ने, अहापरिजुण्णं वत्थं परिट्ठवेज्जा, अहापरिजुण्णं वत्थं परिट्ठवेत्ता—

९३. 'अदुवा अचेले'[2] ।।

९४. लाघवियं आगममाणे[3] ।।

९५. •तवे से अभिसमण्णागए भवति ।।

९६. जमेयं भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा सव्वतो सव्वत्ताए॰ समत्तमेव[4] समभिजाणिया ।।

एगत्तभावणा-पदं

९७. जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ—एगो अहमंसि, न मे अत्थि कोइ, न याहमवि कस्सइ[5], एवं से एगागिणमेव[6] अप्पाणं समभिजाणिज्जा[7] ।।

९८. लाघवियं आगममाणे ।।

९९. तवे से अभिसमन्नागए भवइ ।।

१००. जमेयं भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा सव्वतो सव्वत्ताए समत्तमेव[8] समभिजाणिया ।।

अणासायलाघव-पदं

१०१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहारेमाणे

---

१. सं० पा०—धारेज्जा जाव गिम्हे ।

२. अदुवा एगसाडे अदुवा अचेले (ख, ग, घ, च, छ, वृ) ।

३. सं० पा०—आगममाणे जाव समत्तमेव ।

४. द्रष्टव्यम्—८।५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

५. कस्सवि (घ) ।

६. एगागिय॰ (च, चू) ।

७. एतेसु अट्ठसुवि उद्देसएसु एस आलावओ सव्वत्थ भाणियव्वो—ण मे अत्थि कोयि णाहमवि कस्सति, अहवा वेहाणसमरणउद्देसगातो आरब्भ एस आलावओ वत्तव्वो, ण मम अत्थि कोयि॰ (चू) ।

८. द्रष्टव्यम्—८।५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णो वामाओ हणुयाओ दाहिणं हणुयं संचारेज्जा[1] आसाएमाणे[2], दाहिणाओ वा हणुयाओ वामं हणुयं णो संचारेज्जा आसाएमाणे, से अणासायमाणे ॥

१०२. लाघवियं आगममाणे ।

१०३. तवे से अभिसमन्नागए भवइ ॥

१०४. जमेयं भगवता पवेइयं, तमेव अभिसमेच्चा सव्वतो सव्वत्ताए समत्तमेव[3] समभिजाणिया ॥

संलेहणा-पदं

१०५. जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—से 'गिलामि च'[4] खलु अहं इमंसि समए[5] इमं सरीरगं अणुपुव्वेण परिवहित्तए, से आणुपुव्वेणं आहारं संवट्टेज्जा, आणुपुव्वेणं आहारं संवट्टेत्ता,

कसाए पयणुए किच्चा, समाहियच्चे फलगावयट्ठी,
उट्ठाय भिक्खू अभिनिव्वुडच्चे ॥

इंगिणिमरण-पदं

१०६. अणुपविसित्ता गामं वा, णगरं वा, खेडं वा, कब्बडं वा, मडंबं[6] वा, पट्टणं वा, दोणमुहं वा, आगरं वा, आसमं वा, सण्णिवेसं वा, णिगमं वा, रायहाणिं वा, 'तणाइं जाएज्जा'[7], तणाइं जाएत्ता, से तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता अप्पंडे अप्प-पाणे अप्प-बीए अप्प-हरिए अप्पोसे अप्पोदए अप्पुत्तिग-पणग-दग मट्टिय-मक्कडासंताणए, 'पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय तणाइं संथरेज्जा, तणाइं संथरेत्ता'[8] एत्थ वि समए इत्तरियं कुज्जा ॥

१०७. तं सच्चं सच्चावादी[9] ओए तिण्णे छिण्ण-कहंकहे आतीतट्ठे[10] अणातीते **वेच्चाण**[11] **भेउरं कायं**, संविहूणिय विरूवरूवे परिसहोवसग्गे अस्सिं 'विस्सं भइत्ता'[12] भेरवमणुचिण्णे ॥

---

१. साहरेज्जा (चू) ।

२. आढायमाणे (चूपा वृपा) ।

३. द्रष्टव्यम्—८.५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

४. गिलाणा मिव (ख, ग); गिलाणमिव (छ,चू) ।

५. समये णो संचाएमि (ख, ग); न शक्नोमि (वृ) ।

६. मंडबं (ग) ।

७. × (क, ग, घ, च) ।

८. पडिलेहित्ता संथारगं संथरेइ संथारगं संथरेत्ता (चू) ।

९. सच्चवादी (ख, ग, च, छ) ।

१०. अइअट्ठे (क, घ, च) ।

११. चेच्चाण (ख, ग, घ, च, छ, वृ); वकार-चकारयोर्लिपिसादृश्यात् वर्णपरिवर्तनं जातम्, तेन 'वेच्चाण' स्थाने 'चेच्चाण' इति रूप संवृत्तम् । वृत्तिकृता उपलब्धपाठाधारेण 'त्यक्त्वा' इति व्याख्यातम्, किन्तु चूर्णिकृता 'विइत्ता' इति व्याख्यातम् । प्रकरणसङ्गत्या-स्माभिः 'वेच्चाण' इति पाठः स्वीकृतः ।

१२. विस्संभणयाए (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ);

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०८. तत्थावि तस्स कालपरियाए ॥

१०९. से[1] तत्थ विअंतिकारए ॥

११०. इच्चेतं विमोहायतणं हियं, सुहं, खमं, णिस्सेयसं, आणुगामियं ।

—त्ति बेमि ॥

सत्तमो उद्देसो

उवगरण-विमोक्ख-पदं

१११. जे भिक्खू अचेले परिवुसिते, 'तस्स णं'[2] एवं भवति—चाएमि अहं तणफासं अहियासित्तए, सीयफासं अहियासित्तए, तेउफासं[3] अहियासित्तए, दंस-मसगफासं अहियासित्तए, एगतरे अण्णतरे विरूवरूवे फासे अहियासित्तए, हिरिपडिच्छादणं चहं णो संचाएमि अहियासित्तए, एवं से कप्पति कडि-बंधणं धारित्तए ॥

११२. अदुवा तत्थ परक्कमंतं भुज्जो अचेलं तणफासा फुसंति, सीयफासा फुसंति, तेउफासा फुसंति, दंस-मसगफासा फुसंति, एगयरे अण्णयरे विरूवरूवे फासे अहियासेति अचेले ॥

११३. लाघवियं आगममाणे ॥

११४. तवे से अभिसमन्नागए भवति ॥

११५. जमेयं भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा सव्वतो सव्वत्ताए समत्तमेव[4] समभिजाणिया ॥

वेयावच्चपकप्प-पदं

११६. जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—अहं च खलु अण्णेसिं भिक्खूणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्टु[5] दलइस्सामि,[6] आहडं च सातिज्जिस्सामि ॥

११७. जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—अहं च खलु अण्णेसिं भिक्खूणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्टु दलइस्सामि, आहडं च णो सातिज्जिस्सामि ॥

११८. जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—अहं च खलु 'अण्णेसिं भिक्खूणं'[8] असणं वा

वृत्तिकृता 'विश्रंभणतया' इति व्याख्यातम्, किन्तु प्रकरणदृष्ट्या देहात्मभेदभावनाभिधायकपाठः सुसङ्गतोस्ति, तेन चूर्णिकृता व्याख्यातः पाठः स्वीकृतः ।

१. से वि (ख, ग, च, छ) ।

२. तस्स णं भिक्खुस्स (वृ) ।

३. चूर्णौ असौ पाठो न व्याख्यातो दृश्यते ।

४. च (ख, ग, घ, च) ।

५. द्रष्टव्यम्—८।५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

६. आहट्टु पइण्णं (चू); चतुर्ष्वपि सूत्रेषु असौ पाठभेदो द्रष्टव्यः ।

७. दाहामि (चू) ।

८. × (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्टु नो दलइस्सामि, आहडं च सातिज्जिस्सामि ।।

११९. जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—अहं खलु अण्णेसिं भिक्खूणं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्टु नो दलइस्सामि, आहडं च णो सातिज्जिस्सामि ।।

१२०. अहं च खलु तेण अहाइरित्तेणं[1] अहेसणिज्जेणं अहापरिग्गहिएणं असणेण वा पाणेण वा खाइमेण वा साइमेण वा अभिकंख साहम्मियस्स कुज्जा वेयावडियं करणाए ।।

१२१. अहं वावि तेण अहातिरित्तेणं अहेसणिज्जेणं अहापरिग्गहिएण असणेण वा पाणेण वा खाइमेण वा साइमेण वा अभिकंख साहम्मिएहिं कीरमाणं वेयावडियं सातिज्जिस्सामि ।।

१२२. लाघवियं आगममाणे[2] ।।

१२३. °तवे से अभिसमण्णागए भवति ।।

१२४. जमेयं भगवता पवेदितं, तमेव अभिसमेच्चा सव्वतो सव्वत्ताए° समत्तमेव[3] समभिजाणिया ।।

पाओवगमण-पदं

१२५. जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवति—से गिलामि[4] च खलु अहं इमम्मि समए इमं सरीरगं अणुपुव्वेण परिवहित्तए, से आणुपुव्वेणं आहारं संवट्टेज्जा, आणुपुव्वेणं आहारं संवट्टेत्ता **कसाए पयणुए किच्चा समाहिअच्चे फलगावयट्ठी, उट्ठाय भिक्खू अभिणिव्वुडच्चे ।।**

१२६. अणुपविसित्ता गामं वा[5], °णगरं वा, खेडं वा, कब्बडं वा, मडंबं वा, पट्टणं वा, दोणमुहं वा, आगरं वा, आसमं वा, सण्णिवेसं वा, णिगमं वा°, रायहाणिं वा, तणाइं जाएज्जा, तणाइं जाएत्ता से तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता अप्पंडे अप्प-पाणे अप्प-बीए अप्प-हरिए अप्पोसे अप्पोदए अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणए, पडिलेहिय-पडिलेहिय पमज्जिय-पमज्जिय तणाइं संथरेज्जा, तणाइं संथरेत्ता एत्थ वि समए कायं च, जोगं च, इरियं च, पच्चक्खाएज्जा ।।

१२७. 'तं सच्चं सच्चावादी ओए तिण्णे छिन्न-कहंकहे आतीतट्ठे अणातीते **वेच्चाण**[6]

---

१. आहा° (क, च, छ)।

२. सं० पा० —आगममाणे जाव समत्तमेव ।

३. द्रष्टव्यम् — ८।५६ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

४. गिलाएमि (ख, छ) ।

५. सं० पा०—गामं वा जाव रायहाणिं ।

६. द्रष्टव्यम्—८।१०७ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भेउरं कायं, संविहूणिय विरूवरूवे परिसहोवसग्गे अस्सिं 'विस्संभइत्ता'[1] भेरव-मणुचिण्णे ।।

१२८. तत्थावि तस्स कालपरियाए ।।

१२९. से तत्थ विअंतिकारए ।।

१३०. इच्चेतं विमोहायतणं हियं, सुहं, खमं, णिस्सेयसं, आणुगामियं[2] ।

—ति बेमि ।।

अट्ठमो उद्देसो

अणसण-पदं

१. 'आणुपुव्वी-विमोहाइं'[3], जाइं धीरा[4] समासज्ज ।
वसुमंतो[5] मइमंतो, सव्वं णच्चा अणेलिसं ।।

भत्तपच्चक्खाण-पदं

२. दुविहं पि 'विदित्ताणं, बुद्धा धम्मस्स पारगा'[6] ।
अणुपुव्वीए[7] संखाए, आरंभाओ[8] तिउट्टति ।।

३. कसाए पयणुए किच्चा, अप्पाहारो तितिक्खए ।
अह भिक्खू गिलाएज्जा, आहारस्सेव अंतियं ।।

४. जीवियं णाभिकंखेज्जा, मरणं णोवि पत्थए ।
दुहतोवि ण सज्जेज्जा, जीविते मरणे तहा ।।

५. मज्झत्थो णिज्जरापेही, समाहिमणुपालए ।
अंतो बहिं विउसिज्ज, अज्झत्थं सुद्धमेसए ।।

६. जं किंचुवक्कमं[9] जाणे, आउक्खेमस्स अप्पणो ।
तस्सेव अंतरद्धाए, खिप्पं सिक्खेज्ज पंडिए ।।

७. गामे वा अदुवा रण्णे, थंडिलं पडिलेहिया ।
अप्पपाणं तु विण्णाय[10], तणाइं संथरे मुणी ।।

८. अणाहारो तुअट्टेज्जा[11], पुट्ठो तत्थहियासए ।
णातिवेलं उवचरे, माणुस्सेहिं वि पुट्ठओ[12] ।।

---

१. द्रष्टव्यम्—८।१०७ सूत्रस्य पादटिप्पणम् ।

२. नागार्जुनीया:—कट्ठमिव आतट्ठे तत्थ संचतितं सज्जीकरेत्ता उ पतिण्णे छिन्नकहं कहेज्जा जाव आणुगामियं (चू) ।

३. अणुपुव्वेण विमोहाइं (क, ख, ग, घ, च, छ) ।

४. वीरा (क, च) ।

५. वुसिमंतो (चू) ।

६. विगिंचित्ता दुट्ठादुट्ठाण जाणगा (चूपा) ।

७. ०पुव्वीइ (ग) ।

८. कम्मुणाओ (घ, च, चूपा, वृपा) ।

९. किंचिवुक्कमं (च) ।

१०. वियाणित्ता (चू) ।

११. णिवज्जेज्जा (चू, वृ) ।

१२. ०पुट्ठवं (क, च, छ); ०पुट्ठए (ख, ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९. संसप्पगा य जे पाणा, जे य उड्ढमहेचरा।
भुंजंति मंस-सोणियं, ण छणे ण पमज्जए॥
१०. पाणा देहं विहिंसंति, ठाणाओ ण विउब्भमे[1]।
'आसवेहिं विवित्तेहिं'[2], तिप्पमाणेऽहियासए[3]॥
११. गंथेहिं विवित्तेहिं[4], आउ-कालस्स पारए।

इंगिणिमरण-पदं

पग्गहियतरगं[5] चेयं, दवियस्स वियाणतो[6]॥
१२. अयं से अवरे धम्मे, णायपुत्तेण साहिए।
आयवज्जं पडीयारं, विजहिज्जा तिहा तिहा॥
१३. हरिएसु ण णिवज्जेज्जा, थंडिलं 'मुणिआ सए'[7]।
विउसिज्ज[8] अणाहारो, पुट्ठो तत्थहियासए॥
१४. इंदिएहिं गिलायंते, समियं साहरे[9] मुणी।
तहावि से अगरिहे[10], अचले जे समाहिए॥
१५. अभिक्कमे पडिक्कमे, संकुचए पसारए।
काय-साहारणट्ठाए[11], एत्थ[12] वावि अचेयणे॥
१६. परक्कमे[13] परिकिलंते, अदुवा चिट्ठे अहायते।
ठाणेण परिकिलंते, णिसिएज्जा य अंतसो॥
१७. 'आसीणे णेलिसं'[14] मरणं, इंदियाणि समीरए।
कोलावासं समासज्ज, वितहं पाउरेसए॥
१८. जओ वज्जं समुप्पज्जे, ण तत्थ अवलंबए।
ततो उवक्कसे[15] अप्पाणं, सव्वे फासेहियासए॥

---

१. वि उब्भमे (क, ख, ग, घ, वृ)।
२. अवसव्वेहिं विचित्तेहिं (चू)।
३. तप्प° (छ)।
४. विचित्तेहिं (क, ख, घ, च, छ, चू)।
५. °तरागं (क); °तरं (चू)।
६. सुयाहितो (चू)।
७. मुणि आसए (च, चू)।
८. वियो° (ख, ग, च, छ)।
९. आहरे (ख, ग, घ, च, छ, वृ)।
१०. अगरहे (क, ख, ग, छ)।
११. साहरण° (क, ग, छ); संधारण (चू); संहारण (च)।
१२. इत्थं (घ)।
१३. परिक्कमे (क, ख, ग, घ, च, छ)।
१४. आसीण मणेलिसं (क, घ, च); उदासीणो अणेलिसो (चू)।
१५. उवक्कसे (ग, घ, छ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१९. अयं चायततरे[1] सिया, जो एवं अणुपालए।
सव्वगायणिरोधेवि, ठाणातो ण विउब्भमे ॥

२०. अयं से उत्तमे धम्मे, पुव्वट्ठाणस्स पग्गहे।
अचिरं पडिलेहित्ता, विहरे चिट्ठ माहणे ॥

२१. अचित्तं तु समासज्ज, ठावए तत्थ अप्पगं।
वोसिरे सव्वसो कायं, ण मे देहे परीसहा ॥

२२. जावज्जीवं परीसहा, उवसग्गा 'य संखाय'[2]।
संवुडे देहभेयाए, इति पण्णेहियासए ॥

२३. भेउरेसु न रज्जेज्जा, कामेसु बहुतरेसु[3] वि।
इच्छा[4]-लोभं ण सेवेज्जा, सुहुमं[5] वण्णं सपेहिया ॥

२४. सासएहिं णिमंतेज्जा, 'दिव्वं मायं'[6] ण सद्दहे।
तं पडिबुज्झ माहणे, सव्वं नूमं विधूणिया ॥

२५. सव्वट्ठेहिं[7] अमुच्छिए, आउकालस्स पारए।
तितिक्खं परमं णच्चा, विमोहण्णतरं हितं ॥

—त्ति बेमि ॥

---

१. चायतरे (ख); चाततरे (चू, क); आयरे द्रढग्गाहतरे धम्मे (चूपा); यदि वा··· आत्ततरः (वृ)।
२. तिति संखाते (क); इति संखया (ता) (ग, घ, छ); इति संखाय (च, वृ)।
३. बहुलेसु (चूपा, वृपा)।
४. इच्छ° (क)।
५. धुवं (धुव°) (क, ख, ग, घ, च, छ, चूपा, वृपा)।
६. दिव्वमाय (छ, घ, च, चूपा)।
७. सव्वत्थेहिं (चू)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नवमं अज्झयणं

उवहाणसुयं

पढमो उद्देसो

भगवओ चरिया-पदं

१. अहासुयं वदिस्सामि, जहा से समणे भगवं उट्ठाय।
संखाए तंसि हेमंते, अहुणा पव्वइए रीयत्था[1]॥

२. णो चेविमेण वत्थेण, पिहिस्सामि तंसि हेमंते।
से पारए आवकहाए[2], एयं खु अणुधम्मियं[3] तस्स॥

३. चत्तारि साहिए मासे, बहवे पाण-जाइया[4] आगम्म।
अभिरुज्झ कायं[5] विहरिंसु, आरुसियाणं तत्थ हिंसिंसु॥

४. संवच्छरं साहियं मासं, जं ण रिक्कासि वत्थगं भगवं।
अचेलए ततो चाई, तं वोसज्ज वत्थमणगारे॥

५. अदु पोरिसिं तिरियं भित्तिं, चक्खुमासज्ज अंतसो झाइ।
अह चक्खु-भीया[6] सहिया, तं "हंता हंता" बहवे कंदिंसु॥

६. सयणेहिं वितिमिस्सेहिं[7], इत्थीओ तत्थ से परिण्णाय।
सागारियं[8] ण सेवे, इति से सयं पवेसिया झाति॥

---

१. रीइत्था (क, चू); रीयित्था (च); रीएत्था (ग)।
२. आवकहं (घ)।
३. आणु° (छ)।
४. °जाती (क)।
५. आरुज्झ° (चू)।
६. °भीय (ग, च, छ)।
७. विमिस्सेहिं (घ)।
८. साकारियं (घ, छ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७. जे के इमे अगारत्था, मीसीभावं पहाय से झाति।
पुट्ठो[1] वि णाभिभासिसु, गच्छति णाइवत्तई अंजू॥
८. णो सुगरमेतमेगेसिं, णाभिभासे अभिवायमाणे।
हयपुव्वो तत्थ दंडेहिं, लूसियपुव्वो अप्पपुण्णेहिं॥
९. फरुसाइं दुत्तितिक्खाइं, अतिअच्च मुणी परक्कममाणे।
आघाय-णट्ट-गीताइं, दंडजुद्धाइं मुट्ठिजुद्धाइं॥
१०. गढिए मिहो[2]-कहासु[3], समयंमि[4] णायसुए[5] विसोगे अदक्खू।
एताइं सो उरालाइं, गच्छइ णायपुत्ते[6] असरणाए॥
११. अविसाहिए दुवे वासे, सीतोदं अभोच्चा णिक्खंते।
एगत्तगए[7] पिहियच्चे, से अहिण्णायदंसणे संते॥
१२. पुढविं च आउकायं[8], तेउकायं च वाउकायं च।
पणगाइं[9] बीय-हरियाइं, तसकायं च सव्वसो णच्चा॥
१३. एयाइं संति पडिलेहे, चित्तमंताइं से अभिण्णाय।
परिवज्जिया[10] ण विहरित्था, इति संखाए से महावीरे॥
१४. अदु[11] थावरा तसत्ताए, तसजीवा य थावरत्ताए।
अदु सव्वजोणिया सत्ता, कम्मुणा[12] कप्पिया पुढो बाला॥
१५. भगवं च 'एवं मन्नेसिं'[13], सोवहिए हु लुप्पती बाले।
कम्मं च सव्वसो णच्चा, तं पडियाइक्खे पावगं भगवं॥
१६. दुविहं समिच्च मेहावी, किरियमक्खायणेलिसिं[14] णाणी।
आयाण-सोयमतिवाय-सोयं, जोगं च सव्वसो णच्चा॥
१७. अइवातियं[15] अणाउट्टे[16], सयमण्णेसिं अकरणयाए।
जस्सित्थिओ परिण्णाया, सव्वकम्मावहाओ से[17] अदक्खू॥

---

१. नागार्जुनीया : – पुट्ठो व सो अणुपुट्ठो व, णो अणुन्नाइ पावगं भगवं। पुट्ठे व से अपुट्ठे वा° (चू)।
२. मिधु° (च); मिहु° (छ)।
३. °कहासुं (क, घ)।
४. समतो (चू)।
५. °पुत्ते (ख, ग, वृ)।
६. णाइ° (छ)।
७. एगत्ति° (चू)।
८. °कायं च (क, ग, च, छ)।
९. पणगाय (ख)।
१०. °वज्जिया (ख, ग)।
११. अदुवा (ख, ग, च, छ); अदुव (क)।
१२. कम्मणा (चू)।
१३. एवमन्नेसिं (क, घ, च, छ, ब); एवमणिसित्ता (चू)।
१४. °मणेलिसं (ख, ग)।
१५. °वत्तियं (छ)।
१६. अणाउट्टिं (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ)।
१७. × (क, घ, च, छ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८. अहाकडं[1] न से सेवे, सव्वसो कम्मुणा 'य अदक्खू'[2]।
जं किंचि पावगं भगवं, तं अकुव्वं वियडं भुंजित्था ॥
१९. णो सेवती य परवत्थं[3], परपाए वि से ण भुंजित्था।
परिवज्जियाण ओमाणं, गच्छति संखडिं असरणाए[4] ॥
२०. मायण्णे असण-पाणस्स, णाणुगिद्धे रसेसु अपडिण्णे।
अच्छिंपि णो पमज्जिया[5], णोवि य कंडूयये मुणी गायं ॥
२१. अप्पं तिरियं पेहाए, अप्पं पिट्ठओ उपेहाए[6]।
अप्पं बुइएऽपडिभाणी, पंथपेही चरे जयमाणे ॥
२२. सिसिरंसि अद्धपडिवन्ने, तं वोसज्ज[7] वत्थमणगारे।
पसारित्तु बाहुं परक्कमे, णो अवलंबियाण कंधंसि[8] ॥
२३. एस विही अणुक्कंतो, माहणेण मईमया।
'अपडिण्णेण वीरेण, कासवेण महेसिणा'[9] ॥

—त्ति बेमि ॥

बीओ उद्देसो

भगवओ सेज्जा-पदं

१ चरियासणाइं[10] सेज्जाओ, एगतियाओ जाओ बुइयाओ।
आइक्ख ताइं सयणासणाइं[11], जाइं सेवित्था से महावीरो ॥
२. आवेसण[12] - 'सभा-पवासु'[13], पणियसालासु एगदा वासो।
अदुवा पलियट्ठाणेसु, पलालपुंजेसु एगदा वासो ॥
३. आगंतारे आरामागारे, गामे[14] णगरेवि[15] एगदा वासो।
सुसाणे सुण्णगारे[16] वा, रुक्खमूले वि एगदा वासो ॥

---

१. आहा° (च, छ)।
२. बंधं अदक्खू (क); अदक्खू (ख, ग, च); य दक्खू (घ)।
३. परं वत्थं (ख, ग)।
४. असरणयाए (घ, च)।
५. पमज्जिज्जा (ख)।
६. व पेहाए (घ)।
७. वोसरिज्ज (घ, चू)।
८. खंधंसि (क, च)।
९. बहुसो अपडिण्णेण, भगवया एवं रीयंति (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ, चूपा)।
१०. अयं च श्लोकः चिरंतनटीकाकारेण न व्याख्यातः (वृ)।
११. सयणाइं (क, च)।
१२. आएसण (चू)।
१३. सभप्पवासु (क, घ, छ)।
१४. × (क, च); तह य (घ, छ, ब)।
१५. °वा (क)।
१६. सुण्णागारे (छ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. एतेहिं मुणी सयणेहिं, समणे आसी[1] पतेरस[2] वासे।
राइं दिवं पि जयमाणे, अप्पमत्ते समाहिए झाति ॥
५. 'णिद्दं पि णो पगामाए, सेवइ[3] भगवं उट्ठाए'[4]।
जग्गावती[5] य अप्पाणं, ईसिं 'साई या'[6] सी अपडिण्णे ॥
६. संबुज्झमाणे पुणरवि, आसिंसु भगवं उट्ठाए।
णिक्खम्म एगया राओ, बहिं[7] चंकमिया[8] मुहुत्तागं ॥
७. सयणेहिं तस्सुवसग्गा[9], भीमा आसी अणेगरूवा य।
संसप्पगाय जे पाणा, अदुवा जे पक्खिणो उवचरंति ॥
८. अदु[10] कुचरा उवचरंति, गामरक्खा य सत्तिहत्था य।
अदु गामिया उवसग्गा, इत्थी एगतिया पुरिसा य ॥
९. इहलोइयाइं परलोइयाइं, भीमाइं अणेगरूवाइं।
अवि सुब्भि-दुब्भि-गंधाइं, सद्दाइं अणेगरूवाइं।
१०. अहियासए सया समिए[11], फासाइं विरूवरूवाइं।
अरइं रइं अभिभूय, रीयई माहणे अबहुवाई ॥
११. स जणेहिं तत्थ पुच्छिंसु, एगचरा वि एगदा राओ।
अव्वाहिए कसाइत्था, पेहमाणे समाहिं अपडिण्णे ॥
१२. अयमंतरंसि को एत्थ, अहमंसि त्ति भिक्खू आहट्टु।
अयमुत्तमे से धम्मे, तुसिणीए स कसाइए झाति ॥
१३. जंसिप्पेगे पवेयंति, सिसिरे मारुए पवायंते।
तंसिप्पेगे अणगारा, हिमवाए णिवायमेसंति ॥
१४. संघाडिओ पविसिस्सामो[12], एहा य समादहमाणा।
पिहिया वा सक्खामो[13], अतिदुक्खं हिमग-संफासा ॥
१५. तंसि भगवं अपडिण्णे, अहे वियडे अहियासए दविए।
णिक्खम्म एगदा राओ, चाएइ[14] भगवं समियाए ॥

---

१. वासी (छ)।
२. पतेलस (च)।
३. सेवइ य (ख, ग)।
४. नागार्जुनीयाः—णिद्दावि ण प्पगामा, आसी तहेव उट्ठाए (चू)।
५. जगा° (ख, छ)।
६. साइ य (क, च, छ)।
७. बहिं (च)।
८. चंकमित्ता (छ)।
९. तत्थु° (क, ख, ग, घ, छ)।
१०. अदुवा (क, छ)।
११. सहिए, इति मंता भगवं अणगारे (चूपा)।
१२. पहिरिस्सामो (चू)।
१३. पस्सामो (चू)।
१४. च ठाएइ (ग)—अशुद्धं प्रतिभाति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६. एस विही अणुक्कंतो, माहणेण मईमया।
'अपडिण्णेण वीरेण, कासवेण महेसिणा'[1] ॥

—त्ति बेमि ॥

तइओ उद्देसो

भगवओ परीसह-उवसग्ग-पदं

१. तणफासे[2] सीयफासे य, तेउफासे य दंस-मसगे य।
अहियासए सया समिए, फासाइं विरूवरूवाइं ॥
२. अह[3] दुच्चर-लाढमचारी, वज्जभूमिं च सुब्भ[म्ह?]भूमिं च।
पंतं सेज्जं सेविंसु, आसणगाणि चेव पंताइं ॥
३. लाढेहिं तस्सुवसग्गा, बहवे जाणवया लूसिंसु।
अह लूहदेसिए भत्ते, कुक्कुरा तत्थ हिंसिंसु णिवतिंसु ॥
४. अप्पे जणे णिवारेइ, लूसणए सुणए दसमाणे[4]।
छुछुकारंति आहंसु, समणं कुक्कुरा डसंतुत्ति ॥
५. एलिक्खए जणे[5] भुज्जो, बहवे वज्जभूमि फरुसासी।
लट्ठिं गहाय णालीयं[6], समणा तत्थ एव विहरिंसु ॥
६. एवं पि तत्थ विहरंता, पुट्ठपुव्वा अहेसि सुणएहिं।
संलुंचमाणा सुणएहिं, दुच्चरगाणि[7] तत्थ लाढेहिं ॥
७. निधाय दंडं पाणेहिं, तं कायं वोसज्जमणगारे।
अह[8] गामकंटए भगवं, ते अहियासए अभिसमेच्चा ॥
८. णाओ संगामसीसे वा, पारए तत्थ से महावीरे।
एवं पि तत्थ लाढेहिं, अलद्धपुव्वो वि एगया गामो ॥
९. उवसंकमंतमपडिण्णं, गामंतियं पि अप्पत्तं।
पडिणिक्खमित्तु लूसिंसु[9], एत्तो[10] परं पलेहित्ति ॥
१०. हयपुव्वो तत्थ दंडेण, अदुवा मुट्ठिणा अदु 'कुंताइ-फलेणं'[11]।
अदु लेलुणा कवालेणं, हंता हंता बहवे कंदिंसु ॥

---

१. बहुसो अपडिण्णेण, भगवया एवं रीयंति (क, ख, ग, घ, छ, वृ, चूपा)।
२. °फास (क, ख, ग, च)।
३. अवि (चू)।
४. डसमाणे (च) भसमाणे (चू)।
५. जणा (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ)।
६. नालियं (ख, ग, चू)।
७. दुच्चराणि (क, च, छ, वृ)।
८. अदु (घ, छ)।
९. लूसिंति (चू)।
१०. एताओ (तो) (क, ख, ग, घ, च, छ)।
११. कुंतेण फलेण (घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११. मंसाणि[1] छिन्नपुव्वाइं, उट्ठुभंति[2] एगया कायं ।
परीसहाइं लुंचिंसु, अहवा पंसुणा अवकिरिंसु[3] ॥
१२. उच्चालइय णिहणिंसु, अदुवा आसणाओ खलइंसु ।
वोसट्ठकाए पणयासी, दुक्खसहे भगवं अपडिण्णे ॥
१३. सूरो संगामसीसे वा, संवुडे तत्थ से महावीरे ।
पडिसेवमाणे फरुसाइं, अचले भगवं रीइत्था ॥
१४. एस विही अणुक्कंतो, माहणेण मईमया ।
'अपडिण्णेण वीरेण, कासवेण महेसिणा'[4] ॥

—त्ति बेमि ॥

चउत्थो उद्देसो

भगवओ अतिगिच्छा-पदं

१. ओमोदरियं चाएति, अपुट्ठे वि भगवं रोगेहिं ।
पुट्ठे वा से अपुट्ठे वा, णो से सातिज्जति तेइच्छं ॥
२. संसोहणं च वमणं च, गायब्भंगणं[5] सिणाणं च ।
संबाहणं 'ण से कप्पे'[6], दंतपक्खालणं परिण्णाए ॥
३. विरए[7] गामधम्मेहिं, रीयति माहणे अबहुवाई ।
सिसिरंमि एगदा भगवं, छायाए झाइ आसी य ॥

भगवओ आहार-चरिया-पदं

४. आयावई य गिम्हाणं, अच्छइ उक्कुडुए अभिवाते[8] ।
अदु जावइत्थं[9] लूहेणं, ओयण-मंथु-कुम्मासेणं ॥
५. एयाणि तिण्णि पडिसेवे, अट्ठ मासे य जावए भगवं ।
अपिइत्थ[10] एगया भगवं, अद्धमासं अदुवा मासं पि ॥

---

१. मंसूणि (क, ख, ग, घ, च, छ) ।
२. उट्टंभिया (क, ख, ग, च, छ, वृ); उट्टभियाए (घ) ।
३. उवकरिंसु (क, ख, ग, घ, च, छ)—वृत्तिचूर्ण्यनुसारेण अशुद्धं प्रतिभाति ।
४. बहुसो अपडिण्णेण, भगवया एवं रीयंति (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ, चूपा) ।
५. °मब्भंगणं (घ) ।
६. ण सेवित्था (चू) ।
७. विरए य (क, घ, च, छ) ।
८. अभितावे (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ) ।
९. जावइ (घ) ।
१०. अपियत्थ (चू) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६. अवि साहिए दुवे मासे, छप्पि मासे अदुवा अपिवित्ता[1]।
रायोवरायं अपडिण्णे, अन्नगिलायमेगया भुंजे ॥
७. छट्ठेणं एगया भुंजे, अदुवा[2] अट्ठमेण दसमेणं।
दुवालसमेण एगया भुंजे, पेहमाणे समाहिं अपडिण्णे ॥
८. णच्चाणं[3] से महावीरे, णो वि य पावगं सयमकासी।
अण्णेहिं वा ण कारित्था, कीरंतं पि णाणुजाणित्था ॥
९. गामं पविसे[4] णयरं वा, घासमेसे[5] कडं परट्ठाए।
सुविसुद्धमेसिया भगवं, आयत-जोगयाए सेवित्था[6] ॥
१०. अदु वायसा दिगिंछत्ता[7], जे अण्णे रसेसिणो सत्ता।
घासेसणाए चिट्ठंते, सययं[8] णिवतिते य पेहाए ॥
११. अदु माहणं व समणं वा, गामपिंडोलगं च अतिहिं वा।
सोवागं मूसियारं वा, कुक्कुरं 'वावि विहं ठियं'[9] पुरतो ॥
१२. वित्तिच्छेदं वज्जंतो, तेसप्पत्तियं[10] परिहरंतो।
मंदं परक्कमे भगवं, अहिंसमाणो घासमेसित्था ॥ (त्रिभिः कुलकम्)
१३. अवि सूइयं व[11] सुक्कं वा, सीयपिंडं पुराणकुम्मासं।
अदु बक्कसं[12] पुलागं वा, लद्धे पिंडे अलद्धए दविए ॥
१४. अवि झाति से महावीरे, आसणत्थे अकुक्कुए झाणं।
उड्ढमहे[13] तिरियं च, पेहमाणे[14] समाहिमपडिण्णे ॥
१५. अकसाई विगयगेही[15], सद्दरूवेसुऽमुच्छिए[16] झाति।
छउमत्थे वि परक्कममाणे, णो[17] पमायं सइं पि कुव्वित्था ॥

---

१. रीयित्था (चू); विहरित्था (घ)।
२. अदु अट्ठ° (ख); अदुट्ठ° (ग)।
३. णच्चाण (क, ख, ग, घ, च)।
४. पविस्स (शु)।
५. घासमातं (चू)।
६. गवेसित्था (चू)।
७. दिगिंच्छित्ता (ख, ग)।
८. समयं (क, ख, ग, घ, च, छ); स्वीकृतपाठः चूर्णिवृत्त्यनुसारी वर्तते।
९. वा विट्ठियं (क, ख); वा विचिट्ठियं (घ); वा उवट्ठियं (चू); वा चिट्ठियं (च); वा विविधं° (वृ)।
१०. तेसिमप्पत्तियं (ख, ग); तेसिं पत्तिय (क, च); 'त्रासमकुर्वन्' (वृ)।
११. वा (क, ख, ग, घ, च, छ)।
१२. बुक्कसं (ख)।
१३. उड्ढं अहे य (यं) (ख, ग, घ, छ)।
१४. लोए झायइ (ख, ग); झायइ (चू)।
१५. गेही य (क, ख, ग, घ, च)।
१६. अमुच्छिए (ख, ग, च)।
१७. ण (च)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६. सयमेव अभिसमागम्म, आयतजोगमायसोहीए ।
अभिणिव्वुडे अमाइल्ले, आवकहं भगवं समिआसी ॥
१७. एस विही अणुक्कंतो, माहणेणं मईमया ।
'अपडिण्णेण वीरेण, कासवेण महेसिणा'[1] ॥

—त्ति बेमि ॥

ग्रन्थ-परिमाण
कुल अक्षर २६९२७
अनुष्टुप् श्लोक-८४१ अक्षर १५

---

१. बहुसो अपडिण्णेण, भगवया एवं रीयंति (क, ख, ग, घ, च, छ, वृ, चूपा) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आयारचूला

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पढमं अज्झयणं

पिंडेसणा

पढमो उद्देसो

सचित्त-संसत्त-असणादि-पदं

१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सेज्जं[1] पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा—पाणेहिं वा, पणएहिं वा, बीएहिं वा, हरिएहिं वा—संसत्तं, उम्मिस्सं, सीओदएण वा ओसित्तं[2], रयसा वा परिवासियं[3], तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा—परहत्थंसि वा परपायंसि वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे वि[4] संते णो पडिग्गाहेज्जा[5] ।।

२. से य आहच्च पडिग्गाहिए[6] सिया, से तं आयाय एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता—अहे आरामंसि वा अहे उवस्सयंसि वा अप्पंडे, अप्प-पाणे, अप्प-बीए, अप्प-हरिए, अप्पोसे, अप्पुदए, अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणए विगिंचिय-विगिंचिय, उम्मिस्सं[7] विसोहिय-विसोहिय तओ संजयामेव भुंजेज्ज वा पीएज्ज वा ।।

३. जं च णो संचाएज्जा भोत्तए वा पायए वा, 'से तमायाय'[8] एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता—अहे झाम-थंडिलंसि वा, अट्ठि-रासिंसि वा, किट्ट[9]-रासिंसि

---

१. से जं (क, ब) ।
२. उस्सित्तं (क); अभिसित्त (चू) ।
३. °वासियं (अ, क, घ, च, ब) ।
४. × (चू) ।
५. पडिगा° (घ, छ, ब) ।
६. °गाहे (अ, घ, च, छ, ब) ।
७. उम्मीसं (क, च) ।
८. सेत्त° (अ, च, छ) ।
९. किट्टि° (छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा, तुस-रासिंसि वा, गोमय-रासिंसि वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि[1] पडिलेहिय-पडिलेहिय पमज्जिय-पमज्जिय तओ संजयामेव परिट्ठवेज्जा ।।

ओसहि-आदि-पदं

४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सेज्जाओ[2] पुण ओसहीओ जाणेज्जा––कसिणाओ, सासिआओ, अविदल-कडाओ, अतिरिच्छच्छिन्नाओ, अव्वोच्छिन्नाओ, तरुणियं वा छिवाडिं अणभिक्कंता-भज्जियं[3] पेहाए—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[4] •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जाओ[5] पुण ओसहोओ जाणेज्जा—अकसिणाओ, असासियाओ, विदल-कडाओ, तिरिच्छच्छिन्नाओ, वोच्छिण्णाओ, तरुणियं वा छिवाडिं अभिक्कंतं भज्जियं पेहाए—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा ।।

६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[6] •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—पिहुयं वा, बहुरजं वा, भुज्जियं[7] वा, मंथुं वा, चाउलं वा, चाउल-पलंबं वा सइं भज्जियं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[8] •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—पिहुयं वा[9], •बहुरजं वा, भुंज्जियं वा, मंथुं वा, चाउलं वा°, चाउल-पलंबं वा असइं भज्जियं—दुक्खुत्तो वा भज्जियं, तिक्खुत्तो वा भज्जियं—फासुयं एसणिज्जं[10] •ति मण्णमाणे° लाभे संते पडिगाहेज्जा ।।

अण्णउत्थिय-गारत्थिय-सद्धिं-पदं

८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं[11] •पिंडवाय-पडियाए°पविसितुकामे णो अण्णउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, परिहारिओ[12] अपरिहारिएण वा[13] सद्धिं गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा ।

---

१. थंडिल्लंसि (अ, छ) ।
२. से जाओ (क, ब, छ) ।
३. °क्कंतभज्जियं (क, च); °क्कंतम-भज्जियं (घ) ।
४. सं० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे ।
५. से जाओ (क, ग, छ, ब) ।
६. सं० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे ।
७. भुंजियं (क, घ, च, छ, ब); भज्जियं (अ); हस्त° वृत्तौ दुभियंति ।
८. सं० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे ।
९. सं० पा०—पिहुयं वा जाव चाउलपलंबं ।
१०. सं० पा०—एसणिज्जं जाव लाभे ।
११. सं० पा०—गाहावइकुलं जाव पविसितुकामे ।
१२. परिहारिओ वा (अ, क, च, छ, ब) ।
१३. × (अ, क, च, छ, ब) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहिया वियार-भूमिं वा विहार-भूमिं वा णिक्खममाणे वा पविसमाणे वा णो अण्णउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, परिहारिओ अपरिहारिएण वा सद्धिं बहिया वियार-भूमिं वा विहार-भूमिं वा णिक्खमेज्ज[1] वा पविसेज्ज वा ।।

१०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दुइज्जमाणे—णो अण्णउत्थिएण वा, गारत्थिएण वा, परिहारिओ अपरिहारिएण वा सद्धिं गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।।

११. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[2] °गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे णो अण्णउत्थियस्स वा, गारत्थियस्स वा, परिहारिओ अपरिहारिअस्स वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा देज्जा वा अणुपदेज्जा वा ।।

अस्सिपडियाए-पदं

१२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[3] °गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अस्सिपडियाए[4] एगं साहम्मियं समुद्दिस्स, पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं 'समारब्भ समुद्दिस्स'[5] कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ। तं तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं[6] वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, 'परिभुत्तं वा'[7] 'अपरिभुत्तं वा'[8] आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं[9] °अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।।

१३. [10]°से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अस्सिपडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स, पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ। तं तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

---

१. न प्रविशेत् नापि ततो निष्क्रामेत् (वृ)।
२, ३. सं० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे।
४. अस्सं° (क, च, छ, ब, वृ)।
५. समारंभमुद्दिस्स (च,ब); समारभ°(अ,घ)।
६. अबहिया अणीहडं (क, च)।
७. × (चू)
८. × (क)।
९. सं० पा०—अफासुयं जाव णो।
१०. सं० पा०—एवं बहवे साहम्मिया एगं साहम्मिणिं बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स चत्तारि आलावगा भाणियव्वा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अस्सिपडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स, पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ। तं तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

१५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अस्सिपडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स, पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ। तं तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा° ॥

समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-पदं

१६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं[1] °पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स, पाणाइं वा भूयाइं वा जीवाइं वा सत्ताइं वा समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ। तं तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

१७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं[2] °पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स, पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ। तं तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अपुरिसंतरकडं, 'अबहिया

१, २. सं० पा०—गाहावइकुलं जाव पविट्ठे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णीहडं[1], अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं, अणासेवितं—अफासुयं अणेसणिज्जं[2] •ति मण्णमाणे लाभे संते ° णो पडिगाहेज्जा ।।

१८. अह पुण एवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडं, बहिया णीहडं, अत्तट्ठियं, परिभुत्तं, आसेवियं—फासुयं एसणिज्जं[3] •ति मण्णमाणे लाभे संते ° पडिगाहेज्जा ।।

कुल-पदं

१९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसितुकामे, सेज्जाइं पुण कुलाइं जाणेज्जा—इमेसु खलु कुलेसु णितिए पिंडे दिज्जइ, णितिए[4] अग्ग-पिंडे दिज्जइ, णितिए भाए दिज्जइ, णितिए अवड्ढभाए दिज्जइ—तहप्पगाराइं कुलाइं णितियाइं णितिउमाणाइं, णो भत्ताए वा पाणाए वा पविसेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा ।।

२०. एयं[5] खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

— त्ति बेमि ।।

बीओ उद्देसो

अट्ठमी-आदि-पव्व-पद

२१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अट्ठमि-पोसहिएसु वा, अद्धमासिएसु वा, मासिएसु वा, दोमासिएसु वा, तिमासिएसु वा, चाउमासिएसु वा, पंचमासिएसु वा, छमासिएसु वा उउसु[6] वा, उउसंधीसु वा, उउपरियट्टेसु वा, बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगे एगाओ उक्खाओ परिएसिज्जमाणे पेहाए, दोहिं उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए, 'तिहिं उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए'[7] 'चउहिं उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए'[8], कुंभीमुहाओ वा कलोवाइओ[9] वा सण्णिहि-'सण्णिचयाओ वा'[10] परिएसिज्जमाणे पेहाए—तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अपुरिसंतरकडं,[11]

---

१. बहिया अणीहडं (अ) ।
२. सं० पा०—अणेसणिज्जं जाव णो ।
३. सं० पा०—एसणिज्जं जाव पडिगाहेज्जा ।
४. × (क, च) ।
५. एवं (घ, च, छ) । अशुद्धं प्रतिभाति ।
६. उदुसु (च) ।
७. × (च) ।
८. × (अ, क, घ, च, ब) ।
९. कालओ वा ततो(छ);कालओ वा तिण्णो(ब)।
१०. संणिचयाओ वा तओ एवं विहं जावतियं पिंडं समणादीणं परिएसिज्जमाणं पेहाए (वृ) ।
११. सं० पा०—अपुरिसंतरकडं जाव अणासेवितं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

°अबहिया णीहडं, अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं°, अणासेवितं—अफासुयं अणेसणिज्जं[1] °ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।।

२२. अह पुण एवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडं,[2] °बहिया णीहडं, अत्तट्ठियं, परिभुत्तं°, आसेवियं—फासुयं[3] °एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा ।।

कुल-पदं

२३. से भिक्खू वा[4] °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जाइं पुण कुलाइं जाणेज्जा, तं जहा—उग्ग-कुलाणि वा, 'भोग-कुलाणि'[5] वा, राइण्ण-कुलाणि वा, खत्तिय-कुलाणि वा, इक्खाग-कुलाणि वा, हरिवंस-कुलाणि वा, एसिय-कुलाणि वा, वेसिय-कुलाणि वा, गंडाग-कुलाणि वा, कोट्टाग-कुलाणि वा, गामरक्खकुलाणि वा, पोक्कसालिय[6]-कुलाणि वा—अण्णयरेसु वा तहप्पगारेसु कुलेसु अदुगुंछिएसु अगरहिएसु, असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा फासुयं एसणिज्जं[7] °ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा ।।

महामह-पदं

२४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा समवाएसु वा, पिंड-णियरेसु वा, इंद-महेसु वा, खंद-महेसु वा, रुद्द-महेसु वा, मुगुंद-महेसु वा, भूय-महेसु वा, जक्ख-महेसु वा, णाग-महेसु वा, थूभ-महेसु वा, चेतिय-महेसु वा, रुक्ख-महेसु वा, गिरि-महेसु वा, दरि-महेसु वा, अगड-महेसु वा, तडाग[8]-महेसु वा, दह-महेसु वा, णई-महेसु वा[9], सर-महेसु वा, सागर-महेसु वा, आगर-महेसु वा—अण्णयरेसु वा तहप्पगारेसु विरूवरूवेसु महामहेसु वट्टमाणेसु, बहवे समण-माहण-अतिहि-किविण-वणीमए[10] एगाओ उक्खाओ परिएसिज्जमाणे पेहाए, दोहिं[11] °उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए, तिहिं उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए, चउहिं उक्खाहिं परिएसिज्जमाणे पेहाए, कुंभीमुहाओ वा कलोवाइओ वा° सण्णिहि-सण्णिचयाओ वा परिएसिज्जमाणे पेहाए—तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अपुरिसंतरकडं,[12]

---

१. सं० पा०—अणेसणिज्जं...णो ।
२. सं० पा०—पुरिसंतरकडं जाव आसेवियं ।
३. सं० पा०—फासुयं जाव पडिगाहेज्जा ।
४. सं० पा०—भिक्खू वा जाव पविट्ठे ।
५. भोज-कुलाणि (चू) ।
६. वोक्क° (अ, छ, ब, चू) ।
७. सं० पा०—एसणिज्जं जाव पडिगाहेज्जा ।
८. तलाग (घ, च, छ) ।
९. वा असणमहेसु वा (क) ।
१०. वणीमएसु (अ, क, च, छ, ब) अशुद्धं ।
११. सं० पा०—दोहिं जाव सण्णिहिसण्णिचयाओ ।
१२. °गयं (अ, क, च); °कयं (छ); सं० पा०—अपुरिसंतरकडं जाव णो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

°अबहिया णीहडं, अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं, अणासेवितं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

२५. अह पुण एवं जाणेज्जा—दिण्णं जं तेसिं दायव्वं ।
अह तत्थ भुंजमाणे पेहाए—गाहावइ-भारियं वा, गाहावइ-भगिणिं वा, गाहावइ-पुत्तं वा, गाहावइ-धूयं वा, सुण्हं वा, धाइं वा, दासं वा, दासिं वा, कम्मकरं वा, कम्मकरिं वा, से पुव्वामेव[1] आलोएज्जा[2]—आउसि ! त्ति वा भगिणि ! त्ति वा दाहिसि मे एत्तो अण्णयरं भोयणजायं ? से सेवं वदंतस्स परो असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्टु दलएज्जा—तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा सयं वा णं[3] जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फासुयं[4] °एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा ॥

संखडि-पदं

२६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा परं अद्धजोयण-मेराए संखडिं णच्चा संखडि-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

२७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा—पाईणं संखडिं णच्चा पडीणं गच्छे, अणाढायमाणे, पडीणं संखडिं णच्चा पाईणं गच्छे, अणाढायमाणे, दाहिणं संखडिं णच्चा उदीणं गच्छे, अणाढायमाणे, उदीणं संखडिं णच्चा दाहिणं गच्छे, अणाढायमाणे ॥

२८. जत्थेव सा संखडी सिया, तं जहा—गामंसि वा, णगरंसि वा, खेडंसि वा, कव्वडंसि वा, मडंबंसि[5] वा, पट्टणंसि वा, दोणमुहंसि वा, आगरंसि वा, णिगमंसि वा, आसमंसि वा 'सण्णिवेसंसि वा रायहाणिंसि वा'[6]—संखडिं संखडि-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

२९. केवली बूया आयाणमेयं[7]—संखडिं संखडि-पडियाए अभिसंधारेमाणे आहाकम्मियं वा, उद्देसियं वा, मीसजायं[8] वा, कीयगडं वा, पामिच्चं वा, अच्छेज्जं वा, अणिसिट्ठं वा, अभिहडं वा आहट्टु दिज्जमाणं भुंजेज्जा ।
असंजए[9] भिक्खू-पडियाए, खुड्डिय-दुवारियाओ महल्लियाओ[10] कुज्जा, महल्लिय-

---

१. पुव्व° (क, च) ।
२. आलोएज्जा पभू वा पभूसंदिट्ठो (च); प्रभुं प्रभुसंदिष्टं वा ब्रूयात् (वृ) ।
३. × (घ, छ) ।
४. सं० पा०—फासुयं जाव पडिगाहेज्जा ।
५. मंडबंसि (ब) ।
६. रायहाणिंसि वा सण्णिवेसंसि वा (वृ); चूर्णौ—'गामादि पुव्ववण्णिया' इति सङ्केतेन १।८।१०६ अनुक्रमः अनुसृतः ।
७. आययण° (वृपा) ।
८. °ज्जायं (च, छ, ब) ।
९. अस्सं° (घ, छ, ब) ।
१०. महाद्वाराः (वृ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दुवारियाओ खुड्डियाओ कुज्जा, समाओ सिज्जाओ विसमाओ कुज्जा, विसमाओ सिज्जाओ समाओ कुज्जा, पवायाओ सिज्जाओ णिवायाओ कुज्जा, णिवायाओ सिज्जाओ पवायाओ कुज्जा, अंतो वा, बहिं वा उवस्सयस्स[1] हरियाणि छिंदिय-छिंदिय, दालिय-दालिय, संथारगं संथरेज्जा—'एस खलु भगवया सेज्जाए अक्खाए।'[2] तम्हा से संजए णियंठे[3] तहप्पगारं पुरे-संखडिं[4] वा, पच्छा-संखडिं वा, संखडिं संखडि-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

३०. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए।

—त्ति बेमि ॥

तइओ उद्देसो

३१. से एगइओ अण्णतरं संखडिं आसित्ता पिबित्ता छड्डेज्ज वा, वमेज्ज वा, भुत्ते वा से णो सम्मं परिणमेज्जा, अण्णतरे वा से दुक्खे रोयातंके समुपज्जेज्जा ॥

३२. केवली बूया आयाणमेयं—इह खलु भिक्खू गाहावईहिं वा, गाहावइणीहिं वा, परिवायएहिं वा, परिवाइयाहिं वा, एगज्झं सद्धं[5] सोंडं पाउं भो! वतिमिस्सं[6] हुरत्था वा, उवस्सयं पडिलेहमाणे णो लभेज्जा, तमेव उवस्सयं सम्मिस्सिभाव-मावज्जेज्जा[7] ॥

अण्णमण्णे वा से मत्ते विप्परियासियभूए इत्थिविग्गहे वा, किलीवे वा, तं भिक्खुं उवसंकमित्तु बूया—आउसंतो! समणा! अहे आरामंसि वा, अहे उवस्सयंसि वा, राओ वा, वियाले वा, गामधम्म[8]-णियंतियं कट्टु, रहस्सियं मेहुणधम्म-परियारणाए आउट्टामो। तं चेगइओ सातिज्जेज्जा। अकरणिज्जं चेयं संखाए। एते आयाणा[9] संति संचिज्जमाणा, पच्चावाया भवंति[10]। तम्हा से संजए णियंठे तहप्पगारं पुरे-संखडिं वा, पच्छा-संखडिं वा, संखडिं संखडि-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा[11] गमणाए ॥

---

१. कुज्जा उवासयस्स (क, छ); उवस्सयस्स कुज्जा (घ); उपाश्रयं संस्कुर्यात् (वृ)।
२. एस विलुंगयामो सिज्जाए अक्खाए (अ, छ); एस खलु गयामो सेज्जाए अक्खाए (क); एस वि खलु गयामो सिज्जाए अक्खाए (च); एस खलु गयामो सिज्जाए (ब)।
३. निग्गंथे अण्णयरं वा (घ)।
४. × (क, घ, च)।
५. सद्धि (ब)।
६. विति० (च, छ)।
७. मिश्रीभावम्० (वृ)।
८. गाम० (चू); ग्रामासन्ने वा (वृ)।
९. आयतणाणि (घ, वृ)।
१०. × (अ, क, घ, च, छ)।
११. ०धारेज्ज (अ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णयरं[1] संखडिं सोच्चा णिसम्म संपरिहावइ[2] उस्सुय-भूयेण अप्पाणेणं।
धुवा संखडी। णो संचाएइ तत्थ इतरेतरेहिं कुलेहिं सामुदाणियं[3] एसियं, वेसियं, पिंडवायं पडिगाहेत्ता आहारं आहारेत्तए। माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा। से तत्थ कालेण अणुपविसित्ता तत्थितरेतरेहिं कुलेहिं सामुदाणियं एसियं, वेसियं, पिंडवायं पडिगाहेत्ता आहारं आहारेज्जा ॥

३४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणज्जा—गामं वा[4], •णगरं वा, खेडं वा, कब्बडं वा, मडंबं वा, पट्टणं वा, दोणमुहं वा, आगरं वा, णिगमं वा, आसमं वा, सण्णिवेसं वा,° रायहाणिं वा। इमंसि खलु गामंसि वा[5], •णगरंसि वा, खेडंसि वा, कब्बडंसि वा मडंबंसि वा, पट्टणंसि वा, दोणमुहंसि वा, आगरंसि वा, णिगमंसि वा, आसमंसि वा, सण्णिवेसंसि वा°, रायहाणिंसि वा, संखडी सिया। तं पि य गामं वा जाव रायहाणिं वा, 'संखडि-पडियाए'[6] णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

३५. केवली बूया आयाणमेयं—आइण्णावमाणं[7] संखडिं अणुपविस्समाणस्स—पाएण वा पाए अक्कंतपुव्वे भवइ, हत्थेण वा हत्थे संचालियपुव्वे भवइ, पाएण वा पाए आवडियपुव्वे भवइ, सीसेण वा सीसे संघट्टियपुव्वे भवइ, काएण वा काए संखोभियपुव्वे भवइ, दंडेण वा अट्ठीण वा मुट्ठीण वा लेलुणा वा कवालेण वा अभिहयपुव्वे भवइ, सीओदएण वा ओसित्तपुव्वे भवइ, रयसा वा परिघासियपुव्वे[8] भवइ, अणेसणिज्जे[9] वा परिभुत्तपुव्वे भवइ, अण्णेसिं वा दिज्जमाणे पडिगाहियपुव्वे भवइ—तम्हा से संजए णिग्गंथे तहप्पगारं आइण्णोमाणं संखडिं संखडि-पडियाए नो अभिसंधारेज्ज गमणाए ॥

विचिगिच्छा-समावण्ण-पदं

३६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा एसणिज्जे सिया, अणेसणिज्जे सिया—विचिगिच्छ[10]-समावण्णेणं अप्पाणेणं असमाहडाए लेस्साए, तहप्पगारं असणं वा[11] •पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

---

१. अण्णयरिं (अ, च)।
२. संप्रधावति (वृ)।
३. समु° (अ, क, च, छ)।
४. सं० पा०—गामं वा जाव रायहाणिं।
५. सं० पा०—गामंसि वा जाव रायहाणिंसि।
६. संखडिं संखडि-पडियाए (ब)।
७. आइण्णो° (अ, घ, ब)। अशुद्धं।
८. परिज्जासित° (क); परियासित°(च,छ)।
९. °णिज्जेण (अ, छ)।
१०. वितिगिच्छ (ब); वितिगिंछ (अ); विचिगिछ (छ)।
११. सं० पा०—असणं वा•••लाभे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सव्वभंडगमायाए-पदं

३७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं[1] °पिंडवाय-पडियाए° पविसितुकामे सव्वं भंडगमायाए गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसेज्ज वा णिक्खमेज्ज वा ।।

३८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहिया विहार-भूमिं वा वियार-भूमिं वा णिक्खममाणे वा, पविसमाणे वा सव्वं भंडगमायाए बहिया विहार-भूमिं वा वियार-भूमिं वा णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ।।

३९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे सव्वं भंडगमायाए गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।।

४०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अह[2] पुण एवं जाणेज्जा—तिव्वदेसियं वा वासं वासमाणं पेहाए, तिव्वदेसियं वा महियं सण्णिवयमाणिं[3] पेहाए, महावाएण वा रयं समुद्धयं पेहाए, तिरिच्छं[4] संपाइमा वा तसा-पाणा संथडा सन्निवयमाणा पेहाए, से एवं णच्चा णो सव्वं भंडगमायाए गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा। बहिया विहार-भूमिं वा वियार-भूमिं वा पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा, गामाणुगामं वा[5] दूइज्जेज्जा ।।

कुल-पदं

४१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जाइं पुण कुलाइं जाणेज्जा, तं जहा—खत्तियाण वा, राईण वा, कुराईण वा, रायपेसियाण वा, रायवंसट्ठियाण[6] वा, अंतो वा बहिं[7] वा गच्छंताण वा, सण्णिविट्ठाण वा, णिमंतेमाणाण वा, अणिमंतेमाणाण वा असणं वा[8] °पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

[एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

—त्ति बेमि[9] ।।]

---

१. स० पा०— गाहावइकुलं···पविसितुकामे ।
२. अह यं (घ, छ) ।
३. °माणं (अ, घ) ।
४. तिरिच्छ (अ, क, घ, च) ।
५. × (क, छ, ब); च (अ) ।
६. ०वंसुट्ठियाणं (घ) ।
७. बहियं (अ, छ); बाहियं (च); बहिया (घ) ।
८. सं० पा०—असणं वा···लाभे ।
९. कोष्ठकवर्ती पाठ आदर्शेषु नोपलभ्यते, किन्तु प्रस्तुताध्ययनस्य रचनाक्रमेणासौ युज्यते । उद्देशकान्ते सर्वत्र एतस्य दर्शनात् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउत्थो उद्देसो

संखडि-पदं

४२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[1] •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—मंसादियं[2] वा, मच्छादियं[3] वा, मंस-खलं वा, मच्छ-खलं[4] वा, आहेणं[5] वा, पहेणं वा, हिंगोलं वा, संमेलं[6] वा हीरमाणं पेहाए, अंतरा से मग्गा बहुपाणा बहुबीया बहुहरिया बहुओसा बहुउदया बहुउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगा, बहवे तत्थ समण-माहण-अतिथि-किवण-वणीमगा उवागता उवागमिस्संति, तत्थाइण्णावित्ती[7]। णो पण्णस्स णिक्खमण-पवेसाए, णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह[8]-धम्माणुओगचिंताए। सेवं[9] णच्चा तहप्पगारं पुरे-संखडिं वा, पच्छा-संखडिं वा, संखडिं संखडि-पडियाए णो अभिसंधारेज्ज गमणाए॥

४३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—मंसादियं वा, मच्छादियं वा, मंस-खलं वा, मच्छ-खलं वा, आहेणं वा, पहेणं वा, हिंगोलं वा, संमेलं वा हीरमाणं पेहाए, अंतरा से मग्गा अप्पंडा[10] •अप्पपाणा अप्पबीया अप्पहरिया अप्पोसा अप्पुदया अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°संताणगा, णो तत्थ[11] बहवे समण-माहण[12]-•अतिथि-किवण-वणीमगा उवागता°उवागमिस्संति, अप्पाइण्णावित्ती। पण्णस्स णिक्खमण-पवेसाए, पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह[13]-धम्माणुओग-चिंताए। सेवं णच्चा तहप्पगारं पुरे-संखडिं वा, पच्छा-संखडिं वा, संखडिं संखडि-पडियाए अभिसंधारेज्ज गमणाए॥

खीरिणी-गावी-पदं

४४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं[14] •पिंडवाय-पडियाए° पविसितुकामे सेज्जं पुण जाणेज्जा—खीरिणीओ[15] गावीओ खीरिज्जमाणीओ पेहाए, असणं

---

१. सं० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे।
२. मंस° (घ)।
३. मज्जा° (घ, ब)।
४. मज्ज° (घ)।
५. अहेणं (घ, ब)।
६. समीलं (च, ब)।
७. अन्नाइण्णा° (क, च); अच्चाइण्णा° (चू)।
८. °पेहाए (क, च, ब); पेहा (घ)।
९. स एवं (क, च); से एवं (अ, घ)।
१०. सं० पा०—अप्पंडा जाव संताणगा।
११. जत्थ (अ, क, च, छ, ब)।
१२. सं० पा०—समण-माहण जाव उवागमिस्संति।
१३. °पेहाए (क, ब); पेहा (च)।
१४. सं० पा०—गाहावइ-कुलं जाव पविसितुकामे।
१५. खीरिणियाओ (क, घ, च, छ, ब)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उवसंखडिज्जमाणं[1] पेहाए, पुरा अप्पजूहिए,[2] सेवं णच्चा णो गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा। से त्तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता अणावायमसंलोए चिट्ठेज्जा ॥

४५. अह पुण एवं जाणेज्जा - खीरिणीओ गावीओ खीरियाओ पेहाए, असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उवक्खडियं पेहाए, पुरा पजूहिए, से एवं णच्चा तओ संजयामेव गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ॥

माइट्ठाण-पदं

४६. भिक्खागा णामेगे[3] एवमाहंसु—'समाणे वा, वसमाणे'[4] वा, गामाणुगामं दूइज्जमाणे—"खुड्डाए खलु अयं गामे, संणिरुद्धाए, णो महालए, से हंता! भयंतारो! बाहिरगाणि गामाणि भिक्खायरियाए[5] वयह।"

संति तत्थेगइयस्स भिक्खुस्स पुरे-संथुया वा, पच्छा-संथुया वा परिवसंति, तं जहा—गाहावई वा, गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा, कम्मकरीओ वा। तहप्पगाराइं कुलाइं पुरे-संथुयाणि वा, पच्छा-संथुयाणि वा, पुव्वामेव भिक्खायरियाए अणुपविसिस्सामि अवि य इत्थ लभिस्सामि—पिंडं वा, लोयं वा, खीरं वा, दधिं वा, णवणीयं वा, घयं वा, गुलं वा, तेल्लं वा, महुं वा, मज्जं वा, मंसं वा, संकुलिं[6] वा, फाणियं वा, 'पूयं वा'[7], सिहरिणिं वा, तं पुव्वामेव भोच्चा पेच्चा, पडिग्गहं संलिहिय संमज्जिय, तओ पच्छा भिक्खूहिं सद्धिं गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसिस्सामि, णिक्खमिस्सामि वा। माइट्ठाणं संफासे, तं णो एवं करेज्जा ॥

४७. से तत्थ भिक्खूहिं सद्धिं कालेण अणुपविसित्ता, तत्थितरेतरेहिं[8] कुलेहिं सामुदाणियं, एसियं, पिंडवायं पडिगाहेत्ता आहारं आहारेज्जा ॥

४८. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं[9], °जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए।

—त्ति बेमि ॥°

---

१. उवक्खडि° (अ, क, घ, छ, ब, चू)।
२. अप्पमूहितो (क); अप्पयूहिए (घ); अप्पबूहिए (छ)।
३. °नाम मेगे (ब)।
४. समाणा वा वसमाणा (च)।
५. °पडियाए (घ, ब)।
६. सकुलिं (घ, छ); सक्कुलिं (क्व)।
७. × (घ, छ, वृ)।
८. तत्थियराइयरेहिं (घ, ब)।
९. सं० पा०—सामग्गियं···।

पंचमो उद्देसो

४९. से भिक्खू वा[1] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—अग्ग-पिंडं[2] उक्खिप्पमाणं पेहाए, अग्ग-पिंडं णिक्खिप्पमाणं पेहाए, अग्ग-पिंडं हीरमाणं पेहाए, अग्ग-पिंडं परिभाइज्जमाणं पेहाए, अग्ग-पिंडं परिभुज्जमाणं पेहाए, अग्ग-पिंडं परिट्ठवेज्जमाणं पेहाए, पुरा असिणाइ[3] वा, अवहाराइ वा, पुरा जत्थण्णे समण-माहण-अतिहि-किविण-वणीमगा खद्धं-खद्धं उवसंकमंति—से हंता अहमवि खद्धं[4] उवसंकमामि। माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा ॥

विसमट्ठाण-परक्कम-पदं

५०. से भिक्खू वा[5] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे—अंतरा से वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, पागाराणि[6] वा, तोरणाणि वा, अग्गलाणि वा, अग्गल-पासगाणि वा—सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुयं गच्छेज्जा ॥

५१. केवली बूया आयाणमेयं—से तत्थ परक्कममाणे पयलेज्ज वा, 'पक्खलेज्ज वा'[7], पवडेज्ज वा, से तत्थ पयलमाणे वा, 'पक्खलमाणे वा'[8], पवडमाणे वा, तत्थ से काये उच्चारेण वा, पासवणेण वा, खेलेण वा, सिंघाणेण वा, वंतेण वा, पित्तेण वा, पूएण वा, सुक्केण वा, सोणिएण वा उवलित्ते सिया। तहप्पगारं कायं णो अणंतरहियाए पुढवीए, णो ससिणिद्धाए पुढवीए, णो ससरक्खाए पुढवीए, णो चित्तमंताए सिलाए, णो चित्तमंताए लेलुए, कोलावासंसि वा दारुए जीव-पइट्ठिए सअंडे सपाणे[9] •सबीए सहरिए सउसे सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°संताणए णो आमज्जेज्ज वा, णो पमज्जेज्ज वा, णो संलिहेज्ज वा, 'णो णिल्लिहेज्ज वा'[10], णो[11] उव्वलेज्ज वा, णो उवट्टेज्ज वा, णो आयावेज्ज वा, णो पयावेज्ज वा।

से पुव्वामेव अप्पससरक्खं तणं वा, पत्तं वा, कट्ठं वा, सक्करं वा जाइज्जा, जाइत्ता से त्तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता अहे झामथंडिलंसि

---

१. सं० पा०—भिक्खू वा जाव पविट्ठे।
२. अग्रपिण्डो—निष्पन्नस्य शाल्योदनादेराहारस्य देवताद्यर्थं स्तोकस्तोकोद्धारस्तमुत्क्षिप्यमाणं दृष्ट्वा (वृ)।
३. असणाइ (क, व); असिणेइ (छ)।
४. खद्धं खद्धं (छ, ब)।
५. सं० पा०—भिक्खू वा जाव पविट्ठे।
६. पोगाराणि (अ); पोग्गलाणि (ब)।
७. × (अ, क, घ, च, ब)।
८. × (अ, क, घ, च, ब)।
९. सं० पा०—सपाणे जाव संताणए।
१०. × (छ)।
११. × (अ, क, घ, च, ब) सर्वत्र।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा[1], •अट्ठि-रासिंसि वा, किट्ट-रासिंसि वा, तुस-रासिंसि वा, गोमय-रासिंसि वा°, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि, पडिलेहिय-पडिलेहिय पमज्जिय-पमज्जिय तओ संजयामेव आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा, संलिहेज्ज वा, णिल्लिहेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा, उवट्टेज्ज वा, आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा ।।

वियाल-परक्कम-पदं

५२. से भिक्खू वा[2] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा[3]—गोणं वियालं पडिपहे[4] पेहाए, महिसं वियालं पडिपहे पेहाए, एवं—मणुस्सं, आसं, हत्थि[5], सीहं, वग्घं, विगं, दीवियं, अच्छं, तरच्छं, परिसरं, सियालं, विरालं, सुणयं, कोलसुणयं, कोकंतियं, चित्ता-चिल्लडयं—वियालं[6] पडिपहे पेहाए, सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुयं गच्छेज्जा ।।

विसमट्ठाण-परक्कम-पदं

५३. से भिक्खू वा[7] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे—अंतरा से ओवाओ वा, खाणू वा, कंटए वा, घसी[8] वा, भिलुगा वा, विसमे वा, विज्जले वा परियावज्जेज्जा—सति परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुयं गच्छेज्जा ।।

कंटक-बोंदिया-पदं

५४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलस्स दुवार-बाहं कंटक-बोंदियाए परिपिहियं पेहाए, तेसिं पुव्वामेव उग्गहं अणणुण्णविय अपडिलेहिय अपमज्जिय णो अवंगुणिज्ज वा, पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा ।
तेसिं पुव्वामेव उग्गहं अणुण्णविय, पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय तओ संजयामेव अवंगुणिज्ज वा, पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा ।।

अणावायमसंलोय-चिट्ठण-पदं

५५. से भिक्खू वा[9] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे°

---

१. सं० पा०—झामथंडिलंसि वा जाव अण्णयरंसि ।
२. सं० पा०—भिक्खू वा जाव पविट्ठे ।
३. यथात्र किञ्चिद्गवादिकमास्त इति (वृ) ।
४. पडिपहं (अ, क, च) ।
५. हत्थी (अ, क, च, छ) ।
६. वियालं—दृप्तम् (वृ) ।
७. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।
८. घसा (ब) ।
९. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा[1]—समणं वा, माहणं वा, गामपिंडोलगं वा, अतिहिं वा पुव्वपविट्ठं पेहाए णो तेसिं संलोए, सपडिदुवारे चिट्ठेज्जा ॥

५६. 'केवली बूया आयाणमेयं -पुरा पेहाए तस्सट्ठाए परो असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्टु दलएज्जा।
अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो, जं णो तेसिं संलोए, सपडिदुवारे चिट्ठेज्जा'[2]। से त्तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता अणावायमसंलोए चिट्ठेज्जा ॥

परिभायण-संभुंजण-पदं

५७. से से[3] परो अणावायमसंलोए चिट्ठमाणस्स असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आहट्टु दलएज्जा, सेयं[4] वदेज्जा—आउसंतो समणा! इमे भे असणे वा पाणे वा खाइमे वा साइमे वा सव्वजणाए निसिट्ठे, तं भुंजह वा[5] णं परिभाएह वा णं। तं चेगइओ पडिगाहेत्ता तुसिणीओ उवेहेज्जा, अवियाइं एवं मम मेव सिया। एवं[6] माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा। से त्तमायाए तत्थ गच्छेज्जा, तत्थ गच्छेत्ता से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसंतो समणा! इमे भे असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा सव्वजणाए णिसिट्ठे, तं भुंजह वा णं, परिभाएह वा णं। 'से णेवं'[7] वदंतं परो वएज्जा—आउसंतो समणा! तुमं चेव णं परिभाएहि। से तत्थ परिभाएमाणे णो अप्पणो खद्धं-खद्धं डायं-डायं ऊसढं-ऊसढं रसियं-रसियं मणुण्णं-मणुण्णं णिद्धं-णिद्धं लुक्खं-लुक्खं,[8] से तत्थ अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झोववण्णे बहुसममेव परिभाएज्जा।
से णं परिभाएमाणं परो वएज्जा—आउसंतो समणा! मा णं तुमं परिभाएहि, सव्वे वेगतिया भोक्खामो वा, पाहामो वा। से तत्थ भुंजमाणे णो अप्पणो खद्धं खद्धं डायं डायं ऊसढं ऊसढं रसियं रसियं मणुण्णं मणुण्णं णिद्धं णिद्धं लुक्खं-लुक्खं, से तत्थ अमुच्छिए अगिद्धे अगढिए अणज्झोववण्णे बहुसममेव भुंजेज्ज वा, पीएज्ज वा ॥

पुव्वपविट्ठसमणादि-उवाइक्कमण-पदं

५८. से भिक्खू वा[9] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे• समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—समणं वा, माहणं वा, गाम-पिंडोलगं वा, अतिहिं

---

१. यथात्र गृहे श्रमणादिः कश्चित्प्रविष्टः (वृ)।
२. × (अ, क, छ, वृ)।
३. × (घ)।
४. से एव (घ)।
५. व (अ, ब)।
६. × (अ, घ, च)।
७. एवं (घ); अथैनं साधुमेवम् (वृ)।
८. न गृण्हीयादिति (वृ)।
९. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा पुव्वपविट्ठं पेहाए णो ते उवाइक्कम्म पविसेज्ज वा, ओभासेज्ज वा। से त्तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता अणावायमसंलोए चिट्ठेज्जा ।।

५९. अह पुणेवं जाणेज्जा—**पडिसेहिए व[1] दिन्ने वा, तओ तम्मि णियत्तिए।** संजयामेव पविसेज्ज वा, ओभासेज्ज वा ।।

६०. एयं[2] खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं[3], °जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए।

—ति बेमि° ।।

छट्ठो उद्देसो

भत्तट्ठ-समुदितपाणाणं उज्जुगमण-पदं

६१. से भिक्खू वा[4] °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—रसेसिणो बहवे पाणा[5], घासेसणाए संथडे सण्णिवइए पेहाए, तं जहा—कुक्कुड-जाइयं वा, सूयर-जाइयं वा, अग्गपिंडंसि वा वायसा संथडा सण्णिवइया पेहाए—सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, नो उज्जुयं गच्छेज्जा ।।

गाहावइकुल-पविट्ठस्स अकरणिज्ज-पदं

६२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[6] °गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे—नो गाहावइ-कुलस्स 'दुवार-साहं'[7] अवलंबिय-अवलंबिय चिट्ठेज्जा। नो गाहावइ-कुलस्स दगच्छड्डुणमत्ताए चिट्ठेज्जा। नो गाहावइ-कुलस्स चंदणिउयए चिट्ठेज्जा। नो गाहावइ-कुलस्स सिणाणस्स वा, वच्चस्स वा, संलोए सपडिदुवारे चिट्ठेज्जा। णो गाहावइ-कुलस्स आलोयं वा, थिग्गलं वा, संधिं वा, दग-भवणं वा बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय, अंगुलियाए वा उद्दिसिय-उद्दिसिय, ओणमिय-ओणमिय, उण्णमिय-उण्णमिय णिज्झाएज्जा। णो गाहावइं अंगुलियाए उद्दिसिय-उद्दिसिय जाएज्जा। णो गाहावइं अंगुलियाए चालिय-चालिय जाएज्जा। णो गाहावइं अंगुलियाए तज्जिय-तज्जिय जाएज्जा। णो गाहावइं अंगुलियाए उक्खलुंपिय[8]-उक्खलुंपिय जाएज्जा। णो गाहावइं वंदिय-वंदिय जाएज्जा। 'णो व णं'[9] फरुसं वएज्जा ।।

---

१. वा (छ)।
२. एवं (अ, क, छ, वृ)।
३. सं० पा०—सामग्गियं......।
४. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे।
५. ताञ्च (वृ)।
६. सं० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे।
७. दुवारसामग्गियं (अ); दुवारवाहं (क, च, चू); वारसाहं (घ)।
८. चाउगुलंपिय २(अ); उक्खलंपिय २(क, च); उक्खुलंबिय २ (घ, ब)।
९. णो चेव णं (अ); णो वयणं (च, छ, ब)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुरेकम्म-आदि-पदं

६३. अह तत्थ कंचि[1] भुंजमाणं पेहाए, तं जहा—गाहावइं[2] वा[3], •गाहावइ-भारियं वा, गाहावइ-भगिणिं वा, गाहावइ-पुत्तं वा, गाहावइ-धूयं वा, सुण्हं वा, धाइं वा, दासं वा, दासिं वा, कम्मकरं वा,° कम्मकरिं वा। से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा दाहिसि मे एत्तो अण्णयरं भोयणजायं ?
से सेवं वयंतस्स परो हत्थं वा, मत्तं वा, दव्विं वा, भायणं वा, सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पहोएज्ज वा। से पुव्वामेव आलोएज्जा– आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा, मा एयं तुमं हत्थं वा, मत्तं वा, दव्विं वा, भायणं वा, सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेहि वा, पहोएहि वा, अभिकंखसि मे दाउं ? एमेव दलयाहि।
से सेवं वयंतस्स परो हत्थं वा, मत्तं वा, दव्विं वा, भायणं वा, सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा, उच्छोलेत्ता पहोइत्ता आहट्टु दलएज्जा—तहप्पगारेण पुरेकम्मकएण हत्थेण वा, मत्तेण वा, दव्वीए वा, भायणेण वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अफासुयं अणेसणिज्जं[4] •ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा॥

६४. अह पुण एवं जाणेज्जा—णो पुरेकम्मकएण, उदउल्लेण[5]। तहप्पगारेण उदउल्लेण हत्थेण वा, मत्तेण वा, दव्वीए वा, भायणेण वा, असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अफासुयं[6] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा॥

६५. अह पुण एवं जाणेज्जा—णो उदउल्लेण, ससिणिद्धेण[7]। •तहप्पगारेण ससिणिद्धेण हत्थेण वा[8]॥

६६. अह पुण एवं जाणेज्जा—णो ससिणिद्धेण, ससरक्खेण। तहप्पगारेण ससरक्खेण हत्थेण वा॥

६७. अह पुण एवं जाणेज्जा—णो ससरक्खेण, मट्टिया-संसट्ठेण। तहप्पगारेण मट्टिया-संसट्ठेण हत्थेण वा॥

६८. अह पुण एवं जाणेज्जा—णो मट्टिया-संसट्ठेण, ऊस-संसट्ठेण। तहप्पगारेण ऊस-संसट्ठेण हत्थेण वा॥

---

१. किंचि (क, घ, छ)।
२. गाहावइयं (च, छ)।
३. सं० पा०—गाहावइं वा जाव कम्मकरिं।
४. सं० पा०—अणेसणिज्जं जाव णो।
५. अतः ८१ सूत्रपर्यन्तं 'देज्जा' इति क्रियापदमध्याहार्यम्।
६. सं० पा०—अफासुयं जाव णो।
७. सं० पा०—ससिणिद्धेण सेसं तं चेव एवं ससरक्खे मट्टिया ऊसे, हरियाले हिंगुलए, मणोसिला अंजणे लोणे गेरुय वण्णिय सेडिय, सोरट्ठिय पिट्ठ कुक्कस उक्कुट्ठ संसट्ठेण।
८. अतः ८० सूत्रपर्यन्तं पूर्णपाठार्थं १।६४ सूत्रं द्रष्टव्यम्।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६९. अह पुण एवं जाणेज्जा—णो ऊस-संसट्ठेण, हरियाल-संसट्ठेण। तहप्पगारेण हरियाल-संसट्ठेण हत्थेण वा ॥

७०. अह पुण एवं जाणेज्जा—णो हरियाल-संसट्ठेण, हिंगुलय-संसट्ठेण। तहप्पगारेण हिंगुलय-संसट्ठेण हत्थेण वा ॥

७१. अह पुण एवं जाणेज्जा—णो हिंगुलय-संसट्ठेण, मणोसिला-संसट्ठेण। तहप्पगारेण मणोसिला-संसट्ठेण हत्थेण वा ॥

७२. अह पुण एवं जाणेज्जा—णो मणोसिला-संसट्ठेण, अंजण-संसट्ठेण। तहप्पगारेण अंजण-संसट्ठेण हत्थेण वा ॥

७३. अह पुण एवं जाणेज्जा—णो अंजण-संसट्ठेण, लोण-संसट्ठेण। तहप्पगारेण लोण-संसट्ठेण हत्थेण वा ॥

७४. अह पुण एवं जाणेज्जा—णो लोण-संसट्ठेण, गेरुय-संसट्ठेण। तहप्पगारेण गेरुय-संसट्ठेण हत्थेण वा ॥

७५. अह पुण एवं जाणेज्जा—णो गेरुय-संसट्ठेण, वण्णिया-संसट्ठेण। तहप्पगारेण वण्णिया-संसट्ठेण हत्थेण वा ॥

७६. अह पुण एवं जाणेज्जा—णो वण्णिया-संसट्ठेण, सेडिया-संसट्ठेण। तहप्पगारेण सेडिया[1]-संसट्ठेण हत्थेण वा ॥

७७. अह पुण एवं जाणेज्जा—णो सेडिया-संसट्ठेण, सोरट्ठिया-संसट्ठेण। तहप्पगारेण सोरट्ठिया-संसट्ठेण हत्थेण वा ॥

७८. अह पुण एवं जाणेज्जा—णो सोरट्ठिया-संसट्ठेण, पिट्ठ-संसट्ठेण। तहप्पगारेण पिट्ठ-संसट्ठेण हत्थेण वा ॥

७९. अह पुण एवं जाणेज्जा—णो पिट्ठ-संसट्ठेण, कुक्कस-संसट्ठेण। तहप्पगारेण कुक्कस-संसट्ठेण हत्थेण वा ॥

८०. अह पुण एवं जाणेज्जा—णो कुक्कस-संसट्ठेण, उक्कुट्ठ[2]-संसट्ठेण। तहप्पगारेण उक्कुट्ठ-संसट्ठेण हत्थेण वा° ॥

८१. अह पुण एवं जाणेज्जा—णो 'असंसट्ठे, संसट्ठे'[3]। तहप्पगारेण संसट्ठेण हत्थेण वा, मत्तेण वा, दव्वीए वा, भायणेण वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा फासुयं[4] °एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा[5] ॥

---

१. सेढिय (क)।

२. उक्किट्ठ (क)।

३. पूर्वपरिपाट्या एतत् पदद्वयमपि तृतीयान्तं युज्यते, किन्तु आदर्शेषु प्रथमान्तं लिखितमस्ति, वृत्तिकृतापि तथैव व्याख्यातमस्ति, तेन यथा लब्ध एव पाठः स्वीकृतः।

४. सं० पा०—फासुयं जाव पडिगाहेज्जा।

५. अह पुणेवं जाणेज्जा असंसट्ठे तहप्पगारेण संसट्ठेण हत्थेण वा ४ असणं वा ४ फासुयं जाव पडिगाहेज्जा 'छ' प्रतौ एतत् सूत्रमधिकमस्ति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पिहुय-आदि-कोट्टण-पदं

८२. से भिक्खू वा[1] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे° सेज्जं पुण जाणेज्जा—पिहुयं वा, बहुरयं वा[2], •भज्जियं वा, मंथुं वा, चाउलं वा°, चाउलपलंबं वा, अस्संजए भिक्खु-पडियाए चित्तमंताए सिलाए[3], •चित्तमंताए लेलुए, कोलावासंसि वा दारुए जीवपइट्ठिए, सअंडे सपाणे सबीए सहरिए सउसे सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय°-मक्कडासंताणाए कोट्टिंसु वा, कोट्टिंति वा, कोट्टिस्संति वा, उप्पणिंसु[4] वा, उप्पणिंति वा, उप्पणिस्संति वा—तहप्पगारं पिहुयं वा जाव चाउलपलंबं वा—अफासुयं[5] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

लोण-पदं

८३. से भिक्खू वा[6] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—बिलं वा लोणं, उब्भियं वा लोणं, अस्संजए भिक्खु-पडियाए चित्तमंताए सिलाए[7], •चित्तमंताए लेलुए, कोलावासंसि वा दारुए जीवपइट्ठिए, सअंडे सपाणे सबीए सहरिए सउसे सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°संताणाए भिंदिंसु वा, भिंदंति वा, भिंदिस्संति वा, रुंचिंसु वा, रुंचिंति वा, रुंचिस्संति वा—बिलं वा लोणं, उब्भियं वा लोणं—अफासुयं[8] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

अगणि-णिक्खित्त-पदं

८४. से भिक्खू वा[9] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अगणि-णिक्खित्तं, तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अफासुयं[10] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

८५. केवली बूया आयाणमेयं—अस्संजए[11] भिक्खु-पडियाए उस्सिंचमाणे वा, निस्सिंचमाणे वा, आमज्जमाणे वा, पमज्जमाणे वा, ओयारेमाणे वा, उव्वत्तमाणे[12] वा, अगणिजीवे हिंसेज्जा ।

---

१. सं० पा०—भिक्खू वा'''सेज्जं ।
२. सं० पा०—बहुरयं वा जाव चाउलपलंबं ।
३. सं० पा०—सिलाए जाव मक्कडा ।
४. उप्फ° (अ, क, च) ।
५. सं० पा०—अफासुयं जाव णो ।
६. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।
७. सं० पा०—सिलाए जाव संताणाए ।
८. सं० पा०—अफासुयं जाव णो ।
९. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।
१०. सं० पा०—अफासुयं लाभे ।
११. असंजए (छ) ।
१२. ओयत्तेमाणे (अ, क); पवत्तेमाणे (छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एसुवएसे, जं तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अगणि-णिक्खित्तं—अफासुयं अणेसणिज्जं[1] •ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

८६. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

—ति बेमि ॥

सत्तमो उद्देसो

मालोहड-पदं

८७. से भिक्खू वा[2] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा खंधंसि वा, थंभंसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, पासायंसि वा, हम्मियतलंसि वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि अंतलिक्खजायंसि उवणिक्खित्ते सिया—तहप्पगारं मालोहडं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अफासुयं[3] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

८८. केवली बूया आयाणमेयं—अस्संजए भिक्खु-पडियाए पीढं वा, फलगं वा, णिस्सेणिं वा, उदूहलं वा, अवहट्टु उस्सविय आरुहेज्जा[4] । से तत्थ दुरुहमाणे[5] पयलेज्ज वा, पवडेज्ज वा, से तत्थ पयलमाणे वा, पवडमाणे वा, हत्थं वा, पायं वा, बाहुं[6] वा, ऊरुं वा, उदरं वा, सीसं वा, अण्णयरं वा कायंसि इंदिय-जायं लूसेज्ज वा पाणाणि वा भूयाणि वा जीवाणि वा सत्ताणि वा अभिहणेज्ज वा, वत्तेज्ज वा, लेसेज्ज वा, संघंसेज्ज वा, संघट्टेज्ज वा, परियावेज्ज वा, किलामेज्ज वा, ठाणाओ ठाणं संकामेज्ज वा—तं तहप्पगारं मालोहडं असणं वा[7] •पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

८९. से भिक्खू वा[8] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा कोट्ठियाओ वा, कोलज्जाओ[9] वा, अस्संजए भिक्खु-पडियाए उक्कुज्जिय, अवउज्जिय,

---

१. स० पा०—अणेसणिज्जं लाभे ।
२. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।
३. सं० पा०—अफासुयं जाव णो ।
४. दुहेज्जा (अ, ब); दूहिज्जा (घ); दुरुहेज्जा (च) ।
५. दूहमाणे (घ) ।
६. बाहं (अ, क, घ, ब) ।
७. सं० पा०—असणं वा ४ लाभे ।
८. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।
९. कोलेज्जाओ (क, च); कोलिज्जाओ (घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओहरिय, आहट्टु दलएज्जा—तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा मालोहडं[1] ति णच्चा लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

मट्टिओलित्त-पदं

९०. से भिक्खू वा[2] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा मट्टिओलित्तं[3]—तहप्पगारं असणं वा[4] •पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे °लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

९१. केवली बूया आयाणमेयं—अस्संजए भिक्खू-पडियाए मट्टिओलित्तं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उब्भिदमाणे पुढवीकायं समारंभेज्जा, तह तेउ-वाउ-वणस्सइ-तसकायं समारंभेज्जा, पुणरवि ओलिंपमाणे पच्छाकम्मं करेज्जा । अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा[5] •एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°, जं तहप्पगारं मट्टिओलित्तं असणं वा[6] •पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

पुढविकाय-पइट्ठिय-पदं

९२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[7] •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°प्पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पुढविकाय-पइट्ठियं—तहप्पगारं असणं वा[8] •पाणं वा खाइमं वा साइमं वा पुढविकाय-पइट्ठियं°—अफासुयं[9] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।।

आउकाय-पइट्ठिय-पदं

९३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[10] •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु° पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आउकाय-पइट्ठियं—तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा आउकाय-पइट्ठियं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

---

१. माला° (छ) ।
२. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।
३. °ओवलित्तं (घ, छ) ।
४. सं० पा०—असणं वा ४ जाव लाभे ।
५. सं० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव जं ।
६. सं० पा०—असणं वा ४ लाभे ।
७. सं० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे ।
८. सं० पा०—असणं वा ४ अफासुयं ।
९. सं० पा०— अफासुयं जाव णो ।
१०. सं० पा०—भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा असणं वा ४ आउकायपइट्ठियं तह चेव । एवं अगणिकायपइट्ठियं लाभे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अगणिकाय-पइट्ठिय-पदं

९४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अगणिकाय-पइट्ठियं—तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अगणिकाय-पइट्ठियं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

९५. केवली बूया आयाणमेयं—अस्संजए भिक्खु-पडियाए अगणिं ओसक्किय[1], णिस्सक्किय[2], ओहरिय, आहट्टु दलएज्जा ।
अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा[3] °एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एसुवएसे, जं तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अगणिकाय-पइट्ठियं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

अच्चुसिण-वीयण-पदं

९६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[4] °गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अच्चुसिणं, अस्संजए भिक्खु-पडियाए सूवेण[5] वा, विहुवणेण[6] वा, तालियंटेण वा, 'पत्तेण वा'[7], साहाए वा, साहा-भंगेण वा, पिहुणेण वा, पिहुण-हत्थेण वा, चेलेण वा, चेलकन्नेण वा, हत्थेण वा, मुहेण वा फुमेज्ज वा, वीएज्ज वा ।
से पुव्वामेव आलोएज्जा आउसो ! त्ति वा, भगिणि ! त्ति वा मा एयं तुमं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अच्चुसिणं सूवेण वा, विहुवणेण वा, तालियंटेण वा, पत्तेण वा, साहाए वा, साहा-भंगेण वा, पिहुणेण वा, पिहुण-हत्थेण वा, चेलेण वा, चेलकन्नेण वा, हत्थेण वा, मुहेण वा फुमाहि वा, वीयाहि वा, अभिकंखसि मे दाउं ? एमेव दलयाहि ।
से सेवं वदंतस्स परो सूवेण वा जाव फुमित्ता वा, वीइत्ता वा आहट्टु दलएज्जा—तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अफासुयं[8] °अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

वणस्सइकाय-पइट्ठिय-पदं

९७. से भिक्खू वा[9] °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे °समाणे

---

१. उस्सक्किय (क, घ, च); उस्सिक्किय (छ); ओसिक्किय (अ) ।
२. णिस्सिक्किय (अ, छ, ब) ।
३. सं० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव णो ।
४. सं० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे ।
५. सुप्पेण (अ, च) ;
६. विहुयणेण (अ, क, घ, च) ।
७. × (घ, वृ) ।
८. सं० पा०—अफासुयं जाव णो ।
९. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वणस्सइकाय-पइट्ठियं—तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा वणस्सइकाय-पइट्ठियं –अफासुयं अणेसणिज्जं[1] •ति मण्णमाणे° लाभे सते णो पडिगाहेज्जा ।।

तसकाय-पइट्ठिय-पदं

९८. [2]•से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा तसकाय-पइट्ठियं—तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा तसकाय-पइट्ठियं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणं लाभे संते णो पडिगाहेज्जा° ।।

पाणग-जाय-पदं

९९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[3] •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण 'पाणग-जायं'[4] जाणेज्जा, तं जहा—उस्सेइमं वा, संसेइमं वा, चाउलोदगं वा—अण्णयरं वा तहप्पगारं पाणग-जायं अहुणा-धोयं, अणंबिलं, अव्वोक्कंतं[5], अपरिणयं, अविद्धत्थं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

१००. अह पुण एवं जाणेज्जा—चिराधोयं, अंबिलं, वुक्कंतं[6], परिणयं, विद्धत्थं—फासुयं[7] •एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा ।।

१०१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[8] •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण 'पाणग-जायं'[9] जाणेज्जा, तं जहा—तिलोदगं वा, तुसोदगं वा, जवोदगं वा, आयामं वा, सोवीरं वा, सुद्ध-वियडं वा—अण्णयरं वा तहप्पगारं पाणग-जायं पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भगिणी ! त्ति वा, दाहिसि मे एत्तो अण्णयरं पाणग-जायं ?

से सेवं वदंतं[10] परो वदेज्जा—आउसंतो ! समणा ! तुमं चेवेदं पाणग-जायं पडिग्गहेण[11] वा उस्सिंचियाणं, ओयत्तियाणं गिण्हाहि—तहप्पगारं पाणग-जायं सयं वा[12] गिण्हेज्जा, परो वा से देज्जा—फासुयं[13] •एसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते पडिगाहेज्जा ।।

---

१. सं० पा०—अणेसणिज्जं लाभे ।
२. सं० पा०—एवं तसकाए वि ।
३. सं० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे ।
४. पाणगं (घ, ब) ।
५. अवुक्कंतं (घ); अवोक्कंतं (छ) ।
६. वक्कंतं (छ) ।
७. सं० पा०—फासुयं जाव पडिगाहेज्जा ।
८. सं० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे ।
९. पाणगं (क, च) ।
१०. वयंतस्स (ध) ।
११. पडिग्गहेण वा मत्तएण वा (च); पडिगाहेण (छ)
१२. वा णं (अ) ।
१३. सं० पा०—फासुयं लाभे संते जाव पडिगा-हेज्जा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०२ से भिक्खू वा[1] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण 'पाणग-जायं'[2] जाणेज्जा—अणंतरहियाए पुढवीए[3], •ससिणिद्धाए पुढवीए, ससरक्खाए पुढवीए, चित्तमंताए सिलाए, चित्तमंताए लेलुए, कोलावासंसि वा दारुए जीवपइट्ठिए, सअंडे सपाणे सबीए सहरिए सउसे सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°संताणए ओद्धट्टु[4] निक्खित्ते सिया। असंजए भिक्खु-पडियाए उदउल्लेण वा, ससिणिद्धेण वा, सकसाएण वा, मत्तेण वा, सीओदएण वा संभोएत्ता आहट्टु दलएज्जा—तहप्पगारं पाणग-जायं—अफासुयं[5] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा॥

१०३. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं,[6] •जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए।

—त्ति बेमि°॥

अट्ठमो उद्देसो

१०४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[7] •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण पाणग-जायं जाणेज्जा, तं जहा अंब-पाणगं वा, अंबाडग-पाणगं वा, कविट्ठ-पाणगं वा, मातुलिंग[8]-पाणगं वा, मुद्दिया-पाणगं वा, दाडिम-पाणगं वा, खज्जूर-पाणगं वा, णालिएर-पाणगं वा, करीर-पाणगं वा, कोल-पाणगं वा, आमलग-पाणगं वा, चिंचा-पाणगं वा—अण्णयरं वा तहप्पगारं पाणग-जायं सअट्ठियं सकणुयं सबीयगं अस्संजए[9] भिक्खु-पडियाए छब्बेण[10] वा, दूसेण[11] वा, वालगेण वा, आवीलियाण वा, परिपीलियाण वा, परिस्सावियाण[12] आहट्टु दलएज्जा—तहप्पगारं[13] पाणग-जायं—अफासुयं[14] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा॥

गंध-आघायण-पदं

१०५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[15] •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे

---

१. स० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे।
२. पाणगं (चू, वृ, च)।
३. सं० पा०—पुढवीए जाव संताणए।
४. ओहट्ट (क)।
५. सं० पा०—अफासुयं···लाभे।
६. सं० पा०—सामग्गियं।
७. सं० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे।
८. मातुलुंग (अ, छ); मातुलेंग (क); मातुलंग (च)।
९. असंजए (क, च)।
१०. छप्पेण (अ, च); छट्ठेण (घ)।
११. दूयेण (छ)।
१२. परिसाइयाण (क,छ,ब); परिसावियाण (घ)।
१३. अहप्पगारं (च)।
१४. सं० पा०—अफासुयं···लाभे।
१५. सं० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समाणे से आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा—अन्न-गंधाणि वा, पाण-गंधाणि वा, सुरभि-गंधाणि वा अग्घाय[1]-अग्घाय—से तत्थ आसाय-पडियाए मुच्छिए गिद्धे गढिए अज्झोववन्ने अहोगंधो-अहोगंधो णो गंधमाघाएज्जा ।।

सालुय-आदि-पदं

१०६. से भिक्खू वा[2] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—सालुयं वा, विरालियं वा, सासवणालियं वा—अण्णतरं वा तहप्पगारं आमगं असत्थपरिणयं—अफासुयं[3] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

पिप्पलि-आदि-पदं

१०७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[4] •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—पिप्पलिं[5] वा, पिप्पलि-चुण्णं वा, मिरियं वा, मिरिय-चुण्णं वा, सिंगबेरं वा, सिंगबेर-चुण्णं वा—अण्णतरं वा तहप्पगारं आमगं असत्थपरिणयं—अफासुयं[6] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।।

पलंब-जाय-पदं

१०८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[7] •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण पलंब[8]-जायं जाणेज्जा, तं जहा—अंब-पलंबं वा, अंबाडग-पलंबं वा, ताल-पलंबं वा, झिज्झिरि[9]-पलंबं वा, सुरभि[10]-पलंबं वा, सल्लइ-पलंबं वा—अण्णयरं वा तहप्पगारं पलंब-जायं आमगं असत्थपरिणयं—अफासुयं अणेसणिज्जं[11] •ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

पवाल-जाय-पदं

१०९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[12] •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण पवाल-जायं जाणेज्जा, तं जहा—आसोत्थ[13]-पवालं वा,

---

१. आघाय (अ, क, च)।
२. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे।
३. सं० पा०—अफासुयं जाव लाभे।
४. सं० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे।
५. पिप्पिलिं (छ)।
६. सं० पा०—अफासुयं जाव णो।
७. सं० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे।
८. पलंबग (ब)।
९. झिलिर (अ); झिज्झिर (घ, छ)।
१०. सुरघु (छ)।
११. सं० पा०—अणेसणिज्जं जाव लाभे।
१२. सं० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे।
१३. आसोट्ठ (क, घ); आसत्थ (छ); आसट्ठ (वृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णग्गोह[1]-पवालं वा, पिलुंखु-पवालं वा, णीपूर[2]-पवालं वा, सल्लइ-पवालं वा—अण्णयरं वा तहप्पगारं पवाल-जायं आमगं असत्थपरिणयं—अफासुयं अणेसणिज्जं[3] •ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।।

सरडुय-जाय-पदं

११०. से भिक्खू वा[4] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण सरडुय-जायं जाणेज्जा, त जहा—अंब-सरडुयं[5] वा, अंबाडग-सरडुयं वा, कविट्ठ-सरडुयं वा, दाडिम-सरडुयं वा, विल्ल[6]-सरडुयं वा[7]—अण्णयरं वा तहप्पगारं सरडुय-जायं आमगं असत्थपरिणयं—अफासुयं[8] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।।

मंथु-जाय-पदं

१११. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[9] •गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणु°पविट्ठे समाणे सेज्जं पुण मंथु-जायं जाणेज्जा, तं जहा उंबर-मंथुं वा, णग्गोह-मंथुं वा, पिलुंखु[10]-मंथुं वा, आसोत्थ-मंथुं वा—अण्णयरं वा तहप्पगारं मंथु-जायं आमयं दुरुक्कं साणुबीयं—अफासुयं[11] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।।

आमडाग-आदि-पदं

११२. से भिक्खू वा[12] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—आमडागं वा, पूइपिण्णागं वा, महुं वा, 'मज्जं वा'[13], सप्पिं वा, खोलं वा पुराणगं । एत्थ पाणा अणुप्पसूया, एत्थ पाणा जाया, एत्थ पाणा संवुड्ढा, एत्थ पाणा अवुक्कंता[14], एत्थ पाणा अपरिणया, एत्थ पाणा अविद्धत्था[15]—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

उच्छु-मेरग-आदि-पदं

११३. से भिक्खू वा[16] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे°

---

१. णिग्गोह (छ) ।
२. णीयूर (अ, घ, छ, ब) ।
३. स० पा०—अणेसणिज्जं जाव णो ।
४. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।
५. अबद्धास्थिफलम् (वृ) ।
६. फिल्ल (क); पिल्ल (घ) ।
७. वा पिप्पल्लि (च) ।
८. सं० पा०—अफासुयं जाव णो ।
९. सं० पा०—भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे ।
१०. पिलक्खु (क, च) ।
११. सं० पा०—अफासुयं जाव णो ।
१२. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।
१३. × (चू) ।
१४. वक्कंता (क, छ); ऽवक्कंता (च); वुक्कंता (ब) ।
१५. णो विद्धत्था (घ, छ) ।
१६. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—उच्छु-मेरगं वा, अंक-करेलुयं वा, कसेरुगं वा, सिंघाडगं वा, पूतिआलुगं वा—अण्णयरं वा तहप्पगारं आमगं असत्थपरिणयं[1]—•अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

उप्पल-आदि-पदं

११४. से भिक्खू वा[2] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—उप्पलं वा, उप्पल-नालं वा, भिसं वा, भिस-मुणालं वा, पोक्खलं वा, पोक्खल-विभंगं[3] वा—अण्णतरं वा तहप्पगारं[4] •आमगं असत्थपरिणयं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

अग्गबीय-आदि-पदं

११५. से भिक्खू वा[5] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—अग्ग-बीयाणि वा, मूल-बीयाणि वा, खंध-बीयाणि वा, पोर-बीयाणि वा, अग्ग-जायाणि वा, मूल-जायाणि वा, खंध-जायाणि वा, पोर-जायाणि वा,

णण्णत्थ[6] तक्कलि-मत्थएण वा, तक्कलि-सीसेण वा, णालिएरि[7]-मत्थएण वा, खज्जूरि[8]-मत्थएण वा, ताल-मत्थएण वा—अण्णयरं वा तहप्पगारं आमं असत्थ-परिणयं[9]—•अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

उच्छु-पदं

११६. से भिक्खू वा[10] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—उच्छुं वा काणगं[11] अंगारियं संमिस्सं विगदूमियं[12], वेत्तग्गं[13] वा, कंदलीऊसुयं[14] वा—अण्णयरं वा तहप्पगारं आमं असत्थपरिणयं[15]—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

---

१. सं० पा०—असत्थपरिणयं जाव णो ।
२. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।
३. °विभागं (क, च) ।
४. सं० पा०—तहप्पगारं जाव णो ।
५. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।
६. अण्णत्थ (चू) ।
७. णालिएर (अ, च, ब) ।
८. खज्जूर (ब) ।
९. सं० पा०—असत्थपरिणयं जाव णो ।
१०. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।
११. काण (घ, ब) ।
१२. वइदूमिय (अ); विगदूसिय (घ, ब); विधि-दूमियं (छ) ।
१३. वेत्तगं (अ); वित्तज्जगं (घ); वेत्तगागं (छ) ।
१४. °उस्सुगं (चू); °ऊसिगं (छ); चूर्णौ अन्येपि शब्दा दृश्यन्ते—कलतो सिम्बाकलो चणगो, ओली सिंगा तस्स चेव, एवं मुग्ग मासाणावि ।
१५. सं० पा०—असत्थपरिणयं जाव णो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लसुण-पदं

११७. से भिक्खू वा[1] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—लसुणं वा, लसुण-पत्तं वा, लसुण-नालं वा, लसुण-कंदं वा, लसुण-चोयगं[2] वा—अण्णयरं वा तहप्पगारं आमं असत्थपरिणयं[3] —•अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।।

अत्थिय-आदि-पदं

११८. से भिक्खू वा[4] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—अत्थियं[5] वा कुंभिपक्कं, तिंदुगं वा, वेलुयं[6] वा, कासवणालियं वा—अण्णतरं वा तहप्पगारं आमं असत्थपरिणयं[7]—•अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।।

कण-आदि-पदं

११९. से भिक्खू वा[8] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—कणं वा, कण-कुंडगं वा, कण-पूयलियं[9] वा, चाउलं वा, चाउल-पिट्ठं वा, तिलं वा, तिल-पिट्ठं वा, तिल-पप्पडगं वा—अण्णतरं वा तहप्पगारं आमं असत्थपरिणयं[10]—•अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।।

१२०. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं[11], •जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

—त्ति बेमि° ।।

नवमो उद्देसो

पच्छाकम्म-पदं

१२१. इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहिणं वा, उदीणं वा संतेगइया सड्ढा भवंति—गाहावई वा,[12] •गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा,° कम्मकरीओ वा तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ—जे इमे भवंति समणा भगवंतो

---

१. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।
२. चोयं (क, घ, च, छ, ब) ।
३. सं० पा०—असत्थपरिणयं जाव णो ।
४. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।
५. अच्छियं (च) ।
६. पेल्लुगं (क); पलुगं (च) ।
७. सं० पा०—असत्थपरिणयं जाव णो ।
८. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।
९. पूयलिं (क, च छ, ब) ।
१०. सं० पा०—असत्थपरिणयं जाव णो ।
११. सं० पा०—सामग्गियं ।
१२. सं० पा०—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ ।

Jain Education International　For Private & Personal Use Only　www.jainelibrary.org

सीलमंता वयमंता गुणमंता संजया संवुडा बंभचारी उवरया मेहुणाओ धम्माओ, णो खलु एएसिं कप्पइ आहाकम्मिए असणे[1] वा पाणे वा खाइमे वा साइमे वा भोत्तए वा, पायत्तए[2] वा ।

सेज्जं पुण इमं अम्हं अप्पणो अट्ठाए[3] णिट्ठियं, तं जहा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा सव्वमेय समणाणं णिसिरामो, अवियाइं वयं पच्छा वि अप्पणो अट्ठाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा चेइस्सामो । एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अफासुयं अणेसणिज्जं[4] °ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

पुरापच्छासंथुय-कुल-पदं

१२२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा, 'समाणे वा, वसमाणे वा'[5], गामाणुगामं वा दूइज्जमाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—गामं वा[6], °णगरं वा, खेडं वा, कव्वडं वा, मडंबं वा, पट्टणं वा, दोणमुहं वा, आगरं वा, णिगमं वा, आसमं वा, सण्णिवेसं वा,° रायहाणिं वा । इमंसि खलु गामंसि वा,[7] °णगरंसि वा, खेडंसि वा कव्वडंसि वा, मडंबंसि वा, पट्टणंसि वा, दोणमुहंसि वा, आगरंसि वा, णिगमंसि वा, आसमंसि वा, सण्णिवेसंसि वा,° रायहाणिंसि वा—संतेगइयस्स भिक्खुस्स पुरेसंथुया[8] वा, पच्छासंथुया वा परिवसंति, तं जहा—गाहावई वा,[9] °गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा,° कम्मकरीओ वा । तहप्पगाराइं कुलाइं णो पुव्वामेव भत्ताए वा, पाणाए वा णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ।।

१२३. केवली बूया आयाणमेयं—पुरा पेहाए 'तस्स परो अट्ठाए'[10] असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उवकरेज्ज वा, उवक्खडेज्ज वा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा, एस हेऊ एस कारणं, एस उवएसो, जं णो तहप्पगाराइं कुलाइं पुव्वामेव भत्ताए वा, पाणाए वा पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा । से त्तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता अणावाय-मसंलोए चिट्ठेज्जा । से तत्थ कालेणं अणुपविसेज्जा, अणुपविसेत्ता तत्थियरेयरेहिं

---

१. असणं (क) ।
२. पात्तए (क); पायए (च); पाएत्तए (घ) ।
३. सयट्टाए (अ, क, च) ।
४. सं० पा०—अणेसणिज्जं जाव लाभे ।
५. समाणे वसमाणे वा (क, च, ब); समाणे (घ, छ) ।
६. सं० पा०—गामं वा जाव रायहाणिं ।
७. सं० पा०—गामंसि वा जाव रायहाणिंसि ।
८. पुव्व° (ब) ।
९. सं० पा०—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ ।
१०. अस्य स्थाने १।५६ सूत्रे 'तस्सट्ठाए परो' इत्येवं रूपः पाठः ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुलेहिं सामुदाणियं,[1] एसियं, वेसियं, पिंडवायं एसित्ता आहारं आहारेज्जा। सिया से परो कालेण अणुपविट्ठस्स आहाकम्मियं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उवकरेज्ज वा, उवक्खडेज्ज वा। तं चेगइओ तुसिणीओ उवेहेज्जा, आहडमेव पच्चाइक्खिस्सामि। माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा। से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा, भगिणि! त्ति वा, णो खलु मे कप्पइ आहाकम्मियं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा भोत्तए वा, पायए वा। मा उवकरेहि, मा उवक्खडेहि। से सेवं वयंतस्स परो आहाकम्मियं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उवक्खडेत्ता आहट्टु दलएज्जा। तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा अफासुयं[2] °अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा॥

गिलाण-पदं

१२४. से भिक्खू वा[3] °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सेज्जं पुण जाणेज्जा—मंसं वा मच्छं वा भज्जिज्जमाणं[4] पेहाए,[5] तेल्लपूयं वा आएसाए उवक्खडिज्जमाणं पेहाए, णो खद्धं-खद्धं उवसंकमित्तु ओभासेज्जा[6], णण्णत्थ गिलाणाए[7]॥

माइट्ठाण-पदं

१२५. से भिक्खू वा[8] °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे अण्णतरं भोयण-जायं पडिगाहेत्ता सुब्भि-सुब्भि भोच्चा दुब्भि-दुब्भि परिट्ठवेइ। माइट्ठाणं[9] संफासे, णो एवं करेज्जा।

सुब्भि वा दुब्भि वा, सव्वं भुंजे न छड्डए॥

१२६. से भिक्खू वा[10] °भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे अण्णतरं वा पाणग-जायं पडिगाहेत्ता पुप्फं-पुप्फं[11] आविइत्ता[12] कसायं-कसायं परिट्ठवेइ। माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा। पुप्फं पुप्फेति वा, कसायं कसाए त्ति वा सव्वमेयं भुंजेज्जा, णो किंचि वि परिट्ठवेज्जा॥

१२७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुपरियावण्णं भोयण-जायं पडिगाहेत्ता[13]

---

१. समुदा° (क, घ, च, छ, ब)।
२. सं० पा०—अफासुयं लाभे।
३. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे।
४. भिज्जमाणं (अ); भज्जमानमिति (वृ)।
५. पेहाए सक्कुलिं वा (चू)।
६. याचेत (वृ)।
७. गिलाणीए (अ, क, च); गिलाणणीसाए(छ)।
८. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे।
९. साति° (ब)।
१०. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे।
११. वर्णगन्धोपेतं पुष्पं तद् विपरीतं कषायम्(वृ)।
१२. आवेइत्ता (च); आवीइत्ता (छ)।
१३. पडिगाहेत्ता बहवे (अ, छ, ब)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

साहम्मिया तत्थ वसंति संभोइया समणुण्णा अपरिहारिया अदूरगया। तेसिं अणालोइया[1] अणामंतिया[2] परिट्ठवेइ। माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा। से त्तमायाए तत्थ गच्छेज्जा, गच्छेत्ता से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसंतो! समणा! इमे मे असणे[3] वा पाणे वा खाइमे वा साइमे वा बहुपरियावण्णे, तं भुंजह णं[4]।

से सेवं वयंतं परो वएज्जा—आउसंतो! समणा! आहारमेयं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा जावइयं-जावइयं परिसडइ[5], तावइयं-तावइयं भोक्खामो वा, पाहामो वा। सव्वमेयं परिसडइ[6], सव्वमेयं भोक्खामो वा, पाहामो वा॥

बहिया नीहड-पदं

१२८. से भिक्खू वा[7] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे॰ सेज्जं पुण जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा परं समुद्दिस्स बहिया णीहडं, जं[8] परेहिं असमणुण्णायं अणिसिट्ठं—अफासुयं[9] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते॰ णो पडिगाहेज्जा।

जं[10] परेहिं समणुण्णायं सम्मं[11] णिसिट्ठं—फासुयं[12] •एसणिज्जं ति मण्णमाणे॰ लाभे संते पडिगाहेज्जा॥

१२९. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं[13], •जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए।

—ति बेमि॰॥

दसमो उद्देसो

माइट्ठाण-पदं

१३०. से एगइओ साहारणं वा पिंडवायं पडिगाहेत्ता, ते साहम्मिए अणापुच्छित्ता जस्स-जस्स इच्छइ तस्स-तस्स खद्धं-खद्धं दलाति[14]। माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा। से त्तमायाए तत्थ गच्छेज्जा, गच्छेत्ता[15] वएज्जा[16]—आउसंतो!

---

१. ॰इय (च, छ)।
२. ॰मंते (घ)।
३. असणं (क)।
४. व णं (अ, ब)।
५. ॰सरइ (घ, च, छ)।
६. ॰सरइ (घ, च)।
७. सं॰ पा॰—भिक्खू वा सेज्जं।
८. तं (अ, क, घ, च)।
९. सं॰ पा॰—अफासुयं जाव णो।
१०. तं (अ, क, घ, च)।
११. सम (अ, क, घ, ब)।
१२. सं॰ पा॰—फासुयं लाभे संते जाव पडिगाहेज्जा।
१३. सं॰ पा॰—सामग्गियं।
१४. दलयति (अ)।
१५. गच्छेत्ता पुव्वामेव (अ, छ, ब)।
१६. आलोएज्जा (ब)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

समणा ! संति मम पुरे-संथुया वा, पच्छा-संथुया वा, तं जहा—आयरिए वा, उवज्झाए वा, पवत्ती वा, थेरे वा, गणी वा, गणहरे वा, गणावच्छेइए वा। अवियाइं एएसिं खद्धं-खद्धं दाहामि।

‘से णेवं’[1] वयंतं परो वएज्जा—कामं खलु आउसो ! अहापज्जत्तं णिसिराहि[2]। जावइयं-जावइयं परो वयइ, तावइयं-तावइयं णिसिरेज्जा। सव्वमेयं परो वयइ, सव्वमेयं णिसिरेज्जा॥

१३१. से एगइओ मणुण्णं भोयण-जायं पडिगाहेत्ता पंतेण भोयणेण[3] पलिच्छाएति **मामेयं दाइयं संतं, दट्ठूणं सयमायए।** आयरिए वा[4], •उवज्झाए वा, पवत्ती वा, थेरे वा, गणी वा, गणहरे वा° गणावच्छेइए वा। णो खलु मे कस्सइ किंचि वि दायव्वं सिया। माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा। से त्तमायाए तत्थ गच्छेज्जा, गच्छेत्ता पुव्वामेव उत्ताणए हत्थे पडिग्गहं कट्टु—‘इमं खलु’[5] इमं खलु त्ति आलोएज्जा, णो किंचि वि णिगूहेज्जा॥

१३२. से एगइओ अण्णतरं भोयण-जायं पडिगाहेत्ता **भद्दयं-भद्दयं भोच्चा, विवन्नं विरसमाहरइ।** माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा॥

बहुउज्झिय-धम्मिय-पदं

१३३. से भिक्खू वा[6] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे° सेज्जं पुण जाणेज्जा—अंतरुच्छुयं वा, उच्छु-गंडियं वा, उच्छु-चोयगं वा, उच्छु-मेरुगं[7] वा, उच्छु-सालगं वा, उच्छु-डगलं[8] वा, सिंबलिं[9] वा, सिंबलि-थालगं[10] वा। अस्सिं खलु पडिग्गहियंसि, **अप्पे सिया[11] भोयणजाए, बहुउज्झिय-धम्मिए।** तहप्पगारं अंतरुच्छुयं वा जाव सिंबलि-थालगं वा—अफासुयं[12] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा॥

---

१. सेवं (घ)।
२. णिसराहि (अ, छ)।
३. भोयणे जाईण (घ)।
४. सं० पा०—आयरिए वा जाव गणावच्छेइए।
५. × (क, ध, छ, ब)।
६. सं० पा०—भिक्खू वा सेज्जं।
७. °मेरगं (अ, ब)।
८. आचाराङ्गस्य १।१० वृत्तौ—‘डालगं’ ति शाखैकदेशः ; ७।२ वृत्तौ—‘डालगं’ ति आम्रश्लक्ष्णखण्डानि, इति लभ्यते, किन्तु निशीथस्य षोडशोद्देशे डगलं’ पाठो लभ्यते। तद् भाष्यचूर्णौ डगलस्यार्थो विहितः। भाष्ये यथा—‘डगलं’ चक्कनिछेदो (५४११); चूर्णौ यथा—चक्कलिछेदे छिण्णं डगलं भण्णति (भा० ४ पृष्ठ ६६)। आचारांगे लिपि-दोषतः परिवर्तनमिदं जातमिति संभाव्यते।
९. संबलि (अ, क, च, छ); संपलि (ब)।
१०. थालियं (अ)।
११. × (क, घ, च, छ)।
१२. सं० पा०—अफासुयं जाव णो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१३४. से भिक्खू वा[1] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे° सेज्जं पुण जाणेज्जा—**बहु-अट्ठियं वा मंसं, मच्छं वा बहु कंटगं**। अस्सिं खलु पडिग्गहियंसि, **अप्पेसिया भोयण-जाए, बहुउज्झियधम्मिए**। तहप्पगारं **बहु-अट्ठियं वा मंसं, मच्छं वा बहु कंटगं**—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

१३५. से भिक्खू वा[2] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सिया णं परो बहु-अट्ठिएण मंसेण[3] उवणिमंतेज्जा—आउसंतो ! समणा ! अभिकंखसि बहु-अट्ठियं मंसं पडिगाहित्तए ?

एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा, णो खलु मे कप्पइ से बहु-अट्ठियं मंसं पडिगाहित्तए, अभिकंखसि मे दाउं जावइयं, तावइयं पोग्गलं दलयाहि, मा अट्ठियाइं ।

से सेवं वयंतस्स परो अभिहट्टु अंतो-पडिग्गहगंसि[4] बहु-अट्ठियं मंसं परिभाएत्ता[5] णिहट्टु दलएज्जा । तहप्पगारं पडिग्गहगं[6] परहत्थंसि वा, परपायंसि वा—अफासुयं अणेसणिज्जं[7] •ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।

से आहच्च पडिगाहिए सिया, तं णोहि त्ति वएज्जा, णो अणहित्ति[8] वएज्जा । से त्तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता अहे आरामंसि वा, अहे उवस्सयंसि वा, अप्पंडए[9] •अप्प-पाणे अप्प-बीए अप्पहरिए अप्पोसे अप्पुदए अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° संताणए मंसगं मच्छगं[10] भोच्चा अट्ठियाइं कंटए गहाय, से त्तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता अहे झामथंडिलंसि वा[11], •अट्ठि-रासिंसि वा, किट्ट-रासिंसि वा, तुस-रासिंसि वा, गोमय-रासिंसि वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि पडिलेहिय-पडिलेहिय°, पमज्जिय-पमज्जिय तओ संजयामेव परिट्ठवेज्जा ।।

अजाणया लोण-दाण-पदं

१३६. से भिक्खू वा[12] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे सिया से परो अभिहट्टु अंतो-पडिग्गहए बिलं वा लोणं, उब्भियं वा लोणं

---

१. सं० पा०—भिक्खू वा सेज्जं ।
२. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।
३. मंसेण मच्छेण (अ, ब, छ) ।
४. पडिग्गहंसि (अ) ।
५. परिभोउत्ता (अ); परियाभोएत्ता (क, च) ।
६. °ग्गहणं (अ) ।
७. सं० पा०—अणेसणिज्जं लाभे संते जाव णो ।
८. अणिहित्ति (छ) ।
९. सं० पा०—अप्पंडए जाव संताणए ।
१०. × (घ) ।
११. सं० पा०—झामथंडिलंसि वा जाव पमज्जिय ।
१२. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिभाएत्ता णीहट्टु दलएज्जा, तहप्पगारं पडिग्गहगं परहत्थंसि वा, परपायंसि वा—अफासुयं अणेसणिज्जं[1] °ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा।

से आहच्च पडिग्गाहिए सिया, तं च णाइदूरगए जाणेज्जा, से त्तमायाए तत्थ गच्छेज्जा, गच्छेत्ता पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा 'इमं ते किं जाणया दिन्नं ? उदाहु अजाणया'[2] ?

सो य भणेज्जा—णो खलु मे जाणया दिन्नं, अजाणया। कामं[3] खलु आउसो ! इदाणिं णिसिरामि। तं भुंजह च णं परिभाएह च णं।

तं परेहिं समणुण्णायं समणुसिट्ठं, तओ संजयामेव भुंजेज्ज वा, पीएज्ज वा। जं च णो संचाएति भोत्तए वा, पायए वा। साहम्मिया तत्थ वसंति संभोइया समणुण्णा अपरिहारिया अदूरगया तेसिं अणुपदातव्वं। सिया णो जत्थ साहम्मिया सिया, जहेव बहुपरियावण्णे कीरति, तहेव कायव्वं सिया॥

१३७. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं[4], °जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए।

—त्ति बेमि°॥

एगारसमो उद्देसो

माइट्ठाण-पदं

१३८. भिक्खागा णामेगे एवमाहंसु समाणे वा, वसमाणे वा, गामाणुगामं 'वा दूइज्जमाणे'[5] मणुण्णं भोयण-जायं लभित्ता "से[6] भिक्खू गिलाइ, से हंदह[7] णं तस्साहरह। से य भिक्खू णो भुंजेज्जा। तुमं चेव णं भुंजेज्जासि।"

से एगइओ भोक्खामित्ति कट्टु पलिउंचिय-पलिउंचिय आलोएज्जा, तं जहा—इमे पिंडे, इमे[8] लोए[9], इमे तित्तए, इमे कडुयए, इमे कसाए, इमे अंबिले इमे महुरे, णो खलु एत्तो किंचि गिलाणस्स सयति त्ति। माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा। तहाठियं[10] आलोएज्जा, जहाठियं[11] गिलाणस्स सदति—तं तित्तयं तित्तएत्ति वा, कडुयं कडुएत्ति वा, कसायं कसाएत्ति वा, अंबिलं अंबिलेत्ति वा, महुरं महुरेत्ति वा॥

---

१. सं० पा०—अणेसणिज्जं जाव णो।
२. अजाणया दिन्नं (घ)।
३. इमं (अ)।
४. सं० पा०—सामग्गियं।
५. दूइज्जमाणे वा (अ); दूइज्जमाणे (च,छ,ब)।
६. से य (अ)।
७. गृण्हीत यूयम् (वृ)।
८. × (क, च, छ)।
९. लुक्खए (छ)।
१०. तहेव तं (अ, च, छ)।
११. जहेव तं (अ, च, छ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मणुण्ण-भोयण-जाय-पदं

१३९. भिक्खागा णामेगे एवमाहंसु समाणे वा, वसमाणे वा, गामाणुगामं [वा ?] दूइज्जमाणे मणुण्णं भोयण-जायं लभित्ता "से भिक्खू गिलाइ, से हंदह णं तस्साहरह । से य भिक्खू णो भुंजेज्जा । आहरेज्जासि[1] णं ।"
णो खलु मे[2] अंतराए आहरिस्सामि । इच्चेयाइं[3] आयतणाइं उवाइकम्म ॥

सत्त पिंडेसणा सत्त पाणेसणा-पदं

१४०. अह भिक्खू जाणेज्जा सत्त पिंडेसणाओ, सत्त पाणेसणाओ ॥

१४१. तत्थ खलु इमा पढमा पिंडेसणा—असंसट्ठे हत्थे असंसट्ठे मत्ते—तहप्पगारेण असंसट्ठेण हत्थेण वा, मत्तेण[4] वा असणं वा [पाणं वा][5] खाइमं वा साइमं वा सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फासुयं[6] •एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—पढमा पिंडेसणा ॥

१४२. अहावरा दोच्चा पिंडेसणा—संसट्ठे हत्थे संसट्ठे मत्ते[7]—•तहप्पगारेण संसट्ठेण हत्थेण वा, मत्तेण वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा—दोच्चा पिंडेसणा° ॥

१४३. अहावरा तच्चा पिंडेसणा—इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहिणं वा, उदीणं वा संतेगइया सड्ढा भवंति—गाहावई वा[8], •गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा°, कम्मकरीओ वा । तेसिं च णं अण्णतरेसु विरूवरूवेसु भायण-जाएसु उवणिक्खित्तपुव्वे सिया, तं जहा—थालंसि वा, पिढरंसि[9] वा, सरगंसि वा, परगंसि वा, वरगंसि वा ।
अह पुणेवं जाणेज्जा—असंसट्ठे हत्थे संसट्ठे मत्ते, संसट्ठे वा हत्थे असंसट्ठे[10] मत्ते । से य पडिग्गहधारी सिया पाणिपडिग्गहए[11] वा, से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भगिणि ! त्ति वा एएणं तुमं असंसट्ठेण हत्थेण संसट्ठेण मत्तेण,

---

१. आहारेज्जासि (अ, घ, छ, ब); आहारेज्जा से (क, च) ।
२. इमे (अ, क, च, छ, ब) ।
३. इच्चेइयाइं (क, छ, ब) ।
४. मत्तएण (अ, छ, ब) ।
५. पिण्डैषणायां 'पाणं वा' इति पाठो नापेक्षितोऽस्ति । असौ प्रवाहपाती एव बोध्यः । एवमेव पानैषणायामपि 'असणं वा खाइमं वा साइमं वा' इति पाठा नापेक्षिताः सन्ति ।
६. सं० पा०—फासुयं पडिगाहेज्जा ।
७. सं० पा०—मत्ते तहेव दोच्चा पडिमा ।
८. सं० पा०—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ ।
९. पिढरगंसि (अ, च); पिठरगंसि (घ); पिठरंसि (ब) ।
१०. असंसट्ठे वा (क, च) ।
११. °पडिग्गहिए (छ, ब) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संसट्ठेण वा हत्थेण असंसट्ठेण मत्तेण, अंसि पडिग्गहगंसि वा पाणिंसि वा णिहट्टु उवित्तु दलयाहि। तहप्पगारं भोयण-जायं सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं[1] •ति मण्णमाणे° लाभे संते पडिगाहेज्जा—तच्चा पिंडेसणा॥

१४४. अहावरा चउत्था पिंडेसणा—से भिक्खू वा[2], •भिक्खुणी वा, गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे° सेज्जं पुण जाणेज्जा—पिहुयं वा[3] •बहुरजं वा, भुज्जियं वा, मंथुं वा, चाउलं वा°, चाउल-पलंबं वा। अंसि खलु पडिग्गहियंसि अप्पे पच्छाकम्मे अप्पे पज्जवजाए, तहप्पगारं पिहुयं वा जाव चाउल-पलंबं वा सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा[4]—•फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—चउत्था पिंडेसणा॥

१४५. अहावरा पंचमा पिंडेसणा—से भिक्खू वा[5] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे उवहितमेव[6] भोयण-जायं जाणेज्जा, तं जहा—सरावंसि वा, डिंडिमंसि वा, कोसगंसि वा।

अह पुण एवं जाणेज्जा—बहुपरियावन्ने पाणीसु दगलेवे। तहप्पगारं असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा सयं वा णं जाएज्जा[7] •परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—पंचमा पिंडेसणा॥

१४६. अहावरा छट्ठा पिंडेसणा—से भिक्खू वा[8] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे° पग्गहियमेव[9] भोयण-जायं जाणेज्जा—जं च सयट्ठाए पग्गहियं, जं च परट्ठाए पग्गहियं, तं पाय-परियावन्नं, तं पाणि-परियावण्णं—फासुयं[10] •एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—छट्ठा पिंडेसणा॥

१४७. अहावरा सत्तमा पिंडेसणा—से भिक्खू वा[11] •भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे° समाणे बहुउज्झिय-धम्मियं भोयण-जायं जाणेज्जा—जं चण्णे बहवे दुपय-चउप्पय-समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा णावकंखंति, तहप्पगारं उज्झिय-धम्मियं भोयण-जायं सयं वा णं जाएज्जा परो वा से देज्जा[12]—•फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—सत्तमा पिंडेसणा। इच्चेयाओ सत्त पिंडेसणाओ॥

---

१. सं० पा०—एसणिज्जं जाव लाभे।
२. सं० पा०—भिक्खू वा सेज्जं।
३. सं० पा०—पिहुयं वा जाव चाउलपलंबं।
४. सं० पा०—देज्जा जाव पडिगाहेज्जा।
५. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे।
६. उग्गहिय° (घ)।
७. सं० पा०—जाएज्जा जाव पडिगाहेज्जा।
८. सं० पा०—भिक्खू वा जाव पग्गहिय°।
९. उग्गहिय° (अ,क,च); उग्गहितं पग्गहितं (चू)।
१०. सं० पा०—फासुयं जाव पडिगाहेज्जा।
११. सं० पा०—भिक्खू वा जाव समाणे।
१२. सं० पा०—देज्जा जाव फासुयं पडिगाहेज्जा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१४८. अहावराओ सत्त पाणेसणाओ । तत्थ खलु इमा पढमा पाणेसणा—असंसट्ठे हत्थे असंसट्ठे मत्ते[1] ।।

१४९. •अहावरा दोच्चा पाणेसणा—संसट्ठे हत्थे संसट्ठे मत्ते ।।

१५०. अहावरा तच्चा पाणेसणा—इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहिणं वा, उदीणं वा संतेगइया सड्ढा भवंति ।।

१५१. अहावरा चउत्था पाणेसणा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सेज्जं पुण पाणग-जायं जाणेज्जा, तं जहा—तिलोदगं वा, तुसोदगं वा, जवोदगं वा, आयामं वा, सोवीरं वा, सुद्धवियडं वा । अस्सिं खलु पडिग्गहियंसि अप्पे पच्छाकम्मे, अप्पे पज्जवजाए । तहप्पगारं तिलोदगं वा, तुसोदगं वा, जवोदगं वा, आयामं वा, सोवीरं वा, सुद्धवियडं वा सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा ।।

१५२. अहावरा पंचमा पाणेसणा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे उवहितमेव पाणग-जायं जाणेज्जा ।।

१५३. अहावरा छट्ठा पाणेसणा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे पग्गहियमेव पाणग-जायं जाणेज्जा ।।

१५४. अहावरा सत्तमा पाणेसणा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे बहुउज्झिय-धम्मिय पाणग-जायं जाणेज्जा° ।।

१५५. इच्चेयासिं सत्तण्हं पिंडेसणाणं, सत्तण्हं पाणेसणाणं अण्णतरं पडिमं पडिवज्जमाणे णो एवं वएज्जा—मिच्छा पडिवन्ना खलु एते भयंतारो, अहमेगे सम्मं पडिवन्ने ।

जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ताणं विहरंति, जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जित्ताणं विहरामि, सव्वे वे ते उ जिणाणाए उवट्ठिया, अण्णोण्णसमाहीए एवं च णं विहरंति ।।

१५६. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

—त्ति बेमि ।।

---

१. अतः १५४ सूत्रपर्यन्तं पूर्णपाठार्थं द्रष्टव्यं १।१४१-१४७ सूत्राणि । सं० पा०—तं चेव भाणियव्वं णवरं चउत्थाए णाणत्तं से भिक्खू वा जाव समाणे सेज्जं पुण पाणग-जायं जाणेज्जा तं जहा तिलोदगं वा तुसोदगं वा जवोदगं वा आयामं वा सोवीरं वा सुद्धवियडं वा अस्सिं खलु पडिग्गहियंसि अप्पे पच्छा-कम्मे तहेव पडिगाहेज्जा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बीयं अज्झयणं

सेज्जा

पढमो उद्देसो

उवस्सयएसणा-पदं

१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा उवस्सयं एसित्तए[1], अणुपविसित्ता गामं वा[2], °णगरं वा, खेडं वा, कव्वडं वा, मडंबं वा, पट्टणं वा, दोणमुहं वा, आगरं वा, णिगमं वा, आसमं वा, सण्णिवेसं वा°, रायहाणिं वा, सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—सअंडं[3] °सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° संताणयं। तहप्पगारे उवस्सए णो 'ठाणं वा, सेज्जं वा, निसीहियं वा चेतेज्जा'[4] ॥

२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—अप्पंडं अप्पपाणं[5] °अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° संताणगं। तहप्पगारे उवस्सए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, निसीहियं वा चेतेज्जा ॥

अस्सिपडियाए-उवस्सय-पदं

३. सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—अस्सिपडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति। तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे

---

१. एसित्तए से (अ, ब)।

२. सं० पा०—गामं वा जाव रायहाणिं।

३. सं० पा०—सअडं जाव संताणयं।

४. स्थानं—कायोत्सर्गः, शय्या—संस्तारकः, निषीधिका—स्वाध्यायभूमिः, 'नो चेइज्ज' त्ति नो चेतयेत्—नो कुर्यात् इत्यर्थः (वृ)।

५. सं० पा०—अप्पपाणं जाव संताणगं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा[1], °अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा° अणासेविते वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

४. [2]°सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति। तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा, अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

५. सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति। तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा, अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा णो ठाणं वा सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

६. सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति। तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा, अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेज्जा° ॥

समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-उवस्सय-पदं

७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स[3] पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं[4] °समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ। तहप्पगारे उवस्सए पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा, अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविए वा अणासेविए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ। तहप्पगारे

---

१. सं० पा०—अपुरिसंतरकडे वा जाव अणासेविते; १।१२ सूत्रे 'अपुरिसंतरकडं वा' इति पदानन्तरं 'बहिया णीहडं वा अणीहडं वा' इति पाठो विद्यते, तथापि उपाश्रयप्रकरणे नैष प्राप्तोस्ति, तेन नासौ ग्राह्यः।

२. सं० पा०—एवं बहवे साहम्मिया एगं साहम्मिणिं बहवे साहम्मिणीओ।

३. समुद्दिस्स तं चेव भाणियव्वं (घ, च)।

४. सं० पा०—सत्ताइं जाव चेएइ तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे जाव अणासेविए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उवस्सए अपुरिसंतरकडे, अणत्तट्ठिए, अपरिभुत्ते°, अणासेविए णो ठाणं वा सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेज्जा ।।

९. अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे[1], °अत्तट्ठिए, परिभुत्ते°, आसेविए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।।

परिकम्मिय-उवस्सय-पदं

१०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—अस्संजए भिक्खु-पडियाए कडिए वा, उक्कंबिए[2] वा, छन्ने वा, लित्ते वा, घट्ठे वा, मट्ठे वा, संमट्ठे वा, संपधूमिए वा। तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे[3], °अणत्तट्ठिए, अपरिभुत्ते°, अणासेविए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।।

११. अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे[4], °अत्तट्ठिए, परिभुत्ते°, आसेविए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।।

१२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—अस्संजए भिक्खु-पडियाए खुड्डियाओ दुवारियाओ महल्लियाओ कुज्जा, [5]°महल्लियाओ दुवारियाओ खुड्डियाओ कुज्जा, समाओ सिज्जाओ विसमाओ कुज्जा, विसमाओ सिज्जाओ समाओ कुज्जा, पवायाओ सिज्जाओ णिवायाओ कुज्जा, णिवायाओ सिज्जाओ पवायाओ कुज्जा, अंतो वा बहिं वा उवस्सयस्स हरियाणि छिंदिय-छिंदिय, दालिय-दालिय° संथारगं संथारेज्जा[6], बहिया वा णिण्णक्खु[7], तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे[8], °अणत्तट्ठिए, अपरिभुत्ते°, अणासेविते णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।।

१३. अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे[9], °अत्तट्ठिए, परिभुत्ते°, आसेविए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।।

बहिया निस्सारिय-उवस्सय-पदं

१४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण [उवस्सयं ?] जाणेज्जा—अस्संजए भिक्खु-पडियाए उदगप्पसूयाणि कंदाणि वा, मूलाणि वा, [तयाणि वा ?][10], पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा ठाणाओ ठाणं साहरति, बहिया वा णिण्णक्खु, तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे[11],

---

१. सं० पा०—पुरिसंतरकडे जाव आसेविए।
२. उक्कंपिए (क, घ, च, ब)।
३. सं० पा०—अपुरिसंतरकडे जाव अणासेविए।
४. सं० पा०—पुरिसंतरकडे जाव आसेविए।
५. सं० पा०—जहा पिंडेसणाए जाव संथारगं।
६. संथारेज्जा (अ, क, घ, च, ब)।
७. णिणक्खु (क, छ)।
८. सं० पा०—अपुरिसंतरकडे जाव अणासेविते।
९. सं० पा०—पुरिसंतरकडे जाव आसेविए।
१०. यद्यप्ययमत्र प्रतिषु नोपलभ्यते, तथापि ३।३।५५ सूत्रमनुसृत्यासावत्र युज्यते।
११. सं० पा०—अपुरिसंतरकडे जाव णो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

•अणत्तट्ठिए, अपरिभुत्ते, अणासेविते• णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।।

१५. अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे[1], •अत्तट्ठिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा• चेतेज्जा ।।

१६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—अस्संजए भिक्खु-पडियाए पीढं वा, फलगं वा, णिस्सेणिं वा, उदूहलं वा ठाणाओ ठाणं साहरइ, बहिया वा णिण्णक्खु, तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे[2], •अणत्तट्ठिए, अपरि-भुत्ते, अणासेविए• णो ठाणं वा सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।।

१७. अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे[3] •अत्तट्ठिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा• चेतेज्जा ।।

अंतलिक्ख-जाय-उवस्सय-पदं

१८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—तं जहा—खंधंसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, पासायंसि वा, हम्मियतलंसि वा, अण्णतरंसि वा तहप्पगारंसि अंतलिक्खजायंसि, णण्णत्थ आगाढाणागाढेहिं[4] कारणेहिं ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

से य आहच्च चेतिते सिया णो तत्थ सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा हत्थाणि वा, पादाणि वा, अच्छीणि वा, दंताणि वा, मुहं वा उच्छोलेज्ज वा, पहोएज्ज वा । णो तत्थ ऊसढं[5] पगरेज्जा, तं जहा—उच्चारं वा, पासवणं वा, खेलं वा, सिंघाणं वा, वंतं वा, पित्तं वा, पूतिं वा, सोणियं वा, अण्णयरं वा सरीरावयवं ।।

१९. केवली बूया आयाणमेयं—से तत्थ ऊसढं पगरेमाणे पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा । से तत्थ पयलमाणे[6] वा पवडमाणे[7] वा हत्थं वा[8], •पायं वा, बाहुं वा, ऊरुं वा,• उदरं वा, सीसं वा, अण्णतरं वा कायंसि इंदिय-जातं लूसेज्ज वा, पाणाणि वा भूयाणि वा जीवाणि वा सत्ताणि वा अभिहणेज्ज वा[9], •वत्तेज्ज वा, लेसेज्ज वा, संघंसेज्ज वा, संघट्टेज्ज वा, परियावेज्ज वा, किलामेज्ज वा ठाणाओ ठाणं संकामेज्ज वा, जीविआओ• ववरोवेज्ज वा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा, [10]•एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो,•

---

१. सं० पा०—पुरिसंतरकडे जाव चेतेज्जा ।
२. सं० पा०—अपुरिसंतरकडे जाव णो ।
३. सं० पा०—पुरिसंतरकडे जाव चेतेज्जा ।
४. गाढा° (क, च, ब); आगाढावगाढेहिं (घ); आगाढादीहिं (छ) ।
५. 'उत्सृष्टम्' उत्सर्जनं—त्यागमुच्चारादेः (वृ)।
६. पयले° (क, च, छ) ।
७. पवडे° (क, च, छ) ।
८. सं० पा०—हत्थं वा जाव सीसं ।
९. सं० पा०—अभिहणेज्ज वा जाव ववरोवेज्ज ।
१०. सं० पा०—पइण्णा जाव जं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जं तहप्पगारे उवस्सए अंतलिक्खजाए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।।

सागारिय-उवस्सय-पदं

२०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—सइत्थियं, सखुड्डं, सपसुभत्तपाणं। तहप्पगारे सागारिए[1] उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।।

२१. आयाणमेयं भिक्खुस्स गाहावइ-कुलेण सद्धिं संवसमाणस्स—अलसगे वा, विसूइया वा, छड्डी वा उव्वाहेज्जा[2]। अण्णतरे वा से दुक्खे रोगातंके[3] समुप्पज्जेज्जा। अस्संजए कलुण-पडियाए तं भिक्खुस्स गातं तेल्लेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, वसाए वा, अब्भंगेज्ज वा, मक्खेज्ज वा। सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण[4] वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा, आघंसेज्ज वा, पघंसेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा, उव्वट्टेज्ज वा। सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा, 'उच्छोलेज्ज वा',[5] पहोएज्ज वा, सिणावेज्ज वा, सिंचेज्ज वा। दारुणा वा दारुपरिणामं[6] कट्टु अगणिकायं उज्जालेज्ज वा, पज्जालेज्ज वा, उज्जालेत्ता पज्जालेत्ता कायं आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो, जं तहप्पगारे सागारिए उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।।

२२. आयाणमेयं भिक्खुस्स सागारिए उवस्सए संवसमाणस्स[7]—इह खलु गाहावई वा[8], °गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा°, कम्मकरीओ वा अण्णमण्णं अक्कोसंति वा, बंधंति[9] वा, रुंभंति वा, उद्दवेंति[10] वा।

अह भिक्खू णं उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा—एते खलु अण्णमण्णं अक्कोसंतु वा मा वा अक्कोसंतु, बंधंतु वा मा वा बंधंतु, रुंभंतु वा मा वा रुंभंतु, उद्दवेंतु वा मा वा उद्दवेंतु।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा[11], °एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°

---

१. साकारिए (छ, ब)।
२. उप्पा° (क, च, ब)।
३. रोगे आयंके (घ)।
४. लोद्देण (अ, ब)।
५. उच्छोलेज्ज पच्छोलेज्ज वा (ब)।
६. दारुणं परि° (अ, च); दारुण° (क)।
७. वसमाणस्स (ब)।
८. सं० पा०—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ।
९. पहंति (क); × (च, ब); वहंति (अ)।
१०. उद्दंति वा उद्दवेंति (घ); उद्दवंति वा उद्दवेंति (छ)।
११. सं० पा०—पइण्णा जाव जं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जं तहप्पगारे सागारिए उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

२३. आयाणमेयं भिक्खुस्स गाहावईहिं सद्धिं संवसमाणस्स[1]—इह खलु गाहावई अप्पणो सअट्ठाए अगणिकायं उज्जालेज्ज वा, पज्जालेज्ज वा, विज्झावेज्ज वा। अह भिक्खू उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा—एते खलु अगणिकायं उज्जालेंतु वा मा वा उज्जालेंतु, पज्जालेंतु वा मा वा पज्जालेंतु, विज्झावेंतु वा मा वा विज्झावेंतु।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा[2] •एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो•, जं तहप्पगारे [सागारिए ?] उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

२४. आयाणमेयं भिक्खुस्स गाहावईहिं सद्धिं संवसमाणस्स—इह खलु गाहावइस्स कुंडले वा, गुणे वा, मणी वा, मोत्तिए वा, 'हिरण्णे वा'[3], 'सुवण्णे वा'[4], कडगाणि वा, तुडियाणि वा, तिसरगाणि[5] वा, पालंबाणि वा, हारे वा, अद्धहारे वा, एगावली वा, मुत्तावली वा, कणगावली वा, रयणावली वा, तरुणियं वा कुमारिं अलंकिय-विभूसियं पेहाए, अह भिक्खू उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा—एरिसिया वा सा णो वा एरिसिया—इति वा णं बूया, इति वा णं मणं साएज्जा।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा[6] •एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो•, जं तहप्पगारे [सागारिए ?] उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

२५. आयाणमेयं भिक्खुस्स गाहावईहिं सद्धिं संवसमाणस्स—इह खलु गाहावइणीओ वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, गाहावइ-धाईओ वा, गाहावइ-दासीओ वा, गाहावइ-कम्मकरीओ वा। तासिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ—जे इमे भवंति समणा भगवंतो[7] •सीलमंता वयमंता गुणमंता संजया संवुडा बंभचारी• उवरया मेहुणाओ धम्माओ, णो खलु एतेसिं कप्पइ मेहुणं धम्मं परियारणाए आउट्टित्तए।

जा य खलु एएहिं सद्धिं मेहुणं धम्मं परियारणाए आउट्टेज्जा, पुत्तं खलु सा

---

१. वस (अ, घ, च, छ, ब)।
२. सं० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव जं।
३. × (अ)।
४. × (छ)।
५. तिसराणि (च)।
६. सं० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव जं।
७. सं० पा०—भगवंतो जाव उवरया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

लभेज्जा—ओयंस्सि तेयंस्सि वच्चंस्सि जसंस्सि संपराइयं[1] आलोयण-दरिसणिज्जं। एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म तासिं च णं अण्णयरी सड्ढी[2] तं तवंस्सि भिक्खुं मेहुणं धम्मं परियारणाए आउट्टावेज्जा।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा[3] •एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°, जं तहप्पगारे सागारिए उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा।।

२६. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं[4], •जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए।

—ति बेमि°।।

बीओ उद्देसो

२७. गाहावई णामेगे सुइ-समायारा भवंति, भिक्खू य असिणाणए[5] मोयसमायारे, 'से तग्गंधे'[6] दुग्गंधे पडिकूले पडिलोमे यावि भवइ।

जं पुव्वकम्मं तं पच्छाकम्मं, जं पच्छाकम्मं तं पुव्वकम्मं। तं भिक्खु-पडियाए वट्टमाणे करेज्जा वा, नो 'वा करेज्जा'[7]।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा[8] •एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°, जं तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा[9], •सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतेज्जा।।

२८. आयाणमेयं भिक्खुस्स गाहावईहिं सद्धिं संवसमाणस्स—इह खलु गाहावइस्स[10] अप्पणो सअट्ठाए विरूवरूवे भोयण-जाए उवक्खडिए सिया, अह पच्छा भिक्खु-पडियाए असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उवक्खडेज्ज वा, उवकरेज्ज वा, तं च भिक्खू अभिकंखेज्जा भोत्तए वा, पायए वा, वियट्टित्तए[11] वा।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा[12] •एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°, जं तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा[13], •सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतेज्जा।।

२९. आयाणमेयं भिक्खुस्स गाहावइणा सद्धिं संवसमाणस्स—इह खलु गाहावइस्स अप्पणो सयट्ठाए विरूवरूवाइं दारुयाइं भिन्न-पुव्वाइं भवंति, अह पच्छा भिक्खु-पडियाए विरूवरूवाइं दारुयाइं भिंदेज्ज वा, किणेज्ज वा, पामिच्चेज्ज वा,

---

१. संपहारियं (अ)।
२. सहियं (अ); सहितं (छ)।
३. सं० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव जं।
४. सं० पा०—सामग्गियं।
५. असिणाणाए (अ)।
६. से से गंधे (अ, क, घ, च, छ, ब, चू)।
७. करेज्जा (अ); करेज्जा वा (छ, ब)।
८. सं० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव जं।
९. सं० पा०—ठाणं वा जाव चेतेज्जा।
१०. तत्रैवाहारगृद्ध्या विवर्त्तितुम् आसितुमाकाङ्क्षेत् (वृ)।
११ तृतीयार्थे षष्ठी (वृ)।
१२. सं० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव जं।
१३. सं० पा०—ठाणं वा चेतेज्जा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दारुणा वा दारुपरिणामं[1] कट्टु अगणिकायं उज्जालेज्ज वा, पज्जालेज्ज वा। तत्थ भिक्खू अभिकंखेज्जा आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा, वियट्टित्तए वा। अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा[2] •एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो॰, जं तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा[3], •सेज्जं वा, णिसीहियं वा॰ चेतेज्जा ।।

३०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उच्चार-पासवणेणं उव्वाहिज्जमाणे राओ वा विआले वा गाहावइ-कुलस्स दुवारबाहं अवंगुणेज्जा, तेणे य तस्संधिचारी अणुपविसेज्जा। तस्स भिक्खुस्स णो कप्पइ एवं वदत्तिए—अयं तेण पविसइ वा णो वा पविसइ, उवल्लियइ[4] वा णो वा उवल्लियइ, अइपतति[5] वा णो वा अइपतति, वदति वा णो वा वदति, तेण हडं अण्णेण हडं, तस्स हडं अण्णस्स हडं, अयं तेणे अयं उवचरए, अयं हंता अयं एत्थमकासी तं तवस्सिं भिक्खुं[6] अतेणं तेणं ति संकति।
अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा[7] •एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो, जं तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा॰ चेतेज्जा ।।

तण-पलालाच्छाइय-उवस्सय-पदं

३१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—तण-पुंजेसु वा, पलाल-पुंजेसु वा, सअंडे[8] •सपाणे सबीए सहरिए सउसे सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा॰संताणए, तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।।

३२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—तण-पुंजेसु वा, पलाल-पुंजेसु वा, अप्पंडे[9] •अप्पपाणे अप्पबीए अप्पहरिए अप्पोसे अप्पुदए अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणए, तहप्पगारे उवस्सए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा॰ चेतेज्जा ।।

वज्जियव्व-उवस्सय-पदं

३३. से आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अभिक्खणं-अभिक्खणं साहम्मिएहिं ओवयमाणेहिं णोवएज्जा[10] ।।

---

१. दारुण॰ (घ, च)।
२. सं॰ पा॰—पुव्वोवदिट्ठा जाव जं।
३. सं॰ पा॰—ठाणं वा चेतेज्जा।
४. उव्वलियति (च); उवलियत्ति (घ)
५. आवयति (घ, च)।
६. भिक्खुयं (अ, छ)।
७. सं॰ पा॰—पुव्वोवदिट्ठा जाव चेतेज्जा।
८. चूर्णावत्र बहुवचनं लभ्यते—'संडेहिं'; सं॰ पा॰—सअंडे जाव संताणए।
९. चूर्णावत्र बहुवचनं लभ्यते—'अप्पंडेहिं' सं॰ पा॰—अप्पंडेहिं जाव चेतेज्जा।
१०. णोयवएज्जा (अ); णो उवएज्जा (क,घ,च)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कालाइक्कंत-किरिया-पदं

३४. से आगंतारेसु वा[1], •आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा°, परियावसहेसु वा, जे भयंतारो उडुबद्धियं वा वासावासियं वा कप्पं उवातिणावित्ता[2] तत्थेव भुज्जो[3] संवसंति, अयमाउसो ! कालाइक्कंत-किरिया वि भवइ ।।

उवट्ठाण-किरिया-पदं

३५. से आगंतारेसु वा[4], •आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा°, परियावसहेसु वा, जे भयंतारो उडुबद्धियं वा वासावासियं वा कप्पं उवातिणावित्ता तं दुगुणा तिगुणेण[5] अपरिहरित्ता तत्थेव भुज्जो संवसंति, अयमाउसो[6] ! उवट्ठाण-किरिया वि[7] भवइ ।।

अभिक्कंत-किरिया-पदं

३६. इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा, संतेगइया सड्ढा भवंति, तं जहा—गाहावई वा[8], •गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा°, कम्मकरीओ वा। तेसिं च णं आयार-गोयरे णो सुणिसंते भवइ[9]।

तं सद्दहमाणेहिं, तं पत्तियमाणेहिं, तं रोयमाणेहिं बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स तत्थ-तत्थ अगारीहिं अगाराइं चेतिताइं भवंति, तं जहा—आएसणाणि वा, आयतणाणि वा, देवकुलाणि वा, सहाओ[10] वा पवाओ[11] वा, पणिय-गिहाणि वा, पणिय-सालाओ वा, जाण-गिहाणि वा, जाण-सालाओ वा, सुहाकम्मंताणि वा, दब्भ-कम्मंताणि वा, बद्ध[12]-कम्मंताणि वा, वक्क[13]-कम्मंताणि वा, वण-कम्मंताणि वा, इंगाल-कम्मंताणि वा, कट्ठ-कम्मंताणि

---

१. सं० पा०—आगंतारेसु वा जाव परियावसहेसु।
२. °तिणित्ता (अ, क, घ, च, ब)।
३. भुज्जो-भुज्जो (घ)।
४. स० पा०—आगंतारेसु वा जाव परियावसहेसु।
५. दुगुणेण (अ, क, घ, च, ब)। स्वीकृतः पाठः वृत्त्यनुसारी वर्तते।
६. अयमाउसो ! इतरा (अ, च, ब)।
७. या वि (अ, ब)।
८. स० पा०—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ।
९. साधूनामेवंभूतः प्रतिश्रयः कल्पते नैवंभूतः, इत्येवं न ज्ञातं भवतीत्यर्थः, प्रतिश्रयदानफलं च स्वर्गादिकं तैः कुतश्चिदवगतम् (वृ)।
१०. सहाणि (क, घ, छ, ब)।
११. पवाणि (अ, क, घ, छ, ब)।
१२. वत्थ° (छ)।
१३. वल्कज° (वृ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा, सुसाण-कम्मंताणि वा, संति-कम्मंताणि वा[1], गिरि-कम्मंताणि वा, कंदर[2]-कम्मंताणि वा, सेलोवट्ठाण-कम्मंताणि वा[3], भवणगिहाणि वा।
जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा तेहिं ओवयमाणेहिं ओवयंति, अयमाउसो ! अभिक्कंत-किरिया वि[4] भवइ ।।

अणभिक्कंत-किरिया-पदं

३७. इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा, संतेगइया सड्ढा भवंति, तं जहा—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा। तेसिं च णं आयार-गोयरे णो सुणिसंते भवइ।
तं सद्दहमाणेहिं, तं पत्तियमाणेहिं, तं रोयमाणेहिं बहवे समण-माहण-अतिहि-किविण-वणीमए समुद्दिस्स तत्थ-तत्थ अगारीहिं अगाराइं चेतिआइं भवंति, तं जहा—आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा।
जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा तेहिं अणोवयमाणेहिं ओवयंति, अयमाउसो ! अणभिक्कंत-किरिया वि भवति ।।

वज्ज-किरिया-पदं

३८. इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा, संतेगइया सड्ढा भवंति, तं जहा गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा। तेसिं च णं एवं वुत्तपुव्वं भवइ—
जे इमे भवंति समणा भगवंतो सीलमंता[5] °वयमंता गुणमंता संजया संवुडा बंभचारी° उवरया मेहुणाओ धम्माओ, णो खलु एएसिं भयंताराणं कप्पइ आहाकम्मिए उवस्सए वत्थए।
सेज्जाणिमाणि[6] अम्हं अप्पणो सअट्ठाए[7] चेतिताइं भवंति, तं जहा—आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा। सव्वाणि ताणि समणाणं णिसिरामो, अवियाइं वयं पच्छा अप्पणो सअट्ठाए चेतिस्सामो, तं जहा—आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा।
एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा उवागच्छंति, उवागच्छित्ता इतरेतरेहिं[8] पाहुडेहिं वट्टंति, अयमाउसो ! वज्ज-किरिया वि भवइ ।।

---

१. वा सुण्णागारकम्मंताणि वा (अ)।
२. कंदरा (अ)।
३. वा सयण-गिहाणि वा (छ)।
४. या वि (अ, क, घ, च, ब)।
५. सं० पा०—सीलमंता जाव उवरया।
६. °इमाणि (च)।
७. अट्ठाए (अ, छ, ब)।
८. इतरातिरेहिं (क, घ); इयरातरेहिं (अ, च)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महावज्ज-किरिया-पदं

३९. इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा, संतेगइया सड्ढा भवंति, तं जहा—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा। तेसिं च णं आयार-गोयरे णो सुणिसंते भवइ।

तं सद्दहमाणेहिं, तं पत्तियमाणेहिं, तं रोयमाणेहिं बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स तत्थ-तत्थ अगारीहिं अगाराइं चेतिताइं भवंति, तं जहा—आएसणाणि वा भवणगिहाणि वा। जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा उवागच्छंति, उवागच्छित्ता इतरेतरेहिं[1] पाहुडेहिं वट्टंति, अयमाउसो! महावज्ज-किरिया वि भवइ॥

सावज्ज-किरिया-पदं

४०. इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा, संतेगइया सड्ढा भवंति, तं जहा—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा। तेसिं च णं आयार-गोयरे णो सुणिसंते भवइ।

तं सद्दहमाणेहिं, तं पत्तियमाणेहिं, तं रोयमाणेहिं बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स तत्थ-तत्थ अगारीहिं अगाराइं चेतिआइं भवंति, तं जहा—आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा। जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा उवागच्छंति, उवागच्छित्ता इतरेतरेहिं पाहुडेहिं वट्टंति, अयमाउसो! सावज्ज-किरिया वि भवइ॥

महासावज्ज-किरिया-पदं

४१. इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा, संतेगइया सड्ढा भवंति, तं जहा—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा। तेसिं च णं आयार-गोयरे णो सुणिसंते भवइ।

तं सद्दहमाणेहिं, तं पत्तियमाणेहिं, तं रोयमाणेहिं एगं समणजायं समुद्दिस्स तत्थ-तत्थ अगारीहिं अगाराइं चेतिताइं भवंति, तं जहा—आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा। महया पुढविकाय-समारंभेणं, [2]°महया आउकाय-समारंभेणं, महया तेउकाय-समारंभेणं, महया वाउकाय-समारंभेणं, महया वणस्सइकाय-समारंभेणं°, महया तसकाय-समारंभेणं, महया संरंभेणं, महया समारंभेणं, महया आरंभेणं, महया विरूवरूवेहिं पावकम्म-किच्चेहिं, तं जहा—छायणओ लेवणओ संथार-दुवार-पिहणओ। सीतोदए वा परिट्ठवियपुव्वे भवइ, अगणिकाए वा उज्जालियपुव्वे भवइ, जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा जाव

---

१. इतरातरेहिं (अ); इयराइयरेहिं (घ)। २. सं० पा०—एवं आउतेउवाउवणस्सइ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भवणगिहाणि वा उवागच्छंति, उवागच्छित्ता इयराइयरेहिं पाहुडेहिं दुपक्खं ते कम्मं सेवंति, अयमाउसो ! महासावज्ज-किरिया वि भवइ ।।

अप्पसावज्ज-किरिया-पदं

४२. इह खलु पाईणं वा, पडीणं वा, दाहीणं वा, उदीणं वा संतेगइया सड्ढा भवंति, तं जहा—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा । तेसिं च णं आयार-गोयरे णो सुणिसंते भवइ ।

तं सद्दहमाणेहिं, तं पत्तियमाणेहिं, तं रोयमाणेहिं अप्पणो सअट्ठाए तत्थ-तत्थ अगारीहिं अगाराइं चेतिताइं भवंति, तं जहा—आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा। महया पुढविकाय-समारंभेणं[1] °महया आउकाय-समारंभेणं, महया तेउकाय-समारंभेणं, महया वाउकाय-समारंभेणं, महया वणस्सइकाय-समारंभेणं, महया तसकाय-समारंभेणं, महया संरंभेणं, महया समारंभेणं, महया आरंभेणं, महया विरूवरूवेहिं पावकम्म-किच्चेहिं, तं जहा—छायणओ लेवणओ संथार-दुवार-पिहणओ। सीतोदए वा परिट्ठवियपुव्वे भवइ° अगणिकाए वा उज्जालियपुव्वे भवइ ।

जे भयंतारो तहप्पगाराइं आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि वा उवागच्छंति, उवागच्छित्ता इयराइयरेहिं पाहुडेहिं एगपक्खं ते कम्मं सेवंति, अयमाउसो ! अप्पसावज्ज-किरिया वि भवइ ।।

४३. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं[2], °जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जए ।

—त्ति बेमि° ।।

तइओ उद्देसो

उवस्सय-छलण-पदं

४४. सिय[3] णो सुलभे फासुए उंछे अहेसणिज्जे, णो य खलु सुद्धे इमेहिं पाहुडेहिं, तं जहा—छायणओ, लेवणओ, संथार-दुवार-पिहणओ[4], पिंडवाएसणाओ ।

से[5] भिक्खू चरिया-रए, ठाण-रए, निसीहिया-रए, सेज्जा-संथार-पिंडवाएसणा-रए। संति भिक्खुणो एवमक्खाइणो उज्जुया[6] णियाग-पडिवन्ना अमायं कुव्वमाणा वियाहिया ।

संतेगइया पाहुडिया उक्खित्तपुव्वा भवइ, एवं णिक्खित्तपुव्वा भवइ, परिभाइय-

---

१. सं० पा०—समारंभेणं जाव अगणिकाए ।
२. सं० पा०—सामग्गियं ।
३. से य (क, घ, च, छ, ब) ।
४. पिहुणाओ (अ); पिहाणओ (क, च, छ, ब) ।
५. से य (अ) ।
६. उज्जुअडा (अ, छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुव्वा भवइ, परिभुत्तपुव्वा भवइ, परिट्ठवियपुव्वा भवइ, एवं वियागरेमाणे समियाए[1] वियागरेति ?
हंता भवइ ॥

उवस्सय-जयण-पदं

४५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—खुड्डियाओ, खुड्डु-दुवारियाओ[2], निइयाओ[3] [नीयाओ ?] संनिरुद्धाओ[4] भवंति। तहप्पगारे उवस्सए राओ वा, विआले वा णिक्खममाणे वा, पविसमाणे वा, पुरा हत्थेण पच्छा पाएण तओ संजयामेव णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ॥

४६. केवली बूया आयाणमेयं—जे तत्थ समणाण वा, माहणाण वा, छत्तए वा, मत्तए वा, दंडए वा, लट्ठिया वा, भिसिया वा, 'नालिया वा, चेलं वा'[5], चिलिमिली वा, चम्मए वा, चम्मकोसए वा, चम्म-छेदणए वा—दुब्बद्धे दुण्णिक्खित्ते अणिकंपे चलाचले—भिक्खू य राओ वा वियाले वा णिक्खममाणे वा, पविसमाणे वा पयलेज्ज वा, पवडेज्ज वा। से तत्थ पयलमाणे वा पवडमाणे वा हत्थं वा, पायं वा[6], °बाहुं वा, ऊरुं वा, उदरं वा, सीसं वा अण्णयरं वा कायंसि° इंदिय-जायं लूसेज्ज वा, पाणाणि वा भूयाणि वा जीवाणि वा सत्ताणि वा अभिहणेज्ज वा[7], °वत्तेज्ज वा, लेसेज्ज वा, संघंसेज्ज वा, संघट्टेज्ज वा, परियावेज्ज वा, किलामेज्ज वा, ठाणाओ ठाणं संकामेज्ज वा, जीवियाओ° ववरोवेज्ज वा।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो, जं तहप्पगारे उवस्सए पुरा हत्थेणं पच्छा पाएणं तओ संजयामेव णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ॥

उवस्सय-जायणा-पदं

४७. से आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अणुवीइ उवस्सयं जाएज्जा, जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए,[8] ते उवस्सयं अणुण्णवेज्जा—कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिण्णातं वसिस्सामो जाव आउसंतो, जाव आउसंतस्स उवस्सए, जाव साहम्मिया 'एत्ता, ताव'[9] उवस्सयं गिण्हिस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो ॥

---

१. समिय (घ); समिया (छ)।
२. °दुवाराओ (घ)।
३. नेरइयाओ (अ); निययाओ (घ)।
४. सनिरुद्धिओ (अ)।
५. नालिया वा चेले वा (अ); चेलं वा नालिया वा (घ, ब); नालिया वा (छ)।
६. सं० पा०— पायं वा जाव इंदिय।
७. सं० पा०—अभिहणेज्ज वा जाव ववरोवेज्ज।
८. समाहिट्ठाए (अ,क,घ, छ); समाहिट्ठए (ब)।
९. एवावता (अ); इत्ता त्ता (क); इत्ता वा (च); इं ताव (छ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेज्जायर-णाम-गोय-जायणा-पदं

४८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जस्सुवस्सए संवसेज्जा, तस्स पुव्वामेव णाम-गोयं जाणेज्जा। तओ पच्छा तस्स गिहे णिमंतेमाणस्स अणिमंतेमाणस्स वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा—अफासुयं[1] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा॥

उवस्सय-विसुद्धि-पदं

४९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—ससागारियं सागणियं सउदयं, णो पण्णस्स निक्खमण-पवेसाए, णो पण्णस्स वायण[2]-•पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग°-चिंताए, तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, निसीहियं वा चेतेज्जा॥

५०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—गाहावइ-कुलस्स मज्झंमज्झेणं गंतुं पंथं पडिबद्धं वा[3], णो पण्णस्स[4] •णिक्खमण-पवेसाए, णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग°-चिंताए, तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा॥

५१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा[5], •गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा°, कम्मकरीओ वा अण्णमण्णमक्कोसंति वा[6], •बंधंति वा, रुंभंति वा°, उद्दवेंति वा, णो पण्णस्स[7] •णिक्खमण-पवेसाए, णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग°-चिंताए। सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा[8], •सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतेज्जा॥

५२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा अण्णमण्णस्स गायं तेल्लेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, वसाए वा, अब्भंगे [गें ?]ति वा, मक्खे[खें ?]ति वा, णो पण्णस्स[9] •णिक्खमण-पवेसाए, णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग° चिंताए। तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा[10], •सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतेज्जा॥

५३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा, अण्णमण्णस्स गायं सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण

---

१. सं० पा०—अफासुयं जाव णो।
२. सं० पा०—वायण जाव चिंताए।
३. × (अ)।
४. स० पा०—पण्णस्स जाव चिंताए।
५. सं० पा०—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ।
६. सं० पा०—अण्णमण्णमक्कोसंति वा जाव उद्दवेंति।
७, ९. सं० पा०—पण्णस्स जाव चिंताए।
८, १०. सं० पा०—ठाणं वा जाव चेतेज्जा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा, आघंसंति वा, पघंसंति वा, उव्वलेंति वा, उव्वट्टेंति वा, णो पण्णस्स[1] •णिक्खमण-पवेसाए, णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग°-चिंताए, तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा[2], •सेज्जं वा, णिसीहियं वा,° चेतेज्जा ॥

५४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा– इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा अण्णमण्णस्स गायं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेंति वा, पधोवेंति वा, सिंचंति वा, सिणावेंति वा, णो पण्णस्स[3] •णिक्खमण-पवेसाए, णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग° चिंताए, तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा[4], •सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतेज्जा ॥

५५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा णिगिणा ठिआ, णिगिणा उवल्लीणा मेहुणधम्मं विण्णवेंति, रहस्सियं वा मंतं मंतेंति, णो पण्णस्स[5] •णिक्खमण-पवेसाए णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग°-चिंताए, तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा[6], •सेज्जं वा, णिसीहियं वा° चेतेज्जा ॥

५६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उवस्सयं जाणेज्जा—आइण्णसंलेक्खं[7], णो पण्णस्स[8] •णिक्खमण-पवेसाए णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग°-चिंताए, तहप्पगारे उवस्सए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

संथारग-पदं

५७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा संथारगं एसित्तए। सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—सअंडं[9] •सपाणं सबीअं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°संताणगं, तहप्पगारं संथारगं[10]–•अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

५८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—अप्पंडं[11] •अप्पपाणं अप्पबीअं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° संताणगं, गरुयं, तहप्पगारं संथारगं[12]—•अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

५९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—अप्पंडं[13] •अप्पपाणं

१,३,५,८. सं० पा०—पण्णस्स जाव चिंताए।
२,४,६. सं० पा०—ठाणं वा जाव चेतेज्जा।
७. संलिखे (घ); ° संलेखे (छ)।
९. सं० पा०—सअंडं जाव संताणगं।
१०,१२. सं० पा०—संथारगं लाभे।
११,१३. सं० पा०—अप्पंडं जाव संताणगं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अप्पबीअं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° संताणगं, लहुयं अपाडिहारियं, तहप्पगारं संथारगं[1]—•अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

६०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—अप्पंडं[2] •अप्पपाणं अप्पबीअं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° संताणगं, लहुयं पाडिहारियं णो अहाबद्धं, तहप्पगारं संथारगं[3]—°अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

६१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—अप्पंडं[4] •अप्पपाणं अप्पबीअं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° संताणगं, लहुयं पाडिहारियं अहाबद्धं, तहप्पगारं संथारयं[5]—•फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे° लाभे संते पडिगाहेज्जा ॥

संथारग-पडिमा-पदं

६२. इच्चेयाइं आयतणाइं उवाइक्कम्म अह भिक्खू जाणेज्जा, इमाहिं चउहिं पडिमाहिं संथारगं एसित्तए ॥

६३. तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उद्दिसिय-उद्दिसिय संथारगं जाएज्जा, तं जहा—इक्कडं वा, कढिणं[6] वा, जंतुयं वा, परगं वा, मोरगं[7] वा, तणं[8] वा, कुसं वा, 'कुच्चगं वा'[9], पिप्पलगं वा, पलालगं वा। से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भगिणि ! त्ति वा दाहिसि मे एत्तो अण्णयरं संथारगं ? तहप्पगारं सयं वा णं जाएज्जा परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं[10] •ति मण्णमाणे° लाभे संते पडिगाहेज्जा—पढमा पडिमा ॥

६४. अहावरा दोच्चा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पेहाए संथारगं जाएज्जा, तं जहा—गाहावइं वा, गाहावइ-भारियं वा, गाहावइ-भगिणिं वा, गाहावइ-पुत्तं वा, गाहावइ-धूयं वा, सुण्हं वा, धाइं वा, दासं वा, दासिं वा, कम्मकरं वा, कम्मकरिं[11] वा। से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भगिणि !

---

१. क्वचित् 'सेज्जा संथारगं' इति पाठोऽस्ति। तत्र 'सेज्जा' लिपिदोषेण प्रक्षिप्तः इति सभाव्यते; सं० पा०—संथारगं लाभे।
२. सं० पा०—अप्पंडं जाव संताणगं।
३. सं० पा०—संथारगं लाभे।
४. सं० पा०—अप्पंडं जाव संताणगं।
५. सं० पा०—संथारयं जाव लाभे।
६. कढिणगं (घ)।
७. पोरगं (घ)।
८. तणगं (क, च, छ, ब)।
९. कुच्चगं वा बच्चगं वा (चू)।
१०. सं० पा०—एसणिज्जं जाव लाभे।
११. कम्मकरी (अ,घ,ब); कम्मकरीयं (च,छ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त्ति वा दाहिसि मे एत्तो अण्णयरं संथारगं ? तहप्पगारं संथारगं सयं वा णं जाएज्जा परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं[1] •ति मण्णमाणे लाभे संते॰ पडिगाहेज्जा—दोच्चा पडिमा ।।

६५. अहावरा तच्चा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जस्सुवस्सए संवसेज्जा, जे तत्थ अहासमण्णागए, तं जहा—इक्कडे वा[2] •कढिणे वा, जंतुए वा, परगे वा, मोरगे वा, तणे वा, कुसे वा, कुच्चगे वा, पिप्पले वा॰, पलाले वा। तस्स लाभे संवसेज्जा, तस्स अलाभे उक्कुडुए वा, णेसज्जिए वा विहरेज्जा—तच्चा पडिमा ।।

६६. अहावरा चउत्था पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहासंथडमेव संथारगं जाएज्जा, तं जहा—पुढविसिलं वा, कट्ठसिलं वा अहासंथडमेव। तस्स लाभे संवसेज्जा, तस्स अलाभे उक्कुडुए वा, णेसज्जिए वा विहरेज्जा—चउत्था पडिमा ।।

६७. इच्चेयाणं चउण्हं पडिमाणं अण्णयरं पडिमं पडिवज्जमाणे[3] •णो एवं वएज्जा मिच्छा पडिवन्ना खलु एते भयंतारो, अहमेगे सम्मं पडिवन्ने ।
जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ताणं विहरंति, जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जित्ताणं विहरामि, सव्वे वे ते उ जिणाणाए उवट्ठिया॰, अण्णोण्णसमाहीए एवं च णं विहरंति ।।

संथारग-पच्चप्पण-पदं

६८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा संथारगं पच्चप्पिणित्तिए। सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—सअंडं[4] •सपाणं सबीअं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा॰ संताणगं, तहप्पगारं संथारगं णो पच्चप्पिणेज्जा ।।

६९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा संथारगं पच्चप्पिणित्तए। सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—अप्पंडं[5] अप्पपाणं अप्पबीअं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा॰ संताणगं, तहप्पगारं संथारगं पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय, आयाविय-आयाविय, विणिद्धणिय-[6] विणिद्धणिय तओ संजयामेव पच्चप्पिणेज्जा ।।

उच्चारपासवण-भूमि-पदं

७०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा समाणे वा, वसमाणे वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे वा पुव्वामेव णं[7] पण्णस्स उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेज्जा ।।

---

१. सं० पा०—एसणिज्जं जाव पडिगाहेज्जा ।
२. सं० पा०—इक्कडे वा जाव पलाले ।
३. सं० पा०—पडिवज्जमाणे तं चेव जाव अण्णोण्णसमाहीए ।
४. सं० पा०—सअंडं जाव संताणगं ।
५. सं० पा०—अप्पंडं जाव संताणगं ।
६. विहुणिय २ (क,च); विद्धुणिय २ (घ,ब) ।
७. × (क, घ, च) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७१. केवली बूया आयाणमेयं—अपडिलेहियाए उच्चारपासवणभूमीए, भिक्खू[1] वा भिक्खुणी वा राओ वा विआले वा उच्चारपासवणं परिट्ठवेमाणे पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा। से तत्थ पयलमाणे वा पवडमाणे वा हत्थं वा पायं वा[2] •बाहुं वा, ऊरुं वा, उदरं वा, सीसं वा अण्णयरं वा कायंसि इंदिय-जायं° लूसेज्ज वा पाणाणि वा[3] •भूयाणि वा जीवाणि वा सत्ताणि वा अभिहणेज्ज वा, वत्तेज्ज वा, लेसेज्ज वा, संघसेज्ज वा, संघट्टेज्ज वा, परियावेज्ज वा, किलामेज्ज वा, ठाणाओ ठाणं संकामेज्ज वा, जीविआओ° ववरोवेज्ज वा। अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो, जं पुव्वामेव पण्णस्स उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेज्जा ॥

सयण-विहि-पदं

७२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा सेज्जा-संथारग-भूमिं पडिलेहित्तए, णण्णत्थ आयरिएण वा, उवज्झाएण वा[4], •पवत्तीए वा, थेरेण वा, गणिणा वा, गणहरेण वा°, गणावच्छेइएण[5] वा, बालेण वा, बुड्ढेण वा, सेहेण वा, गिलाणेण वा, आएसेण वा,
अंतेण[6] वा, मज्झेण वा, समेण वा, विसमेण वा, पवाएण वा, णिवाएण वा 'तओ संजयामेव'[7] पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय[8] बहु-फासुयं सेज्जा-संथारगं संथरेज्जा ॥

७३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहु-फासुयं सेज्जा-संथारगं संथरेत्ता अभिकंखेज्जा बहु-फासुए सेज्जा-संथारए दुरुहित्तए, से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहु-फासुए सेज्जा-संथारए दुरुहमाणे, से पुव्वामेव ससीसोवरियं कायं पाए य पमज्जिय-पमज्जिय तओ संजयामेव बहु-फासुए सेज्जा-संथारगे दुरुहेज्जा, दुरुहेत्ता तओ संजयामेव बहु-फासुए सेज्जा-संथारए सएज्जा ॥

७४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहु-फासुए सेज्जा-संथारए सयमाणे, णो अण्णमण्णस्स हत्थेण हत्थं, पाएण पायं, काएण कायं आसाएज्जा। से अणासायमाणे तओ संजयामेव बहु-फासुए सेज्जा-संथारए सएज्जा ॥

७५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उस्सासमाणे वा, णीसासमाणे वा, कासमाणे वा,

---

१. से भिक्खू (छ, ब)।
२. सं० पा०—पायं वा जाव लूसेज्ज।
३. सं० पा०—पाणाणि वा जाव ववरोवेज्ज।
४. सं० पा०—उवज्झाएण वा जाव गणावच्छेइएण।
५. गणावच्छेएण (च)।
६. अन्तेन वेत्यादीनां पदानां तृतीया सप्तम्यर्थे (वृ)।
७. × (क, घ, च, ब)।
८. पमज्जिय तओ संजयामेव (क,घ,च,छ,ब)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छीयमाणे वा, जंभायमाणे वा, उड्डुए[1] वा, वायणिसग्गे वा करेमाणे, पुव्वामेव आसयं वा, पोसयं वा पाणिणा परिपिहित्ता तओ संजयामेव ऊससेज्ज[2] वा, णीससेज्ज वा, कासेज्ज वा, छीएज्ज वा, जंभाएज्ज वा, उड्डुयं वा, वायणिसग्गं वा करेज्जा ॥

७६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा—समा वेगया सेज्जा भवेज्जा, विसमा वेगया सेज्जा भवेज्जा, पवाता वेगया सेज्जा भवेज्जा, णिवाता वेगया सेज्जा भवेज्जा, ससरक्खा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अप्प-ससरक्खा वेगया सेज्जा भवेज्जा, सदंस-मसगा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अप्प-दंस-मसगा वेगया सेज्जा भवेज्जा, सपरिसाडा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अपरिसाडा वेगया सेज्जा भवेज्जा, सउवसग्गा वेगया सेज्जा भवेज्जा, णिरुवसग्गा वेगया सेज्जा भवेज्जा—तहप्पगाराहिं सेज्जाहिं संविज्जमाणाहिं पग्गहिततरागं विहारं विहरेज्जा, णो किंचिवि गिलाएज्जा ॥

७७. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति बेमि ॥

---

१. उड्डोए (घ, च, छ) ।

२. ऊसासेज्ज (क, घ, च, छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तइयं अज्झयणं

इरिया

पढमो उद्देसो

वासावास-पदं

१. अब्भुवगए खलु वासावासे अभिपवुट्ठे, बहवे पाणा अभिसंभूया, बहवे बीया अहुणुब्भिन्ना[1], अंतरा से मग्गा बहुपाणा बहुबीया[2] °बहुहरिया बहु-ओसा बहु-उदया बहु-उत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°संताणगा, अणभिक्कंता पंथा, णो विण्णाया मग्गा, सेवं णच्चा णो गामाणुगामं दूइज्जेज्जा, तओ संजयामेव वासावासं उवल्लिएज्जा ॥

२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—गामं वा[3], °णगरं वा, खेडं वा, कव्वडं वा, मडंबं वा, पट्टणं वा, दोणमुहं वा, आगरं वा, णिगमं वा, आसमं वा, सण्णिवेसं वा°, रायहाणिं वा। इमंसि खलु गामंसि वा[4], °णगरंसि वा, खेडंसि वा, कव्वडंसि वा, मडंबंसि वा, पट्टणंसि वा, दोणमुहंसि वा, आगरंसि वा, णिगमंसि वा, आसमंसि वा, सण्णिवेसंसि वा°, रायहाणिंसि वा—णो महती विहारभूमी, णो महती वियारभूमी, णो सुलभे पीढ-फलग-सेज्जा-संथारए, णो सुलभे फासुए उंछे अहेसणिज्जे, बहवे जत्थ समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा उवागया उवागमिस्संति य, अच्चाइण्णा वित्ती—णो पण्णस्स निक्खमण-पवेसाए[5], °णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह°-धम्माणुओग-

---

१. अहुणुब्भिया (अ); अहुणोब्भिन्ना (घ); अहुणाभिन्ना (च, ब)।

२. सं० पा०—बहुबीया जाव संताणगा।

३. सं० पा०—गामं वा जाव रायहाणिं।

४. सं० पा०—गामंसि वा जाव रायहाणिंसि।

५. सं०पा०—निक्खमणपवेसाए जाव धम्माणु°।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चिंताए। सेवं णच्चा तहप्पगारं गामं वा णगरं वा जाव रायहाणिं वा णो वासावासं उवल्लिएज्जा॥

३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—गामं वा जाव रायहाणिं वा। इमंसि खलु गामंसि वा जाव रायहाणिंसि वा—महती विहारभूमी, महती वियारभूमी, सुलभे जत्थ पीढ-फलग-सेज्जा-संथारए, सुलभे फासुए उंछे अहेसणिज्जे, णो जत्थ बहवे समण[1]-•माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा° उवागया उवागमिस्संति य, अप्पाइण्णा वित्ती[2]—•पण्णस्स निक्खमण-पवेसाए, पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग-चिंताए। सेवं णच्चा तहप्पगारं गामं वा जाव° रायहाणिं वा, तओ संजयामेव वासावासं उवल्लिएज्जा॥

गामाणुगाम-विहार-पदं

४. अह पुणेवं जाणेज्जा—चत्तारि मासा वासाणं वीइक्कंता, हेमंताण य पंच-दस-रायकप्पे परिवुसिए, अंतरा से मग्गा बहुपाणा[3] •बहुबीया बहुहरिया बहु-ओसा बहु-उदया बहु-उत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° संताणगा, णो जत्थ बहवे समण[4]-•माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा° उवागया उवागमिस्संति य। सेवं णच्चा णो गामाणुगामं दूइज्जेज्जा॥

५. अह पुणेवं जाणेज्जा—चत्तारि मासा वासाणं वीइक्कंता, हेमंताण य पंच-दस-रायकप्पे परिवुसिए, अंतरा से मग्गा अप्पंडा[5] •अप्पपाणा अप्पबीआ अप्पहरिया अप्पोसा अप्पुदया अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° संताणगा, बहवे जत्थ समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा उवागया उवागमिस्संति य। सेवं णच्चा तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा॥

६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे पुरओ जुगमायं पेहमाणे, दट्ठूण तसे पाणे उद्धट्टु पायं रीएज्जा, साहट्टु पायं रीएज्जा, उक्खिप्प पायं रीएज्जा, तिरिच्छं[6] वा कट्टु पायं रीएज्जा। सति परक्कमे संजतामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुयं गच्छेज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा॥

७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से पाणाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा, उदए वा, मट्टिया वा अविद्धत्था। सति परक्कमे[7] •संजतामेव परक्कमेज्जा°, णो उज्जुयं गच्छेज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा॥

---

१. सं० पा०—समण जाव उवागया।
२. सं० पा०—वित्ती जाव रायहाणिं।
३. सं० पा०—बहुपाणा जाव संताणगा।
४. सं० पा०—समण जाव उवागया
५. सं० पा०—अप्पंडा जाव संताणगा।
६. वितिरिच्छं (अ, घ, च, ब)।
७. सं० पा०—परक्कमे जाव णो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से विरूवरूवाणि पच्चंतिकाणि दस्सुगायतणाणि मिलक्खूणि अणारियाणि दुस्सन्नप्पाणि दुप्पण्ण-वणिज्जाणि अकालपडिबोहीणि अकालपरिभोईणि, सति लाढे विहाराए, संथरमाणेहिं जणवएहिं, णो विहार-वत्तियाए पवज्जेज्जा गमणाए ।।

९. केवली बूया आयाणमेयं—ते णं बाला 'अयं तेणे' 'अयं उवचरए' 'अयं तओ आगए' त्ति कट्टु तं भिक्खुं अक्कोसेज्ज वा[1], °बंधेज्ज वा, रुंभेज्ज वा°, उद्दवेज्ज[2] वा। वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं 'अच्छिदेज्ज वा'[3], अवहरेज्ज वा, परिभवेज्ज[4] वा।
अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा[5] °एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°, जं णो तहप्पगाराणि विरूवरूवाणि पच्चंतियाणि दस्सुगायतणाणि[6] °मिलक्खूणि अणारियाणि दुस्सन्नप्पाणि दुप्पण्णवणिज्जाणि अकालपडिबोहीणि अकालपरि-भोईणि, सति लाढे विहाराए, संथरमाणेहिं जणवएहिं°, विहार-वत्तियाए पवज्जेज्जा गमणाए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।।

१०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से अरायाणि वा, गणरायाणि वा, जुवरायाणि वा, दोरज्जाणि वा, वेरज्जाणि वा, विरुद्धरज्जाणि वा सति लाढे विहाराए, संथरमाणेहिं जणवएहिं, णो विहार-वत्तियाए पवज्जेज्ज गमणाए ।।

११. केवली बूया आयाणमेयं—ते णं बाला 'अयं तेणे'[7] °'अयं उवचरए' 'अयं तओ आगए' त्ति कट्टु तं भिक्खुं अक्कोसेज्ज वा, बंधेज्ज वा, रुंभेज्ज वा, उद्दवेज्ज वा। वत्थं पडिग्गहं कंबलं पायपुंछणं अच्छिदेज्ज वा, अवहरेज्ज वा, परिभ-वेज्ज वा।
अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा—एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो, जं णो तहप्पगाराणि अरायाणि वा, गणरायाणि वा, जुवरायाणि वा, दोर-ज्जाणि वा, वेरज्जाणि वा, विरुद्धरज्जाणि वा सति लाढे विहाराए, संथर-माणेहिं जणवएहिं, विहार-वत्तियाए पवज्जेज्ज° गमणाए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।।

१२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से विहं सिया। सेज्जं पुण विहं जाणेज्जा—एगाहेण वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण

---

१. सं० पा०—अक्कोसेज्ज वा जाव उद्दवेज्ज ।
२. उवद्दवेज्ज (अ, क, च, ब) ।
३. अच्छिदेज्ज वा भिंदेज्ज वा (च, छ, ब); अच्छिदेज्ज वा अभिंदेज्ज वा (अ) ।
४. परिद्दवेज्ज (घ, च, ब) ।
५. सं० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव जं ।
६. सं० पा०—दस्सुगायतणाणि जाव विहार-वत्तियाए ।
७. सं० पा०—अयं तेणे तं चेव जाव गमणाए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा, पंचाहेण वा पाउणेज्ज वा, नो पाउणेज्ज वा। तहप्पगारं विहं अणेगाह-गमणिज्जं, सति लाढे[1] °विहाराए, संथरमाणेहिं जणवएहिं°, णो विहार-वत्ति-याए पवज्जेज्जा गमणाए ॥

१३. केवली बूया आयाणमेयं—अंतरा से वासे सिया पाणेसु वा, पणएसु वा, बीएसु वा, हरिएसु वा, उदएसु वा, मट्टियासु[2] वा अविद्धत्थाए।
अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा[3] °एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°, जं तहप्पगारं विहं अणेगाह-गमणिज्जं[4], °सति लाढे विहाराए, संथरमाणेहिं जणवएहिं, णो विहार-वत्तियाए पवज्जेज्जा° गमणाए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा।

नावा-विहार-पदं

१४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे[5] अंतरा से णावासंतारिमे उदए सिया। सेज्जं पुण णावं जाणेज्जा—अस्संजए भिक्खु-पडियाए किणेज्ज वा, पामिच्चेज्ज वा, णावाए वा णाव[6]-परिणामं कट्टु थलाओ वा णावं जलंसि ओगाहेज्जा, जलाओ वा णावं थलंसि उक्कसेज्जा, पुण्णं वा णावं उस्सिचेज्जा, सण्णं वा णावं उप्पीलावेज्जा। तहप्पगारं णावं उड्ढगामिणिं वा, अहेगामिणिं वा, तिरियगामिणिं वा, परं जोयणमेराए अद्धजोयणमेराए वा अप्पतरो वा भुज्जतरो वा णो दुरुहेज्ज गमणाए ॥

१५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पुव्वामेव तिरिच्छ-संपातिमं णावं जाणेज्जा, जाणेत्ता से त्तमायाए एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता भंडगं पडिलेहेज्जा[7], पडिलेहेत्ता एगाभोयं[8] भंडगं करेज्जा, करेत्ता ससीसोवरियं कायं पाए य पमज्जेज्जा, पमज्जेत्ता सागारं भत्तं पच्चक्खाएज्जा, पच्चक्खाएत्ता एगं पायं जले किच्चा, एगं पायं थले किच्चा, तओ संजयामेव णावं दुरुहेज्जा ॥

१६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णावं दुरूहमाणे णो णावाए पुरओ दुरुहेज्जा, णो णावाए मग्गओ दुरुहेज्जा, णो णावाए मज्झतो दुरुहेज्जा, णो बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय, अंगुलिए[9] उवदंसिय-उवदंसिय, ओणमिय-ओणमिय, उण्णमिय-उण्णमिय णिज्झाएज्जा ॥

---

१. सं० पा०—लाढे जाव णो।
२. मट्टिएसु (क, च); मट्टियाएसु (घ, छ)।
३. सं० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव जं।
४. सं० पा०—अणेगाहगमणिज्जं जाव गमणाए।
५. दूइज्जेज्जा (क, घ, च, छ, ब)।
६. णावं (क, घ, च, छ, ब)।
७. पडिगाहेज्जा (घ, छ, ब)।
८. °भायं (अ); °भोयण (छ)।
९. अंगुलियाए (च, छ, ब)।

१७. से णं परो णावा-गतो णावा-गयं वएज्जा—आउसंतो ! समणा ! एयं ता[1] तुमं णावं उक्कसाहि वा, वोक्कसाहि वा, खिवाहि वा, रज्जुयाए[2] वा गहाय आकसाहि। णो से तं परिण्णं परिजाणेज्जा[3], तुसिणीओ उवेहेज्जा ॥

१८. से णं परो णावा-गओ णावा-गयं वएज्जा—आउसंतो ! समणा ! णो संचाएसि तुमं णावं उक्कसित्तए वा, वोक्कसित्तए वा, खिवित्तए वा, रज्जुयाए वा गहाय आकसित्तए। आहर एतं णावाए रज्जूयं, सयं चेव णं वयं णावं उक्कसिस्सामो वा, वोक्कसिस्सामो वा, खिविस्सामो वा, रज्जुयाए[4] वा गहाय आकसिस्सामो। णो से तं परिण्णं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा ॥

१९. से णं परो णावा-गओ णावा-गयं वएज्जा—आउसंतो ! समणा ! एयं ता[5] तुमं णावं अलित्तेण[6] वा, पिहएण[7] वा, वंसेण वा, वलएण वा, अवल्लएण[8] वा वाहेहि। णो से तं परिण्णं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा ॥

२०. से णं परो णावा-गओ णावा-गयं वदेज्जा—आउसंतो ! समणा ! एयं ता तुमं णावाए उदयं हत्थेण वा, पाएण वा, मत्तेण वा, पडिग्गहेण वा, णावा-उस्सिचणेण वा उस्सिचाहि। णो से तं परिण्णं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा ॥

२१. से णं परो णावा-गओ णावा-गयं वएज्जा—आउसंतो ! समणा ! एतं ता तुमं णावाए उत्तिगं हत्थेण वा, पाएण वा, बाहुणा वा, ऊरुणा[9] वा, उदरेण वा, सीसेण वा, काएण वा, णावा-उस्सिचणेण वा, चेलेण वा, 'मट्टियाए वा, कुसपत्तएण वा'[10], कुविंदेण[11] वा पिहेहि। णो से तं परिण्णं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा ॥

२२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णावाए उत्तिगेणं उदयं आसवमाणं पेहाए, उवरुवरि[12] णावं कज्जलावेमाणं पेहाए णो परं उवसंकमित्तु एवं बूया—आउसंतो ! गाहावइ ! एयं ते णावाए उदयं उत्तिगेणं आसवति, उवरुवरि वा णावा कज्जलावेति। एतप्पगारं मणं वा वायं वा णो पुरओ कट्टु विहरेज्जा, अप्पुस्सुए

---

१. × (अ, छ)।
२. रज्जूए (अ, क, घ, ब)।
३. जाणेज्जा (घ, ब)।
४. रज्जूए (च)।
५. × (छ)।
६. आलित्तेण (अ, क, घ, च, छ, ब)।
७. पीढेण (अ, क, घ, च, छ, ब)। अयं पाठो निशीथस्य तथा अप्रयुक्ताचाराङ्गादर्शस्यानुसारेण स्वीकृतः।
८. अवल्लेण (च)।
९. उरुणा (घ, च, छ, ब)।
१०. निशीथ-चूर्णि, भाग ४, पृष्ठ २०९ : 'मट्टियाए वा कुसपत्तेण वा' इत्यस्य स्थाने 'कुसमट्टियाए वा' इति पाठोस्ति।
११. कुरुविंदेण (अ, क, घ, च, छ, ब)। अयं पाठो निशीथस्य तथा अप्रयुक्ताचाराङ्गादर्शस्यानुसारेण स्वीकृतः।
१२. उवरुवरिं (घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज[1] समाहीए, तओ संजयामेव णावा-संतारिमे उदए अहारियं रीएज्जा ।।

२३. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सदा जएज्जासि ।

—त्ति बेमि ।।

बीओ उद्देसो

नावा-विहार-पदं

२४. से णं परो णावा-गओ णावा-गयं वदेज्जा—आउसंतो ! समणा ! एयं ता तुमं छत्तगं वा[2], •मत्तगं वा, दंडगं वा, लट्ठियं वा, भिसियं वा, नालियं वा, चेलं वा, चिलिमिलिं वा, चम्मगं वा, चम्म-कोसगं वा°, चम्म-छेयणगं वा गेण्हाहि, एयाणि तुमं विरूवरूवाणि सत्थ-जायाणि धारेहि, एयं ता तुमं दारगं वा 'दारिगं वा'[3] पज्जेहि । णो से तं परिण्णं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा ।।

२५. से णं परो णावा-गए णावा-गयं वदेज्जा—आउसंतो ! एस णं समणे णावाए भंडभारिए भवइ । से णं बाहाए गहाय णावाओ उदगंसि पक्खिवह[4] । एतप्प-गारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से य चीवरधारी सिया, खिप्पामेव चीवराणि उव्वेढिज्ज वा, णिव्वेढिज्ज वा, उप्फेसं वा करेज्जा ।।

२६. अह पुणेवं जाणेज्जा—अभिक्कंत-कूरकम्मा खलु बाला बाहाहिं गहाय नावाओ उदगंसि पक्खिवेज्जा ।

से पुव्वामेव वएज्जा—आउसंतो ! गाहावइ ! मा मेत्तो बाहाए गहाय णावाओ उदगंसि पक्खिवह, सयं चेव णं अहं णावातो उदगंसि ओगाहिस्सामि ।

से णेवं वयंतं परो सहसा बलसा बाहाहिं गहाय णावाओ उदगंसि पक्खिवेज्जा, तं णो सुमणे सिया, णो दुम्मणे[5] सिया, णो उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा, णो तेसिं बालाणं घाताए वहाए समुट्ठेज्जा, अप्पुस्सुए[6] •अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज° समाहीए, तओ संजयामेव उदगंसि पवेज्जा ।।

२७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदगंसि पवमाणे णो हत्थेण हत्थं, पाएण पायं, काएण कायं, आसाएज्जा । 'से अणासायमाणे'[7] तओ संजयामेव उदगंसि पवेज्जा ।।

---

१. विउसज्ज (क) ।
२. सं० पा०—छत्तगं वा जाव चम्मछेयणगं ।
३. × (क, घ, च) ।
४. पक्खिवेज्जा (क, ग, च, छ, ब) ।
५. दुमणे (घ, छ, ब) ।
६. सं० पा०—अप्पुस्सुए जाव समाहीए ।
७. से अणासादए अणा° (अ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदगंसि पवमाणे णो उम्मग्ग[1]-णिमग्गियं[2] करेज्जा। मामेयं उदगं कण्णेसु वा, अच्छीसु वा, णक्कंसि वा, मुहंसि वा परियावज्जेज्जा, तओ संजयामेव उदगंसि पवेज्जा॥

२९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदगंसि पवमाणे दोब्बलियं पाउणेज्जा। खिप्पामेव उवहिं विगिंचेज्ज वा, विसोहेज्ज वा, णो चेव णं सातिज्जेज्जा[3]॥

३०. अह पुणेवं जाणेज्जा—पारए सिया उदगाओ तीरं पाउणित्तए तओ संजयामेव उदउल्लेण वा, ससिणिद्धेण वा काएण उदगतीरे चिट्ठेज्जा॥

३१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदउल्लं वा ससिणिद्धं वा कायं णो आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा, संलिहेज्ज वा, णिल्लिहेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा, उव्वट्टेज्ज वा, आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा॥

३२. अह पुण एवं जाणेज्जा—विगओदए मे काए, वोच्छिन्नसिणेहे[4] मे काए। तहप्पगारं कायं आमज्जेज्ज वा जाव पयावेज्ज वा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा॥

३३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे णो परेहिं सद्धिं परिजविय-परिजविय गामाणुगामं दूइज्जेज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा॥

जंघासंतारिम-उदग-पदं

३४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से जंघासंतारिमे उदए सिया। से पुव्वामेव ससीसोवरियं कायं पादे य पमज्जेज्जा, पमज्जेत्ता[5] °सागारं भत्तं पच्चक्खाएज्जा, पच्चक्खाएत्ता° एगं पायं जले किच्चा, एगं पायं थले किच्चा, तओ संजयामेव जंघासंतारिमे उदए[6] अहारियं रीएज्जा॥

३५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जंघासंतारिमे उदगे अहारियं रीयमाणे, णो 'हत्थेण हत्थं'[7] पाएण पायं, काएण कायं, आसाएज्जा। 'से अणासायमाणे'[8] तओ संजयामेव जंघासंतारिमे उदए अहारियं रीएज्जा॥

३६. से भिक्खु वा भिक्खुणी वा जंघासंतारिमे उदए अहारियं रीयमाणे णो साय[9]-वडियाए, णो परदाह-वडियाए, महइमहालयंसि उदगंसि कायं विउसेज्जा, तओ संजयामेव जंघासंतारिमे उदए अहारियं रीएज्जा॥

---

१. उम्मुग्गं (घ, च, ब)।
२. णिम्मुग्गियं (घ, च)।
३. सातिज्जेज्ज वा (छ)।
४. छिन्न° (क, घ, च, ब)।
५. सं० पा०—पमज्जेत्ता जाव एगं।
६. उदगंसि (क, घ, च)।
७. हत्थेण वा हत्थं (अ) (सर्वत्र)।
८. से अणासादए अणा° (अ)।
९. साया (अ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३७. अह पुणेवं जाणेज्जा—पारए सिया उदगाओ तीरं पाउणित्तए तओ संजयामेव उदउल्लेण वा ससणिद्धेण[1] वा काएण दगतीरए[2] चिट्ठेज्जा ।।

३८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदउल्लं वा कायं, ससणिद्धं वा कायं णो आमज्जेज्ज वा पमज्जेज्ज वा ।।

३९. अह पुणेवं जाणेज्जा – विगतोदए मे काए, छिण्णसिणेहे मे काए, तहप्पगारं कायं आमज्जेज्ज वा[3] °पमज्जेज्ज वा संलिहेज्ज वा णिल्लिहेज्ज वा उव्वलेज्ज वा उव्वट्टेज्ज वा आयावेज्ज वा° पयावेज्ज वा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।।

४०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे णो मट्टियामएहिं पाएहिं हरियाणि छिंदिय-छिंदिय, विकुज्जिय-विकुज्जिय, विफालिय-विफालिय, उम्मग्गेणं हरिय-वहाए गच्छेज्जा । "जहेयं[4] पाएहिं मट्टियं खिप्पामेव हरियाणि अवहरंतु" । माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा ।
से पुव्वामेव अप्पहरियं मग्गं पडिलेहेज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।।

विसमट्ठाण-परक्कम-पदं

४१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, पागाराणि वा, तोरणाणि वा, अग्गलाणि वा, अग्गल-पासगाणि वा, गड्डाओ वा, दरीओ वा । सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुयं गच्छेज्जा ।।

४२. केवली बूया आयाणमेयं से तत्थ परक्कममाणे पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा । से तत्थ पयलमाणे वा पवडमाणे वा रुक्खाणि वा, गुच्छाणि वा, गुम्माणि वा, लयाओ वा, वल्लीओ वा, तणाणि वा गहणाणि वा, हरियाणि वा, अवलंबिय-अवलंबिय उत्तरेज्जा[5], जे तत्थ पाडिपहिया[6] उवागच्छंति, ते पाणी जाएज्जा, तओ संजयामेव अवलंबिय-अवलंबिय उत्तरेज्जा[7], तओ गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।।

४३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से जवसाणि वा, सगडाणि वा, रहाणि वा, सचक्काणि वा, परचक्काणि वा, सेणं वा विरूवरूवं सण्णिविट्ठं[8] पेहाए, सइ परक्कमे संजयामेव परक्कमेज्जा, णो उज्जुयं गच्छेज्जा ।।

---

१. सभिणिद्धेण (च) ।
२. उदगतीरए (घ) ।
३. सं० पा०—आमज्जेज्ज वा जाव पयावेज्ज ।
४. जमेतं (छ) ।
५. उत्तारेज्जा (अ) ।
६. पाडिवधेया (क); पाडिवाहेया (घ); पाडिपडिया (छ) ।
७. उत्तारेज्जा (अ) ।
८. सणिरुद्धं (ब) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभिणिचारिय-पदं

४४. से णं परो सेणागओ वएज्जा—आउसंतो ! एस णं समणे सेणाए अभिणिचारियं[1] करेइ। से णं बाहाए गहाय आगसह। से णं परो बाहाहिं गहाय आगसेज्जा। तं णो सुमणे सिया[2], •णो दुम्मणे सिया, णो उच्चावयं मणं णियच्छेज्जा, णो तेसिं बालाणं घाताए वहाए समुट्ठेज्जा। अप्पुस्सुए अबहिल्लेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज ° समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

पाडिपहिय-पदं

४५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा। तेणं पाडिपहिया एवं वदेज्जा—आउसंतो ! समणा ! केवइए एस गामे वा[3], •णगरे वा, खेडे वा, कव्वडे वा, मडंबे वा, पट्टणे वा, दोणमुहे वा, आगरे वा, णिगमे वा, आसमे वा, सण्णिवेसे वा °, रायहाणी वा ? केवइया एत्थ आसा हत्थी गामपिंडोलगा मणुस्सा परिवसंति ?

से बहुभत्ते बहुउदए बहुजणे बहुजवसे ? से अप्पभत्ते अप्पुदए अप्पजणे अप्पजवसे ? 'एयप्पगाराणि पसिणाणि पुट्ठो नो आइक्खेज्जा, एयप्पगाराणि पसिणाणि नो पुच्छेज्जा'[4] ॥

४६. एवं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं[5], •जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि।

—त्ति बेमि ° ॥

तइओ उद्देसो

अंगचेट्ठापुव्वं निज्झाण-पदं

४७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, पागाराणि वा[6], •तोरणाणि वा, अग्गलाणि वा, अग्गल-पासगाणि वा, गड्डाओ वा °, दरीओ वा, कूडागाराणि वा, पासादाणि वा, णूम-गिहाणि वा, रुक्ख-गिहाणि वा, पव्वय-गिहाणि वा, रुक्खं वा चेइय-कडं, थूभं वा चेइय-कडं, आएसणाणि वा[7], •आयतणाणि वा, देवकुलाणि वा, सहाओ वा, पवाओ

---

१. अभिणिवारियं (अ, क, घ, च, ब)।
२. सं० पा०—सिया जाव समाहीए।
३. सं० पा०—गामे वा जाव रायहाणी।
४. × (व); एयप्पगाराणि पसिणाणि नो पुच्छेज्जा एयप्पगाराणि पसिणाणि पुट्ठो वा अपुट्ठो वा णो वागरेज्जा (क, च, छ); एयप्पगाराणि पसिणाणि नो पुच्छेज्जा एय पुट्ठो वा अपुट्ठो वा णो वागरेज्जा (घ)।
५. सं० पा०—सामग्गियं।
६. सं० पा०—पागाराणि वा जाव दरीओ।
७. सं० पा०—आएसणाणि वा जाव भवण-गिहाणि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा, पणिय-गिहाणि वा, पणिय-सालाओ वा, जाण-गिहाणि वा, जाण-सालाओ वा, सुहा-कम्मंताणि वा, दब्भ-कम्मंताणि वा, वद्ध-कम्मंताणि वा, वक्क-कम्मंताणि वा, वण-कम्मंताणि वा, इंगाल-कम्मंताणि वा, कट्ठ-कम्मंताणि वा, सुसाण-कम्मंताणि वा, संति-कम्मंताणि वा, गिरि-कम्मंताणि वा, कंदर-कम्मंताणि वा, सेलोवट्ठाण-कम्मंताणि वा°, भवणगिहाणि वा णो बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय, अंगुलियाए उद्दिसिय-उद्दिसिय, ओणमिय-ओणमिय, उण्णमिय-उण्णमिय णिज्झाएज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

४८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से कच्छाणि वा दवियाणि वा, णूमाणि वा, वलयाणि वा, गहणाणि वा, गहण-विदुग्गाणि वा, वणाणि वा, वण-विदुग्गाणि वा, पव्वयाणि वा, पव्वय-विदुग्गाणि वा, अगडाणि वा, तलागाणि वा, दहाणि वा, णदीओ वा, वावीओ वा, पोक्खरिणीओ वा, दीहियाओ वा, गुंजालियाओ वा, सराणि वा, सर-पंतियाणि वा, सर-सर-पंतियाणि वा णो बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय[1], °अंगुलियाए उद्दिसिय-उद्दिसिय, ओणमिय-ओणमिय, उण्णमिय-उण्णमिय, णिज्झाएज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा° ॥

४९. केवली बूया आयाणमेयं—जे तत्थ मिगा वा, पसुया[2] वा, पक्खी वा सरीसिवा[3] वा, सीहा वा, जलचरा वा, थलचरा वा, खहचरा वा सत्ता, ते उत्तसेज्ज वा, वित्तसेज्ज वा, वाडं वा सरणं वा कंखेज्जा । चारे त्ति मे अयं समणे ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा[4] °एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°, जं णो बाहाओ पगिज्झिय-पगिज्झिय[5], °अंगुलियाए उद्दिसिय-उद्दिसिय, ओणमिय-ओणमिय, उण्णमिय-उण्णमिय°, णिज्झाएज्जा, तओ संजयामेव आयरिय-उवज्झाएहिं सद्धिं गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

आयरिय-उवज्झाय-सद्धिं-विहार-पदं

५०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आयरिय-उवज्झाएहिं सद्धिं गामाणुगामं दूइज्जमाणे णो आयरिय-उवज्झायस्स हत्थेण हत्थं[6], °पाएण पायं, काएण कायं आसाएज्जा । से° अणासायमाणे तओ संजयामेव आयरिय-उवज्झाएहिं सद्धिं गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

५१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आयरिय-उवज्झाएहिं सद्धिं दूइज्जमाणे अंतरा से

---

१. सं० पा०—पगिज्झिय जाव णिज्झाएज्जा ।
२. पसू (अ) ।
३. सिरीसिवा (अ, घ, च) ।
४. सं० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव जं ।
५. सं० पा०—पगिज्झिय जाव णिज्झाएज्जा ।
६. सं० पा०—हत्थं जाव अणासायमाणे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाडिपहिया उवागच्छेज्जा, ते णं पाडिपहिया एवं वएज्जा—आउसंतो! समणा! के तुब्भे? कओ वा एह? कहिं वा गच्छिहिह?

जे तत्थ आयरिए वा उवज्झाए वा से भासेज्ज वा, वियागरेज्जा वा। आयरिय-उवज्झायस्स भासमाणस्स वा, वियागरेमाणस्स वा णो अंतराभासं करेज्जा, तओ संजयामेव आहारातिणिए[1] दूइज्जेज्जा ॥

आहारातिणिय-सद्धिं-विहार-पदं

५२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आहारातिणियं गामाणुगामं दूइज्जमाणे णो रातिणियस्स हत्थेण हत्थं[2], •पाएण पायं, काएण कायं आसाएज्जा। से॰ अणासायमाणे तओ संजयामेव आहारातिणियं गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

५३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आहारातिणियं दूइज्जमाणे अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा। ते णं पाडिपहिया एवं वदेज्जा—आउसतो! समणा! के तुब्भे? कओ वा एह? कहिं वा गच्छिहिह?

जे तत्थ सव्वरातिणिए[3] से भासेज्ज वा, वियागरेज्ज वा। रातिणियस्स भासमाणस्स वा, वियागरेमाणस्स वा णो अंतराभासं भासेज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

पाडिपहिय-पदं

५४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा[4]। ते णं पाडिपहिया एवं वदेज्जा—आउसंतो! समणा! अवियाइं एत्तो पडिपहे पासह, तं जहा—मणुस्सं वा, गोणं वा, महिसं वा, पसुं वा, पक्खि वा, सरीसिवं[5] वा, जलयरं वा? से आइक्खह, दंसेह। तं णो आइक्खेज्जा, णो दंसेज्जा, णो तेसिं[6] तं परिण्णं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा, जाणं वा णो जाणंति वएज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

५५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा[7]। ते णं पाडिपहिया एवं वएज्जा—आउसंतो! समणा! अवियाइं एत्तो पडिपहे पासह—उदगपसूयाणि कंदाणि वा, मूलाणि वा, 'तयाणि वा पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा'[8], उदगं वा

---

१. ॰राइणियाए (अ, ब); अहा॰ (घ, च)।
२. सं॰ पा॰—हत्थं जाव अणासायमाणे।
३. रातिणिए (ब)।
४ आगच्छेज्जा (अ, च, छ)।
५. सिरीसिवं (अ, छ, ब); सिरीसवं (च)।
६. तस्स (क, च, छ)।
७. आगच्छेज्जा (अ, छ)।
८. तया पत्ता पुप्फा फला बीया हरिया (अ, क, घ, च, छ, ब)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संणिहियं, अगणिं वा संणिक्खित्तं ? से आइक्खह[1], •दंसेह । तं णो आइक्खेज्जा, णो दंसेज्जा, णो तेसिं तं परिण्णं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा, जाणं वा णो जाणंति वएज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं° दूइज्जेज्जा ।।

५६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा । ते णं पाडिपहिया एवं वएज्जा—आउसंतो ! समणा ! अवियाइं एत्तो पडिपहे पासह–जवसाणि वा[2], •सगडाणि वा, रहाणि वा, सचक्काणि वा, परचक्काणि वा°, सेणं वा विरूवरूवं संणिविट्ठं ? से आइक्खह, दंसेह । तं णो आइक्खेज्जा, णो दंसेज्जा, णो तेसिं तं परिण्णं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा, जाणं वा णो जाणंति वएज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।।

५७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से पाडिपहिया[3] •उवागच्छेज्जा । तेणं पाडिपहिया एवं वदेज्जा°—आउसंतो ! समणा ! केवइए एत्तो गामे वा[4], •णगरे वा, खेडे वा, कव्वडे वा मडंबे वा, पट्टणे वा, दोणमुहे वा, आगरे वा, णिगमे वा, आसमे वा, सण्णिवेसे वा°, रायहाणी वा ? से आइक्खह, दंसेह । तं णो आइक्खेज्जा, णो दंसेज्जा, णो तेसिं तं परिण्णं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा, जाणं वा णो जाणंति वएज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।।

५८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से पाडिपहिया उवागच्छेज्जा । ते णं पाडिपहिया एवं वदेज्जा—आउसंतो ! समणा ! केवइए एत्तो गामस्स वा, णगरस्स वा[5], •खेडस्स वा, कव्वडस्स वा, मडंबस्स वा, पट्टणस्स वा, दोणमुहस्स वा, आगरस्स वा, णिगमस्स वा, आसमस्स वा, सण्णिवेसस्स वा° रायहाणीए वा मग्गे ? से आइक्खह, दंसेह । तं णो आइक्खेज्जा, णो दंसेज्जा, णो तेसिं तं परिण्णं परिजाणेज्जा, तुसिणीओ उवेहेज्जा, जाणं वा णो जाणंति वएज्जा, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।।

वियाल-पदं

५९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से गोणं वियालं पडिपहे पेहाए[6], •महिसं वियालं पडिपहे पेहाए, एवं—मणुस्सं, आसं, हत्थि, सीहं, वग्घं, विगं, दीवियं, अच्छं, तरच्छं, परिसरं, सियालं, विरालं, सुणयं,

---

१. सं० पा०—आइक्खह जाव दूइज्जेज्जा ।
२. सं० पा०—जवसाणि वा जाव सेणं ।
३. सं० पा०—पाडिपहिया जाव आउसंतो ।
४. सं० पा०—गामे वा जाव रायहाणी ।
५. सं० पा०—णगरस्स वा जाव रायहाणीए ।
६. सं० पा०—पेहाए जाव चित्ताचिल्लडं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोल-सुणयं, कोकंतियं,° चित्ताचिल्लडं—वियालं पडिपहे पेहाए, णो तेसिं भीओ उम्मग्गेणं गच्छेज्जा, णो मग्गाओ मग्गं संकमेज्जा, णो गहणं वा, वणं वा, दुग्गं वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खंसि दुरुहेज्जा, णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा, सरणं वा, सेणं वा, सत्थं वा कंखेज्जा, अप्पुस्सुए[1] •अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज° समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

आमोसग-पदं

६०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से विहं सिया। सेज्जं पुण विहं जाणेज्जा—इमंसि खलु विहंसि बहवे आमोसगा उवगरण-पडियाए संपिंडिया गच्छेज्जा, णो तेसिं भीओ उम्मग्गेणं गच्छेज्जा, णो मग्गाओ मग्गं संकमेज्जा, णो गहणं वा, वणं वा, दुग्गं वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खंसि दुरुहेज्जा, णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा, सरणं वा, सेणं वा, सत्थं वा कंखेज्जा, अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेजा ॥

६१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणगामं दूइज्जमाणे अंतरा से आमोसगा संपिंडिया गच्छेज्जा। ते णं आमोसगा एवं वदेज्जा—आउसंतो! समणा! 'आहर एयं'[2] वत्थं वा, पायं वा, कंबलं वा, पायपुंछणं वा—देहि, णिक्खिवाहि। तं णो देज्जा, णो णिक्खिवेज्जा, णो वंदिय-वंदिय जाएज्जा, णो अंजलिं कट्टु जाएज्जा, णो कलुण-पडियाए जाएज्जा, धम्मियाए जायणाए जाएज्जा, तुसिणीय-भावेण वा उवेहेज्जा।

तं णं आमोसगा 'सयं करणिज्जं'[3] ति कट्टु अक्कोसंति वा[4], •बंधंति वा, रुंभंति वा°, उद्दवंति वा। वत्थं वा, पायं वा, कंबलं वा, पायपुंछणं वा अच्छिदेज्ज वा, अवहरेज्ज वा, परिभवेज्ज[5] वा। तं णो गामसंसारियं कुज्जा, णो रायसंसारियं कुज्जा, णो परं उवसंकमित्तु बूया—आउसंतो! गाहावइ! एए खलु आमोसगा उवगरण-पडियाए सयं करणिज्जं ति कट्टु अक्कोसंति वा जाव परिभवेंति[6] वा। एयप्पगारं मणं वा वइं[7] वा णो पुरओ कट्टु, विहरेज्जा,

---

१. सं० पा०—अप्पुस्सुए जाव समाहीए।
२. आहारं एवं (छ); आहर एत्थ (अ,क,ब)।
३. सयं करणिज्जा करणिज्जं (च)।
४. सं० पा०—अक्कोसंति वा जाव उद्दवंति।
५. परिट्ठ° (अ, क, घ, च, छ, ब)।
६. परिट्ठ° (अ, क, घ, च, छ, ब)।
७. वायं (च); वयं (छ, ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अप्पुस्सुए[1] °अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज° समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

६२. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिते सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति बेमि ॥

---

१. सं० पा०—अप्पुस्सुए जाव समाहीए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउत्थं अज्झयणं

भासज्जातं

पढमो उद्देसो

वइ-अणायार-पदं

१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा इमाइं वइ-आयाराइं सोच्चा णिसम्म इमाइं अणायाराइं अणायरियपुव्वाइं जाणेज्जा—जे कोहा वा वायं विउंजंति, जे माणा वा वायं विउंजंति, जे मायाए वा वायं विउंजंति, जे लोभा वा वायं विउंजंति, जाणओ वा फरुसं वयंति, अजाणओ वा फरुसं वयंति, सव्वमेयं[1] सावज्जं वज्जेज्जा विवेगमायाए ।।

२. धुवं चेयं जाणेज्जा, अधुवं चेयं जाणेज्जा—असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा लभिय णो लभिय, भुंजिय णो भुंजिय, अदुवा आगए अदुवा णो आगए, अदुवा एइ अदुवा णो एइ, अदुवा एहिति अदुवा णो एहिति, एत्थवि आगए एत्थवि णो आगए, एत्थवि एइ एत्थवि णो एइ, एत्थवि एहिति एत्थवि णो एहिति ।।

सोडस-वयण-पदं

३. अणुवीइ[2] णिट्ठाभासी, समियाए संजए भासं भासेज्जा, तं जहा—एगवयणं, दुवयणं, बहुवयणं, इत्थीवयणं[3], पुरिसवयणं, णपुंसगवयणं, अज्झत्थवयणं, उवणीयवयणं, अवणीयवयणं, उवणीय-अवणीयवयणं, अवणीय-उवणीयवयणं तीयवयणं, पडुप्पन्नवयणं, अणागयवयणं, पच्चक्खवयणं, परोक्खवयणं ।।

---

१. सव्वं वेयं (क, च, ब); सव्वं चेयं (घ) ।
३. इत्थि° (अ) ।
२. अणुवीय (छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. से १. एगवयणं वदिस्सामीति एगवयणं वएज्जा[1], २. °दुवयणं वदिस्सामीति दुवयणं वएज्जा, ३. बहुवयणं वदिस्सामीति बहुवयण वएज्जा, ४. इत्थीवयणं वदिस्सामीति इत्थीवयणं वएज्जा, ५. पुरिसवयणं वदिस्सामीति पुरिसवयणं वएज्जा, ६. णपुंसगवयणं वदिस्सामीति णपुंसगवयण वएज्जा, ७. अज्झत्थवयणं वदिस्सामीति अज्झत्थवयणं वएज्जा, ८. उवणीयवयणं वदिस्सामीति उवणीयवयणं वएज्जा, ९. अवणीयवयणं वदिस्सामीति अवणीयवयणं वएज्जा, १०. उवणीय-अवणीयवयणं वदिस्सामीति उवणीय-अवणीयवयणं वएज्जा, ११. अवणीय-उवणीयवयणं वदिस्सामीति अवणीय-उवणीयवयणं वएज्जा, १२. तीयवयणं वदिस्सामीति तीयवयणं वएज्जा, १३. पडुप्पन्नवयण वदिस्सामीति पडुप्पन्नवयणं वएज्जा, १४. अणागयवयण वदिस्सामीति अणागयवयणं वएज्जा, १५. पच्चक्खवयणं वदिस्सामीति पच्चक्खवयणं वएज्जा°, १६. परोक्खवयणं वदिस्सामीति परोक्खवयणं वएज्जा ॥

अणुवीइ णिट्ठाभासि-पदं

५. 'इत्थी वेस, पुरिस वेस, णपुंसग वेस'[2], एवं[3] वा चेयं, अण्णं[4] वा चेयं अणुवीइ णिट्ठाभासी समियाए संजए भासं भासेज्जा, इच्चेयाइं आयतणाइं उवातिकम्म ॥

भासज्जात-पदं

६. अह भिक्खू जाणेज्जा चत्तारि भासज्जायाइं, तं जहा—सच्चमेगं[5] पढमं भासजायं, बीयं मोसं, तइयं सच्चामोसं, जं णेव सच्चं णेवमोसं णेव सच्चामोसं—असच्चामोस णाम तं चउत्थं भासज्जात ॥

७. से बेमि—जे अतीता जे य पडुप्पन्ना जे य अणागया अरहंता भगवंतो सव्वे ते एयाणि चेव चत्तारि भासज्जायाइं भासिंसु वा, भासंति वा, भासिस्संति वा, पण्णविंसु वा, पण्णवेंति वा, पण्णविस्सति वा ॥

८. सव्वाइं च णं एयाणि अचित्ताणि वण्णमंताणि गंधमंताणि रसमंताणि फासमंताणि चयोवचइयाइं[6] विपरिणामधम्माइं[7] भवंतीति अक्खायाइं[8] ॥

९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—पुव्वं भासा अभासा, भासिज्जमाणी भासा भासा, भासासमयविइक्कंता[9] भासिया भासा अभासा ॥

---

१. सं० पा०—वएज्जा जाव परोक्खवयणं ।

२. इत्थीवेद पुंवेय णपुंसगवेय (घ, छ, ब) ।

३. एयं (घ, छ) ।

४. अण्णहा (अ, च, छ, ब) ।

५. °मेय (अ, घ, छ); °मेतं (क) ।

६. चओवए (अ); चयोवचयाइं (छ); चयोवचयमंताणि (ब) ।

७. विविहपरिणाम° (च, छ) ।

८. समक्खयाइं (अ) ।

९. °विइक्कंतं च णं (क, घ, च, छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सावज्ज-भासा-पदं

१०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—जा य भासा सच्चा, जा य भासा मोसा, जा य भासा सच्चामोसा, जा य भासा असच्चामोसा, तहप्पगारं भासं सावज्जं सकिरियं कक्कसं कडुयं निट्ठुरं फरुसं अण्हयकरिं छेयणकरिं भेयणकरिं परितावणकरिं उद्दवणकरिं भूतोवघाइयं अभिकंख 'णो भासेज्जा'[1] ।।

असावज्ज-भासा-पदं

११. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—जा य भासा सच्चा सुहुमा, जा य भासा असच्चामोसा, तहप्पगारं भासं असावज्जं अकिरियं[2] °अकक्कसं अकडुयं अनिट्ठुरं अफरुसं अणण्हयकरिं अछेयणकरिं अभेयणकरिं अपरितावणकरिं अणुद्दवणकरिं° अभूतोवघाइयं अभिकंख[3] भासेज्जा ।।

आमंतणी-भासा-पदं

१२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पुमं आमंतेमाणे आमंतिते वा अपडिसुणेमाणे णो एवं वएज्जा—'होले ति वा, गोले ति वा'[4], वसुले ति वा, कुपक्खे ति वा घडदासे ति वा, साणे ति वा, तेणे ति वा, चारिए ति वा, माई ति वा, मुसावाई ति वा 'इच्चेयाइं तुमं एयाइं'[5] ते जणगा वा—एतप्पगारं[6] भासं सावज्जं सकिरियं जाव भूतोवघाइयं अभिकंख नो भासेज्जा ।।

१३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पुमं आमंतेमाणे आमंतिए वा अपडिसुणेमाणे एवं वएज्जा—अमुगे ति वा, आउसो ति वा, आउसंतो[7] ति वा, सावगे ति वा, उपासगे ति वा, धम्मिए ति वा, धम्मपिये ति वा—एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव अभूतोवघाइयं अभिकंख भासेज्जा ।।

१४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा इत्थिं आमंतेमाणे आमंतिए य अपडिसुणेमाणी नो एवं वएज्जा—होले ति वा, गोले ति वा[8], °वसुले ति वा, कुपक्खे ति वा, घडदासी ति वा, साणे ति वा, तेणे ति वा, चारिए ति वा, माई ति वा, मुसावाई ति वा, इच्चेयाइं तुमं एयाइं ते जणगा वा—एतप्पगारं भासं सावज्जं जाव भूतोवघाइयं अभिकंख णो भासेज्जा° ।।

---

१. णो भासं भासेज्जा (अ, ब); भासं णो भासेज्जा (घ)।
२. सं० पा०—अकिरियं जाव अभूतोवघाइयं।
३. अभिकंख भासं (अ, घ, छ)।
४. होले इ वा गोले इ वा (घ); होलि त्ति वा गोलि त्ति वा (छ)।
५. इतियाइं तुमं इतियाइं (अ); एयाइं तुमं° (क, च) एतिया तुमं° (ब)।
६. तहप्पगारं (छ)।
७. आउसतारो (क, घ, छ)।
८. सं० पा०—गोले ति वा इत्थीगमेण णेतव्वं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा इत्थियं आमंतेमाणे आमंतिए य अपडिसुणेमाणी एवं वएज्जा—आउसो ति वा, 'भगिणी ति वा'[1], भगवई ति वा, साविगे ति वा, उवासिए ति वा, धम्मिए ति वा, धम्मपिये[2] ति वा—एतप्पगारं भासं असावज्जं जाव अभूतोवघाइयं अभिकंख भासेज्जा ।।

विधि-निसिद्ध-भासा-पदं

१६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो एवं वएज्जा—णभोदेवे[3] ति वा, गज्जदेवे[4] ति वा, विज्जुदेवे ति वा, पवुट्ठदेवे[5] ति वा, निवुट्ठदेवे ति वा, पडउ वा वासं मा वा पडउ, णिप्फज्जउ वा सस्सं[6] मा वा णिप्फज्जउ, विभाउ वा रयणी मा वा विभाउ, उदेउ वा सूरिए मा वा उदेउ, सो वा राया जयउ मा वा जयउ—णो एतप्पगारं भासं भासेज्जा पण्णवं ।।

१७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अंतलिक्खे ति वा, गुज्झाणुचरिए ति वा, संमुच्छिए ति वा, णिवइए[7] ति वा 'पओए, वएज्ज'[8] वा वुट्ठबलाहगे ति वा ।।

१८. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति बेमि ।।

बीओ उद्देसो

कक्कस-भासा-पदं

१९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं रूवाइं पासेज्जा तहावि ताइं णो एवं वएज्जा, तं जहा—गंडी गंडी ति वा, कुट्ठी कुट्ठी ति वा,[9] •रायंसी रायंसी ति वा, अवमारियं अवमारिए ति वा, काणियं काणिए ति वा, झिमियं झिमिए ति वा, कुणियं कुणिए ति वा, खुज्जियं खुज्जिए ति वा, उदरी उदरी ति वा, मूयं मूए ति वा, सूणियं सूणिए ति वा, गिलासिणी गिलासिणी ति वा, वेवई वेवई ति वा, पीढसप्पी पीढसप्पी ति वा, सिलिवयं सिलिवए ति वा°, महुमेहणी महुमेहणी[10] ति वा, हत्थछिन्नं हत्थछिन्ने ति वा, [11]•पादछिन्नं पादछिन्ने ति वा, नक्कछिन्नं नक्कछिन्ने ति वा, कण्णछिन्नं कण्णछिन्ने ति वा, ओट्ठ-

---

१. भगिणि ति वा भोई ति वा (क, घ, च) ।
२. धम्मिणिए (क) ।
३. णभं देवे (घ) ।
४. गज्जं देवं (ब) ।
५. पवुट्ठो° (अ) ।
६. सासं (अ, ब) ।
७. णिवडिए (च) ।
८. तओ एवं वदेज्जा (छ) ।
९. सं० पा०—कुट्ठी ति वा जाव महुमेहणी ।
१०. महुमेही (छ) ।
११. सं० पा०—एवं पादणक्ककण्णउट्ठच्छिन्नेति वा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छिन्नं° ओट्ठछिन्ने ति वा"[1] जे यावण्णे तहप्पगारे तहप्पगाराहिं[2] भासाहिं बुइया-बुइया[3] कुप्पंति माणवा। ते यावि तहप्पगाराहिं भासाहिं अभिकंख णो भासेज्जा॥

अकक्कस-भासा-पदं

२०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं रूवाइं पासेज्जा तहावि ताइं एवं वएज्जा[4] तं जहा—ओयंसी ओयंसी ति वा, तेयंसी तेयंसी ति वा, वच्चंसी वच्चंसी ति वा, जसंसी जसंसी ति वा, अभिरूवं अभिरूवे ति वा, पडिरूवं पडिरूवे ति वा, पासाइयं पासाइए ति वा, दरिसणिज्जं दरिसणीए ति वा, जे यावण्णे तहप्पगारा तहप्पगाराहिं[5] भासाहिं बुइया-बुइया णो कुप्पंति माणवा। ते यावि तहप्पगारा एयप्पगाराहिं[6] भासाहिं अभिकंख भासेज्जा[7]॥

सावज्ज-असावज्ज-भासा-पदं

२१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं रूवाइं पासेज्जा, तं जहा—वप्पाणि वा[8], °फलिहाणि वा, पागाराणि वा, तोरणाणि वा, अग्गलाणि वा, अग्गल-पासगाणि वा, गड्डाओ वा, दरीओ वा, कूडागाराणि वा, पासादाणि वा, णूम-गिहाणि वा, रुक्ख-गिहाणि वा, पव्वय-गिहाणि वा, रुक्खं वा चेइय-कडं, थूभं वा चेइय-कडं, आएसणाणि वा, आयतणाणि वा, देवकुलाणि वा, सहाओ वा, पवाओ वा, पणिय-गिहाणि वा, पणिय-सालाओ वा, जाण-गिहाणि वा, जाण-सालाओ वा, सुहा-कम्मंताणि वा, दब्भ-कम्मंताणि वा, वद्ध-कम्मंताणि वा, वक्क-कम्मंताणि वा, वण-कम्मंताणि वा, इंगाल-कम्मंताणि वा, कट्ठ-कम्मंताणि वा, सुसाण-कम्मंताणि वा, संति-कम्मंताणि वा, गिरि-कम्मंताणि वा, कंदर-कम्मंताणि वा, सेलोवट्ठाण-कम्मंताणि वा,° भवणगिहाणि वा—तहावि ताइं णो एवं वएज्जा, तं जहा—सुकडे ति वा, सुट्ठुकडे ति वा, 'साहुकडे ति वा, कल्लाणे ति वा'[9], करणिज्जे ति वा—एयप्पगारं भासं सावज्जं[10] °सकिरियं कक्कसं कडुयं निट्ठुरं फरुसं अण्हयकरिं छेयणकरिं भेयणकरिं परितावणकरिं उद्दवणकरिं भूतोवघाइयं अभिकंख° णो भासेज्जा॥

२२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं रूवाइं पासेज्जा, तं जहा—

१. एवं पाद नक्क कण्ण ओट्ठ° (अ); एवं पाद कण्ण नक्क° (छ, ब)।
२. एयप्प° (क, छ)।
३. × (अ)।
४. भासेज्जा (छ)।
५. एयप्प° (अ, घ, च)।
६. पूर्व सूत्रे 'तहप्पगाराहिं' विद्यते, किन्तु अत्र प्रतिषु तथा नास्ति।
७. भासेज्जा। तहप्पगारं भासं असावज्जं जाव भासेज्जा (अ, ब)।
८. सं० पा०—वप्पाणि वा जाव भवणगिहाणि।
९. साहुकल्लाणं ति वा (अ, छ)।
१०. सं० पा०—सावज्जं जाव णो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वप्पाणि वा जाव भवणगिहाणि वा—तहावि ताइं एवं वएज्जा, तं जहा—आरंभकडे ति वा, सावज्जकडे ति वा, पयत्तकडे ति वा, पासादियं पासादिए ति वा, दरिसणीयं दरिसणीए ति वा, अभिरूवं अभिरूवे ति वा, पडिरूवं पडिरूवे ति वा— एयप्पगारं भासं असावज्जं[1] °अकिरियं अकक्कसं अकडुयं अनिट्ठुरं अफरुसं अणण्हयकरिं अछेयणकरिं अभेयणकरिं अपरितावणकरिं अणुद्दवणकरिं अभूतोवघाइयं अभिकंख° भासेज्जा ॥

२३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उवक्खडियं पेहाए तहावि[2] तं णो एवं वएज्जा, तं जहा—सुकडे ति वा, सुट्ठुकडे ति वा, साहुकडे ति वा, कल्लाणे ति वा, करणिज्जे ति वा—एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव भूतोवघाइयं अभिकंख णो भासेज्जा ॥

२४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उवक्खडियं पेहाए एवं वएज्जा, तं जहा—आरंभकडे ति वा, सावज्जकडे ति वा, पयत्तकडे ति वा, भद्दयं भद्दए ति वा, ऊसढं ऊसढे ति वा, रसियं रसिए ति वा, मणुण्णं मणुण्णे ति वा—एयप्पगारं[3] भासं असावज्जं जाव अभूतोवघाइयं अभिकंख भासेज्जा ॥

२५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा मणुस्सं[4] वा, गोणं वा, महिसं वा, मिगं वा, पसुं वा, पक्खि वा, सरीसिवं वा, जलयरं वा, से तं[5] परिवूढकायं पेहाए णो एवं वएज्जा—थूले[6] ति वा, पमेइले ति वा, वट्टे ति वा, वज्झे ति वा, पाइमे ति वा—एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव भूतोवघाइयं अभिकंख णो भासेज्जा ॥

२६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा मणुस्सं[7] °वा, गोणं वा, महिसं वा, मिगं वा, पसुं वा, पक्खि वा, सरीसिवं वा°, जलयरं वा, से तं परिवूढकायं पेहाए एवं वएज्जा, तं जहा—परिवूढकाए ति वा, उवचियकाए ति वा, थिरसंघयणे ति वा, चियमंससोणिए ति वा, बहुपडिपुण्णइंदिए ति वा—एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव अभूतोवघाइयं अभिकंख भासेजा ॥

२७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा विरूवरूवाओ गाओ पेहाए णो एवं वएज्जा, तं जहा—गाओ दोज्झाओ[8] ति वा, दम्मे[9] ति वा, गोरहे[10] ति वा, 'वाहिमा ति वा

---

१. सं० पा०—असावज्जं जाव भासेज्जा ।
२. तहाविहं (घ, ब) ।
३. तहप्प° (अ, च) ।
४. माणुस्सं (घ, छ) ।
५. तं (छ) ।
६. थुल्ले (अ, क, च, छ) ।
७. सं० पा०—मणुस्सं जाव जलयरं ।
८. दोज्झा (अ, क, च, छ, ब) ।
९. दम्मा (अ, च, ब) ।
१०. गोरहा (अ, च, ब) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रहजोग्गाति वा"[1]—एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव भूतोवघाइयं अभिकंख णो भासेज्जा ।।

२८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा विरूवरूवाओ गाओ पेहाए एवं वएज्जा, तं जहा—जुवंगवे ति वा, धेणू ति वा, रसवती ति वा, हस्से[2] ति वा, महल्लए[3] ति वा, महव्वए ति वा संवहणे ति वा—एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव अभूतोवघाइयं अभिकंख भासेज्जा ।।

२९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा **तहेव गंतुमुज्जाणाइं पव्वयाइं वणाणि य[4] रुक्खा महल्ला पेहाए** णो एवं वएज्जा, तं जहा—पासायजोग्गा ति वा, 'गिहजोग्गा ति वा, तोरणजोग्गा'[5] ति वा, 'फलिहजोग्गा ति वा, अग्गल'[6]-नावा-उदगदोणि-पीढ-चंगबेर[7]-णंगल-कुलिय-जंतलट्ठी-णाभि-गंडी-आसण-सयण-जाण-उवस्सय-जोग्गा ति वा—एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव भूतोवघाइयं अभिकंख णो भासेज्जा ।।

३०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा **तहेव गंतुमुज्जाणाइं पव्वयाणि वणाणि य रुक्खा महल्ला पेहाए** एवं वएज्जा, तं जहा—जातिमंता ति वा, दीहवट्टा ति वा, महालया ति वा, पयायसाला ति वा, विडिमसाला ति वा, पासाइया ति वा, दरिसणीयाति वा, अभिरूवा ति वा, पडिरूवा ति वा—एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव अभूतोवघाइयं अभिकंख भासेज्जा ।।

३१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुसंभूया वणफला [अंबा ?] पेहाए तहावि ते णो एवं वएज्जा, तं जहा—पक्का ति वा, पायखज्जा ति वा, वेलोचिया[8] ति वा, टाला ति वा, वेहिया ति वा—एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव भूतोवघाइयं अभिकंख णो भासेज्जा ।।

३२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुसंभूया 'वणफला अंबा'[9] पेहाए एवं वएज्जा, तं जहा—असंथडा इ वा, बहुणिवट्टिमफला ति वा, बहुसंभूया इ वा, भूयरूवा ति वा—एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव अभूतोवघाइयं अभिकंख भासेज्जा ।।

३३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुसंभूयाओ ओसहीओ पेहाए तहावि ताओ णो एवं वएज्जा, तं जहा—पक्का ति वा, नीलिया ति वा, छवीया[10] ति वा, लाइमा ति वा, भज्जिमा ति वा, बहुखज्जा ति वा—एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव भूतोवघाइयं अभिकंख णो भासेज्जा ।।

---

१. वाहनयोग्यो रथयोग्यः (वृ) ।
२. हस्से (घ, छ); रहस्से (ब) ।
३. महल्ले (छ, ब) ।
४. वा (च, ब) ।
५. तोरणजोग्गा ति वा गिहजोग्गा (अ, ब) ।
६. अग्गलजोग्गा ति वा फलिह° (च) ।
७. सिंगबेर (अ, ब) ।
८. वेलोविगा (अ); वेलोतिया (क, घ, च); वेलोविया (ब) ।
९. वणफणा (क, च, ब); फलअंबा (वृ) ।
१०. छवी (अ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहुसंभूयाओ ओसहीओ पेहाए एवं वएज्जा, तं जहा—रूढा ति वा, बहुसंभूया ति वा, थिरा ति वा, ऊसढा ति वा, गब्भिया ति वा, पसूया ति वा ससारा[1] ति वा—एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव अभूतोवघाइयं अभिकंख भासेज्जा ॥

३५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं सद्दाइं सुणेज्जा, तहावि ताइं णो एवं वएज्जा, तं जहा—सुसद्दे ति वा, 'दुसद्दे ति वा'[2]—एयप्पगारं भासं सावज्जं जाव भूतोवघाइयं अभिकंख णो भासेज्जा ॥

३६. 'से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जहा वेगइयाइं सद्दाइं सुणेज्जा'[3], ताइं एवं वएज्जा, तं जहा—सुसद्दं सुसद्दे ति वा, 'दुसद्दं दुसद्दे ति वा'[4]—एयप्पगारं भासं असावज्जं जाव अभूतोवघाइयं अभिकंख भासेज्जा ॥

३७. एवं रूवाइं—कण्हे ति वा, णीले ति वा, लोहिए ति वा, हालिद्दे ति वा, सुकिल्ले ति वा,
गंधाइं—सुब्भिगंधे ति वा, दुब्भिगंधे ति वा,
रसाइं—तित्ताणि वा, कडुयाणि वा, कसायाणि वा, अंबिलाणि वा, महुराणि वा,
फासाइं—कक्खडाणि वा, मउयाणि वा, गुरुयाणि वा, लहुयाणि वा, सीयाणि वा, उसिणाणि वा, णिद्धाणि वा, लुक्खाणि वा ॥

अणुवीइ णिट्ठाभासि-पदं

३८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा वंता 'कोहं च माणं च मायं च लोभं च'[5], अणुवीइ णिट्ठाभासी णिसम्मभासी अतुरियभासी विवेगभासी समियाए संजए भासं भासेज्जा ॥

३९. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति बेमि ॥

---

१. ससारा (अ, छ) ।
२. × (च, छ) ।
३. × (अ, क, च, छ, ब) ।
४. × (च, छ) ।
५. कोहवयणं माणं वा ४ (क, घ, च, ब) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचमं अज्झयणं

वत्थेसणा

पढमो उद्देसो

वत्थजाय-पदं

१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं एसित्तए, सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा, तं जहा--जंगियं वा, भंगियं वा, साणयं वा, पोत्तगं वा, खोमियं वा, तूलकडं वा, तहप्पगारं वत्थं[1]—

२. जे णिग्गंथे तरुणे जुगवं[2] बलवं अप्पायंके थिरसंघयणे, से एगं वत्थं धारेज्जा, णो बितियं ॥

३. जा णिग्गंथी, सा चत्तारि संघाडीओ धारेज्जा—एगं दुहत्थवित्थारं, दो तिहत्थवित्थाराओ, एगं चउहत्थवित्थारं, तहप्पगारेहिं[3] वत्थेहिं असंविज्ज-माणेहिं[4] अह पच्छा एगमेगं संसीवेज्जा ॥

अद्धजोयण-मेरा-पदं

४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा परं अद्धजोयण-मेराए वत्थ-पडियाए नो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

अस्सिंपडियाए वत्थ-पदं

५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं[5] •भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएति। तं तहप्पगारं वत्थं

---

१. धारयेदित्युत्तरेण सम्बन्धः (वृ) ।

२. जुववं (घ) ।

३. एएहिं (अ, च, ब) ।

४. अविज्ज० (अ, ब) ।

५. सं० पा०—पाणाइं जहा पिंडेसणाए ।

पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा° ॥

६. [1]°से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएति। तं तहप्पगारं वत्थं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएति। तं तहप्पगारं वत्थं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएति। तं तहप्पगारं वत्थं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-वत्थ-पदं

९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ। तं तहप्पगारं वत्थं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

१० से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—बहवे समण-माहण-

---

१. सं० पा०—एवं बहवे साहम्मिया एगं साहम्मिणिं बहवे साहम्मिणीओ बहवे समणमाहणस्स तहेव, पुरिसंतरं जहा पिंडेसणाए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ। तं तहप्पगारं वत्थं अपुरिसंतरकडं, अबहिया णीहडं, अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं, अणासेवितं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

११. अह पुण एवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडं, बहिया णीहडं, अत्तट्ठियं, परिभुत्तं, आसेवियं—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा° ॥

भिक्खु-पडियाए-कीयमाइ-वत्थ-पदं

१२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—असंजए भिक्खु-पडियाए कीयं वा, धोयं वा, रत्तं वा, घट्ठं वा, मट्ठं वा, संमट्ठं[1] वा, संपधूमियं[2] वा, तहप्पगारं वत्थं अपुरिसंतरकडं[3], °अबहिया णीहडं, अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं, अणासेवितं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

१३. अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडं[4], °बहिया णीहडं, अत्तट्ठियं, परिभुत्तं, आसेवियं—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा ॥

महद्धणमुल्लवत्थ-पदं

१४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जाइं पुण वत्थाइं जाणेज्जा विरूवरूवाइं महद्धण-मोल्लाइं तं जहा—आजिणगाणि[5] वा, सहिणाणि[6] वा, सहिण-कल्लाणाणि वा, आयकाणि[7] वा, कायकाणि[8] वा, खोमयाणि वा, दुगुल्लाणि वा, मलयाणि वा, पत्तुण्णाणि वा, अंसुयाणि वा, चीणंसुयाणि वा, देसरागाणि[9] वा, अमिलाणि वा, गज्जलाणि वा, फालियाणि[10] वा, कोयहा[वा?]णि[11] वा, कंबलगाणि वा, पावाराणि वा—अण्णयराणि वा तहप्पगाराइं वत्थाइं महद्धणमोल्लाइं[12]—°अफासुयाइं अणेसणिज्जाइं ति मण्णमाणे० लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

अजिणवत्थ-पदं

१५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण आईणपाउरणाणि वत्थाणि[13] जाणेज्जा,

---

१. संमट्ठं (क)।
२. °धूवितं (अ, छ)।
३. सं० पा०—अपुरिसंतरकडं जाव अणासेवितं।
४. सं० पा०—पुरिसंतरकडं जाव पडिगाहेज्जा।
५. आतिणाणि (अ); अजिणगाणि (क, च)।
६. सहणाणि (छ)।
७. आयाणाणि (अ, क, घ, च); आयाण (ब)।
८. कायाणाणि (घ, ब)।
९. वेसरागाणि (अ); देसराणि (छ); देसराणि (ब)।
१०. फलियाणि (क, च, छ, ब)।
११. कायहाणि (अ); कोहयाणि (घ); निशीथस्य १७ उद्देशकस्य चूर्णौ 'कोतवाणि' इति पाठो लभ्यते।
१२. सं० पा०—मद्धणमोल्लाइं...लाभे।
१३. वा वत्थाणि वा (क, छ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं जहा—उद्दाणि[1] वा, पेसाणि[2] वा, पेसलेसाणि वा, किण्हमिगाईणगाणि वा, णीलमिगाईणगाणि वा, गोरमिगाईणगाणि वा, कणगाणि वा, कणगकंताणि[3] वा, कणगपट्टाणि वा, कणगखइयाणि वा, कणगफुसियाणि वा, वग्घाणि वा, विवग्घाणि वा, आभरणाणि वा, आभरणविचित्ताणि वा—अण्णयराणि वा तहप्पगाराइं आईणपाउरणाणि वत्थाणि[4]—॰अफासुयाइं अणेसणिज्जाइं ति मण्णमाणे॰ लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

वत्थपडिमा-पदं

१६. इच्चेयाइं आयतणाइं उवाइकम्म, अह भिक्खू जाणेज्जा चउहिं पडिमाहिं वत्थं एसित्तए ॥

१७. तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उद्दिसिय-उद्दिसिय वत्थं जाएज्जा, तं जहा—जंगियं वा, भंगियं वा, साणयं वा, पोत्तयं वा, खोमियं वा, तूलकडं वा—तहप्पगारं वत्थं सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा—पढमा पडिमा ॥

१८. अहावरा दोच्चा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पेहाए वत्थं जाएज्जा, तं जहा—गाहावइं वा[5], ॰गाहावइ-भारियं वा, गाहावइ-भगिणिं वा, गाहावइ-पुत्तं वा, गाहावइ-धूयं वा, सुण्हं वा, धाइं वा, दासं वा, दासिं वा, कम्मकरं वा॰, कम्मकरिं वा। से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भगिणि ! त्ति वा दाहिसि मे एत्तो अण्णतरं वत्थं ? तहप्पगारं वत्थं सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फासुयं[6] ॰एसणिज्जं ति मण्णमाणे॰ लाभे संते पडिगाहेज्जा—दोच्चा पडिमा ॥

१९. अहावरा तच्चा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा, तं जहा—अंतरिज्जगं वा उत्तरिज्जगं वा—तहप्पगारं वत्थं सयं वा णं जाएज्जा[7] ॰परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते॰ पडिगाहेज्जा—तच्चा पडिमा ॥

२०. अहावरा चउत्था पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उज्झिय-धम्मियं वत्थं जाएज्जा, ज चऽण्णे बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा णावकंखंति, तहप्पगारं उज्झिय-धम्मियं वत्थं सयं वा णं जाएज्जा, परो वा से[8] देज्जा—

---

१. उद्दबाणि (घ); ओड्डाणि (छ)।
२. पेसणाणि (छ)।
३. कणगकंताणि (अ, क, घ, च, छ, ब); कनककान्तीनि (वृ)।
३. सं० पा०—वत्थाणि…लाभे।
५. सं० पा०—गाहावइं वा जाव कम्मकरिं।
६. सं० पा०—फासुयं…लाभे संते जाव पडिगाहेज्जा।
७. सं० पा०—जाएज्जा जाव पडिगाहेज्जा।
८. णं (अ, ब)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

फासुयं[1] •एसणिज्जं[2] ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—चउत्था पडिमा ॥

२१. इच्चेयाणं चउण्हं पडिमाणं[3] •अण्णयरं पडिमं पडिवज्जमाणे णो एवं वएज्जा—मिच्छा पडिवन्ना खलु एते भयंतारो, अहमेगे सम्मं पडिवन्ने ।
जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ताणं विहरंति, जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जित्ताणं विहरामि, सव्वे वे ते उ जिणाणाए उवट्ठिया, अण्णोण्णसमाहीए एवं च णं विहरंति° ॥

संगार-वयणपुव्वं वत्थ-पदं

२२. सिया णं एयाए एसणाए एसमाणं परो वएज्जा—आउसंतो ! समणा ! एज्जाहि तुमं मासेण वा, दसराएण वा, पंचराएण वा, सुए वा, सुयतरे[4] वा, तो ते वयं आउसो ! अण्णयरं वत्थं दाहामो[5] । एयप्पगारं[6] णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे[7] संगार-वयणे पडिसुणित्तए, अभिकंखसि मे दाउं ? इयाणिमेव दलयाहि ।
से सेवं[8] वयंतं परो वएज्जा—आउसंतो ! समणा ! अणुगच्छाहि, तो ते वयं अण्णतरं वत्थं दाहामो । से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे संगार-वयणे पडिसुणेत्तए, अभिकंखसि मे दाउं ? इयाणिमेव दलयाहि ।
से सेवं वयंतं परो णेत्ता वदेज्जा—आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा आहरेयं वत्थं समणस्स दाहामो । अवियाइं वयं पच्छावि अप्पणो सयट्ठाए पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स वत्थं[9] चेइस्सामो । एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म तहप्पगारं वत्थं—अफासुयं[10] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

वत्थ-आघंसण-पदं

२३. सिया णं परो णेत्ता वएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा आहरेयं वत्थं—सिणाणेण वा"[11], •कक्केण वा, लोद्धेण वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा,

---

१. सं० पा०—फासुयं पडिगाहेज्जा ।
२. °यं (अ) ।
३. स० पा०—पडिमाणं जहा पिंडेसणाए ।
४. °तराए (घ, च, छ, ब) ।
५. दासामो (अ, च, ब) ।
६. तहप्प° (अ) ।
७. °गारं (छ) ।
८. णेवं (क, घ, च, छ); एवं (ब) ।
९. जाव (अ, क, घ, च, छ, ब) ।
१०. सं० पा०—अफासुयं जाव णो ।
११. सं० पा०—सिणाणेण वा जाव आघंसित्ता ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पउमेण वा° आघंसित्ता वा, पघंसित्ता वा समणस्स णं दासामो।" एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा मा एयं तुमं वत्थं सिणाणेण वा जाव आघंसाहि वा पघंसाहि वा, अभिकंखसि मे दाउं ? एमेव दलयाहि।"

से सेवं वयंतस्स परो सिणाणेण वा जाव आघंसित्ता वा पघंसित्ता वा दलएज्जा, तहप्पगारं वत्थं—अफासुयं[1] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

वत्थ-उच्छोलण-पदं

२४. से णं परो णेत्ता वएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा आहरेयं वत्थं—सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेत्ता वा[2], पधोवेत्ता[3] वा समणस्स णं दासामो।" एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा मा एयं तुमं वत्थं सिओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेहि वा पधोवेहि वा, अभिकंखसि[4] •मे दाउं ? एमेव दलयाहि।"

से सेवं वयंतस्स परो सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेत्ता वा पधोवेत्ता वा दलएज्जा, तहप्पगारं वत्थं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

वत्थ-विसोहण-पदं

२५. से णं परो णेत्ता वएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा आहरेयं वत्थं—कंदाणि वा[5], •मूलाणि वा, [तयाणि वा ?], पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा°, हरियाणि वा विसोहित्ता समणस्स णं दासामो।" एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा मा एयाणि तुमं कंदाणि वा जाव हरियाणि वा विसोहेहि, णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे वत्थे पडिगाहित्तए।"

से सेवं वयंतस्स परो कंदाणि वा जाव हरियाणि वा विसोहित्ता दलएज्जा, तहप्पगारं वत्थं—अफासुयं[6] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

वत्थ-पडिलेहण-पदं

२६. सिया से परो णेत्ता वत्थं णिसिरेज्जा। से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा तुमं चेव णं संतियं वत्थं अंतोअंतेणं पडिलेहिस्सामि ॥

---

१. सं० पा०—अफासुयं जाव णो।
२. × (छ)।
३. पच्छोलेत्ता (छ)।
४. सं० पा०—अभिकंखसि सेसं तहेव जाव णो।
५. सं० पा०—कंदाणि वा जाव हरियाणि।
६. सं० पा०—अफासुयं जाव णो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२७. केवली बूया आयाणमेयं—'वत्थंतेण उ'[1] बद्धे सिया कुंडले वा, गुणे वा, मणी वा[2], •मोत्तिए वा, हिरण्णे वा, सुवण्णे वा, कडगाणि वा, तुडियाणि वा, तिसरगाणि वा, पालंबाणि वा, हारे वा, अद्धहारे वा, एगावली वा, मुत्तावली वा, कणगावली वा° रयणावली वा, पाणे वा, बीए वा, हरिए वा।
अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा[3] •एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो°, जं पुव्वामेव वत्थं अंतोअंतेण पडिलेहिज्जा ॥

सअंडाइ-वत्थ-पदं

२८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—सअंडं[4] •सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°संताणगं, तहप्पगारं वत्थं—अफासुयं[5] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

अप्पंडाइ-वत्थ-पदं

२९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—अप्पंडं[6] •अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° संताणगं, अणलं अथिरं अधुवं अधारणिज्जं, रोइज्जंतं ण रुच्चइ, तहप्पगारं वत्थं—अफासुयं[7] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

३०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण वत्थं जाणेज्जा—अप्पंडं[8] •अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° संताणगं, अलं थिरं धुवं धारणिज्जं, रोइज्जंतं रुच्चइ, तहप्पगारं वत्थं—फासुयं[9] •एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा ॥

वत्थ-परिकम्म-पदं

३१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "णो णवए मे वत्थे" त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण[10] सिणाणेण वा[11], •कक्केण वा, लोद्धेण वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघंसेज्ज वा°, पघंसेज्ज वा ॥

३२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "णो णवए मे वत्थे" त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण

---

१. वत्थे ते उ (च); वत्थेण उ (घ, ब)।
२. सं० पा०—मणी वा जाव रयणावली।
३. सं० पा०—पुव्वोवदिट्ठा जाव जं।
४. सं० पा०—सअंडं जाव संताणगं।
५. सं० पा०—अफासुयं जाव णो।
६,८. सं० पा०—अप्पंडं जाव संताणगं।
७. सं० पा०—अफासुयं जाव णो।
९. सं० पा०—फासुयं जाव पडिगाहेज्जा।
१०. निशीथे (१४।१५) 'बहुदेवसिएण' पाठो लभ्यते। आचारांगस्य चूर्णावपि (पृ० ३६४) 'बहुदेवसिएण' पाठोस्ति, किन्तु तस्य वृत्तौ (पृ० ३६४) 'बहुदेसिएण' पाठो व्याख्यातोस्ति। प्रतिषु चापि एष एव लभ्यते तेनात्र अयमेव पाठः स्वीकृतः।
११. सं० पा०—सिणाणेण वा जाव पघंसेज्ज।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सीओदग-वियडेण वा[1], •उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा°, पधोएज्ज वा ।।

३३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "दुब्भिगंधे मे वत्थे" त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण सिणाणेण वा[2], •कक्केण वा, लोद्धेण वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघंसेज्ज वा, पघंसेज्ज वा ।।

३४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "दुब्भिगंधे मे वत्थे" त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा° ।।

वत्थ-आयावण-पदं

३५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा, तहप्पगारं वत्थं णो अणंतरहियाए पुढवीए, णो ससणिद्धाए[3] पुढवीए[4], •णो ससरक्खाए पुढवीए, णो चित्तमंताए सिलाए, णो चित्तमंताए लेलुए, कोलावासंसि वा दारुए जीवपइट्ठिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए सउसे सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा °संताणए आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा ।।

३६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा, तहप्पगारं वत्थं थूणंसि वा, गिहेलुगंसि वा, उसुयालंसि[5] वा, कामजलंसि वा, अण्णयरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले णो आयावेज्ज वा, णो पयावेज्ज वा ।।

३७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा, तहप्पगारं वत्थं कुलियंसि वा, भित्तिंसि वा, सिलंसि वा, 'लेलुंसि वा'[6], अण्णतरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए[7] •दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले णो आयावेज्ज वा°, णो पयावेज्ज वा ।।

३८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा वत्थं आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा, तहप्पगारं वत्थं खंधंसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, पासायंसि वा, हम्मियतलंसि वा, अण्णयरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए[8] •दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले णो आयावेज्ज वा°, णो पयावेज्ज वा ।।

---

१. सं० पा०—सीओदग-वियडेण वा जाव पधोएज्जा ।

२. सं० पा०—सिणाणेण वा तहेव सीओदग-वियडेण वा उसिणोदग-वियडेण वा आलावओ ।

३. ससिणि° (क, च) ।

४. सं० पा०—पुढवीए जाव संताणए ।

५. ऊसु° (अ) ।

६. जाव (अ); × (छ) ।

७. सं० पा०—अंतलिक्खजाए जाव णो ।

८. सं० पा०—अंतलिक्खजाए जाव णो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३९. से त्तमादाए एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतमवक्कमेत्ता अहे झामथंडिलंसि वा[1], •अट्ठिरासिंसि किट्टरासिंसि वा, तुसरासिंसि वा, गोमयरासिंसि वा°, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय तओ संजयामेव वत्थं आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा ।।

४०. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं[2], •जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति बेमि° ।।

बीओ उद्देसो

णो धोएज्जा रएज्जा-पदं

४१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहेसणिज्जाइं वत्थाइं जाएज्जा, अहापरिग्गहियाइं वत्थाइं धारेज्जा, णो धोएज्जा णो रएज्जा, णो धोयरत्ताइं वत्थाइं धारेज्जा, अपलिउंचमाणे गामंतरेसु ओमचेलिए । एयं खलु वत्थधारिस्स सामग्गियं ।।

सव्वचीवरमायाए-पदं

४२. से भिक्खु वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसिउकामे सव्वं चीवरमायाए गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ।।

४३. [3]•से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहिया वियार-भूमिं वा, विहार-भूमिं वा णिक्खममाणे वा, पविसमाणे वा सव्वं चीवरमायाए बहिया वियार-भूमिं वा विहार-भूमिं वा णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ।।

४४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे सव्वं चीवरमायाए गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।।

४५. अह पुणेवं जाणेज्जा—तिव्वदेसियं वा वासं वासमाणं पेहाए, तिव्वदेसियं वा महियं सण्णिवयमाणिं पेहाए, महावाएण वा रयं समुद्धुयं पेहाए, तिरिच्छं संपाइमा वा तसा-पाणा संथडा सन्निवयमाणा पेहाए, से एवं णच्चा णो सव्वं चीवरमायाए गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा, बहिया वियार-भूमिं वा विहार-भूमिं वा णिक्खमेज्ज वा पविसेज्ज वा, गामाणुगामं वा दूइज्जेज्जा ।।

---

१. सं० पा०—झामथंडिलंसि वा जाव अण्णयरंसि ।

२. सं० पा०—सामग्गियं ।

३. सं० पा०—एवं बहिया विचारभूमिं वा विहारभूमिं वा गामाणुगामं दूइज्जेजा अह पुणेवं जाणेज्जा तिव्वदेसियं वा वासं वासमाणं पेहाए जहा पिंडेसणाए णवरं सव्वं चीवरमायाए ।

पाडिहारिय-वत्थ-पदं

४६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा एगइओ 'मुहुत्तगं-मुहुत्तगं'[1] पाडिहारियं वत्थं जाएज्जा—एगाहेण[2] वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा, पंचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय उवागच्छेज्जा, तहप्पगारं वत्थं णो अप्पणा गिण्हेज्जा, णो अण्णमण्णस्स देज्जा, णो पामिच्चं कुज्जा, णो वत्थेण वत्थ-परिणामं करेज्जा, णो परं उवसंकमित्तु[3] एवं वदेज्जा—"आउसंतो ! समणा ! अभिकंखसि वत्थं धारेत्तए वा, परिहरित्तए वा ?" थिरं वा णं संतं णो पलिच्छिंदिय-पलिच्छिंदिय परिट्ठवेज्जा । तहप्पगारं 'वत्थं ससंधियं'[4] तस्स चेव णिसिरेज्जा, 'णो णं'[5] साइज्जेज्जा ॥

४७. से एगइओ एयप्पगारं[6] णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म जे भयंतारो तहप्पगाराणि वत्थाणि ससंधियाणि 'मुहुत्तगं-मुहुत्तगं'[7] जाइत्ता[8] एगाहेण[9] वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा, पंचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय उवागच्छंति, तहप्पगाराणि वत्थाणि णो अप्पणा गिण्हंति, णो अण्णमण्णस्स अणुवयंति[10], °णो पामिच्चं करेंति, णो वत्थेण वत्थ-परिणामं करेंति, णो परं उवसंकमित्तु एवं वदेंति—"आउसंतो ! समणा ! अभिकंखसि वत्थं धारेत्तए वा, परिहरेत्तए वा ?" थिरं वा णं संतं णो पलिच्छिंदिय-पलिच्छिंदिय परिट्ठवेंति । तहप्पगाराणि वत्थाणि ससंधियाणि तस्स चेव णिसिरेंति°, णो णं सातिज्जंति, 'से हंता' अहमवि मुहुत्तगं[11] पाडिहारियं वत्थं जाइत्ता एगाहेण[12] वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा, पंचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय उवागच्छिस्सामि । अवियाइं एयं ममेव सिया । माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा ॥

वत्थविक्किया-पदं

४८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो वण्णमंताइं वत्थाइं विवण्णाइं करेज्जा, विवण्णाइं

---

१. मुहुत्तगं (घ, च, छ, ब) ।
२. जाव एगाहेण (अ, क, घ, च, छ, ब) ।
३. °मित्ता (घ, च, छ, ब) ।
४. ससंधियं वत्थं (अ); वत्थं ससंधियं वत्थं (च, छ) ।
५. णो अत्ताणं (अ, क, छ); न अत्ताणं (ब) ।
६. तह° (ब) ।
७. मुहुत्तगं (छ) ।
८. जाएज्जा (छ) ।
९. जाव एगाहेण (अ, क, घ, च, छ, ब) ।
१०. तं चेव जाव णो साइज्जंति बहुवयणेण भासियव्वं (क, च, छ); तं चेव जाव णो साइज्जंति बहुमाणोए भासियव्वं (अ); तं चेव जाव णो साइज्जंति बहुवयणेण भाणियव्वं (घ); तं चेव जाव णो साइज्जंति बहुमाणेणं भासियव्वं (ब); सं० पा०—अणुवयंति तं चेव जाव णो सातिज्जंति बहुवयणेणं भाणियव्वं ।
११. मुहुत्तं (अ, छ, ब) ।
१२. जाव एगाहेण (अ, क, घ, च, छ, ब) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णो वण्णमंताइं करेज्जा, "अण्णं वा वत्थं लभिस्सामि" त्ति कट्टु णो अण्णमण्णस्स देज्जा, णो पामिच्चं कुज्जा, णो वत्थेण वत्थ-परिणामं करेज्जा[1], णो परं उवसंकमित्तु एवं वदेज्जा—"आउसंतो ! समणा ! अभिकंखसि मे वत्थं धारेत्तए वा, परिहरेत्तए वा ?" थिरं वा णं संतं णो पलिच्छिदिय-पलिच्छिदिय परिट्ठवेज्जा, जहा चेयं[2] वत्थं पावगं परो मन्नइ।

परं च णं अदत्तहारिं पडिपहे पेहाए तस्स वत्थस्स णिदाणाए णो तेसिं भीओ उम्मग्गेणं गच्छेज्जा[3], °णो मग्गाओ मग्गं संकमेज्जा, णो गहणं वा, वणं वा, दुग्गं वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खंसि दुरुहेज्जा, णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा सरणं वा सेणं वा सत्थं वा कंखेज्जा, अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज समाहीए°, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

आमोसग-पदं

४९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से विहं सिया। सेज्जं पुण विहं जाणेज्जा - इमंसि खलु विहंसि बहवे आमोसगा वत्थ-पडियाए संपिडिया[4] गच्छेज्जा[5], °णो तेसिं भीओ उम्मग्गेणं गच्छेज्जा, णो मग्गाओ मग्गं संकमेज्जा, णो गहणं वा, वणं वा, दुग्गं वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खंसि दुरुहेज्जा, णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा, सरणं वा, सेणं वा, सत्थं वा कंखेज्जा, अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज समाहीए, तओ संजयामेव° गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ॥

५०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से आमोसगा संपिडिया[6] गच्छेज्जा। तेणं आमोसगा एवं वदेज्जा—आउसंतो ! समणा ! आहरेयं वत्थं, देहि, निक्खिवाहि[7]। °तं णो देज्जा, णो णिक्खिवेज्जा, णो वंदिय-वंदिय जाएज्जा, णो अंजलिं कट्टु जाएज्जा, णो कलुण-पडियाए जाएज्जा, धम्मियाए जायणाए जाएज्जा, तुसिणीय-भावेण वा उवेहेज्जा।

ते णं आमोसगा सयं करणिज्जं ति कट्टु अक्कोसंति वा, बंधंति वा, रुंभंति वा, उद्दवंति वा, वत्थं अच्छिदेज्ज वा, अवहरेज्ज वा, परिभवेज्ज वा। तं णो गामसंसारियं कुज्जा, णो रायसंसारियं कुज्जा, णो परं उवसंकमित्तु बूया—

---

१. कुज्जा (च)।
२. वेयं (अ, च); मेयं (क, घ, ब)।
३. सं० पा०—गच्छेज्जा जाव अप्पुस्सुए······ तओ।
४. संपडिया (क, च, ब)।
५. सं० पा०—गच्छेज्जा जाव गामाणुगामं।
६. पडिया (अ); संपडिया (क,घ, च); संपंडिया (छ)।
७. सं० पा०—निक्खिवाहि जहा इरियाए णाणत्तं वत्थपडियाए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आउसंतो ! गाहावइ ! एए खलु आमोसगा वत्थ-पडियाए सयं करणिज्जं ति कट्टु अक्कोसंति वा, बंधंति वा, रुंभंति वा, उद्दवंति वा, वत्थं अच्छिंदेति वा, अवहरेंति वा, परिभवेंति वा। एयप्पगारं मणं वा, वइं वा णो पुरओ कट्टु विहरेज्जा, अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा° ॥

५१. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं[1], °जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति बेमि° ॥

---

१. सं० पा०—सामग्गियं ।

छट्ठं अज्झयणं

पाएसणा

पढमो उद्देसो

पायजाय-पदं

१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा पायं एसित्तए, सेज्जं पुण पाय जाणेज्जा, तं जहा—अलाउपायं[1] वा, दारुपायं वा, मट्टियापायं वा—तहप्पगारं पायं—

एगपाय-पदं

२. जे निग्गंथे तरुणे जुगवं बलवं अप्पायंके थिरसंघयणे, से एगं पायं धारेज्जा, णो बीयं[2] ॥

अद्धजोयण-मेरा-पदं

३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा परं अद्धजोयण-मेराए पाय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

अस्सिंपडियाए पाय-पदं

४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं[3] •भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएति। तं तहप्पगारं पायं

१. लाउयपायं (क, ख, छ); अलाउयपायं (घ)।

२. बितियं (च, छ, ब)।

३. सं० पा०—पाणाइं जहा पिंडेसणाए चत्तारि आलावगा। पंचमे बहवे समणमाहणा पगणिय-पगणिय तहेव से भिक्खू वा २ अस्संजए भिक्खुपडियाए बहवे समणमाहणा वत्थेसणालावओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—अस्सिपडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएति । तं तहप्पगारं पायं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—अस्सिपडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएति । तं तहप्पगारं पायं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—अस्सिपडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएति । तं तहप्पगारं पायं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

समण-माहणाइ समुद्दिस्स पाय-पदं

८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ । तं तहप्पगारं पायं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, बहिया णीहडं वा अणीहडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

९. से[1] भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—बहवे समण-माहण-

---

१. यद्यपि प्राप्तप्रतिषु 'बहवे समणमाहण' इति सूत्रात् पूर्वं 'अस्संजए भिक्खु-पडियाए' एतत् सूत्रं लभ्यते, किन्तु वस्त्रैषणायाः (१०-१३) क्रमेण पूर्वं 'बहवे समण-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएति । तं तहप्पगारं पायं अपुरिसंतरकडं, अबहिया णीहडं, अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं, अणासेवियं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

१०. अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडं, बहिया णीहडं, अत्तट्ठियं, परिभुत्तं, आसेवियं—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा ।।

भिक्खु-पडियाए कीयमाइ-पदं

११. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—अस्संजए भिक्खु-पडियाए कीयं वा, धोयं वा, रत्तं वा, घट्ठं वा, मट्ठं वा, संमट्ठं वा, संपधूमियं वा—तहप्पगारं पायं अपुरिसंतरकडं, अबहिया णीहडं, अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं, अणासेवियं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

१२. अह पुण एवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडं, बहिया णीहडं, अत्तट्ठियं, परिभुत्तं, आसेवियं—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा °।।

महद्धणमुल्लपाय-पदं

१३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जाइं पुण पायाइं जाणेज्जा विरूवरूवाइं महद्धण-मुल्लाइं, तं जहा—अय-पायाणि वा, तउ[1]-पायाणि वा, तंब-पायाणि वा, सीसग-पायाणि वा, हिरण्ण-पायाणि वा, सुवण्ण-पायाणि वा, रीरिय-पायाणि वा, हारपुड-पायाणि वा, मणि-काय-कंस-पायाणि वा, संख-सिंग-पायाणि वा, दंत-चेल-सेल-पायाणि वा, चम्म-पायाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं महद्धणमुल्लाइं पायाइं—अफासुयाइं[2] °अणेसणिज्जाइं ति मण्ण-माणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।।

पाय-बंधण-पदं

१४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जाइं पुण पायाइं जाणिज्जा विरूवरूवाइं महद्धण-बंधणाइं तं जहा—अयबंधणाणि वा[3], °तउबंधणाणि वा, तंबबंधणाणि वा, सीसगबंधणाणि वा, हिरण्णबंधणाणि वा, सुवण्णबंधणाणि वा, रीरियबंधणाणि

माहण °' सूत्रं तत्पश्चात् 'अस्संजए भिक्खु-पडियाए' एतत् सूत्रं युज्यते, अतः एष एव क्रमोत्र स्वीकृतः । सूत्रस्य विपर्ययो लिपि-दोषेण जात इति प्रतीयते । चूर्णौ वृत्तौ च न व्याख्याते इमे सूत्रे । प्राप्तविपर्ययं परिलक्ष्यैव जयाचार्येण सूत्रस्य विचित्रा गतिरिति संकेतितम् ।

१. तउय (घ) ।

२. स० पा०—अफासुयाइं जाव णो ।

३. सं० पा०—अयबंधणाणि वा जाव चम्म-बंधणाणि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा, हारपुडबंधणाणि वा, मणि-काय-कंस-बंधणाणि वा, संख-सिंग-बंधणाणि वा, दंत-चेल-सेल-बंधणाणि वा°, चम्मबंधणाणि वा—अण्णयराइं वा तहप्प-गाराइं महद्धणबंधणाइं—अफासुयाइं[1] •अणेसणिज्जाइं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।।

पाय-पडिमा-पदं

१५. इच्चेयाइं आयतणाइं[2] उवातिकम्म अह भिक्खू जाणेज्जा चउहिं पडिमाहिं पायं एसित्तए ।।

१६. तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उद्दिसिय-उद्दिसिय पायं जाएज्जा, तं जहा—लाउय-पायं वा, दारु-पायं वा, मट्टिया-पायं वा—तहप्पगारं पायं सयं वा णं जाएज्जा[3], •परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—पढमा पडिमा ।।

१७. अहावरा दोच्चा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा पेहाए पायं जाएज्जा, तं जहा—गाहावइं वा[4], •गाहावइ-भारियं वा, गाहावइ-भगिणिं वा, गाहावइ-पुत्तं वा, गाहावइ-धूयं वा, सुण्हं वा, धाइं वा, दासं वा, दासिं वा, कम्मकरं वा°, कम्मकरिं वा । से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा दाहिसि मे एत्तो अण्णयरं पायं, तं जहा—लाउय-पायं वा, दारु-पायं वा मट्टिया-पायं वा ? तहप्पगारं पायं सयं वा णं जाएज्जा[5], •परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—दोच्चा पडिमा ।।

१८. अहावरा तच्चा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा, संगतियं वा, वेजयंतियं[6] वा—तहप्पगारं पायं सयं वा[7] •णं जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—तच्चा पडिमा ।।

१९. अहावरा चउत्था पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उज्झिय-धम्मियं पायं जाएज्जा, जं चऽण्णे बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमगा णावकंखंति, तहप्पगारं उज्झिय-धम्मियं पायं सयं वा णं[8] •जाएज्जा, परो वा से देज्जा—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा—चउत्था पडिमा ।।

२०. इच्चेयाणं चउण्हं पडिमाणं अण्णयरं पडिमं[9] •पडिवज्जमाणे णो एवं वएज्जा—मिच्छा पडिवन्ना खलु एते भयंतारो, अहमेगे सम्मं पडिवन्ने ।

---

१. सं० पा०—अफासुयाइं जाव णो ।
२. आया° (घ) ।
३. सं० पा०—जाएज्जा जाव पडिगाहेज्जा ।
४. सं० पा०—गाहावइं वा जाव कम्मकरिं ।
५. सं० पा—जाएज्जा जाव पडिगाहेज्जा ।
६. वेजयंति (अ, ब, क, घ, च, छ) ।
७. सं० पा०—सयं वा जाव पडिगाहेज्जा ।
८. सं० पा०—सयं वा णं जाव पडिगाहेज्जा ।
९. सं० पा०—पडिमं जहा पिंडेसणाए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ताणं विहरंति, जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जित्ताणं विहरामि, सव्वे वे ते उ जिणाणाए उवट्ठिया, अण्णोण्णसमाहीए एवं च णं विहरंति ।।

संगार-वयणपुव्वं पाय-पदं

२१. से णं एताए एसणाए एसमाणं परो पासित्ता वएज्जा—आउसंतो ! समणा ! एज्जासि तुमं मासेण वा,[1] °दसराएण वा, पंचराएण वा, सुए वा, सुयतरे वा तो ते वयं आउसो ! अण्णयरं पायं दाहामो । एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे संगार-वयणे पडिसुणित्तए, अभिकंखसि मे दाउं ? इयाणिमेव दलयाहि ।

से सेवं वयंतं परो वएज्जा आउसंतो ! समणा ! अणुगच्छाहि तो ते वयं अण्णतरं पायं दाहामो । से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे संगार-वयणे पडिसुणेत्तए, अभिकंखसि मे दाउं ? इयाणिमेव दलयाहि ।

से सेवं वयंतं परो णेत्ता वदेज्जा आउसो ! त्ति वा, भइणि ! त्ति वा आहरेयं पायं समणस्स दाहामो । अवियाइं वयं पच्छावि अप्पणो सयट्ठाए पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स पायं[2] चेइस्सामो । एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म तहप्पगारं पायं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा° ।।

पाय-अब्भंगण-पदं

२२. से णं परो णेत्ता वएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा आहरेयं पायं—तेल्लेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, 'वसाए वा'[3] अब्भंगेत्ता वा[4], °मक्खेत्ता वा समणस्स णं दासामो ।" एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा मा एयं तुमं पायं तेल्लेण वा जाव अब्भंगाहि वा मक्खाहि वा, अभिकंखसि मे दाउं ? एमेव दलयाहि ।" से सेवं वयंतस्स परो तेल्लेण वा जाव अब्भंगेत्ता वा मक्खेत्ता वा दलएज्जा, तहप्पगारं पायं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

पाय-आघंसण-पदं

२३. से णं परो णेत्ता वएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा आहरेयं पायं—

१. सं० पा० – मासेण वा जहा वत्थेसणाए ।
२. जाव (अ, क, घ, च, छ, ब) ।
३. × (क, च, ब) ।
४. सं० पा०—अब्भंगेत्ता वा तहेव सिणाणाइ तहेव सीओदगादि कंदादि तहेव ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघंसित्ता वा, पघंसित्ता वा समणस्स णं दासामो।" एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा मा एयं तुमं पायं सिणाणेण वा जाव आघंसाहि वा पघंसाहि वा, अभिकंखसि मे दाउं ? एमेव दलयाहि।"

से सेवं वयंतस्स परो सिणाणेण वा जाव आघंसित्ता वा पघंसित्ता वा दलएज्जा, तहप्पगारं पायं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

पाय-उच्छोलण-पदं

२४. से णं परो णेत्ता वएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा आहरेयं पायं—सीओदग-वियडण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेत्ता वा, पधोवेत्ता वा समणस्स णं दासामो।" एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा मा एयं तुमं पायं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेहि वा, पधोवेहि वा, अभिकंखसि मे दाउं ? एमेव दलयाहि।"

से सेवं वयंतस्स परो सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेत्ता वा, पधोवेत्ता वा दलएज्जा, तहप्पगारं पायं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

पाय-विसोहण-पदं

२५. से णं परो णेत्ता वएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा आहरेयं पायं—कंदाणि वा, मूलाणि वा [तयाणि वा ?] पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा विसोहित्ता समणस्स णं दासामो।" एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म से पुव्वामेव आलोएज्जा—"आउसो ! त्ति वा भइणि ! त्ति वा मा एयाणि तुमं कंदाणि वा जाव हरियाणि वा विसोहेहि, णो खलु मे कप्पइ एयप्पगारे पाये पडिगाहित्तए।"

से सेवं वयंतस्स परो कंदाणि वा जाव हरियाणि वा विसोहित्ता दलएज्जा, तहप्पगारं पायं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा° ॥

सपाण-भोयण-पडिग्गह-पदं

२६. से णं परो णेत्ता वएज्जा—आउसंतो ! समणा ! मुहुत्तगं-मुहुत्तगं अच्छाहि जाव ताव अम्हे असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उवकरेंसु वा, उवक्खडेंसु वा, तो ते वयं आउसो ! सपाणं सभोयणं पडिग्गहगं दासामो,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुच्छए पडिग्गहए दिण्णे समणस्स णो सुट्ठु साहु भवइ। से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा भइणि! त्ति वा णो खलु मे कप्पइ आहाकम्मिए असणे वा पाणे वा खाइमे वा साइमे वा भोत्तए वा, पायए वा, मा उवकरेहि, मा उवक्खडेहि, अभिकंखसि मे दाउं? एमेव दलयाहि।

से सेवं वयंतस्स परो असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा उवकरेत्ता उवक्खडेत्ता सपाणगं सभोयणं पडिग्गहगं दलएज्जा, तहप्पगारं पडिग्गहगं—अफासुयं[1] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते॰ णो पडिगाहेज्जा॥

पडिग्गह-पडिलेहण-पदं

२७. सिया से परो णेत्ता[2] पडिग्गहं णिसिरेज्जा, से पुव्वामेव आलोएज्जा—आउसो! त्ति वा भइणि! त्ति वा तुमं चेव णं संतियं पडिग्गहगं अंतोअंतेणं पडिलेहिस्सामि॥

२८. केवली बूया आयाणमेयं—अंतो पडिग्गहंसि पाणाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा[3], •एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो॰ जं पुव्वामेव पडिग्गहगं अंतोअंतेणं पडिलेहिज्जा॥

सअंडाइ-पाय-पदं

२९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—सअंडं[4] •सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगं, तहप्पगारं पायं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा॥

अप्पंडाइ-पाय-पदं

३०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—अप्पंडं अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणगं, अणलं अथिरं अधुवं अधारणिज्जं, रोइज्जंतं ण रुच्चइ, तहप्पगारं पायं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा॥

३१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण पायं जाणेज्जा—अप्पंडं अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगं, अलं थिरं धुवं धारणिज्जं, रोइज्जंतं रुच्चइ, तहप्पगारं पायं—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा॥

---

१. सं० पा०—अफासुयं जाव णो।

२. उवणेत्ता (घ, च, ब)।

३. सं० पा०—पइण्णा जाव जं।

४. सं० पा०—सअंडादि सव्वे आलावगा जहा वत्थेसणाए णाणत्तं तेल्लेण वा घएण वा णवणीएण वा वसाए वा सिणाणादि जाव अण्णयरंसि वा।

पाय-परिकम्म-पदं

३२ से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "णो णवए मे पाये" त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण तेल्लेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, वसाए वा अब्भंगेज्ज वा, मक्खेज्ज वा ।।

३३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "णो णवए मे पाये" त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघंसेज्ज वा, पघंसेज्ज वा ।।

३४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "णो णवए मे पाये" त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण सीतोदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा ।।

३५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "दुब्भिगंधे मे पाये" त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण तेल्लेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, वसाए वा अब्भंगेज्ज वा, मक्खेज्ज वा ।।

३६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "दुब्भिगंधे मे पाये" त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा, पउमेण वा आघंसेज्ज वा, पघंसेज्ज वा ।।

३७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा "दुब्भिगंधे मे पाये" त्ति कट्टु णो बहुदेसिएण सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा ।।

पाय-आयावण-पदं

३८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्ज पायं आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा, तहप्पगारं पायं णो अणंतरहियाए पुढवीए, णो ससिणिद्धाए पुढवीए, णो ससरक्खाए पुढवीए, णो चित्तमंताए सिलाए, णो चित्तमंताए लेलुए, कोलावासंसि वा दारुए [अण्णयरे ?] जीवपइट्ठिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए सउसे सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणए आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा ।।

३९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा पायं आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा, तहप्पगारं पायं थूणंसि वा, गिहेलुगंसि वा, उसुयालंसि वा, कामजलंसि वा, अण्णयरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले णो आयावेज्ज वा, णो पयावेज्ज वा ।।

४०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा पायं आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा, तहप्पगारं पायं कुलियंसि वा, भित्तिंसि वा, सिलंसि वा, लेलुंसि वा, अण्णतरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले णो आयावेज्ज वा, णो पयावेज्ज वा ।।

४१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा पायं आयावेत्तए वा, पयावेत्तए वा, तहप्पगारं पायं खंधंसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, पासायंसि वा,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हम्मियतलंसि वा, अण्णयरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले णो आयावेज्ज वा, णो पयावेज्ज वा ॥

४२. से त्तमादाए एगंतमवक्कमेज्जा, एगंतवमक्कमेत्ता अहे झामथंडिलंसि वा, अट्ठिरासिंसि वा, किट्टरासिंसि वा, तुसरासिंसि वा, गोमयरासिंसि वा°, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय तओ संजयामेव पायं आयावेज्ज वा, पयावेज्ज वा ॥

४३. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति बेमि ॥

बीओ उद्देसो

पडिग्गह-पेहा-पदं

४४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसमाणे[1] पुव्वामेव पेहाए पडिग्गहगं, अवहट्टु पाणे, पमज्जिय रयं, ततो संजयामेव गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा ॥

४५. केवली बूया आयाणमेयं—अंतो पडिग्गहगंसि पाणे वा, बीए वा, रए वा परियावज्जेज्जा ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा[2], °एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो° जं पुव्वामेव पहाए पडिग्गहं, अवहट्टु पाणे, पमज्जिय रयं तओ संजयामेव गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा ॥

सीओदगादिसंजुत्तपाय-पदं

४६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए अणुपविट्ठे समाणे सिया से परो आहट्टु[3] अंतो पडिग्गहगंसि सीओदगं परिभाएत्ता णीहट्टु दलएज्जा, तहप्पगारं पडिग्गहगं परहत्थंसि वा, परपायंसि वा—अफासुयं[4] °अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

४७. से य आहच्च पडिग्गहिए सिया[5] खिप्पामेव उदगंसि साहरेज्जा[6], सपडिग्गहमायाए पाणं[7] परिट्ठवेज्जा, ससणिद्धाए 'वा णं'[8] भूमीए णियमेज्जा ॥

४८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उदउल्लं वा, ससणिद्धं वा पडिग्गहं णो आमज्जेज्ज

१. पविट्ठे° (क, च, चू) ।
२. सं० पा०—पइण्णा जाव जं ।
३. अभिहट्टु (अ, क, च, छ, ब) ।
४. सं० पा०—अफासुय जाव णो ।
५. सिया से (अ) ।
६. आहरेज्जा (च) ।
७. वणं (अ); एवं (छ) ।
८. वण (घ, च); च णं (छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा[1], •पमज्जेज्ज वा, संलिहेज्ज वा, णिल्लिहेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा, उवट्टेज्ज वा, आयावेज्ज वा° पयावेज्ज वा ।।

४९. अह पुण एवं जाणेज्जा—विगतोदए मे पडिग्गहए, छिण्ण-सिणेहे मे पडिग्गहए, तहप्पगारं पडिग्गहं तओ संजयामेव आमज्जेज्ज वा जाव पयावेज्ज वा ।।

सपडिग्गहमायाए-पदं

५०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसिउकामे सपडिग्गहमायाए गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए पविसेज्ज वा, णिक्खमेज्ज वा ।।

५१. [2]•से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहिया वियार-भूमिं वा विहार-भूमिं वा णिक्खममाणे वा पविसमाणे वा सपडिग्गहमायाए बहिया वियार-भूमिं वा विहार-भूमिं वा णिक्खमेज्ज वा पविसेज्ज वा ।।

५२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे सपडिग्गहमायाए गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।।

५३. अह पुणेवं जाणेज्जा – तिव्वदेसियं वासं वासमाणं पेहाए, तिव्वदेसियं वा महियं सण्णिवयमाणिं पेहाए, महावाएण वा रयं समुद्धयं पेहाए, तिरिच्छं संपाइमा वा तसा-पाणा संथडा सन्निवयमाणा पेहाए, से एवं णच्चा णो सपडिग्गहमायाए गाहावइ-कुलं पिंडवाय-पडियाए णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा, बहिया वियार-भूमिं वा, विहार-भूमिं वा णिक्खमेज्ज वा, पविसेज्ज वा, गामाणुगामं वा दूइज्जेज्जा ।।

पाडिहारिय-पडिग्गह-पदं

५४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा एगइओ मुहुत्तगं-मुहुत्तगं पाडिहारियं पडिग्गहं जाएज्जा, एगाहेण वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा, पंचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय उवागच्छेज्जा, तहप्पगारं पडिग्गहं णो अप्पणा गिण्हेज्जा, णो अण्णमण्णस्स देज्जा, णो पामिच्चं कुज्जा, णो पडिग्गहेण पडिग्गह-परिणामं करेज्जा, णो परं उवसंकमित्तु एवं वदेज्जा—"आउसंतो ! समणा ! अभिकंखसि पडिग्गहं धारेत्तए वा, परिहरेत्तए वा ?" थिरं वा णं संतं णो पलिच्छिंदिय-पलिच्छिंदिय परिट्ठवेज्जा । तहप्पगारं पडिग्गहं ससंधियं तस्स चेव णिसिरेज्जा, णो णं साइज्जेज्जा ।।

५५. से एगइओ एयप्पगारं णिग्घोसं सोच्चा णिसम्म जे भयंतारो तहप्पगाराणि

---

१. सं० पा०—आमज्जेज्ज वा जाव पयावेज्ज ।

२. सं० पा०—एवं बहिया वियारभूमिं वा विहारभूमिं वा गामाणुगामं दूइज्जेज्जा । तिव्वदेसियादि जहा बिइयाए वत्थेसणाए णवरं एत्थ पडिग्गहे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडिग्गहाणि ससंधियाणि मुहुत्तगं-मुहुत्तगं जाइत्ता एगाहेण वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा, पंचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय उवागच्छंति, तहप्पगाराणि पडिग्गहाणि णो अप्पणा गिण्हंति, णो अण्णमण्णस्स अणुवयंति, णो पामिच्चं करेंति, णो पडिग्गहेण पडिग्गह-परिणामं करेंति, णो परं उवसंक-मित्तु एवं वदेंति—"आउसंतो ! समणा ! अभिकंखसि पडिग्गहं धारेत्तए वा, परिहरेत्तए वा ?" थिरं वा णं संतं णो पलिच्छिंदिय-पलिच्छिंदिय परिट्ठवेंति। तहप्पगाराणि पडिग्गहाणि ससंधियाणि तस्स चेव णिसिरेंति, णो णं सातिज्जंति, 'से हंता' अहमवि मुहुत्तगं पाडिहारियं पडिग्गहं जाइत्ता एगाहेण वा, दुयाहेण वा, तियाहेण वा, चउयाहेण वा, पंचाहेण वा विप्पवसिय-विप्पवसिय उवाग-च्छिस्सामि। आवियाइं एयं ममेव सिया। माइट्ठाणं संफासे, णो एवं करेज्जा ।।

पायविकिया-पदं

५६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो वण्णमंताइं पडिग्गहाइं विवण्णाइं करेज्जा, विवण्णाइं णो वण्णमंताइं करेज्जा, "अण्णं वा पडिग्गहगं लभिस्सामि" त्ति कट्टु णो अण्णमण्णस्स देज्जा, णो पामिच्चं कुज्जा, णो पडिग्गहेण पडिग्गह-परिणामं करेज्जा, णो परं उवसंकमित्तु एवं वदेज्जा—"आउसंतो ! समणा ! अभिकंखसि मे पडिग्गहं धारेत्तए वा, परिहरेत्तए वा ?" थिरं वा णं संतं णो पलिच्छिंदिय-पलिच्छिंदिय परिट्ठवेज्जा, जहा चेयं पडिग्गहं पावगं परो मन्नइ। परं च णं अदत्तहारिं पडिपहे पेहाए तस्स पडिग्गहस्स णिदाणाए णो तेसिं भीओ उम्मग्गेणं गच्छेज्जा, णो मग्गाओ मग्गं संकमेज्जा, णो गहणं वा, वणं वा, दुग्गं वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खंसि दुरुहेज्जा, णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा सरणं वा सेणं वा सत्थं वा कंखेज्जा, अप्पुस्सुए अबहि-लेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।।

आमोसग-पदं

५७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से विहं सिया। सेज्जं पुण विहं जाणेज्जा—इमंसि खलु विहंसि बहवे आमोसगा पडिग्गह-पडियाए संपिंडिया गच्छेज्जा, णो तेसिं भीओ उम्मग्गेणं गच्छेज्जा, णो मग्गाओ मग्गं संकमेज्जा, णो गहणं वा, वणं वा, दुग्गं वा अणुपविसेज्जा, णो रुक्खंसि दुरुहेज्जा, णो महइमहालयंसि उदयंसि कायं विउसेज्जा, णो वाडं वा, सरणं वा, सेणं वा, सत्थं वा कंखेज्जा, अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा ।।

५८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा गामाणुगामं दूइज्जमाणे अंतरा से आमोसगा संपिंडिया गच्छेज्जा। ते णं आमोसगा एवं वदेज्जा—"आउसंतो ! समणा !

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आहरेयं पडिग्गहं देहि, निक्खिवाहि।" तं णो देज्जा, णो णिक्खिवेज्जा, णो वंदिय-वंदिय जाएज्जा, णो अंजलिं कट्टु जाएज्जा, णो कलुण-पडियाए जाएज्जा, धम्मियाए जायणाए जाएज्जा, तुसिणीय-भावेण वा उवेहेज्जा।
ते णं आमोसगा सयं करणिज्जं ति कट्टु अक्कोसंति वा, बंधंति वा, रुंभंति वा, उद्दवंति वा, पडिग्गहं अच्छिंदेज्ज वा, अवहरेज्ज वा, परिभवेज्ज वा। तं णो गामसंसारियं कुज्जा, णो रायसंसारियं कुज्जा, णो परं उवसंकमित्तु बूया— आउसंतो! गाहावइ! एए खलु आमोसगा पडिग्गह-पडियाए सयं करणिज्जं ति कट्टु अक्कोसंति वा, बंधंति वा, रुंभंति वा, उद्दवंति वा, पडिग्गहं अच्छिंदेंति वा, अवहरेंति वा, परिभवेंति वा। एयप्पगारं मणं वा, वइं वा णो पुरओ कट्टु विहरेज्जा। अप्पुस्सुए अबहिलेस्से एगंतगएणं अप्पाणं वियोसेज्ज समाहीए, तओ संजयामेव गामाणुगामं दूइज्जेज्जा° ॥

५६. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि।

—त्ति बेमि ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सत्तमं अज्झयणं
ओग्गह-पडिमा
पढमो उद्देसो

अदिन्नादाण-पच्चक्खाण-पदं

१. समणे भविस्सामि अणगारे अकिंचणे अपुत्ते अपसू परदत्तभोई पावं कम्मं णो करिस्सामि त्ति समुट्ठाए सव्वं भंते ! अदिण्णादाणं पच्चक्खामि ।।

२. से अणुपविसित्ता गामं वा[1], •णगरं वा, खेडं वा, कव्वडं वा, मडंबं वा, पट्टणं वा, दोणमुहं वा, आगरं वा, णिगमं वा, आसमं वा, सण्णिवेसं वा, रायहाणिं वा•—णेव सयं अदिन्नं गिण्हेज्जा, णेवण्णेणं[2] अदिण्णं गिण्हावेज्जा, णेवण्णं अदिण्णं गिण्हंतं पि समणुजाणेज्जा ।।

ओग्गह-पदं

३. जेहिं वि सद्धिं संपव्वइए, तेसिं पि याइं भिक्खू छत्तयं[3] वा, मत्तयं वा, दंडगं वा[4], •लट्ठियं वा, भिसियं वा, नालियं वा, चेलं वा, चिलमिलिं वा, चम्मयं वा, चम्मकोसयं वा•, चम्मछेदणगं वा—तेसिं पुव्वामेव ओग्गहं अणणुण्णविय अपडिलेहिय अपमज्जिय णो गिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज[5] वा । तेसिं पुव्वामेव ओग्गहं अणुण्णविय पडिलेहिय पमज्जिय तओ संजयामेव ओगिण्हेज्ज[6] वा, पगिण्हेज्ज वा ।।

४. से आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अणुवीइ ओग्गहं जाएज्जा, जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुण्णवेज्जा । कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिण्णातं वसामो, जाव आउसो,

---

१. सं० पा०—गामं वा जाव…।
२. णेवण्णेहिं (घ, छ) ।
३. छत्तं (घ, च) ।
४. सं० पा०—दंडगं वा जाव चम्मछेदणगं ।
५. परिगिण्हेज्ज (अ) ।
६. उ० (घ); उव० (छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाव आउसंतस्स ओग्गहे, जाव साहम्मिया 'एत्ता, ताव'[१] ओग्गहं ओगिण्हिस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो ॥

५. से किं पुण तत्थोग्गहंसि एवोग्गहियंसि ? जे तत्थ साहम्मिया संभोइया समणुण्णा उवागच्छेज्जा, जे तेण सयमेसियाए[२] असणं वा पाणं वा खाइमं वा साइमं वा तेण ते साहम्मिया संभोइया समणुण्णा उवणिमंतेज्जा, णो चेव णं पर-पडियाए उगिज्भिय-उगिज्भिय उवणिमंतेज्जा ॥

६. से आगंतारेसु वा[३], •आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अणुवीइ ओग्गहं जाएज्जा, जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुण्णवेज्जा । कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिण्णातं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहे, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओगिण्हिसामो, तेण परं विहरिस्सामो° ॥

७. से किं पुण तत्थोग्गहंसि एवोग्गहियंसि ? जे तत्थ साहम्मिया अण्णसंभोइया समणुण्णा उवागच्छेज्जा, जे तेणं सयमेसियाए[४] पीढे वा, फलए वा, सेज्जा-संथारए वा, तेण ते साहम्मिए अण्णसंभोइए समणुण्णे उवणिमंतेज्जा, णो चेव णं पर-वडियाए उगिज्भिय-उगिज्भिय उवणिमंतेज्जा ॥

८. से आगंतारेसु वा,[५] •आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अणुवीइ ओग्गहं जाएज्जा, जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुण्णवेज्जा । कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिण्णातं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहे, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओगिण्हिस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो° ॥

९. से किं पुण तत्थोग्गहंसि एवोग्गहियंसि ? जे तत्थ गाहावईण वा, गाहावइ-पुत्ताण वा सूई[६] वा, पिप्पलए वा, कण्णसोहणए वा, णहच्छेयणए वा, तं अप्पणो एगस्स अट्ठाए पाडिहारियं[७] जाइत्ता णो अण्णमण्णस्स देज्ज वा, अणुपदेज्ज वा, सयं करणिज्जं ति कट्टु से तमादाए[८] तत्थ गच्छेज्जा, गच्छत्ता पुव्वामेव उत्ताणए हत्थे[९] कट्टु भूमीए वा ठवेत्ता 'इमं खलु'[१०] त्ति आलोएज्जा, णो चेव णं सयं पाणिणा परपाणिंसि पच्चप्पिणेज्जा ॥

१०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणिज्जा—अणंतरहियाए पुढवीए, ससणिद्धाए पुढवीए[११], •ससरक्खाए पुढवीए, चित्तमंताए सिलाए,

---

१. एतावता (अ, क, घ, च, छ, ब) ।
२,४. °सित्तए (अ, क, घ, च, छ) ।
३,५. सं० पा०—से आगंतारेसु वा जाव ।
६. सूती (अ); सूयी (च); सुई (छ); सुयी (ब) ।
७. पडि° (अ, छ, ब) ।
८. °ताए (छ) ।
९. हत्थेंति (छ) ।
१०. इमं खलु इमं खलु (अ, ब) ।
११. सं० पा०—पुढवीए जाव संताणए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चित्तमंताए लेलुए, कोलावासंसि वा दारुए जीवपइट्ठिए सअंडे सपाणे सबीए सहरिए सउसे सउदए सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°संताणए, तहप्पगारं ओग्गहं णो ओगिण्हेज्ज[1] वा, पगिण्हेज्ज वा ॥

११. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणिज्जा—थूणंसि वा, गिहेलुगंसि वा, उसुयालंसि वा, कामजलंसि वा, अण्णयरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे[2] •दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले° णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ॥

१२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—कुलियंसि वा[3], •भित्तिंसि वा, सिलंसि वा, लेलुंसि वा, अण्णयरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले° णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ॥

१३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पण ओग्गहं जाणेज्जा—खंधंसि वा[4], •मंचंसि वा, मालंसि वा, पासायंसि वा, हम्मियतलंसि वा, अण्णयरे वा तहप्पगारे अंतलिक्खजाए दुब्बद्धे दुन्निक्खित्ते अणिकंपे चलाचले° णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ॥

१४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—ससागारियं सागणियं सउदयं सइत्थिं सखुड्डुं सपसुं सभत्तपाणं, णो पण्णस्स णिक्खमण-पवेसाए[5] •णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह°-धम्माणुओगचिंताए। सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए ससागारिए जाव सखुड्डु-पसु-भत्तपाणे णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ॥

१५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—गाहावइ-कुलस्स मज्झंमज्झेणं गंतुं पंथे पडिबद्धं वा णो पण्णस्स[6] •णिक्खमण-पवेसाए णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परिट्टणाणुपेह-धम्माणुओग° चिंताए। सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ॥

१६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा[7], •गाहावइणीओ वा, गाहावइ-पुत्ता वा, गाहावइ-धूयाओ वा, गाहावइ-सुण्हाओ वा, धाईओ वा, दासा वा, दासीओ वा, कम्मकरा वा°, कम्मकरीओ वा अण्ण-

---

१. गिण्हेज्ज (च, छ, ब)।
२. सं० पा०—दुब्बद्धे जाव णो।
३. सं० पा०—कुलियंसि वा जाव णो।
४. सं० पा०—खंधंसि वा…अण्णयरे वा तहप्प-गारे जाव णो।
५. सं० पा०—णिक्खमण-पवेसाए जाव धम्मा-णुओग।
६. सं० पा०—पण्णस्स जाव चिंताए।
७. सं० पा०—गाहावई वा जाव कम्मकरीओ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मण्णं अक्कोसंति वा[1], °बंधंति वा, रुंभंति वा, उद्दवेंति वा, णो पण्णस्स णिक्खमण-पवेसाए णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग-चिंताए। सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ॥

१७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा अण्णमण्णस्स गायं तेल्लेण वा, घएण वा, णवणीएण वा, वसाए वा अब्भंगेंति वा, मक्खेंति वा, णो पण्णस्स णिक्खमण-पवेसाए णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग-चिंताए। सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ॥

१८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा अण्णमण्णस्स गायं सिणाणेण वा, कक्केण वा, लोद्धेण वा, वण्णेण वा, चुण्णेण वा पउमेण वा आघंसंति वा, पघंसंति वा, उव्वलेंति वा, उव्वट्टेंति वा, णो पण्णस्स णिक्खमण-पवेसाए णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग-चिंताए। सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ॥

१९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा अण्णमण्णस्स गायं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेंति वा, पधोवेंति वा, सिंचंति वा, सिणावेंति वा, णो पण्णस्स णिक्खमण-पवेसाए णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग-चिंताए। सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ॥

२०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा जाव कम्मकरीओ वा णिगिणा ठिआ णिगिणा उवल्लीणा मेहुणधम्मं विण्णवेंति रहस्सियं वा मंतं मंतेंति, णो पण्णस्स णिक्खमण-पवेसाए णो पण्णस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग-चिंताए। सेवं णच्चा तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा° ॥

२१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ओग्गहं जाणेज्जा—आइण्णसंलेक्खं, णो पण्णस्स[2] °णिक्खमण-पवेसाए णो पणस्स वायण-पुच्छण-परियट्टणाणुपेह-धम्माणुओग°-चिंताए। [सेवं णच्चा ?] तहप्पगारे उवस्सए णो ओग्गहं ओगिण्हेज्ज वा, पगिण्हेज्ज वा ॥

---

१. सं० पा०—अक्कोसंति वा तहेव तेल्लादि सिणाणादि सीओदगवियडादि णिगिणाइ य जहा सिज्जाए आलावगा णवरं ओग्गह-वत्तव्वया।

२. सं० पा०—पण्णस्स जाव चिंताए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२२. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं[1] •जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

त्ति बेमि° ॥

बीओ उद्देसो

२३. से आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा, अणुवीइ ओग्गहं जाएज्जा, जे[2] तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुण्णविज्जा[3]। कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिण्णायं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहो, जाव साहम्मिया 'एत्ता, ताव'[4] ओग्गहं ओगिण्हिस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो ॥

२४. से किं पुण तत्थ ओग्गहंसि एवोग्गहियंसि ? जे तत्थ समणाण वा माहणाण वा छत्तए वा[5], •मत्तए वा, दंडए वा, लट्ठिया वा, भिसिया वा, नालिया वा, चेलं वा, चिलिमिली वा, चम्मए वा, चम्मकोसए वा°, चम्मछेदणए वा, तं णो अंतोहिंतो बाहिं णीणेज्जा, बहियाओ वा णो अंतो पवेसेज्जा, णो[6] सुत्तं वा णं पडिबोहेज्जा, णो तेसिं किंचि[7] अप्पत्तियं पडिणीयं करेज्जा ॥

अंब-ओग्गह-पदं

२५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा अंबवणं उवागच्छित्तए, जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुजाणावेज्जा । कामं खलु[8] •आउसो ! अहालंदं अहापरिण्णायं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहो, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओगिण्हिस्सामो, तेण परं° विहरिस्सामो ॥

२६. से किं पुण तत्थ ओग्गहंसि एवोग्गहियंसि ? अह भिक्खू[9] इच्छेज्जा अंबं भोत्तए वा, [पायए वा ?] । सेज्जं पुण अंबं जाणेज्जा—सअंडं[10] •सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°संताणगं, तहप्पगारं अंबं—अफासुयं[11] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

---

१. सं० पा०—सामग्गियं ।
२. × (अ) ।
३. °वित्ता (अ, क, च, ब) ।
४. एताव (अ, घ, च, ब); एतावता (क, छ) ।
५. सं० पा०—छत्तए वा जाव चम्मछेदणए ।
६. × (क, घ, च, छ) ।
७. किंचिवि (क, घ, च, ब) ।
८. सं० पा०—खलु जाव विहरिस्सामो ।
९. भिक्खुणं (छ) ।
१०. सं० पा०—सअंडं जाव संताणगं ।
११. सं० पा०—अफासुयं जाव णो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण अंबं जाणेज्जा—अप्पंडं[1] •अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°-संताणगं अतिरिच्छछिन्नं अवोच्छिन्नं—अफासुयं[2] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

२८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण अंबं जाणेज्जा—अप्पंडं[3] •अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°-संताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—फासुयं[4] •एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा ॥

२९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा अंबभित्तगं वा, अंबपेसियं वा, अंबचोयगं वा, अंबसालगं वा, अंबडगलं[5] वा भोत्तए वा, पायए वा । सेज्जं पुण जाणेज्जा—अंबभित्तगं वा जाव अंबडगलं वा सअंडं[6] •सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°संताणगं—अफासुयं[7] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

३०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—अंबभित्तगं वा जाव अंबडगलं वा अप्पंडं[8] •अप्पाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° संताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं अवोच्छिन्नं—अफासुयं[9] •अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

३१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा अंबभित्तगं[10] वा जाव अंबडगलं वा अप्पंडं[11] •अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा°संताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—फासुयं[12] •एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा ॥

उच्छु-ओग्गह-पदं

३२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा उच्छुवणं उवागच्छित्तए, जे तत्थ ईसरे[13], •जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुजाणावेज्जा । कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिण्णायं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहो, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओगिण्हिस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो ॥

३३. से किं पुण तत्थ ओग्गहंसि° एवोग्गहियंसि ? अह भिक्खू इच्छेज्जा उच्छुं भोत्तए वा, पायए वा । सेज्जं [पुण ?] उच्छुं जाणेज्जा—सअंडं[14]

१,३. सं० पा०—अप्पंडं जाव संताणगं ।
२. सं० पा०—अफासुयं जाव णो ।
४. सं० पा०—फासुयं जाव पडिगाहेज्जा ।
५. °डालगं (अ, क, घ, छ, ब) ।
६. सं० पा०—सअंडं जाव संताणगं ।
७,९. सं० पा०—अफासुयं जाव णो ।
८,११. सं० पा०—अप्पंडं जाव संताणगं ।
१०. अंबं वा अंबचित्तगं (घ, च, छ) ।
१२. सं० पा०—फासुयं जाव पडिगाहेज्जा ।
१३. सं० पा०—ईसरे जाव एवोग्गहियंसि ।
१४. सं० पा०—सअंडं जाव णो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

•सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणगं, तहप्पगारं उच्छुं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

३४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उच्छुं जाणेज्जा—अप्पंडं[1] •अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा° संताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं[2] •अवोच्छिन्नं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

३५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण उच्छुं जाणेज्जा—अप्पंडं अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा° ॥

३६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा[3] अंतरुच्छुयं वा, उच्छुगंडियं वा, उच्छुचोयगं वा, उच्छुसालगं वा, उच्छुडगलं वा भोत्तए वा, पायए वा। सेज्जं पुण जाणेज्जा—अंतरुच्छुयं वा जाव डगलं वा सअंडं[4] •सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ॥

३७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—अंतरुच्छुयं वा जाव डगलं वा अप्पंडं[5] •अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं अवोच्छिन्नं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ॥

३८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—अंतरुच्छुयं वा जाव डगलं वा अप्पंडं अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा° ॥

लसुण-ओग्गह-पदं

३९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा ल्हसुणवणं उवागच्छित्तए, •[6]जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुजाणावेज्जा। कामं खलु आउसो ! अहालंदं अहापरिण्णायं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहो,

१. सं० पा०—अप्पंडं जाव संताणगं ।

२. सं० पा०—अतिरिच्छच्छिन्नं तहेव तिरिच्छच्छिन्नं तहेव ।

३. सेज्जं पुण अभिकंखेज्जा (अ) ।

४. सं० पा०—सअंडं जाव णो ।

५. सं० पा०—अप्पंडं जाव पडिगाहेज्जा अतिरिच्छच्छिन्नं तिरिच्छच्छिन्नं तहेव ।

६. सं० पा०—तहेव तिन्निवि आलावगा णवरं ल्हसुण ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओगिण्हिस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो ।।

४०. से किं पुण तत्थ ओग्गहंसि एवोग्गहियंसि ? अह भिक्खू इच्छेज्जा ल्हसुणं भोत्तए वा, [पायए वा ?] । सेज्जं पुण ल्हसुणं जाणेज्जा—सअंडं सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगं तहप्पगारं ल्हसुणं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

४१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ल्हसुणं जाणेज्जा—अप्पंडं अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं अवोच्छिन्नं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

४२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ल्हसुणं जाणेज्जा—अप्पंडं अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते पडिगाहेज्जा° ।।

४३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा ल्हसुणं[1] वा, ल्हसुण-कंदं वा, ल्हसुण-चोयगं वा, ल्हसुण-णालगं[2] वा भोत्तए वा, पायए वा । सेज्जं पुण जाणेज्जा—ल्हसुणं वा जाव ल्हसुण-णालगं वा सअंडं[3] °सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° णो पडिगाहेज्जा ।।

४४. [4]°से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—ल्हसुणं वा जाव ल्हसुण-णालगं वा अप्पंडं अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगं अतिरिच्छच्छिन्नं अवोच्छिन्नं—अफासुयं अणेसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

४५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा—ल्हसुणं वा जाव ल्हसुण-णालगं वा अप्पंडं अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगं तिरिच्छच्छिन्नं वोच्छिन्नं—फासुयं एसणिज्जं ति मण्णमाणे लाभे संते° पडिगाहेज्जा ।।

ओग्गह-पदं

४६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा आगंतारेसु वा[6], °आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अणुवीइ ओग्गहं जाणेज्जा—जे तत्थ ईसरे, जे

१. लहसुण (च); लसण (ब) ।
२. डालगं (अ, ध) ।
३. बीयं (क्व) ।
४. सं० पा०—सअंडं जाव णो ।
५. सं० पा०—एवं अतिरिच्छच्छिन्नेवि तिरिच्छ-च्छिन्ने जाव पडिगाहेज्जा ।
६. सं० पा०—आगंतारेसु वा जावोग्गहियंसि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुण्णविज्जा। कामं खलु आउसो! अहालंदं अहापरिण्णायं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहो, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओगिण्हिस्सामो, तेण परं विहरिस्सामो ।।

४७. से किं पुण तत्थ ओग्गहंसि° एवोग्गहियंसि ? जे तत्थ गाहावईण वा, गाहावइ-पुत्ताण वा इच्चेयाइं आयतणाइं[1] उवाइकम्म[2] ।।

ओग्गह-पडिमा-पदं

४८. अह भिक्खू जाणेज्जा इमाहिं सत्तहिं पडिमाहिं ओग्गहं ओगिण्हित्तए ।।

४९. तत्थ खलु इमा पढमा पडिमा—से आगंतारेसु वा, आरामागारेसु वा, गाहावइ-कुलेसु वा, परियावसहेसु वा अणुवीइ ओग्गहं जाएज्जा[3]—°जे तत्थ ईसरे, जे तत्थ समहिट्ठाए, ते ओग्गहं अणुण्णविज्जा। कामं खलु आउसो! अहालंदं अहापरिणायं वसामो, जाव आउसो, जाव आउसंतस्स ओग्गहो, जाव साहम्मिया एत्ता, ताव ओग्गहं ओगिण्हिस्सामो, तेण परं° विहरिस्सामो—पढमा पडिमा ।।

५०. अहावरा दोच्चा पडिमा—जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ "अहं च खलु अण्णेसिं भिक्खूणं अट्ठाए ओग्गहं ओगिण्हिस्सामि, अण्णेसिं भिक्खूणं 'ओग्गहे ओग्गहिए'[4] उवल्लिस्सामि"—दोच्चा पडिमा ।।

५१. अहावरा तच्चा पडिमा—जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ "अहं च खलु अण्णेसिं भिक्खूणं अट्ठाए ओग्गहं ओगिण्हिस्सामि, अण्णेसिं भिक्खूणं च ओग्गहे ओग्गहिए णो उवल्लिस्सामि"—तच्चा पडिमा ।।

५२. अहावरा चउत्था पडिमा—जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ "अहं च खलु अण्णेसिं भिक्खूणं अट्ठाए ओग्गहं णो ओगिण्हिस्सामि, अण्णेसिं च ओग्गहे ओग्गहिए उवल्लिस्सामि"—चउत्था पडिमा ।।

५३. अहावरा पंचमा पडिमा—जस्स णं भिक्खुस्स एवं भवइ, "अहं च खलु अप्पणो अट्ठाए ओग्गहं ओगिण्हिस्सामि, णो दोण्हं, णो तिण्हं, णो चउण्हं, णो पंचण्हं—पंचमा पडिमा ।।

५४. अहावरा छट्ठा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा जस्सेव ओग्गहे उवल्लि-एज्जा, जे तत्थ अहासमण्णागए, तं जहा—इक्कडे वा[5] °कढिणे वा, जंतुए वा, परगे वा, मोरगे वा, तणे वा, कुसे वा, कुच्चगे वा, पिप्पले वा°, पलाले वा।

---

१. आयाणाइं (क, च); आययाणाइं (घ); आयणाइं (छ); आययणा (व)।

२. परिहृत्यावग्रहमवग्रहीतुं जानीयात् (वृ)।

३. सं० पा०—जाएज्जा जाव विहरिस्सामो।

४. ओग्गहिए ओग्गहे (अ)।

५. सं० पा०—इक्कडे वा जाव पलाले।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तस्स लाभे संवसेज्जा, तस्स अलाभे उक्कुडुए[1] वा, णेसज्जिए वा विहरेज्जा—छट्ठा पडिमा ॥

५५. अहावरा सत्तमा पडिमा—से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहासंथडमेव ओग्गहं जाएज्जा, तंजहा—पुढविसिलं वा, कट्ठसिलं वा अहासंथडमेव, तस्स लाभे संवसेज्जा, तस्स अलाभे उक्कुडुओ वा, णेसज्जिओ वा विहरेज्जा—सत्तमा पडिमा ॥

५६. इच्चेतासिं सत्तण्हं पडिमाणं अण्णयरं[2] °पडिमं पडिवज्जमाणे णो एवं वएज्जा—मिच्छा पडिवन्ना खलु एते भयंतारो, अहमेगे सम्मं पडिवन्ने ।

जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ताणं विहरंति, जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जित्ताणं विहरामि, सव्वे वे ते उ जिणाणाए उवट्ठिया अण्णोण्णसमाहीए, एवं च णं विहरंति° ॥

पंचविह-ओग्गह-पदं

५७. सुयं मे आउसं ! ते णं भगवया एवमक्खायं—इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं पंचविहे ओग्गहे पण्णत्ते, तंजहा—देविंदोग्गहे, रायोग्गहे, गाहावइ-ओग्गहे, सागारिय-ओग्गहे, साहम्मिय-ओग्गहे ॥

५८. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं[3], °जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि ।

—त्ति बेमि° ॥

---

१. उक्कडए (अ, ब) ।

२. सं० पा०—अण्णयरं जहा पिंडेसणाए ।

३. सं० पा०—सामग्गियं ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठमं अज्झयणं

ठाण-सत्तिक्कयं

ठाण-एसणा-पदं

१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा[1] ठाणं ठाइत्तए, से अणुपविसेज्जा 'गामं वा, णगरं वा'[2], •खेडं वा, कव्वडं वा, मडंबं वा, पट्टणं वा, दोणमुहं वा, आगरं वा, णिगमं वा, आसमं वा, सण्णिवेसं वा•, रायहाणिं वा'[3], से अणुपविसित्ता गामं वा जाव रायहाणिं वा, सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा— सअंडं[4] •सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय°-मक्कडा-संताणयं, तं तहप्पगारं ठाणं—अफासुयं अणेसणिज्जं[5] •ति मण्णमाणे° लाभे संते णो पडिगाहेज्जा ।।

२. [6]•से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—अप्पंडं अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडा-संताणगं । तहप्पगारे ठाणे पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, निसीहियं वा चेतेज्जा ।।

अस्सिंपडियाए ठाण-पदं

३. सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा अस्सिंपडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति । तहप्पगारे ठाणे पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा,

---

१. °कंखेइ (अ, घ); °कंखे (च, ब) ।

२. सं० पा०—णगरं वा जाव रायहाणिं ।

३. गामं वा जाव सण्णिवेसं वा (अ, क, घ, च, छ, ब) ।

४. सयंडं (अ, च); सं० पा०—सअंडं जाव मक्कडा ।

५. सं० पा०—अणेसणिज्जं···लाभे ।

६. सं० पा०—एवं सेज्जागमेणं णेयव्वं जाव उदगपसूयाइं ति ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।।

४. सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—अस्सिपडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति । तहप्पगारे ठाणे पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा, अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।।

५. सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—अस्सिपडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति । तहप्पगारे ठाणे पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा, अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।।

६. सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—अस्सिपडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति । तहप्पगारे ठाणे पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपरिभुत्ते वा, आसेविते वा अणासेविते वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।।

समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-ठाण-पदं

७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ । तहप्पगारे ठाणे पुरिसंतरकडे वा अपुरिसंतरकडे वा, अत्तट्ठिए वा अणत्तट्ठिए वा, परिभुत्ते वा अपुरिभुत्ते वा, आसेविए वा अणासेविए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।।

८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ । तहप्पगारे ठाणे अपुरिसंतरकडे, अणत्तट्ठिए, अपुरिभुत्ते, अणासेविए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।

९. अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे, अत्तट्ठिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।।

परिकम्मिय-ठाण-पदं

१०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—अस्संजए भिक्खु-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पडियाए कडिए वा, उक्कंबिए वा, छन्ने वा, लित्ते वा, घट्ठे वा, मट्ठे वा, संमट्ठे वा, संपधूमिए वा। तहप्पगारे ठाणे अपुरिसंतरकडे, अणत्तट्ठिए, अपरिभुत्ते, अणासेविए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा।।

११. अह पुणेवं जाणेज्जा पुरिसंतरकडे, अत्तट्ठिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा।।

१२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण ठाणं जाणेज्जा—अस्संजए भिक्खु-पडियाए खुड्डियाओ दुवारियाओ महल्लियाओ कुज्जा, महल्लियाओ दुवारियाओ खुड्डियाओ कुज्जा, समाओ सिज्जाओ विसमाओ कुज्जा, विसमाओ सिज्जाओ समाओ कुज्जा, पवायाओ सिज्जाओ णिवायाओ कुज्जा, णिवायाओ सिज्जाओ पवायाओ कुज्जा, अंतो वा बहिं वा ठाणस्स हरियाणि छिंदिय-छिंदिय दालिय-दालिय संथारगं संथारेज्जा, बहिया वा णिण्णक्खु, तहप्पगारे ठाणे अपुरिसंतरकडे, अणत्तट्ठिए, अपरिभुत्ते, अणासेविते णो ठाणं वा, सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेज्जा।।

१३. अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडे, अत्तट्ठिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा।।

बहिया निस्सारिय-ठाण-पदं

१४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण [ठाणं ?] जाणेज्जा— अस्संजए भिक्खु-पडियाए उदगप्पसूयाणि कंदाणि वा, मूलाणि वा, [तयाणि वा ?], पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा ठाणाओ ठाणं साहरति, बहिया वा णिण्णक्खु, तहप्पगारे ठाणे अपुरिसंतरकडे, अणत्तट्ठिए, अपुरिभुत्ते, अणासेविते णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा।।

१५. अह पुणेवं जाणेज्जा पुरिसंतरकडे, अत्तट्ठिए, परिभुत्ते, आसेविए पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा णिसीहियं वा चेतेज्जा° ।।

ठाण-पडिमा-पदं

१६. इच्चेयाइं आयतणाइं[1] उवातिकम्म, अह भिक्खू इच्छेज्जा चउहिं पडिमाहिं ठाणं ठाइत्तए।।

१७. तत्थिमा पढमा पडिमा—अचित्तं खलु उवसज्जिस्सामि[2], अवलंबिस्सामि, काएण विपरिक्कमिस्सामि, सवियारं ठाणं ठाइस्सामि त्ति पढमा पडिमा।।

---

१. आयाणाइं (क, घ, च)।

२. आदर्शेषु सूत्रचतुष्टयेऽपि 'उवसज्जेज्जा अवलंबेज्जा, काएण विपरिक्कमादी' इति पाठो वर्तते। किन्तु प्रस्तुतपाठश्चूर्णिवृत्त्योराधारेण स्वीकृतः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१८. अहावरा दोच्चा पडिमा—अचित्तं खलु उवसज्जिस्सामि, अवलंबिस्सामि, काएण विपरिक्कमिस्सामि, णो सवियारं ठाणं ठाइस्सामि त्ति दोच्चा पडिमा ॥

१९. अहावरा तच्चा पडिमा—अचित्तं खलु उवसज्जिस्सामि, णो अवलंबिस्सामि, णो काएण विपरिक्कमिस्सामि, णो सवियारं ठाणं ठाइस्सामि त्ति तच्चा पडिमा ॥

२०. अहावरा चउत्था पडिमा—अचित्तं खलु[1] उवसज्जिस्सामि, णो अवलंबिस्सामि, णो काएण विपरिक्कमिस्सामि, णो सवियारं ठाणं ठाइस्सामि, वोसट्ठकाए वोसट्ठकेस-मंसु-लोम-णहे सण्णिरुद्धं वा ठाणं ठाइस्सामि त्ति चउत्था पडिमा ॥

२१. इच्चेयासिं चउण्हं पडिमाणं[2] •अण्णयरं पडिमं पडिवज्जमाणे णो एवं वएज्जा मिच्छा पडिवन्ना खलु एते भयंतारो, अहमेगे सम्मं पडिवन्ने ।
जे एते भयंतारो एयाओ पडिमाओ पडिवज्जित्ताणं विहरंति, जो य अहमंसि एयं पडिमं पडिवज्जित्ताणं विहरामि, सव्वे वे ते उ जिणाणाए उवट्ठिया अण्णोण्णसमाहीए एवं च णं विहरंति ॥

संथारग-पच्चप्पण-पदं

२२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा संथारगं पच्चप्पिणित्तए । सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—सअंडं सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगं, तहप्पगारं संथारगं णो पच्चप्पिणेज्जा ॥

२३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा संथारगं पच्चप्पिणित्तए । सेज्जं पुण संथारगं जाणेज्जा—अप्पंडं अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-मक्कडासंताणगं, तहप्पगारं संथारगं पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय, आयाविय-आयाविय, विणिद्धुणिय-विणिद्धुणिय तओ संजयामेव पच्चप्पिणेज्जा ॥

उच्चारपासवणभूमि-पदं

२४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा समाणे वा वसमाणे वा, गामाणुगामं दूइज्जमाणे वा पुव्वामेव णं पण्णस्स उच्चार-पासवणभूमिं पडिलेहिज्जा ॥

२५. केवली बूया आयाणमेयं—अपडिलेहियाए उच्चारपासवणभूमीए, भिक्खू वा भिक्खुणी वा, राओ वा विआले वा, उच्चारपासवणं परिट्ठवेमाणे पयलेज्ज वा पवडेज्ज वा, से तत्थ पयलमाणे वा पवडमाणे वा, हत्थं वा, पायं वा, बाहुं वा, ऊरुं वा, उदरं वा, सीसं वा, अण्णयरं वा कायंसि इंदिय-जायं लूसेज्ज वा, पाणाणि वा भूयाणि वा जीवाणि वा सत्ताणि वा अभिहणेज्ज वा, वत्तेज्ज वा, लेसेज्ज वा, संघंसेज्ज वा, संघट्टेज्ज वा, परियावेज्ज वा, किलामेज्ज वा, ठाणाओ ठाणं संकामेज्ज वा, जीविआओ ववरोवेज्ज वा ।

१. खलु णो (क, ब) । २. सं० पा०—पडिमाणं जाव पग्गहियतरागं ।

अह भिक्खूणं पुव्वोवदिट्ठा एस पइण्णा, एस हेऊ, एस कारणं, एस उवएसो, जं पुव्वामेव पण्णस्स उच्चारपासवणभूमिं पडिलेहेज्जा ।।

ठाण-विहि-पदं

२६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा सेज्जा-संथारग-भूमिं पडिलेहित्तए, णण्णत्थ आयरिएण वा, उवज्झाएण वा, पवत्तीए वा, थेरेण वा, गणिणा वा, गणहरेण वा, गणावच्छेइएण वा, बालेण वा, बुड्ढेण वा, सेहेण वा, गिलाणेण वा, आएसेण वा, अंतेण वा, मज्झेण वा, समेण वा, विसमेण वा, पवाएण वा, णिवाएण वा तओ संजयामेव पडिलेहिय-पडिलेहिय, पमज्जिय-पमज्जिय बहु-फासुयं सेज्जा-संथारगं संथारेज्जा ।।

२७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहु-फासुयं सेज्जा-संथारगं संथरेत्ता अभिकंखेज्जा बहु-फासुए सेज्जा-संथारए दुरुहित्तए, से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहु-फासुए सेज्जा-संथारए दुरुहमाणे, से पुव्वामेव ससीसोवरियं कायं पाए य पमज्जिय-पमज्जिय तओ संजयामेव बहु-फासुए सेज्जा-संथारगे दुरुहेज्जा, दुरुहेत्ता तओ संजयामेव बहु-फासुए सेज्जा-संथारए चिट्ठेज्जा ।।

२८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा बहु-फासुए सेज्जा-संथारए चिट्ठमाणे, णो अण्ण-मण्णस्स हत्थेण हत्थं, पाएण पायं, काएण कायं आसाएज्जा । से अणासायमाणे तओ संजयामेव बहु-फासुए सेज्जा-संथारए चिट्ठेज्जा ।।

२९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उस्सासमाणे वा, णीसासमाणे वा, कासमाणे वा, छीयमाणे वा, जंभायमाणे वा उड्डुए वा वायणिसग्गे वा करेमाणे, पुव्वामेव आसयं वा, पोसयं वा, पाणिणा परिपिहित्ता तओ संजयामेव ऊससेज्ज वा, णीससेज्ज वा, कासेज्ज वा, छीएज्ज वा, जंभाएज्ज वा, उड्डुयं वा वायणिसग्गं वा करेज्जा ।।

३०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा --समा वेगया सेज्जा भवेज्जा, विसमा वेगया सेज्जा भवेज्जा, पवाता वेगया सेज्जा भवेज्जा, णिवाता वेगया सेज्जा भवेज्जा, ससरक्खा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अप्प-ससरक्खा वेगया सेज्जा भवेज्जा, सदंस-मसगा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अप्प-दंस-मसगा वेगया सेज्जा भवेज्जा, सपरि-साडा वेगया सेज्जा भवेज्जा, अपरिसाडा वेगया सेज्जा भवेज्जा, सउवसग्गा वेगया सेज्जा भवेज्जा, णिरुवसग्गा वेगया सेज्जा भवेज्जा, तहप्पगाराहिं सेज्जाहिं संविज्जमाणाहिं° पग्गहियतरागं विहरेज्जा, णेव किंचिवि वएज्जा[1] ।।

३१. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं[2], °जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया° जएज्जासि । —त्ति बेमि ।।

---

१. चरेज्जा (अ) ।

२. सं० पा०—सामग्गियं जाव जएज्जासि ।

नवमं अज्झयणं

णिसीहिया-सत्तिक्कयं

णिसीहिया-एसणा-पदं

१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा णिसीहियं गमणाए, सेज्जं[1] पुण णिसीहियं जाणेज्जा—सअंडं[2] •सपाणं सबीयं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-° मक्कडासंताणयं, तहप्पगारं णिसीहियं—अफासुयं अणे-सणिज्जं[3] •ति मण्णमाणे ° लाभे संते णो चेतिस्सामि[4] [चेएज्जा ?]

२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अभिकंखेज्जा णिसीहियं गमणाए, सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—अप्पंडं[5] •अप्पपाणं अप्पबीयं अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-° मक्कडासंताणयं, तहप्पगारं णिसीहियं—फासुयं एसणिज्जं[6] •ति मण्णमाणे ° लाभे संते चेतिस्सामि[7] [चेएज्जा ?] ॥

अस्सिंपडियाए णिसीहिया-पदं

३. [8]•सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति। तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसंतरकडाए

---

१. से (अ, क, घ, च, ब)।

२. सं० पा०—सअंडं जाव मक्कडा।

३. सं० पा०—अणेसणिज्जं ... लाभे।

४. वृत्तौ 'परिगृह्णीयात्' इति संस्कृत-रूपं विद्यते 'चेतिस्सामि' इति पाठः सम्भवतो लिपिदोषेण जातः। प्रकरणानुसारेणात्र कोष्ठकान्तर्गतः पाठो युज्यते।

५. सं० पा०—अप्पंडं जाव मक्कडा।

६. सं० पा०—एसणिज्जं ... लाभे।

७. वृत्तौ 'गृह्णीयात्' इति संस्कृत-रूपं विद्यते 'चेतिस्सामि' इति पाठः सम्भवतो लिपिदोषेण जातः। प्रकरणानुसारेणात्र कोष्ठकान्तर्गतः पाठो युज्यते।

८. सं० पा०—एवं सेज्जागमेणं णेयव्वं जाव उदगप्पसूयाइंति।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा अपुरिसंतरकडाए वा, अत्तट्ठियाए वा अणत्तट्ठियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा, आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

४. सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति। तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसंतरकडाए वा अपुरिसंतरकडाए वा, अत्तट्ठियाए वा अणत्तट्ठियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा, आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

५. सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति। तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसंतरकडाए वा अपुरिसंतरकडाए वा, अत्तट्ठियाए वा अणत्तट्ठियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा, आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

६. सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेतेति। तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसंतरकडाए वा अपुरिसंतरकडाए वा, अत्तट्ठियाए वा अणत्तट्ठियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा, आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

समण-माहणाइ-समुद्दिस्स-णिसीहिया-पदं

७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ। तहप्पगाराए णिसीहियाए पुरिसंतरकडाए वा अपुरिसंतरकडाए वा, अत्तट्ठियाए वा अणत्तट्ठियाए वा, परिभुत्ताए वा अपरिभुत्ताए वा, आसेवियाए वा अणासेवियाए वा णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु चेएइ। तहप्पगाराए णिसीहियाए अपुरिसंतरकडाए, अणत्तट्ठियाए, अपरिभुत्ताए, अणासेवियाए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

९. अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडा, अत्तट्ठिया, परिभुत्ता, आसेविया पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।।

परिकम्मिय-णिसीहिया-पदं

१०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—अस्संजए भिक्खु-पडियाए कडिए वा, उक्कंबिए वा, छन्ने वा, लित्ते वा, घट्ठे वा, मट्ठे वा, संमट्ठे वा, संपधूमिए वा, तहप्पगाराए णिसीहियाए अपुरिसंतरकडाए, अणत्तट्ठियाए, अपरिभुत्ताए, अणासेवियाए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।।

११. अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडा, अत्तट्ठिया, परिभुत्ता, आसेविया पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।।

१२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण णिसीहियं जाणेज्जा—अस्संजए भिक्खु-पडियाए खुड्डियाओ दुवारियाओ महल्लियाओ कुज्जा, महल्लियाओ दुवारियाओ खुड्डियाओ कुज्जा, समाओ सिज्जाओ विसमाओ कुज्जा, विसमाओ सिज्जाओ समाओ कुज्जा, पवायाओ सिज्जाओ णिवायाओ कुज्जा, णिवायाओ सिज्जाओ पवायाओ कुज्जा, अंतो वा बहिं वा णिसीहियाए हरियाणि छिंदिय-छिंदिय, दालिय-दालिय संथारगं संथरेज्जा, बहिया वा णिण्णक्खु, तहप्पगाराए णिसीहियाए अपुरिसंतरकडाए, अणत्तट्ठियाए, अपरिभुत्ताए, अणासेवियाए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।।

१३. अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडा, अत्तट्ठिया, परिभुत्ता, आसेविया पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।।

बहिया निस्सारिय-णिसीहिया-पदं

१४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण [णिसीहियं?] जाणेज्जा—अस्संजए भिक्खु-पडियाए उदगप्पसूयाणि कंदाणि वा, मूलाणि वा, [तयाणि वा ?], पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा, हरियाणि वा ठाणाओ ठाणं साहरति, बहिया वा णिण्णक्खु, तहप्पगाराए णिसीहियाए अपुरिसंतरकडाए, अणत्तट्ठियाए, अपरिभुत्ताए, अणासेवियाए णो ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा ।।

१५. अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडा, अत्तट्ठिया, परिभुत्ता, आसेविया पडिलेहित्ता पमज्जित्ता तओ संजयामेव ठाणं वा, सेज्जं वा, णिसीहियं वा चेतेज्जा° ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१६. जे तत्थ दुवग्गा वा तिवग्गा वा चउवग्गा वा पंचवग्गा वा अभिसंधारेंति णिसीहियं गमणाए, ते णो अण्णमण्णस्स कायं आलिंगेज्ज वा विलिंगेज्ज वा, चुंबेज्ज वा, दंतेहिं णहेहिं वा अच्छिदेज्ज वा, विच्छिदेज्ज[1] वा ।।

१७. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जा सेयमिणं मणेज्जासि ।

—त्ति बेमि ।।

---

१. वोच्छि° (च)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दसमं अज्झयणं

उच्चारपासवण-सत्तिक्कयं

पाय-पुंछण-पदं

१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा उच्चारपावसण-किरियाए उव्वाहिज्जमाणे[1] सयस्स पायपुंछणस्स असईए तओ पच्छा साहम्मियं जाएज्जा ।।

थंडिल-पदं

२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणज्जा—सअंडं सपाणं[2] •सबीअं सहरियं सउसं सउदयं सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-°मक्कडासंताणयं, तहप्प-गारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।।

३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—अप्पंडं[3] अप्पपाणं अप्पबीअं[4] •अप्पहरियं अप्पोसं अप्पुदयं अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-°मक्कडा-संताणयं, तहप्पगारंसि थंडिलंसि उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।।

४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—अस्सिपडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स[5] •पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु उद्देसियं चेएइ । तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा, अत्तट्ठियं वा अणत्तट्ठियं वा, परिभुत्तं वा

---

१. उप्पा° (क) ।

२. सं० पा०—सपाणं जाव मक्कडा ।

३. आदर्शेषु एतत् पदं न दृश्यते, वृत्तौ च उल्लिखितमस्ति । 'सअंड' इति पदस्य प्रतिपक्षे 'अप्पंड' इति पदं स्वतः प्राप्तमस्ति ।

४. सं० पा०—अप्पबीअं जाव मक्कडा ।

५. सं० पा०—अस्सिपडियाए एगं साहम्मियं समुद्दिस्स अस्सिपडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स अस्सिपडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स अस्सिपडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स अस्सिपडियाए बहवे समणमाहण पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स पाणाइं ४ जाव उद्देसियं चेतेति, तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकडं वा जाव बहिया णीहडं वा अणीहडं वा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपरिभुत्तं वा, आसेवियं वा अणासेवियं वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—अस्सिपडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु उद्देसियं चेएइ। तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकडं वा जाव अणासेवियं वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—अस्सिपडियाए एगं साहम्मिणि समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु उद्देसियं चेएइ। तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकडं वा जाव अणासेवियं वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—अस्सिपडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु उद्देसियं चेएइ। तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकडं वा जाव अणासेवियं वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—अस्सिपडियाए बहवे समण-माहण-अतिहि-किवण-वणीमए पगणिय-पगणिय समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु उद्देसियं चेएइ। तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकडं वा जाव अणासेवियं वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा° ॥

९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—बहवे समण-माहण-किवण-वणीमग-अतिही[1] समुद्दिस्स पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं समारब्भ समुद्दिस्स कीयं पामिच्चं अच्छेज्जं अणिसट्ठं अभिहडं आहट्टु उद्देसियं चेएइ। तहप्पगारं थंडिलं अपुरिसंतरकडं[2], °अणत्तट्ठियं, अपरिभुत्तं, अणासेवियं°, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

१०. अह पुणेवं जाणेज्जा—पुरिसंतरकडं[3], °अत्तट्ठियं, परिभुत्तं, आसेवियं°, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

---

१. पूर्वपाठेभ्यः (१।१७; २।८; ५।१०) अस्य शब्द-विन्यासो भिन्नोस्ति।

२. सं० पा०—अपुरिसंतरकडं जाव बहिया अणीहडं वा⋯अण्णयरंसि।

३. सं० पा०—पुरिसतरकडं जाव बहिया णीहडं वा⋯अण्णयरंसि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

११. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—अस्सिंपडियाए कयं वा, कारियं वा, पामिच्चयं[1] वा, छण्णं वा, घट्ठं वा, मट्ठं वा, लित्तं वा, संमट्ठं वा, संपधूमियं वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

१२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा, गाहावइ-पुत्ता वा कंदाणि वा, मूलाणि वा[2], •[तयाणि वा ?], पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा, बीयाणि वा°, हरियाणि वा अंतातो वा बाहिं णीहरंति, बहियाओ[3] वा अंतो साहरंति, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

१३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—खंधंसि वा, पीढंसि वा, मंचंसि वा, मालंसि वा, अट्टंसि[4] वा, पासायंसि वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

१४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—अणंतरहियाए पुढवीए, ससिणिद्धाए पुढवीए, ससरक्खाए पुढवीए, मट्टियाकडाए[5], चित्तमंताए सिलाए, चित्तमंताए लेलुयाए, कोलावासंसि वा[6] दारुयंसि जीवपइट्ठियंसि[7] •सअंडंसि सपाणंसि सबीअंसि सहरियंसि सउसंसि सउदयंसि सउत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-°मक्कडासंताणयंसि, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चार-पासवणं वोसिरेज्जा ॥

१५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा, गाहावइ-पुत्ता वा कंदाणि वा[8], •मूलाणि वा, [तयाणि वा ?], पत्ताणि वा, पुप्फाणि वा, फलाणि वा°, बीयाणि वा परिसाडेंसु वा परिसाडिंति वा परिसाडिस्संति वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

१६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—इह खलु गाहावई वा, गाहावइ-पुत्ता वा सालीणि वा, वीहीणि वा, मुग्गाणि वा, मासाणि वा, तिलाणि

---

१. पामिच्चियं (अ, क, घ, च)।

२. सं० पा०—मूलाणि वा जाव हरियाणि।

३. बाहीतो (अ, क)।

४. हम्मियतलंसि (घ)।

५. एष पाठो निशीथस्य (१४।२३)। सूत्रानुसारेण स्वीकृतः। सर्वासु आचाराङ्गप्रतिषु 'मट्टिया मक्कडाए' इति पाठोस्ति। असौ न शुद्धं प्रतिभाति।

६. अस्मिन् सूत्रे प्रतिषु 'वा' शब्दस्य प्रयोगा अधिका दृश्यन्ते, यथा 'वा दारुयंसि वा जीव-पइट्ठियंसि वा' किन्तु १।५१ सूत्रानुसारेण 'वा' शब्दः सकृदेव युज्यते।

७. सं० पा०—जीवपइट्ठियंसि जाव मक्कडा।

८. सं० पा०—कंदाणि जाव बीयाणि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा, कुलत्थाणि वा, जवाणि वा, जवजवाणि वा, 'पतिरिंसु वा पतिरिंति वा'[1] पतिरिस्संति वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

१७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा— आमोयाणि वा घसाणि वा, भिलुयाणि वा, विज्जलाणि वा, खाणुयाणि वा, कडवाणि[2] वा, पगत्ताणि वा, दरीणि वा, पदुग्गाणि वा, समाणि वा, विसमाणि वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

१८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—माणुस-रंधणाणि वा, महिस-करणाणि वा, वसभ-करणाणि वा, अस्स-करणाणि वा कुक्कुड-करणाणि वा, लावय-करणाणि वा, वट्टय-करणाणि वा, तित्तिर-करणाणि वा, कवोय-करणाणि वा, कपिंजल-करणाणि वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

१९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—वेहाणस-ट्ठाणेसु वा, गिद्धपिट्ठ-ट्ठाणेसु वा, तरुपडण[3]-ट्ठाणेसु वा, 'मेरुपडण-ट्ठाणेसु'[4] वा, विसभक्खण-ट्ठाणेसु वा, अगणिफंडण[5]-ट्ठाणेसु वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि [थंडिलंसि ?] णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

२०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—आरामाणि वा, उज्जाणाणि वा, वणाणि वा, वणसंडाणि वा, देवकुलाणि वा, सभाणि वा, पवाणि वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

२१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—अट्टालयाणि वा, चरियाणि वा, दाराणि वा, गोपुराणि वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

२२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा तियाणि वा, चउक्काणि वा, चच्चराणि वा, चउमुहाणि वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

२३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—इंगालडाहेसु वा, खारडाहेसु वा, मडयडाहेसु वा, मडयथूभियासु वा, मडयचेइएसु वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ॥

२४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—णदीआययणेसु वा,

---

१. पइरंसु वा पइरंति वा (घ, च, छ)।

२. कडंबाणि (अ, ब)।

३. °पवडण (अ, च, छ)।

४. × (छ)।

५. °फडय (क,ख,घ,च); °पडण (छ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंकायतणेसु वा, ओघायतणेसु वा, सेयणपहंसि[1] वा, अण्णयरंसि वा तहप्प-गारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।।

२५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—णवियासु वा मट्टिय-खाणियासु, णवियासु वा गोप्पलेहियासु, गवायणीसु[2] वा, खाणीसु वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।।

२६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—डागवच्चंसि वा, सागवच्चंसि वा, मूलगवच्चंसि वा, हत्थंकरवच्चंसि वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि णो उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा ।।

२७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा सेज्जं पुण थंडिलं जाणेज्जा—असणवणंसि वा, सणवणंसि वा, धायइवणंसि वा, केयइवणंसि वा, अंबवणंसि वा, असोगवणंसि वा, णागवणंसि वा, पुण्णागवणंसि वा[3], अण्णयरेसु वा तहप्पगारेसु पत्तोवएसु वा, पुप्फोवएसु वा, फलोवएसु वा, बीओवएसु वा, हरिओवएसु वा णो उच्चार-पासवणं वोसिरेज्जा[4] ।।

२८. से[5] भिक्खू वा भिक्खुणी वा सपाययं वा परपाययं वा गहाय से तमायाए एगंत-मवक्कमेज्जा अणावायंसि असंलोयंसि[6] अप्पपाणंसि[7] °अप्पबीअंसि अप्पहरियंसि अप्पोसंसि अप्पुदयंसि अप्पुत्तिंग-पणग-दग-मट्टिय-°मक्कडासंताणयंसि अहारा-मंसि वा उवस्सयंसि तओ संजयामेव उच्चारपासवणं वोसिरेज्जा[8] ।।

से तमायाए एगंतमवक्कमे अणावायंसि जाव मक्कडासंताणयंसि अहारामंसि वा, झामथंडिलंसि[9] वा, अण्णयरंसि वा तहप्पगारंसि थंडिलंसि अचित्तंसि तओ संजयामेव उच्चारपासवणं परिट्ठवेज्जा ।।

२९. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं[10], °जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया° जएज्जासि ।

—त्ति बेमि ।।

---

१. °वहंसि (अ); °पथं (छ) ।

२. गवाणीसु (अ, घ) ।

३. वा पुण्णगवणंसि वा (अ) ।

४. अस्मिन् सूत्रे चूर्णौ 'गुत्तागारादयः' अनेके शब्दा व्याख्याताः सन्ति । ते वृत्तौ प्रतिषु च नोपलभ्यन्ते ।

५. चूर्णौ भिन्नरूपः पाठो व्याख्यातो दृश्यते—'से भिक्खू वा २ राओ वा वियाले वा, वारगं णाम उच्चारमत्तओ, अप्पणगं परायगं वा जाइत्ता अभिग्गहिओ धरेति न णिक्खवति विगिंचति वोसिरति विसोहिति निल्लेवेति से तमादाए झामथंडिलादीसु परिट्ठावेति' ।

६. °लोइयंसि (अ) ।

७. सं० पा०—अप्पपाणंसि जाव मक्कडा ।

८. वोसिरेज्जा उच्चारपासवणं वोसिरित्ता (ख) ।

९. द्रष्टव्यम्—१।३ ।

१०. सं० पा०—सामग्गियं जाव जएज्जासि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगारसमं अज्झयणं

सद्द-सत्तिक्कयं

वितत-सद्द-कण्णसोय-पडिया-पदं

१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा [अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेइ, तं जहा ?] मुइंग-सद्दाणि वा, 'नंदीमुइंगसद्दाणि वा'[1], झल्लरीसद्दाणि वा, अण्णयराणि वा तहप्पगाराणि विरूवरूवाणि वितताइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

तत-सद्द-कण्णसोय-पडिया-पदं

२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेइ, तं जहा—वीणा-सद्दाणि वा, विपंची-सद्दाणि वा, वद्धीसग[2]-सद्दाणि वा, तुणय-सद्दाणि वा, पणव[3]-सद्दाणि वा, तुंबवीणिय-सद्दाणि वा, ढंकुण[4]-सद्दाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं सद्दाइं तताइं कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

ताल-सद्द-कण्णसोय-पडिया-पदं

३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तं जहा—ताल-सद्दाणि वा, कंसताल-सद्दाणि वा, लत्तिय-सद्दाणि वा, गोहिय-सद्दाणि वा, किरिकिरिय-सद्दाणि वा, अण्णयराणि वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं तालसद्दाइं कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

झुसिर-सद्द-कण्णसोय-पडिया-पदं

४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तं जहा—संख-सद्दाणि

---

१. × (क, च)।

२. वव्वी° (घ, च); पव्वी° (छ); वव्वी° (ख)।

३. पणय (अ, छ, ब)।

४. ढकुण (अ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा, वेणु-सद्दाणि वा, वंस-सद्दाणि वा, खरमुहि-सद्दाणि वा, पिरिपिरिय[1]-सद्दाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं सद्दाइं झुसिराइं[2] कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

विविह-सद्द-कण्णसोय-पडिया-पदं

५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तं जहा—वप्पाणि वा, फलिहाणि वा[3], •उप्पलाणि वा, पल्ललाणि वा, उज्झराणि वा, णिज्झराणि वा, वावीणि वा, पोक्खराणि वा, दीहियाणि वा, गुंजालियाणि वा°, सराणि वा, सागराणि वा, सरपंतियाणि वा, सरसरपंतियाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तं जहा—कच्छाणि वा, णूमाणि वा, गहणाणि वा, वणाणि वा, वणदुग्गाणि वा, पव्वयाणि वा, पव्वयदुग्गाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तं जहा—गामाणि वा, णगराणि वा, णिगमाणि वा, रायहाणीणि वा, आसम-पट्टण-सन्निवेसाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं[4] •विरूवरूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तं जहा—आरामाणि वा, उज्जाणाणि वा, वणाणि वा, वणसंडाणि वा, देवकुलाणि वा, सभाणि वा, पवाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं[5] •विरूवरूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तं जहा—अट्टाणि वा, अट्टालयाणि वा, चरियाणि वा, दाराणि वा, गोपुराणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं[6] •विरूवरूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

१०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तं जहा—तियाणि वा, चउक्काणि वा, चच्चराणि वा, चउम्मुहाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं[7] •विरूवरूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

---

१. °परि (अ, वृ); परिपरिय (क, च, छ, ब)।

२. प्रथम-तृतीय-सूत्रयोः 'विततांइं सद्दाइं, ताल-सद्दाइं' इति पाठोस्ति तथा द्वितीय-चतुर्थ-सूत्रयोः सद्दाइं तताइं, सद्दाइं झुसिराइं' इति पाठोस्ति । एवं विशेष्य-विशेषणयोर्व्यत्य-योस्ति ।

३. सं० पा०—फलिहाणि वा जाव सराणि ।

४-७. सं० पा०—तहप्पगाराइं सद्दाइं णो ।

११. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तं जहा—महिसट्ठाण-करणाणि वा, वसभट्ठाण-करणाणि वा, अस्सट्ठाण-करणाणि वा, हत्थिट्ठाण-करणाणि वा[1], °कुक्कुडट्ठाण-करणाणि वा, मक्कडट्ठाण-करणाणि वा, लावयट्ठाण-करणाणि वा, वट्टयट्ठाण-करणाणि वा, तित्तिरट्ठाण-करणाणि वा, कवोयट्ठाण-करणाणि वा°, कविंजलट्ठाण-करणाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं[2] °विरूवरूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

१२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तं जहा—महिस-जुद्धाणि वा, वसभ-जुद्धाणि वा, अस्स-जुद्धाणि वा, हत्थि-जुद्धाणि वा[3], °कुक्कुड-जुद्धाणि वा, मक्कड-जुद्धाणि वा, लावय-जुद्धाणि वा, वट्टय-जुद्धाणि वा, तित्तिर-जुद्धाणि वा, कवोय-जुद्धाणि वा°, कविंजल-जुद्धाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं[4] °विरूवरूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

१३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं सद्दाइं सुणेति, तं जहा—'जूहिय-ट्ठाणाणि'[5] वा, हयजूहिय-ट्ठाणाणि वा, गयजूहिय-ट्ठाणाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं[6] °विरूवरूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

१४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[7] °अहावेगइयाइं सद्दाइं° सुणेति, तं जहा—अक्खाइय-ट्ठाणाणि वा, माणुम्माणिय-ट्ठाणाणि वा, महयाहय-णट्ट-गीय-वाइय-तंति-तल-ताल-तुडिय-पडुप्पवाइय-ट्ठाणाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं[8] °विरूव-रूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

१५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[9] °अहावेगइयाइं सद्दाइं° सुणेति, तं जहा—कलहाणि वा, डिंबाणि वा, डमराणि वा, दोरज्जाणि वा, वेरज्जाणि वा, विरुद्धरज्जाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं[10] °विरूवरूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

१६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा[11] °अहावेगइयाइं° सद्दाइं सुणेति, तं जहा—खुड्डियं दारियं परिवुतं[12] मंडियालंकियं[13] निवुज्झमाणिं पेहाए, एगं पुरिसं वा वहाए

---

१. सं० पा०—हत्थिट्ठाण-करणाणि वा जाव कविंजल।

२. सं० पा०—तहप्पगाराइं सद्दाइं णो।

३. सं० पा०—हत्थि-जुद्धाणि वा जाव कविंजल।

४. सं० पा०—तहप्पगराइं णो।

५. निशीथे १२ उद्देशके २६ सूत्रे 'उज्जूहिया ठाणाणि' इति पाठो विद्यते।

६. सं० पा०—तहप्पगाराइं णो।

७. सं० पा०—भिक्खू वा २ जाव सुणेति।

८. सं० पा०—तहप्पगाराइं णो।

९. सं० पा०—भिक्खू वा २ जाव सुणेति।

१०. सं० पा०—तहप्पगाराइं सद्दाइं णो।

११. सं० पा०—भिक्खू वा २ जाव सद्दाइं।

१२. परिभुयं (क्व); मण्डितालंकृतां बहुपरिवृतां (वृ)।

१३. मंडिय° (घ, छ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णीणिज्जमाणं पेहाए, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं[1] •विरूवरूवाइं सद्दाइं कण्णसोय-पडियाए° णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

१७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णयराइं विरूवरूवाइं महासवाइं एवं जाणेज्जा, तं जहा – बहुसगडाणि वा, बहुरहाणि वा, बहुमिलक्खूणि वा, बहुपच्चंताणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं महासवाइं कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

१८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णयराइं विरूवरूवाइं महुस्सवाइं एवं जाणेज्जा, तं जहा— इत्थीणि वा, पुरिसाणि वा, थेराणि वा, डहराणि वा, मज्झिमाणि[2] वा, आभरण-विभूसियाणि वा, गायंताणि वा, वायंताणि वा, णच्चंताणि वा, हसंताणि वा, रमंताणि वा, मोहंताणि वा, विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं परिभुंजंताणि वा, परिभाइंताणि वा, विच्छड्डियमाणाणि वा, विगोवयमाणाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं महुस्सवाइं कण्णसोय-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

सद्दासत्ति-पदं

१९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो इहलोइएहिं सद्देहिं, णो परलोइएहिं सद्देहिं, णो सुएहिं सद्देहिं, णो असुएहिं सद्देहिं, णो दिट्ठेहिं सद्देहिं, णो अदिट्ठेहिं सद्देहिं, णो इट्ठेहिं सद्देहिं, णो कंतेहिं सद्देहिं सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, णो गिज्झेज्जा, णो मुज्झेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा ॥

२०. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं,[3] •जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया° जएज्जासि ।

—त्ति बेमि ॥

---

१. सं० पा०—तहप्पगाराइं णो ।

२. मज्झ° (छ, ब) ।

३. सं० पा०—सामग्गियं जाव जएज्जासि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बारसमं अज्झयणं
रूव-सत्तिक्कयं

विविह-रूव-चक्खुदंसण-पडिया-पदं

१. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तं जहा—गंथिमाणि वा, वेढिमाणि वा, पूरिमाणि वा, संघाइमाणि वा, कट्ठकम्माणि[1] वा, पोत्थकम्माणि वा, चित्तकम्माणि वा, मणिकम्माणि वा, दंतकम्माणि वा[2], पत्तच्छेज्जकम्माणि वा, 'विहाणि वा, वेहिमाणि वा'[3], अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं [रूवाइं ?] चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

२. [4]*से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तं जहा—वप्पाणि वा, फलिहाणि वा, उप्पलाणि वा, पल्ललाणि वा, उज्झराणि वा, णिज्झराणि वा, वावीणि वा, पोक्खराणि वा, दीहियाणि वा, गुंजालियाणि वा, सराणि वा, सागराणि वा, सरपंतियाणि वा, सरसरपंतियाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तं जहा—कच्छाणि वा, णूमाणि वा, गहणाणि वा, वणाणि वा, वणदुग्गाणि वा, पव्वयाणि वा, पव्वयदुग्गाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

---

१. कट्ठाणि (क, घ, च)।

२. वा मालकम्माणि वा (अ, क, घ, च, छ, ब); वृत्तौ चूर्णौ च न व्याख्यातम्, अतो न गृहीतम्।

३. विविहाणि वा वेढिमाइं (अ, क, घ, छ, ब)। निशीथस्य १२ उद्देशकस्य १७ सूत्रानुसारेण अयं पाठः स्वीकृतः। आचाराङ्ग-प्रतिषु लिपि-दोषाद् वर्णविपर्ययो जात इति प्रतीयते।

४. सं० पा०—एवं णायव्वं जहा सद्द-पडियाए सव्वा वाइत्तवज्जा रूव-पडियाए वि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तं जहा—गामाणि वा, णगराणि वा, णिगमाणि वा, रायहाणीणि वा, आसम-पट्टण-सन्निवेसाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।।

५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तं जहा—आरामाणि वा, उज्जाणाणि वा, वणाणि वा, वणसंडाणि वा, देवकुलाणि वा, सभाणि वा, पवाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।।

६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ तं जहा—अट्टाणि वा, अट्टालयाणि वा, चरियाणि वा, दाराणि वा, गोपुराणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।।

७. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तं जहा—तियाणि वा, चउक्काणि वा, चच्चराणि वा, चउम्मुहाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।।

८. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तं जहा—महिसट्ठाण-करणाणि वा, वसभट्ठाण-करणाणि वा, अस्सट्ठाण-करणाणि वा, हत्थिट्ठाण-करणाणि वा, कुक्कुडट्ठाण-करणाणि वा, मक्कडट्ठाण-करणाणि वा, लावयट्ठाण-करणाणि वा, वट्टयट्ठाण-करणाणि वा, तित्तिरट्ठाण-करणाणि वा, कवोयट्ठाण-करणाणि वा, कविंजलट्ठाण-करणाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।।

९. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तं जहा—महिस-जुद्धाणि वा, वसभ-जुद्धाणि वा, अस्स-जुद्धाणि वा, हत्थि-जुद्धाणि वा, कुक्कड-जुद्धाणि वा, मक्कड-जुद्धाणि वा, लावय-जुद्धाणि वा, वट्टय-जुद्धाणि वा, तित्तिर-जुद्धाणि वा, कवोय-जुद्धाणि वा, कविंजल-जुद्धाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।।

१०. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तं जहा—जूहिय-ट्ठाणाणि वा, हयजूहिय-ट्ठाणाणि वा, गयजूहिय-ट्ठाणाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ।।

११. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तं जहा—अक्खाइयट्ठाणाणि वा, माणुम्माणिय-ट्ठाणाणि वा, महयाहय-णट्ट-गीय-वाइय-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तंति-तल-ताल-तुडिय-पडुप्पवाइय-ट्ठाणाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

१२. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ तं जहा—कलहाणि वा, डिंबाणि वा, डमराणि वा, दोरज्जाणि वा, वेरज्जाणि वा, विरुद्धरज्जाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

१३. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अहावेगइयाइं रूवाइं पासइ, तं जहा—खुड्डियं दारियं परिवुतं मंडियालंकियं निवुज्झमाणिं पेहाए, एगं पुरिसं वा वहाए णीणिज्जमाणं पेहाए, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं रूवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

१४. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णयराइं विरूवरूवाइं महासवाइं एवं जाणेज्जा, तं जहा—बहुसगडाणि वा, बहुरहाणि वा, बहुमिलक्खूणि वा, बहुपच्चंताणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं महासवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

१५. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा अण्णयराइं विरूवरूवाइं महुस्सवाइं एवं जाणेज्जा, तं जहा—इत्थीणि वा, पुरिसाणि वा, थेराणि वा, डहराणि वा, मज्झिमाणि वा, आभरण-विभूसियाणि वा, गायंताणि वा, वायंताणि वा, णच्चंताणि वा, हसंताणि वा, रमंताणि वा, मोहंताणि, वा विउलं असणं पाणं खाइमं साइमं परिभुंजंताणि वा, परिभाइंताणि वा, विच्छड्डियमाणाणि वा, विगोवयमाणाणि वा, अण्णयराइं वा तहप्पगाराइं विरूवरूवाइं महुस्सवाइं चक्खुदंसण-पडियाए णो अभिसंधारेज्जा गमणाए ॥

रूवासत्ति-पदं

१६. से भिक्खू वा भिक्खुणी वा णो इहलोइएहिं रूवेहिं, णो परलोइएहिं रूवेहिं, णो सुएहिं रूवेहिं, णो असुएहिं रूवेहिं, णो दिट्ठेहिं रूवेहिं, णो अदिट्ठेहिं रूवेहिं, णो इट्ठेहिं रूवेहिं, णो कंतेहिं रूवेहिं सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, णो गिज्झेज्जा, णो मुज्झेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा ॥

१७. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं जं सव्वट्ठेहिं समिए सहिए सया जएज्जासि° ।

—त्ति बेमि ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तेरसमं अज्झयणं
परकिरिया-सत्तिक्कयं

किरिया-पदं

१. परकिरियं अज्झत्थियं संसेसियं—णो तं साइए[1], णो तं णियमे ।।

पाद-परिकम्म-पदं

२. 'से से'[2] परो पादाइं आमज्जेज्ज वा, 'पमज्जेज्ज वा'[3]—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

३. से से परो पादाइं संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

४. से से परो पादाइं फूमेज्ज वा, रएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

५. से से परो पादाइं तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए[4] वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज[5] वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

६. से से परो पादाइं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

७. से से परो पादाइं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

८. से से परो पादाइं अण्णयरेण विलेवण-जाएण आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

९. से से परो पादाइं अण्णयरेण धूवण-जाएण धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

---

१. सायए (घ) ।
२. सिया से (क, घ, च) सर्वत्र ।
३. × (अ, क, च, छ, ब) ।
४. निशीथे सर्वत्रापि 'तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा, णवणीएण वा' इति पाठो विद्यते ।
५. भिलं० (छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०. से से परो पादाओ खाणुं[1] वा, कंटयं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा--णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

११. से से परो पादाओ पूयं वा, सोणियं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

काय-परिकम्म-पदं

१२. से से परो कायं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

१३. से से परो कायं संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए णो तं णियमे ।।

१४. से से परो कायं तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, अब्भंगेज्ज[2] वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

१५. से से परो कायं लोद्धेण[3] वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

१६. से से परो कायं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पहोएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

१७. से से परो कायं अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

१८. से से परो कायं अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

वण-परिकम्म-पदं

१९. से से परो कायंसि वणं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

२०. से से परो कायंसि वणं संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

२१. से से परो कायंसि वणं तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

२२. से से परो कायंसि वणं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

२३. से से परो कायंसि वणं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

---

१. खाणुयं (क, घ, च, ब) ।

२. भिल्लंगेज्ज (च) ।

३. लोद्देण (अ, क) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२४. 'से से परो कायंसि वणं अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

२५. से से परो कायंसि वणं अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा – णो तं साइए, णो तं णियमे'[1] ।।

२६. से से परो कायंसि वणं अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिदेज्ज वा, विच्छिदेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

२७. से से परो कायंसि वणं अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिदित्ता वा, विच्छिदित्ता वा पूयं वा, सोणियं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा--णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

गंड-परिकम्म-पदं

२८. से से परो कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं[2] वा, भगंदलं वा आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

२९. से से परो कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

३०. से से परो कायंसि गंडं वा[3], °अरइयं वा, पिडयं वा°, भगंदलं वा तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

३१. से से परो कायंसि गंडं वा[4], °अरइयं वा, पिडयं वा°, भगंदलं वा लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

३२. से से परो कायंसि गंडं वा[5], °अरइयं वा, पिडयं वा°, भगंदलं वा सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

[से से परो कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा-- णो तं साइए, णो तं णियमे । से से परो कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे][6] ।।

---

१. २४-२५ सूत्रे कोष्ठकोल्लिखित-प्रतिषु न विद्येते (अ, क, घ, च, छ) ।

२. पुलयं (अ, च); पुलइयं (क, छ, ब); पुलइं (घ)। एवं सर्वासु प्रतिषु 'पिडयं' पाठः नोपलभ्यते, किन्तु उपलब्ध-पाठानां नार्थोऽवगम्यते । निशीथे तृतीयोद्देशके चतुस्त्रिंशत्तम-सूत्रे 'पिडयं' पाठः । अस्मिन् प्रकरणे स सम्यग्, इति स पाठः स्वीकृतः । उक्तप्रतिपाठा लिपिदोषेण विकृता इति प्रतीयते ।

३,४,५. सं० पा०—गंडं वा जाव भगंदलं ।

६. २४-२५ सूत्राङ्कानुसारेण अत्रापि कोष्ठकान्तर्गते सूत्रे युज्येते, परन्तु प्रतिषु नोपलभ्यते ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३३. से से परो कायंसि गंडं वा[1], °अरइयं वा, पिडयं वा°, भगंदलं वा अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिदेज्ज वा, विच्छिदेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

३४. से से परो कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं सत्थजाएणं अच्छिदित्ता वा, विच्छिदित्ता वा पूयं वा, सोणियं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

मल-णीहरण-पदं

३५. से से परो कायाओ सेयं वा, जल्लं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

३६. से से परो अच्छिमलं वा, कण्णमलं वा, दंतमलं वा, णहमलं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

वाल-रोम-पदं

३७ से से परो दीहाइं वालाइं, दीहाइं रोमाइं, दीहाइं भमुहाइं, दीहाइं कक्खरोमाइं, दीहाइं वत्थिरोमाइं कप्पेज्ज वा, संठवेज्ज[2] वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

लिक्ख-जूया-पदं

३८. से से परो सीसाओ लिक्खं वा, जूयं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

पाद-परिकम्म-पदं

३९. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

४०. [3]°से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइं संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

४१. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइं फूमेज्ज वा, रएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

४२. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइं तेल्लेण वा घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

४३. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

---

१. सं० पा०—गंडं वा जाव भगंदलं ।
२. संबद्धेज्ज (च); संवज्जेज्ज (छ) ।
३. सं० पा०—एवं हिट्ठिमो गमो पायादि भाणियव्वो ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४४. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

४५. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइं अण्णयरेण विलेवण-जाएण आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

४६. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइं अण्णयरेण धूवण-जाएण धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

४७. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाओ खाणुं वा, कंटयं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

४८. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाओ पूयं वा, सोणियं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

काय-परिकम्म-पदं

४९. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

५०. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायं संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

५१. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायं तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, अब्भंगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

५२. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

५३. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पहोएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

५४. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायं अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

५५. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायं अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

वण-परिकम्म-पदं

५६. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

५७. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं संवाहेज्ज वा, लिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

५८. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

५९. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

६०. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

६१. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

६२. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

६३. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिंदेज्ज वा, विच्छिंदेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

६४. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिंदित्ता वा, विच्छिंदित्ता वा पूयं वा, सोणियं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

गंड-परिकम्म-पदं

६५. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

६६. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा संबाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

६७. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

६८. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा, लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

६९. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

[से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।

से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे] ॥

७०. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिदेज्ज वा, विच्छिदेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

७१. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिदित्ता वा, विच्छिदित्ता वा पूयं वा, सोणियं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

मल-णीहरण-पदं

७२. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायाओ सेयं वा, जल्लं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

७३. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता अच्छिमलं वा, कण्णमलं वा, दंतमलं वा, णहमलं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

वाल-रोम-पदं

७४. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता दीहाइं वालाइं, दीहाइं रोमाइं, दीहाइं भमुहाइं, दीहाइं कक्खरोमाइं, दीहाइं वत्थिरोमाइं कप्पेज्ज वा, संठवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

लिक्ख-जूया-पदं

७५. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता सीसाओ लिक्खं वा, जूयं वा णीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

आभरण-आबिंधण-पदं

७६. से से परो अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावित्ता हारं वा, अद्धहारं वा, उरत्थं वा, गेवेयं[1] वा, मउडं वा, पालंबं वा, सुवण्णसुत्तं वा आबिंधेज्ज[2] वा, पिणिधेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

---

१. सुवण्णगेवेयं (घ)। २. आबंधेज्ज (घ, च)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाद-परिकम्म-पदं

७७. से से परो आरामंसि वा, उज्जाणंसि वा णीहरेत्ता वा, पविसेत्ता वा पायाइं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।[1]
[एवं णेयव्वा अण्णमण्णकिरियावि ।][2] ।।

तिगिच्छा-पदं

७८. से से परो सुद्धेणं वा वइ-बलेणं तेइच्छं आउट्टे,
से से परो असुद्धेणं वा वइ-बलेणं तेइच्छं आउट्टे,
से से परो गिलाणस्स सचित्ताणि कंदाणि वा, मूलाणि वा, तयाणि वा, हरियाणि वा खणित्तु वा, कड्ढेत्तु वा, कड्ढावेत्तु वा तेइच्छं आउट्टेज्जा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

७९. कडुवेयणा[3] कट्टुवेयणा पाण-भूय-जीव-सत्ता वेदणं वेदेंति ।।

८०. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिते सहिते सदा जए, सेयमिणं मण्णेज्जासि ।

—त्ति बेमि ।।

१,२. अस्मात् सूत्रात् पुरतोपि 'पादाइं संवाहेज्ज वा' (सू० ३) अतः प्रभृति 'सीसाओ लिक्खं वा' (सू० ३८) पर्यन्तं सूत्राणि युज्यन्ते' परन्तु नात्र कश्चित् पूरणीयः संकेतः प्रतिषु प्राप्यते । "एवं णेयव्वा अण्णमण्णकिरियावि" इति सूत्रमत्रानावश्यकं प्रतिभाति, किन्तु वृत्तावस्ति व्याख्यातम् । सम्भाव्यते प्रस्तुत-सूत्रस्य पूरणीय-संकेतो लिपिदोषेण अन्यथा जातः । इत्यपि सम्भाव्यते 'एवं णेयव्वा अण्णमण्णकिरियावि' इति सूत्रं वाचनान्तरगतमस्ति । एकस्यां वाचनायां उक्तसूत्रेणैव त्रयोदशाध्ययनस्य पाठः प्रवेदितः, अपरस्यां च त्रयोदशाध्ययनस्य संक्षिप्तपाठः पृथग्रूपेण प्रतिपादितः । वर्तमाने समुपलब्धः पाठो द्वयोरपि वाचनयोर्मिश्रणं प्रतीयते । तेनास्माभिरुक्तसूत्रं कोष्ठक एव स्वीकृतम् ।

३. कम्मकय० (च) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउद्दसमं अज्झयणं

अण्णुण्णकिरिया-सत्तिक्कयं

किरिया-पदं

१. अण्णमण्णकिरियं[1] अज्झत्थियं संसेसियं—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

पाद-परिकम्म-पदं

२. से अण्णमण्णं पादाइं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

३. [2]से अण्णमण्णं पादाइं संबाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

४. से अण्णमण्णं पादाइं फूमेज्ज वा, रएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

५. से अण्णमण्णं पादाइं तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

६. से अण्णमण्णं पादाइं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

७. से अण्णमण्णं पादाइं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

८. से अण्णमण्णं पादाइं अण्णयरेण विलेवण-जाएण आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

९. से अण्णमण्णं पादाइं अण्णयरेण धूवण-जाएण धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

---

१. अण्णोण° (वृ) । त्रयोदशाध्ययने 'से भिक्खू वा २' इति पाठो नास्ति । चतुर्दशाध्ययने प्रतिषु विद्यते, किन्तु वृत्तौ उभयत्रापि नास्ति व्याख्यातः ।

२. सं० पा०—सेसं तं चेव, एयं खलु° जइज्जासि ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

१०. से अण्णमण्णं पादाओ खाणुं वा, कंटयं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

११. से अण्णमण्णं पादाओ पूयं वा, सोणियं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

काय-परिकम्म-पदं

१२. से अण्णमण्णं कायं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

१३. से अण्णमण्णं कायं संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

१४. से अण्णमण्णं कायं तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, अब्भंगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

१५. से अण्णमण्णं कायं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

१६. से अण्णमण्णं कायं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पहोएज्ज वा —णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

१७. से अण्णमण्णं कायं अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

१८. से अण्णमण्णं कायं अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

वण-परिकम्म-पदं

१९. से अण्णमण्णं कायंसि वणं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

२०. से अण्णमण्णं कायंसि वणं संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

२१. से अण्णमण्णं कायंसि वणं तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

२२. से अण्णमण्णं कायंसि वणं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

२३. से अण्णमण्णं कायंसि वणं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा, उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

२४. से अण्णमण्णं कायंसि वणं अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२५. से अण्णमण्णं कायंसि वणं अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा — णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

२६. से अण्णमण्णं कायंसि वणं अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिदेज्ज वा, विच्छिदेज्ज वा— णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

२७. से अण्णमण्णं कायंसि वणं अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिदित्ता वा, विच्छिदित्ता वा पूयं वा सोणियं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

गंड-परिकम्म-पदं

२८. से अण्णमण्णं कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

२९. से अण्णमण्णं कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

३०. से अण्णमण्णं कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

३१. से अण्णमण्णं कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

३२. से अण्णमण्णं कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।
[से अण्णमण्णं कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे। से अण्णमण्णं कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे।] ॥

३३. से अण्णमण्णं कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिदेज्ज वा, विच्छिदेज्ज वा णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

३४. से अण्णमण्णं कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिदित्ता वा, विच्छिदित्ता वा पूयं वा, सोणियं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

मल-णीहरण-पदं

३५. से अण्णमण्णं कायाओ सेयं वा, जल्लं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

३६. से अण्णमण्णं अच्छिमलं वा, कण्णमलं वा, दंतमलं वा, णहमलं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा —णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

वाल-रोम-पदं

३७. से अण्णमण्णं दीहाइं वालाइं, दीहाइं रोमाइं, दीहाइं भमुहाइं, दीहाइं कक्ख-रोमाइं, दीहाइं वत्थिरोमाइं कप्पेज्ज वा, संठवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

लिक्ख-जूया-पदं

३८. से अण्णमण्णं सीसाओ लिक्खं वा, जूयं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

पाद-परिकम्म-पदं

३९. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

४०. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइं संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

४१. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइं फूमेज्ज वा, रएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

४२. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइं तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

४३. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा – णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

४४. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा –णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

४५. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइं अण्णयरेण विलेवण-जाएण आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा – णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

४६. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाइं अण्णयरेण धूवण-जाएण धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

४७. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाओ खाणुं वा, कंटयं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

४८. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता पादाओ पूयं वा, सोणियं वा णीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

काय-परिकम्म-पदं

४९. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

५०. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायं संवाहेज्ज वा पलिमद्देज्ज वा —णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

५१. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायं तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, अब्भंगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

५२. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

५३. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पहोएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

५४. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायं अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा —णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

५५. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायं अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा--णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

वण-परिकम्म-पदं

५६. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

५७. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

५८. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

५९. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा वण्णेण वा, उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा - णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

६०. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोएज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

६१. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

६२. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

६३. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं अण्णयरेणं धूवण-जाएणं अच्छिदेज्ज वा, विच्छिदेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

६४. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि वणं अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिदित्ता वा, विच्छिदित्ता वा पूयं वा, सोणियं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

गंड-परिकम्म-पदं

६५. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

६६. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा संवाहेज्ज वा, पलिमद्देज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

६७. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा तेल्लेण वा, घएण वा, वसाए वा मक्खेज्ज वा, भिलिंगेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

६८. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा, लोद्धेण वा, कक्केण वा, चुण्णेण वा, वण्णेण वा उल्लोलेज्ज वा, उव्वलेज्ज वा – णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

६९. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा सीओदग-वियडेण वा, उसिणोदग-वियडेण वा उच्छोलेज्ज वा, पधोवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

[से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं विलेवण-जाएणं आलिंपेज्ज वा, विलिंपेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।

से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं धूवण-जाएणं धूवेज्ज वा, पधूवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे] ।।

७०. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिदेज्ज वा, विच्छिदेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

७१. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायंसि गंडं वा, अरइयं वा, पिडयं वा, भगंदलं वा अण्णयरेणं सत्थ-जाएणं अच्छिदित्ता वा, विच्छिदित्ता

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वा पूयं वा, सोणियं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

मल-णीहरण-पदं

७२. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता कायाओ सेयं वा, जल्लं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

७३. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता अच्छिमलं वा, कण्णमलं वा, दंतमलं वा, णहमलं वा णीहरेज्ज वा, विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

वाल-रोम-पदं

७४. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता दीहाइं वालाइं, दीहाइं रोमाइं, दीहाइं भमुहाइं, दीहाइं कक्खरोमाइं, दीहाइं वत्थिरोमाइं कप्पेज्ज वा, संठवेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

लिक्ख-जूया-पदं

७५. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता सीसाओ लिक्खं वा, जूयं वा णीहरेज्ज वा विसोहेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

आभरण-आविंधण-पदं

७६. से अण्णमण्णं अंकंसि वा, पलियंकंसि वा तुयट्टावेत्ता हारं वा, अद्धहारं वा, उरत्थं वा, गेवेयं वा, मउडं वा, पालंबं वा, सुवण्णसुत्तं वा आविंधेज्ज वा, पिणिधेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

पाद-परिकम्म-पदं

७७. से अण्णमण्णं आरामंसि वा, उज्जाणंसि वा णीहरेत्ता वा, पविसेत्ता वा पायाइं आमज्जेज्ज वा, पमज्जेज्ज वा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

तिगिच्छा-पदं

७८. से अण्णमण्णं सुद्धेणं वा वइ-बलेणं तेइच्छं आउट्टे ।
से अण्णमण्णं असुद्धेणं वा वइ-बलेणं तेइच्छं आउट्टे ।
से अण्णमण्णं गिलाणस्स सचित्ताणि कंदाणि वा, मूलाणि वा, तयाणि वा, हरियाणि वा खणित्तु वा, कड्ढेत्तु वा, कड्ढावेत्तु वा तेइच्छं आउट्टेज्जा—णो तं साइए, णो तं णियमे ।।

७९. कडुवेयणा कट्टुवेयणा पाण-भूय-जीव-सत्ता वेदणं वेदेंति ।।

८०. एयं खलु तस्स भिक्खुस्स वा भिक्खुणीए वा सामग्गियं, जं सव्वट्ठेहिं समिते सहिते सदा जए, सेयमिणं मण्णेज्जासि° ।

—त्ति बेमि ।।

पनरसमं अज्झयणं

भावणा

भगवओ-चवणादि-णक्खत्त-पदं

१. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे पंचहत्थुत्तरे यावि होत्था—१. हत्थुत्तराहिं चुए चइत्ता गब्भं वक्कंते २. हत्थुत्तराहिं गब्भाओ गब्भं साहरिए ३. हत्थुत्तराहिं जाए ४. हत्थुत्तराहिं सव्वओ सव्वत्ताए मुंडे भवित्ता अगाराओ अणगारियं पव्वइए ५. हत्थुत्तराहिं कसिणे पडिपुण्णे अव्वाघाए निरावरणे अणंते अणुत्तरे केवलवरनाणदंसणे समुप्पण्णे ॥

२. साइणा भगवं परिनिव्वुए ॥

गब्भ-पदं

३. समणे भगवं महावीरे इमाए ओसप्पिणीए—सुसमसुसमाए समाए वीइक्कंताए, सुसमाए समाए वीतिक्कंताए, सुसमदुसमाए समाए वीतिक्कंताए, दुसमसुसमाए समाए बहु वीतिक्कंताए—पण्णहत्तरीए[1] वासेहिं, मासेहि य अद्धणवमेहिं[2] सेसेहिं, जे से गिम्हाणं चउत्थे मासे, अट्ठमे पक्खे—आसाढसुद्धे, तस्सणं आसाढसुद्धस्स छट्ठीपक्खेणं हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं[3], महाविजय-सिद्धत्थ-पुप्फुत्तर-पवर-पुंडरीय-दिसासोवत्थिय-वद्धमाणाओ महाविमाणाओ वीसं सागरोवमाइं आउयं[4] पालइत्ता आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं चुए चइत्ता इह खलु जंबुद्दीवे[5] दीवे, भारहे वासे, दाहिणड्ढभरहे दाहिणमाहणकुंडपुर-सन्निवेसंसि[6] उसभदत्तस्स माहणस्स कोडाल-सगोत्तस्स देवाणंदाए माहणीए जालंधरायण-सगोत्ताए सीहोब्भवभूएणं अप्पाणेणं कुच्छिंसि गब्भं वक्कंते ॥

---

१. पण्णत्तरीए (अ, क, घ, च)।
२. °णवमसेसेहिं (क, घ, च)।
३. जोगोवगएणं (अ, च)।
४. अहाउयं (क, घ, च)।
५. °द्दीवेणं (क, घ, च, छ, ब)।
६. °वेसंमि (छ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चवण-पदं

४. समणे भगवं महावीरे तिण्णाणोवगए यावि होत्था—चइस्सामित्ति जाणइ, चुएमित्ति जाणइ, चयमाणे न जाणेइ, सुहुमे णं से काले पण्णत्ते ।।

गब्भसाहरण-पदं

५. तओ णं 'समणस्स भगवओ महावीरस्स'[1] अणुकंपए[2] णं देवे णं "जीयमेयं" ति कट्टु जे से वासाणं तच्चे मासे, पंचमे पक्खे—आसोयबहुले, तस्स णं आसोयबहुलस्स तेरसीपक्खेणं हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेहिं जोगमुवागएणं बासीतिहिं राइंदिएहिं वीइक्कंतेहिं तेसीइमस्स राइंदियस्स परियाए वट्टमाणे दाहिणमाहण-कुंडपुर-सन्निवेसाओ उत्तरखत्तियकुंडपुर-सन्निवेसंसि णायाणं खत्तियाणं सिद्धत्थस्स खत्तियस्स कासवगोत्तस्स तिसलाए खत्तियाणीए वासिट्ठ-सगोत्ताए असुभाणं पुग्गलाणं अवहारं करेत्ता, सुभाणं पुग्गलाणं पक्खेवं करेत्ता[3] कुच्छिसि गब्भं साहरइ ।।

६. जेवि य से तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिसि गब्भे, तंपि य दाहिणमाहणकुंडपुर-सन्निवेसंसि उसभदत्तस्स माहणस्स कोडाल-सगोत्तस्स देवाणंदाए माहणीए जालंधरायण-सगोत्ताए कुच्छिंसि साहरइ ।।

७. समणे भगवं महावीरे तिण्णाणोवगए यावि होत्था—साहरिज्जिस्सामित्ति जाणइ, साहरिएमित्ति जाणइ, साहरिज्जमाणे वि[4] जाणइ, समणाउसो !

जम्म-पदं

८. तेणं कालेणं तेणं समएणं तिसला खत्तियाणी अह अण्णया कयाइ णवण्हं मासाणं बहुपडिपुण्णाणं, अद्धट्ठमाणं राइंदियाणं वीतिक्कंताणं, जे से गिम्हाणं पढमे मासे, दोच्चे पक्खे—चेत्तसुद्धे, तस्सणं चेत्तसुद्धस्स तेरसीपक्खेणं, हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगोवगएणं समणं भगवं महावीरं अरोया अरोयं पसूया ।।

९. जण्णं राइं तिसला खत्तियाणी समणं भगवं महावीरं अरोया[5] अरोयं पसूया, तण्णं राइं भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-विमाणवासिदेवेहिं य देवीहिं य

---

१. समणे भगवं महावीरे (अ, क, घ, च, छ, ब); कल्पसूत्रे (३०) 'समणे भगवं महावीरे' इति पाठोस्ति, किन्तु 'हरिणेगमेसिणा' 'साहरिए' इति पदयोः सन्दर्भे स युक्तोस्ति, किन्तु अत्र 'साहरइ' इति क्रियापदस्य सन्दर्भे प्रथमान्तोसौ नैव युक्तः स्यात् ।

२. हियअणु° (छ) ।

३. करेत्ता अव्वावाहं अव्वावाहेणं (चू); कल्पसूत्रे (३०) एषैव पाठो दृश्यते ।

४. वि न (च); न (छ) । अशुद्धं प्रतिभाति ।

५. आरोया° (क, घ, च) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओवयंतेहि य उप्पयंतेहि य[1] एगे महं दिव्वे देवुज्जोए देव-सण्णिवाते[2] देव-कहक्कहे उप्पिंजलगभूए यावि होत्था ॥

१०. जण्णं[3] रयणिं तिसला खत्तियाणी समणं भगवं महावीरं अरोया अरोयं पसूया, तण्णं[4] रयणिं बहवे देवा य देवीओ य एगं महं अमयवासं च, गंधवासं च, चुण्णवासं च[5], हिरण्णवासं च, रयणवासं च वासिंसु ॥

११. जण्णं रयणिं तिसला खत्तियाणी समणं भगवं महावीरं अरोया अरोयं पसूया, तण्णं रयणिं भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-विमाणवासिणो देवा य देवीओ य समणस्स भगवओ महावीरस्स कोउगभूइकम्माइं[6] तित्थयराभिसेयं च करिंसु ॥

नामकरण-पदं

१२. जओ णं पभिइ समणे भगवं महावीरे तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिंसि गब्भं आहुए[7], तओ णं पभिइ तं कुलं विपुलेणं हिरण्णेणं सुवण्णेणं धणेणं धण्णेणं माणिक्केणं मोत्तिएणं संख-सिल-प्पवालेणं अईव-अईव परिवड्ढइ[8] ॥

१३. तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अम्मापियरो एयमट्ठं जाणेत्ता णिव्वत्त-दसाहंसि वोक्कंतंसि सुचिभूयंसि विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेंति, विपुलं असण-पाण-खाइम-साइमं उवक्खडावेत्ता मित्त-णाति-सयण-संबंधिवग्गं उवणिमंतेंति, मित्त-णाति-सयण-संबंधिवग्गं उवणिमंतेत्ता बहवे समण-माहण-किवण-वणिमग-भिच्छुंडग-पंडरगातीण विच्छड्डेंति विगोवेंति[9] विस्साणेंति, दायारे[ए ?]सु[10] णं दायं[11] पज्जभाएंति, विच्छड्डित्ता विगोवित्ता विस्साणित्ता दायारे[ए ?]सु णं दायं पज्जभाएत्ता मित्त-णाइ-सयण-संबंधिवग्गं भुंजावेंति, मित्त-णाइ-सयण-संबंधिवग्गं भुंजावेत्ता मित्त-णाइ-सयण-संबंधिवग्गेणं इमेयारूवं णामधेज्जं करेंति[12]—जओ णं पभिइ इमे कुमारे तिसलाए खत्तियाणीए कुच्छिंसि

---

१. य संपयतेहि य (क, घ, च)।
२. °वाते णं (अ, क, च, छ)।
३. जं (च, छ)।
४. तं (च, छ)।
५. च पुप्फवासं च (क, घ, ब)।
६. °सुइ °(छ)।
७. आहए (ख)।
८. पवि° (अ)।
९. विग्गो° (अ, क, घ, च)।
१०. 'ओवाइय' सूत्रे 'दाणं च दाइयाणं परिभाय-इत्ता' (सू० २३) इति पाठो दृश्यते। 'राय-पसेणइय' सूत्रे 'दाणं दाइयाणं परिभाइत्ता' (सू० ६९५) इति पाठो विद्यते। 'कप्पसुत्ते' 'दाणं दायारेहिं परिभाएत्ता दाइयाणं परिभा-एत्ता' (सू० १११) इति पाठोस्ति। आलोच्य-पाठस्य विविधरूपावलोकनेन इत्यनुमीयतेस्य लिपिकाले परिवर्तनं जातम्। वस्तुतः 'दाया-एसु इति पाठः सङ्गतोस्ति। अस्मिन् पाठे सत्येव 'पज्जभाएंति' इति विभागार्थस्य धातु-पदस्य क्षयपदस्य दायपदस्य च सार्थकता स्यात्।
११. दाणं (घ, छ)।
१२. कारवेंति (क, च); करावेंति (घ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गब्भे आहुए[1], तओ णं पभिइ इमं कुलं, विउलेणं हिरण्णेणं सुवण्णेणं धणेणं धण्णेणं माणिक्केणं मोत्तिएणं संख-सिल-प्पवालेणं अईव-अईव परिवड्ढइ, तो होउ णं कुमारे "वद्धमाणे" ।।

बाल-पदं

१४. तओ णं समणे भगवं महावीरे पंचधातिपरिवुडे, [तं जहा—खीरधाईए, मज्जणधाईए, मंडावणधाईए, खेल्लावणधाईए, अंकधाईए[2],] अंकाओ अंकं साहरिज्जमाणे रम्मे मणिकोट्टिमतले गिरिकंदरमल्लीणे[3] व चंपयपायवे अहाणुपुव्वीए संवड्ढइ ।।

विवाह-पदं

१५. तओ णं समणे भगवं महावीरे विण्णायपरिणये[4] विणियत्तबाल-भावे[5] अप्पुस्सुयाइं[6] उरालाइं माणुस्सगाइं पंचलक्खणाइं कामभोगाइं सद्द-फरिस-रस-रूव-गंधाइं परियारेमाणे, एवं च णं विहरइ ।।

नाम-पदं

१६. समणे भगवं महावीरे कासवगोत्ते । तस्स णं इमे तिण्णि णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तं जहा—१. अम्मापिउसंतिए "वद्धमाणे" २. सह-सम्मुइए "समणे" ३. "भीमं भयभेरवं उरालं अचेलयं परिसहं सहइ" त्ति कट्टु देवेहिं से णामं कयं "समणे भगवं महावीरे" ।।

परिवार-पदं

१७. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स पिआ कासवगोत्तेणं । तस्स णं तिण्णि णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तं जहा—१. सिद्धत्थे ति वा २. सेज्जंसे ति वा ३. जसंसे ति वा ।।

१८. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स अम्मा वासिट्ठ-सगोत्ता । तीसेणं तिण्णि णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तं जहा—१. तिसला ति वा २. विदेहदिण्णा ति वा ३. पियकारिणी ति वा ।।

१९. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स पित्तियए 'सुपासे' कासवगोत्तेणं ।।

२०. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स जेट्ठे भाया 'णंदिवद्धणे' कासवगोत्तेणं ।।

२१. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स जेट्ठा[7] भइणी 'सुदंसणा' कासवगोत्तेणं[8] ।।

---

१. आहुते (च) ।
२. असौ कोष्ठकवर्ती पाठः व्याख्यांशः प्रतीयते ।
३. समल्लीणे (अ, घ) ।
४. °परिणय (घ, च, छ, ब) ।
५. विणिवित्त° (च) ।
६. अणुस्सुयाइं (अ, ब) ।
७. कणिट्ठा (घ, च) ।
८. कासवी° (च) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

२२. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स भज्जा 'जसोया' कोडिण्णागोत्तेणं ।।

२३. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स धूया कासवगोत्तेणं । तीसे णं दो णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तं जहा—१. अणोज्जा ति वा २. पियदंसणा ति वा ।।

२४. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स णत्तुई कोसियगोत्तेणं[1] । तीसे णं दो णामधेज्जा एवमाहिज्जंति, तं जहा—१. सेसवती ति वा २. जसवती ति वा ।।

माउ-पिउ-काल-पदं

२५. समणस्स णं भगवओ महावीरस्स अम्मापियरो पासावच्चिज्जा समणोवासगा यावि होत्था । ते णं बहूइं वासाइं समणोवासगपरियागं पालइत्ता, छण्हं जीवनिकायाणं संरक्खणनिमित्तं[2] आलोइत्ता निंदित्ता गरहित्ता पडिक्कमित्ता, अहारिहं उत्तरगुणं पायच्छित्तं पडिवज्जित्ता, कुससंथारं दुरुहित्ता भत्तं पच्चक्खाइंति, भत्तं पच्चक्खाइत्ता अपच्छिमाए मारणंतियाए सरीर-संलेहणाए सोसियसरीरा[3] कालमासे कालं किच्चा तं सरीरं विप्पजहित्ता अच्चुए कप्पे देवत्ताए उववण्णा । तओ णं आउक्खएणं भवक्खएणं ठिइक्खएणं चुए चइत्ता महाविदेहवासे चरिमेणं उस्सासेणं सिज्झिस्संति बुज्झिस्संति मुच्चिस्संति परिणिव्वाइस्संति सव्वदुक्खाणमंतं करिस्संति ।।

अभिणिक्खमणाभिप्पाय-पदं

२६. तेणं कालेणं तेणं समएणं समणे भगवं महावीरे णाते णायपुत्ते णायकुल-विणिव्वत्ते विदेहे विदेहदिण्णे विदेहजच्चे विदेहसुमाले तीसं वासाइं विदेहत्ति कट्टु अगारमज्झे वसित्ता अम्मापिऊहिं कालगएहिं देवलोगमणुपत्तेहिं समत्तपइण्णे चिच्चा हिरण्णं, चिच्चा सुवण्णं, चिच्चा बलं, चिच्चा वाहणं, चिच्चा धण-धण्ण-कणय-रयण-संत-सार-सावदेज्जं, विच्छड्डेत्ता विगोवित्ता विस्साणित्ता, दायारे [ए ?]सु[4] णं 'दायं[5] पज्जभाएत्ता'[6], संवच्छरं दलइत्ता जे से हेमंताणं पढमे मासे पढमे पक्खे—मग्गसिरबहुले, तस्स णं मग्गसिरबहुलस्स दसमीपक्खेणं हत्थुत्तराहिं णक्खत्तेणं जोगोवगएणं अभिणिक्खमणाभिप्पाए यावि होत्था—

संगहणी-गाहा

संवच्छरेण होहिति, अभिणिक्खमणं तु जिणवरिंदस्स ।
तो अत्थ-संपदाणं, पव्वत्तई पुव्वसूराओ ।।१।।

---

१. कोसिया° (ब) ।
२. सारक्खण° (ब, च) ।
३. सुसिय° (अ, ब); झुसिय° (च); झोसिय° (ब) ।
४. द्रष्टव्यम्—१५।१३ सूत्रस्य द्वितीयं पाद-टिप्पणम् ।
५. दाणं (अ) ।
६. दाइत्ता परिभाइत्ता (छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एगा हिरण्णकोडी, अट्ठेव अणूणया सयसहस्सा।
सूरोदयमाईयं, दिज्जइ जा पायरासो त्ति[1] ॥२॥
तिण्णेव य कोडिसया, अट्ठासीतिं च होंति कोडीओ।
असितिं[2] च सयसहस्सा, एयं संवच्छरे दिण्णं ॥३॥
वेसमणकुंडलधरा, देवा लोगंतिया महिड्ढीया।
बोहिंति य तित्थयरं, पण्णरससु कम्म-भूमिसु ॥४॥
बंभंमि य कप्पंमि य, बोद्धव्वा कण्हराइणो मज्झे।
लोगंतिया विमाणा, अट्ठसु वत्था असंखेज्जा ॥५॥
एए देवणिकाया, भगवं बोहिंति जिणवरं वीरं।
सव्वजगजीवहियं, अरहं तित्थं पव्वत्तेहि ॥६॥

देवागमण-पदं

२७. तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स अभिणिक्खमणाभिप्पायं जाणेत्ता भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-विमाणवासिणो देवा य देवीओ य सएहिं-सएहिं रूवेहिं, सएहिं-सएहिं णेवत्थेहिं, सएहिं-सएहिं चिंधेहिं, सव्विड्ढीए सव्वजुतीए सव्वबलसमुदएणं सयाइं-सयाइं जाण विमाणाइं दुरुहंति, सयाइं-सयाइं जाणविमाणाइं दुरुहित्ता अहाबादराइं पोग्गलाइं परिसाडेंति, अहाबादराइं पोग्गलाइं परिसाडेत्ता अहासुहुमाइं पोग्गलाइं परियाइंति, अहासुहुमाइं पोग्गलाइं परियाइत्ता उड्ढं उप्पयंति, उड्ढं उप्पइत्ता ताए उक्किट्ठाए सिग्घाए चवलाए तुरियाए दिव्वाए देवगईए अहेणं ओवयमाणा-ओवयमाणा तिरिएणं असंखेज्जाइं दीवसमुद्दाइं वीतिक्कममाणा-वीतिक्कममाणा जेणेव जंबुद्दीवे दीवे तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता जेणेव उत्तरखत्तियकुंडपुर-सण्णिवेसे तेणेव उवागच्छंति, तेणेव उवागच्छित्ता जेणेव उत्तरखत्तियकुंडपुर-सन्निवेसस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए तेणेव झत्तिवेगेण उवट्ठिया ॥

अलंकरण-सिवियाकरण-पदं

२८. तओ णं सक्के देविंदे देवराया सणियं-सणियं जाणविमाणं ठवेति, सणियं-सणियं जाणविमाणं ठवेत्ता सणियं-सणियं जाणविमाणाओ पच्चोत्तरति, सणियं-सणियं जाणविमाणाओ पच्चोत्तरित्ता एगंतमवक्कमेति, एगंतमवक्कमेत्ता महया वेउव्विएणं समुग्घाएणं समोहण्णति, महया वेउव्विएणं समुग्घाएणं समोहणित्ता एगं महं णाणामणिकणयरयणभत्तिचित्तं सुभं चारुकंतरूवं देवच्छंदयं विउव्वति। तस्स णं देवच्छंदयस्स बहुमज्झदेसभाए एगं महं सपायपीढं णाणामणिकणय-

---

१. उ (घ)।

२. असियं (अ, घ, छ, ब)।

रयणभत्तिचित्तं सुभं चारुकंतरूवं सिंहासणं विउव्वइ, विउव्वित्ता जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागच्छति, तेणेव उवागच्छित्ता समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेइ, समणं भगवं महावीरं तिक्खुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेत्ता समणं भगवं महावीरं वंदति णमंसति, वंदित्ता णमंसित्ता समणं भगवं महावीरं गहाय जेणेव देवच्छंदए तेणेव उवागच्छति, उवागच्छित्ता सणियं-सणियं पुरत्थाभिमुहे सीहासणे णिसीयावेइ, सणियं-सणियं पुरत्थाभिमुहे सीहासणे णिसीयावेत्ता सयपाग-सहस्सपागेहिं तेल्लेहिं अब्भंगेति, अब्भंगेत्ता गंधकसाएहिं[1] उल्लोलेति, उल्लोलित्ता सुद्धोदएणं मज्जावेइ, मज्जावित्ता जस्स जंतपलं[2] सयसहस्सेणंति पडोलतित्तएणं साहिएणं सीतएणं[3] गोसीसरत्तचंदणेणं अणुलिपति, अणुलिपित्ता ईसिणिस्सासवातवोज्झं वरणगरपट्टणुग्गयं कुसलणरपसंसितं अस्सलालापेलवं[4] छेयायरियकणग-खचियंतकम्मं[5] हंसलक्खणं पट्टजुयलं णियंसावेइ, णियंसावेत्ता हारं अद्धहारं उरत्थं एगावलिं पालंबसुत्त-पट्ट-मउड-रयणमालाइं आविंधावेति, आविंधावेत्ता गंथिम-वेढिम-पूरिम-संघातिमेणं मल्लेणं कप्परुक्खमिव समालंकेति, समालंकेत्ता दोच्चंपि महया वेउव्वियसमुग्घाएणं समोहण्णइ, समोहणित्ता एगं महं चंदप्पभं सिवियं सहस्सवाहिणिं विउव्वइ, तं जहा—ईहामिय-उसभ-तुरग-णर-मकर-विहग-वाणर - कुंजर - रुरु-सरभ-चमर-सद्दूलसीह-वणलय-विचित्तविज्जाहर-मिहुण-जुयल-जंत-जोगजुत्तं, अच्चीसहस्समालिणीयं, सुणिरूवित-मिसिमिसित-रूवगसहस्सकलियं, ईसिभिसमाणं, भिब्भिसमाणं, चक्खुल्लोयणलेस्सं, मुत्ताहलमुत्तजालंतरोवियं, तवणीय-पवरलंबूस-पलंबंतमुत्तदामं, हारद्धहार-भूसणसमोणयं, अहियपेच्छणिज्जं, पउमलयभत्तिचित्तं, 'असोगलयभत्तिचित्तं, कुंदलयभत्तिचित्तं'[6] णाणालयभत्ति-विरइयं सुभं चारुकंतरूवं णाणामणि-पंचवण्णघंटापडाय-परिमंडियग्गसिहरं पासादीयं[7] दरिसणीयं सुरूवं।

संगहणी-गाहा

सीया उवणीया, जिणवरस्स जरमरणविप्पमुक्कस्स।
ओसत्तमल्लदामा, जलथलयदिव्वकुसुमेहिं ॥७॥

---

१. °कासायिएहिं (च, छ)।
२. णं मुल्लं (अ, घ, च, ब)।
३. सरसीएण (क, घ, च)।
४. °लालपेसियं (घ); °लालपेलवं (छ); °लालप्पेसलव (ब)।
५. मसूरियकणयकणयंत° (घ)।
६. × (अ); असोगलयभत्तिचित्तं (क)।
७. सुभं चारुकंतरूवं पासादीयं (अ,क,घ,च,ब)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सिवियाए मज्झयारे, दिव्वं वग्गरयणरूवचेवइयं[1] ।
सीहासणं महरिहं, सपादपीढं जिणवरस्स ॥८॥

आलइयमालमउडो, भासुरबोंदी वराभरणधारी ।
खोमयवत्थणियत्थो[2], जस्स य मोल्लं सयसहस्सं ॥९॥

छट्ठेण उ भत्तेणं, अज्झवसाणेण सोहणेण[3] जिणो ।
लेसाहिं विसुज्झंतो, आरुहइ उत्तमं सीयं ॥१०॥

सीहासणे णिविट्ठो, सक्कीसाणा य दोहिं पासेहिं ।
वीयंति चामराहिं, मणिरयणविचित्तदंडाहिं ॥११॥

पुव्विं उक्खित्ता, माणुसेहिं साहट्ठरोमपुलएहिं[4] ।
पच्छा वहंति देवा, सुरअसुरगरुलणागिंदा ॥१२॥

पुरओ सुरा वहंती, असुरा पुण दाहिणंमि पासंमि ।
अवरे वहंति गरुला, णागा पुण उत्तरे पासे ॥१३॥

वणसंडं व कुसुमियं, पउमसरो वा जहा सरयकाले ।
सोहइ कुसुमभरेणं, इय गयणयलं सुरगणेहिं ॥१४॥

सिद्धत्थवणं व जहा, कणियारवणं व चंपगवणं वा ।
सोहइ कुसुमभरेणं, इय गयणयलं सुरगणेहिं ॥१५॥

वरपडहभेरिझल्लरि-संखसयसहस्सिएहिं तूरेहिं ।
गयणतले धरणितले, तूर-णिणाओ परमरम्मो ॥१६॥

ततविततं घणझुसिरं, आउज्जं चउविहं बहुविहीयं ।
वायंति तत्थ देवा, बहूहिं आणट्टगसएहिं ॥१७॥

अभिणिक्खमण-पदं

२९. तेणं कालेणं तेणं समएणं जे से हेमंताणं पढमे मासे पढमे पक्खे—मग्गसिरबहुले, तस्स णं मग्गसिरबहुलस्स दसमीपक्खेणं, सुव्वएणं दिवसेणं, विजएणं मुहुत्तेणं, 'हत्थुत्तराहिं णक्खत्तेणं'[5] जोगोवगएणं, पाईणगामिणीए छायाए, वियत्ताए[6] पोरिसीए, छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं, एगसाडगमायाए, चंदप्पहाए सिवियाए सहस्सवाहिणीए[7], सदेवमणुयासुराए परिसाए समण्णिज्जमाणे-समण्णिज्जमाणे

---

१. °चिचइयं (घ) ।
२. खोमिय° (क, छ, ब) ।
३. सुंदरेण (क, घ, च, ब) ।
४. साहट्टु° (अ, क, च, ब) ।
५. हत्थुत्तर° (अ, घ, छ) ।
६. बीयाए (छ) ।
७. °वाहिणीयाए (क, घ, ब) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उत्तरखत्तियकुंडपुर-संणिवेसस्स मज्झंमज्झेणं णिगच्छइ, णिगच्छित्ता जेणेव णायसंडे उज्जाणे तेणेव उवागच्छइ, उवागच्छित्ता ईसिरयणिप्पमाणं अच्छुप्पेणं भूमिभागेणं सणियं-सणियं चंदप्पभं सिवियं सहस्सवाहिणिं ठवेइ, ठवेत्ता सणियं-सणियं चंदप्पभाओ सिवियाओ सहस्सवाहिणीओ पच्चोयरइ, पच्चोयरित्ता सणियं-सणियं पुरत्थाभिमुहे सीहासणे णिसीयइ, आभरणालंकारं ओमुयइ। तओ णं वेसमणे देवे जन्नुव्वायपडिए समणस्स भगवओ महावीरस्स हंसलक्खणेणं पडेणं[1] आभरणालंकारं पडिच्छइ ।।

लोय-पदं

३०. तओ णं समणे भगवं महावीरे दाहिणेणं दाहिणं वामेणं वामं पंचमुट्ठियं लोयं करेइ ।।

३१. तओ णं सक्के देविंदे देवराया समणस्स भगवओ महावीरस्स जन्नुव्वायपडिए वयरामएणं थालेणं केसाइं पडिच्छइ, पडिच्छित्ता "अणुजाणेसि भंते" त्ति कट्टु खीरोयसायरं साहरइ ।।

सामाइयचरित्त-गहण-पदं

३२. तओ णं समणे भगवं महावीरे दाहिणेणं दाहिणं वामेणं वामं पंचमुट्ठियं लोयं करेत्ता सिद्धाणं णमोक्कारं करेइ, करेत्ता, "सव्वं मे अकरणिज्जं पावकम्मं" ति कट्टु सामाइयं चरित्तं पडिवज्जइ, सामाइयं चरित्तं पडिवज्जेत्ता देवपरिसं मणुयपरिसं च आलिक्ख-चित्तभूयमिव ट्ठवेइ ।

संगहणी-गाहा

दिव्वो मणुस्सघोसो, तुरियणिणाओ य सक्कवयणेण ।
खिप्पामेव णिलुक्को, जाहे पडिवज्जइ चरित्तं ।।१८।।
पडिवज्जित्तु चरित्तं, अहोणिसिं सव्वपाणभूतहितं ।
साहट्टुलोमपुलया[2], पयया देवा निसामिति ।।१९।।

मणपज्जवनाण-लद्धि-पदं

३३. तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स सामाइयं खाओवसमियं चरित्तं पडिवन्नस्स मणपज्जवणाणे णामं णाणे समुप्पन्ने—अड्ढाइज्जेहिं दीवेहिं दोहि य समुद्देहिं सण्णीणं पंचेंदियाणं पज्जत्ताणं वियत्तमणसाणं[3] मणोगयाइं भावाइं जाणेइ ।।

---

१. पडिसाडएणं (छ) ।
२. साहट्टु° (अ, क, ब) ।
३. °मणुस्साणं (छ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभिग्गह-पदं

३४. तओ णं समणे भगवं महावीरे पव्वइते समाणे मित्त-णाति-सयण-संबंधिवग्गं पडिविसज्जेति, पडिविसज्जेत्ता इमं[1] एयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हइ—"बारस-वासाइं वोसट्ठकाए चत्तदेहे[2] जे केइ उवसग्गा उप्पज्जंति[3], तं जहा—दिव्वा वा, माणुसा वा, तेरिच्छिया[4] वा, ते सव्वे उवसग्गे समुप्पण्णे समाणे 'अणाइले अव्वहिते अद्दीणमाणसे तिविहमणवयणकायगुत्ते'[5] सम्मं सहिस्सामि खमिस्सामि अहियासइस्सामि ॥"

विहार-पदं

३५. तओ णं समणे भगवं महावीरे इमेयारूवं अभिग्गहं अभिगिण्हेत्ता 'वोसट्ठकाए चत्तदेहे'[6] दिवसे मुहुत्तसेसे कम्मारं[7] गामं समणुपत्ते ॥

३६. तओ णं समणे भगवं महावीरे वोसट्ठचत्तदेहे अणुत्तरेणं आलएणं, अणुत्तरेणं विहारेणं, अणुत्तरेणं संजमेणं, अणुत्तरेणं पग्गहेणं, अणुत्तरेणं संवरेणं, अणुत्तरेणं तवेणं, अणुत्तरेणं बंभचेरवासेणं, अणुत्तराए खंतीए, अणुत्तराए मोत्तीए, अणुत्तराए तुट्ठीए, अणुत्तराए समितीए, अणुत्तराए गुत्तीए, अणुत्तरेणं ठाणेणं, अणुत्तरेणं कम्मेणं[8], अणुत्तरेणं सुचरियफलणिव्वाणमुत्तिमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ ॥

३७. एवं विहरमाणस्स जे केइ उवसग्गा समुपज्जिंसु[9]—दिव्वा वा माणुसा[10] वा तेरिच्छिया वा, ते सव्वे उवसग्गे समुप्पन्ने समाणे अणाइले अव्वहिए अदीण[11]-माणसे तिविहमणवयणकायगुत्ते सम्मं सहइ खमइ तितिक्खइ अहियासेइ ॥

केवलनाण-लद्धि-पदं

३८. तओ णं समणस्स भगवओ महावीरस्स एएणं विहारेणं विहरमाणस्स बारस-वासा विइक्कंता, तेरसमस्स य वासस्स परियाए वट्टमाणस्स जे से गिम्हाणं दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे—वइसाहसुद्धे, तस्सणं वइसाहसुद्धस्स दसमीपक्खेणं, सुव्वएणं दिवसेणं, विजएणं मुहुत्तेणं, हत्थुत्तराहिं णक्खत्तेणं जोगोवगतेणं, पाईण-गामिणीए छायाए, वियत्ताए पोरिसीए, जंभियगामस्स णगरस्स बहिया णईए

---

१. तओणं इमं (छ) ।
२. चियत्त° (च, छ, ब) ।
३. समुप्पज्जंति (घ, छ, ब) ।
४. तेरिच्छा (च, ब) ।
५. × (अ, क, घ, च, ब) ।
६. वोसट्ठचत्तदेहे (क,घ); वोसट्ठचियत्तदेहे (छ) ।
७. कुमार (क, घ, च, छ, ब) ।
८. कम्मेण (क, घ, च, छ) ।
९. °पज्जंति (क, घ, ब) ।
१०. माणुस्सा (च) ।
११. अद्दीण (अ, घ, च) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उजुवालिया[1] उत्तरे कूले, सामागस्स गाहावइस्स कट्ठकरणंसि, वेयावत्तस्स चेइयस्स उत्तरपुरत्थिमे दिसीभाए, सालरुक्खस्स अदूरसामंते, उक्कुडुयस्स, गोदोहियाए आयावणाए आयावेमाणस्स, छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं, उड्ढंजाणु-अहोसिरस्स, धम्मज्झाणोवगयस्स, झाणकोट्ठोवगयस्स, सुक्कज्झाणंतरियाए वट्टमाणस्स, निव्वाणे, कसिणे, पडिपुण्णे, अव्वाहए, णिरावरणे, अणंते, अणुत्तरे, केवलवरणाणदंसणे समुप्पण्णे ।।

३९. से भगवं अरिहं[2] जिणे जाए[3], केवली सव्वण्णू सव्वभावदरिसी, सदेवमणुयासुरस्स लोयस्स पज्जाए जाणइ, तं जहा—आगतिं गतिं ठितिं चयणं उववायं भुत्तं पीयं कडं पडिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं लवियं कहियं मणोमाणसियं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावाइं[4] जाणमाणे पासमाणे, एवं च णं विहरइ ।।

देवागमण-पदं

४०. जण्णं दिवसं समणस्स भगवओ महावीरस्स णिव्वाणे कसिणे[5] •पडिपुण्णे अव्वाहए णिरावरणे अणंते अणुत्तरे केवलवरणाणदंसणे° समुप्पण्णे तण्णं दिवसं भवणवइ-वाणमंतर-जोइसिय-विमाणवासिदेवेहि य देवीहि य ओवयंतेहि[6] य[7] •उप्पयंतेहि य एगे महं दिव्वे देवुज्जोए देव-सण्णिवाते देव-कहक्कहे° उप्पिंजलगभूए यावि होत्था ।।

धम्मोवदेस-पदं

४१. तओ णं समणे भगवं महावीरे उप्पण्णणाणदंसणधरे अप्पाणं च लोगं च अभिसमेक्ख पुव्वं देवाणं धम्ममाइक्खति, तओ पच्छा मणुस्साणं ।।

४२. तओ णं समणे भगवं महावीरे उप्पण्णणाणदंसणधरे गोयमाईणं समणाणं णिग्गंथाणं पंच महव्वयाइं सभावणाइं छज्जीवनिकायाइं आइक्खइ भासइ[8] परूवेइ, तं जहा—पुढविकाए[9] •आउकाए, तेउकाए, वाउकाए, वणस्सइकाए°, तसकाए ।।

अहिंसामहव्वय-पदं

४३. पढमं भंते ! महव्वयं—पच्चक्खामि सव्वं पाणाइवायं—से सुहुमं वा बायरं वा, तसं वा थावरं वा—णेव सयं पाणाइवायं करेज्जा, णेवण्णेहिं पाणाइवायं

---

१. उज्जु° (घ, ब) ।
२. अरहा (अ, छ, ब); अरहं (क, घ) ।
३. जाणए (घ, च) ।
४. °भावेणं (अ) ।
५. सं० पा०—कसिणे जाव समुप्पणे ।
६. ओवयंतेहि २ (अ, ब) ।
७. सं० पा० —ओवयंतेहि य जाव उप्पिंजलगभूए ।
८. भासइ पण्णवइ (ब) ।
९. सं० पा०—पुढविकाए जाव तसकाए ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कारवेज्जा, णेवण्णं पाणाइवायं करंतं समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं—मणसा वयसा कायसा, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं वोसिरामि ॥

अहिंसामहव्वयस्स भावणा-पदं

४४. तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति । तत्थिमा पढमा भावणा—इरियासमिए से णिग्गंथे, णो इरियाअसमिए[1] त्ति । केवली बूया—इरियाअसमिए से णिग्गंथे, पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं अभिहणेज्ज वा, वत्तेज्ज वा, परियावेज्ज वा, लेसेज्ज वा, उद्दवेज्ज वा । इरियासमिए से णिग्गंथे, णो इरियाअसमिए त्ति पढमा भावणा ॥

४५. अहावरा दोच्चा भावणा—मणं परिजाणाइ से णिग्गंथे, जे य मणे पावए सावज्जे सकिरिए अण्हयकरे छेयकरे भेदकरे अधिकरणिए[2] पाओसिए, पारिताविए पाणाइवाइए भूओवघाइए—तहप्पगारं मणं णो पधारेज्जा । मणं परिजाणाति से णिग्गंथे, 'जे य मणे अपावए'[3] त्ति दोच्चा भावणा ॥

४६. अहावरा तच्चा भावणा—वइं परिजाणइ से णिग्गंथे, जा य वई पाविया सावज्जा सकिरिया[4] °अण्हयकरा छेयकरा भेदकरा अधिकरणिया पाओसिया पारिताविया पाणाइवाइया° भूओवघाइया—तहप्पगारं वइं णो उच्चारिज्जा । जे वइं परिजाणइ से णिग्गंथे, जा य वई अपावियत्ति तच्चा भावणा ॥

४७. अहावरा चउत्था भावणा—आयाणभंडमत्तणिक्खेवणासमिए से णिग्गंथे, णो आयाणभंडमत्तणिक्खेवणाअसमिए । केवली बूया—आयाणभंडमत्तणिक्खेवणा-असमिए से णिग्गंथे पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं अभिहणेज्ज वा[5], °वत्तेज्ज वा, परियावेज्ज वा, लेसेज्ज वा°, उद्दवेज्ज वा, तम्हा आयाणभंडमत्तणिक्खे-वणासमिए से णिग्गंथे, णो आयाणभंडमत्तणिक्खेवणाअसमिए त्ति चउत्था भावणा ॥

४८. अहावरा पंचमा भावणा—आलोइयपाणभोयणभोई से णिग्गंथे, णो अणालोइय-पाणभोयणभोई । केवली बूया–अणालोइयपाणभोयणभोई से णिग्गंथे पाणाइं भूयाइं जीवाइं सत्ताइं अभिहणेज्ज वा[6], °वत्तेज्ज वा परियावेज्ज वा, लेसेज्ज वा°, उद्दवेज्ज वा, तम्हा आलोइयपाणभोयणभोई से णिग्गंथे, णो अणालोइय-पाणभोयणभोई त्ति पंचमा भावणा ॥

---

१. अइरियासमिए (अ); अणइरियासमिते (छ) ।
२. अहिगरणकरे कलहकरे (घ, वृ) ।
३. णो जे अमणे पावए (च) ।
४. सं० पा०—सकिरिया जाव भूओवघाइया ।
५. सं० पा०—अभिहणेज्ज वा जाव उद्दवेज्ज ।
६. सं० पा०—अभिहणेज्ज वा जाव उद्दवेज्ज ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

४६. एतावताव महव्वए सम्मं काएण फासिए पालिए तीरिए किट्टिए अवट्ठिए आणाए आराहिए यावि भवइ। पढमे भंते ! महव्वए पाणाइवायाओ वेरमणं ॥

सच्चमहव्वय-पदं

५०. अहावरं दोच्चं भंते ! महव्वयं—पच्चक्खामि सव्वं मुसावायं वइदोसं—से कोहा वा, लोहा वा, भया वा, हासा वा, णेव सयं मुसं भासेज्जा, णेवण्णेणं मुसं भासावेज्जा, अण्णं पि मुसं भासंतं ण समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं—मणसा वयसा कायसा, तस्स भंते ! पडिक्कमामि[1] °निंदामि गरिहामि अप्पाणं° वोसिरामि ॥

सच्चमहव्वयस्स भावणा-पदं

५१. तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति। तत्थिमा पढमा भावणा—अणुवीइभासी से णिग्गंथे, णो अणणुवीइभासी। केवली बूया—अणणुवीइभासी से णिग्गंथे समावदेज्जा[2] मोसं वयणाए। अणुवीइभासी से णिग्गंथे, णो अणणुवीइभासित्ति पढमा भावणा ॥

५२. अहावरा दोच्चा भावणा—कोहं परिजाणइ से णिग्गंथे, णो कोहणे सिया। केवली बूया—कोहपत्ते कोही समावदेज्जा मोसं वयणाए। कोहं[3] परिजाणइ से णिग्गंथे, ण य कोहणे सियत्ति दोच्चा भावणा ॥

५३. अहावरा तच्चा भावणा—लोभं परिजाणइ से णिग्गंथे, णो य लोभणए सिया। केवली बूया—लोभपत्ते लोभी समावदेज्जा मोसं वयणाए। लोभं परिजाणइ से णिग्गंथे, णो य लोभणए सियत्ति तच्चा भावणा ॥

५४. अहावरा चउत्था भावणा—भयं परिजाणइ से णिग्गंथे, णो भयभीरुए सिया। केवली बूया—भयप्पत्ते भीरू समावदेज्जा मोसं वयणाए। भयं परिजाणइ से णिग्गंथे, णो य भयभीरुए सियत्ति चउत्था भावणा ॥

५५. अहावरा पंचमा भावणा—हासं परिजाणइ से णिग्गंथे, णो य हासणए सिया। केवली बूया—हासपत्ते हासी समावदेज्जा मोसं वयणाए। हासं परिजाणइ से णिग्गंथे, णो य हासणए सियत्ति पंचमा भावणा ॥

५६. एतावताव महव्वए सम्मं काएण फासिए[4] °पालिए तीरिए किट्टिए अवट्ठिए° आणाए आराहिए यावि भवति। दोच्चे भंते ! महव्वए[5] °मुसावायाओ वेरमणं° ॥

---

१. सं० पा०—पडिक्कमामि जाव वोसिरामि।
२. °वज्जेज्जा (क, घ, च, छ, ब)।
३. कोवं (च, व)।
४. सं० पा०—फासिए जाव आणाए।
५. सं० पा०—महव्वए…।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अतेणगमहव्वय-पदं

५७. अहावरं तच्चं भंते ! महव्वयं—पच्चक्खामि सव्वं अदिण्णादाणं—से गामे वा, णगरे वा, अरण्णे वा, अप्पं वा, बहुं वा, अणुं वा, थूलं वा, चित्तमंतं वा, अचित्तमंतं वा णेव सयं अदिण्णं गेण्हिज्जा, णेवण्णेहिं अदिण्णं गेण्हावेज्जा, अण्णंपि अदिण्णं गेण्हंतं न समणुजाणिज्जा जावज्जीवाए[1] °तिविहं तिविहेणं—मणसा वयसा कायसा, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं° वोसिरामि ॥

अतेणगमहव्वयस्स भावणा-पदं

५८. तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति । तत्थिमा पढमा भावणा—अणुवीइमिओग्गहजाई से णिग्गंथे, णो अणणुवीइमिओग्गहजाई । केवली बूया—अणणुवीइमिओग्गहजाई से णिग्गंथे, अदिण्णं गेण्हेज्जा । अणुवीइमिओग्गहजाई से णिग्गंथे, णो अणणुवीइमिओग्गहजाई त्ति पढमा भावणा ॥

५९. अहावरा दोच्चा भावणा—अणुण्णवियपाणभोयणभोई से णिग्गंथे, णो अणणुण्णवियपाणभोयणभोई । केवली बूया—अणणुण्णवियपाणभोयणभोई से णिग्गंथे अदिण्णं भुंजेज्जा[2], तम्हा अणुण्णवियपाणभोयणभोई से णिग्गंथे, णो अणणुण्णवियपाणभोयणभोई त्ति दोच्चा भावणा ॥

६०. अहावरा तच्चा भावणा—णिग्गंथे णं ओग्गहंसि ओग्गहियंसि एतावताव ओग्गहणसीलए सिया । केवली बूया—णिग्गंथे णं ओग्गहंसि अणोग्गहियंसि एतावताव अणोग्गहणसीलो अदिण्णं ओगिण्हेज्जा । णिग्गंथेणं ओग्गहंसि ओग्गहियंसि एतावताव ओग्गहणसीलए सियत्ति तच्चा भावणा ॥

६१. अहावरा चउत्था भावणा—णिग्गंथे णं ओग्गहंसि ओग्गहियंसि अभिक्खणं-अभिक्खणं ओग्गहणसीलए सिया । केवली बूया—णिग्गंथे णं ओग्गहंसि ओग्गहियंसि अभिक्खणं-अभिक्खणं अणोग्गहणसीले अदिण्णं गिण्हेज्जा । णिग्गंथे ओग्गहंसि ओग्गहियंसि अभिक्खणं-अभिक्खणं ओग्गहणसीलए सियत्ति चउत्था भावणा ॥

६२. अहावरा पंचमा भावणा—अणुवीइमितोग्गहजाई से णिग्गंथे साहम्मिएसु, णो अणणुवीइमिओग्गहजाई । केवली बूया—अणणुवीइमिओग्गहजाई से णिग्गंथे साहम्मिएसु अदिण्णं ओगिण्हेज्जा । अणुवीइमिओग्गहजाई से णिग्गंथे साहम्मिएसु, णो अणणुवीइमिओग्गहजाई—इइ पंचमा भावणा ॥

६३. एतावताव महव्वए सम्मं[3] °काएण फासिए पालिए तीरिए किट्टिए अवट्ठिए°

---

१. सं० पा०—जावज्जीवाए जाव वोसिरामि । ३. सं० पा०—सम्मं जाव आणाए ।
२. गिण्हेज्जा (घ) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आणाए आराहिए यावि भवइ । तच्चे भंते महव्वए[1] •अदिण्णादाणाओ वेरमणं° ।।

बंभचेरमहव्वय-पदं

६४. अहावरं चउत्थं भंते ! महव्वयं--पच्चक्खामि सव्वं मेहुणं—से दिव्वं वा, माणुसं वा, तिरिक्खजोणियं वा, णेव सयं मेहुणं गच्छेज्जा,[2] •णेवण्णेहिं मेहुणं गच्छावेज्जा, अण्णंपि मेहुणं गच्छंतं न समणुजाणेज्जा जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं—मणसा वयसा कायसा, तस्स भंते ! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं° वोसिरामि ।।

बंभचेरमहव्वयस्स भावणा-पदं

६५. तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति । तत्थिमा पढमा भावणा—णो णिग्गंथे अभिक्खणं-अभिक्खणं इत्थीणं कहं कहइत्तए सिया । केवली बूया—णिग्गंथे णं अभिक्खणं-अभिक्खणं इत्थीणं कहं कहमाणे, संतिभेदा संतिविभंगा संतिकेवली-पण्णत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा । णो णिग्गंथे अभिक्खणं-अभिक्खणं इत्थीणं कहं कहित्तए सियत्ति पढमा भावणा ।।

६६. अहावरा दोच्चा भावणा—णो णिग्गंथे इत्थीणं मणोहराइं[3] इंदियाइं आलोएत्तए णिज्झाइत्तए सिया । केवली बूया—णिग्गंथे णं इत्थीणं मणोहराइं इंदियाइं आलोएमाणे णिज्झाएमाणे, संतिभेया संतिविभंगा[4] •संतिकेवलीपण्णत्ताओ° धम्माओ भंसेज्जा । णो णिग्गंथे इत्थीणं मणोहराइं इंदियाइं आलोएत्तए णिज्झाइत्तए सियत्ति दोच्चा भावणा ।।

६७. अहावरा तच्चा भावणा—णो णिग्गंथे इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं सरित्तए[5] सिया । केवली बूया—णिग्गंथे णं इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं सरमाणे, संतिभेया[6] •संतिविभंगा संतिकेवलीपण्णत्ताओ धम्माओ° भंसेज्जा । णो णिग्गंथे इत्थीणं पुव्वरयाइं पुव्वकीलियाइं सरित्तए सियत्ति तच्चा भावणा ।।

६८. अहावरा चउत्था भावणा—णाइमत्तपाणभोयणभोई से णिग्गंथे, णो पणीयरस-भोयणभोई । केवली बूया—अइमत्तपाणभोयणभोई से णिग्गंथे पणीयरसभोयण-भोई त्ति, संतिभेदा[7] •संतिविभंगा संतिकेवलीपण्णत्ताओ धम्माओ° भंसेज्जा ।

---

१. सं० पा०—महव्वए''' ।

२. सं० पा०—गच्छेज्जा तं चेव अदिण्णादाण-वत्तव्वया भाणियव्वा जाव वोसिरामि ।

३. मणोहराइं २ (क, घ); मणोहराइ रूवाइं मणोहराइं (छ) ।

४. सं० पा०—संतिविभंगा जाव धम्माओ ।

५. सुमरित्तए (अ, क, घ, छ, ब) ।

६. सं० पा०—संतिभेया जाव भंसेज्जा ।

७. सं० पा०—संतिभेदा जाव भंसेज्जा ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णो अतिमत्तपाणभोयणभोई से णिग्गंथे णो पणीयरसभोयणभोई त्ति चउत्था भावणा ॥

६९. अहावरा पंचमा भावणा—णो णिग्गंथे इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्तए सिया। केवली बूया—णिग्गंथे णं इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवेमाणे, संतिभेया[1] •संतिविभंगा संतिकेवलीपण्णत्ताओ धम्माओ° भंसेज्जा। णो णिग्गंथे इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्तए सियत्ति पंचमा भावणा ॥

७०. एतावताव महव्वए सम्मं काएण फासिए[2] •पालिए तीरिए किट्टिए अवट्ठिए आणाए• आराहिए यावि भवइ। चउत्थे भंते! महव्वए[3] •मेहुणाओ वेरमणं° ॥

अपरिग्गहमहव्वय-पदं

७१. अहावरं पंचमं भंते! महव्वयं—सव्वं परिग्गहं पच्चक्खामि[4]—से अप्पं वा, बहुं वा, अणुं वा, थूलं वा, चित्तमंतं वा, अचित्तमंतं वा णेव सयं परिग्गहं गिण्हेज्जा, णेवण्णेहिं परिग्गहं गिण्हावेज्जा, अण्णंपि परिग्गहं गिण्हंतं ण समणुजाणिज्जा[5] •जावज्जीवाए तिविहं तिविहेणं—मणसा वयसा कायसा, तस्स भंते! पडिक्कमामि निंदामि गरिहामि अप्पाणं° वोसिरामि ॥

अपरिग्गहमहव्वयस्स भावणा-पदं

७२. तस्सिमाओ पंच भावणाओ भवंति। तत्थिमा पढमा भावणा—सोयओ[6] जीवे मणुण्णामणुण्णाइं सद्दाइं सुणेइ। मणुण्णामणुण्णेहिं सद्देहिं णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, णो गिज्झेज्जा, णो मुज्झेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा, णो विणिग्घायमावज्जेज्जा। केवली बूया—णिग्गंथे णं मणुण्णामणुण्णेहिं सद्देहिं सज्जमाणे रज्जमाणे गिज्झमाणे मुज्झमाणे अज्झोववज्जमाणे विणिग्घायमावज्जमाणे, संतिभेया संतिविभंगा संतिकेवलिपण्णत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा।

ण सक्का ण सोउं सद्दा, सोयविसयमागता ।
रागदोसा उ जे तत्थ, ते[7] भिक्खू परिवज्जए ॥२०॥

सोयओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं सद्दाइं सुणेइ त्ति पढमा भावणा ॥

७३. अहावरा दोच्चा भावणा—चक्खूओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं रूवाइं पासइ।

---

१. सं० पा०—संतिभेया जाव भंसेज्जा।
२. सं० पा०—फासिए जाव आराहिए।
३. सं० पा०—महव्वए•••।
४. पच्चाइक्खामि (अ, क, घ, च)।
५. सं० पा०—समणुजाणिज्जा जाव वोसिरामि।
६. सोतत्तेणं (अ, क, छ, ब)।
७. तं (अ, क, घ, ब)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मणुण्णामणुण्णेहिं रूवेहिं णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा[1], •णो गिज्झेज्जा, णो मुज्झेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा°, णो विणिग्घायमावज्जेज्जा। केवली बूया— निग्गंथे णं मणुण्णामणुण्णेहिं रूवेहिं सज्जमाणे रज्जमाणे[2] •गिज्झमाणे मुज्झमाणे अज्झोववज्जमाणे° विणिग्घायमावज्जमाणे, संतिभेया संतिविभंगा[3] •संतिकेवलिपण्णत्ताओ धम्माओ° भंसेज्जा।

णो सक्का रूवमदट्ठुं, चक्खुविसयमागयं।
'रागदोसा उ जे तत्थ, ते'[4] भिक्खू परिवज्जए॥२१॥

चक्खूओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं रूवाइं पासइ त्ति दोच्चा भावणा॥

७४. अहावरा तच्चा भावणा—घाणओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं गंधाइं अग्घायइ। मणुण्णामणुण्णेहिं गंधेहिं णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा[5], •णो गिज्झेज्जा, णो मुज्झेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा°, णो विणिग्घायमावज्जेज्जा। केवली बूया— निग्गंथे णं मणुण्णामणुण्णेहिं गंधेहिं सज्जमाणे रज्जमाणे[6] •गिज्झमाणे मुज्झमाणे अज्झोववज्जमाणे° विणिग्घायमावज्जमाणे, संतिभेदा संतिविभंगा[7] •संतिकेवली-पण्णत्ताओ धम्माओ° भंसेज्जा।

णो सक्का[8] ण[9] गंधमग्घाउं, णासाविसयमागयं।
रागदोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए॥२२॥

घाणओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं गंधाइं अग्घायति त्ति तच्चा भावणा॥

७५. अहावरा चउत्था भावणा—जिब्भाओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं रसाइं अस्सादेइ। मणुण्णामणुण्णेहिं रसेहिं णो सज्जेज्जा[10], •णो रज्जेज्जा, णो गिज्झेज्जा, णो मुज्झेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा°, णो विणिग्घायमावज्जेज्जा। केवली बूया— णिग्गंथे णं मणुण्णामणुण्णेहिं रसेहिं सज्जमाणे[11] •रज्जमाणे गिज्झमाणे मुज्झमाणे अज्झोववज्जमाणे° विणिग्घायमावज्जमाणे, संतिभेदा[12] •संतिविभंगा संतिकेवलीपण्णत्ताओ धम्माओ° भंसेज्जा।

णो सक्का रसमणासाउं, जीहाविसयमागयं।
रागदोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए॥२३॥

जीहाओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं रसाइं अस्सादेइ त्ति चउत्था भावणा॥

---

१. सं० पा०—रज्जेज्जा जाव णो।
२. सं० पा०—रज्जमाणे जाव विणिग्घाय।
३. सं० पा०—संतिविभंगा जाव भंसेज्जा।
४. रागो दोसो उ जो तत्थं, तं (अ, क)।
५. सं० पा०—रज्जेज्जा जाव णो।
६. सं० पा०—रज्जमाणे जाव विणिग्घाय।
७. सं० पा०—संतिविभंगा जाव भंसेज्जा।
८. सक्को (छ)।
९. × (अ, क, च, ब)।
१०. सं० पा०—सज्जेज्जा जाव णो।
११. सं० पा०—सज्जमाणे जाव विणिग्घाय।
१२. सं० पा०—संतिभेदा जाव भंसेज्जा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

७६. अहावरा पंचमा भावणा—फासओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं फासाइं पडिसंवेदेइ। मणुण्णामणुण्णेहिं फासेहिं णो सज्जेज्जा, णो रज्जेज्जा, णो गिज्झेज्जा, णो मुज्झेज्जा, णो अज्झोववज्जेज्जा, णो विणिग्घायमावज्जेज्जा। केवली बूया—णिग्गंथे णं मणुण्णामणुण्णेहिं फासेहिं सज्जमाणे[1] °रज्जमाणे गिज्झमाणे मुज्झमाणे अज्झोववज्जमाणे° विणिग्घायमावज्जमाणे, संतिभेदा संतिविभंगा संतिकेवलिपण्णत्ताओ धम्माओ भंसेज्जा।

णो सक्का ण संवेदेउं, फासविसयमागयं ।
रागदोसा उ जे तत्थ, ते भिक्खू परिवज्जए ॥२४॥

फासओ जीवो मणुण्णामणुण्णाइं फासाइं पडिसंवेदेति त्ति पंचमा भावणा ॥

७७. एतावताव महव्वए सम्मं काएण फासिए पालिए तीरिए किट्टिए अवट्ठिए[2] आणाए आराहिए यावि भवइ। पंचमे भंते! महव्वए[3] °परिग्गहाओ वेरमणं° ॥

७८. इच्चेतेहिं महव्वएहिं, पणुवीसाहि[4] य भावणाहिं संपण्णे अणगारे अहासुयं अहाकप्पं अहामग्गं सम्मं काएण फासित्ता, पालित्ता, तीरित्ता, किट्टित्ता आणाए आराहित्ता यावि भवइ।

—त्ति बेमि ॥

---

१. सं० पा०—सज्जमाणे जाव विणिग्घाय।

२. अहिट्ठिए (अ, क, घ, च, छ, ब); प्रथममहाव्रतसूत्रे (४९) 'किट्टिए अवट्ठिए' इति पाठोस्ति, अत्र 'किट्टिए अहिट्ठिए' इति पाठो लभ्यते, किन्तु उक्तसूत्रस्य वृत्तेश्चानुसारेणात्रापि 'अवट्ठिए' इति पाठो युज्यते, तेन स स्वीकृतः।

३. सं० पा०—महव्वए···।

४. पण° (छ, ब)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोलसमं अज्झयणं

विमुत्ती

अणिच्च-पद

१. अणिच्चमावासमुवेंति जंतुणो, पलोयए सोच्चमिदं अणुत्तरं।
विऊसिरे[1] विण्णु अगारबंधणं, अभीरु आरंभपरिग्गहं चए॥

पव्वय-दिट्ठंत-पदं

२. तहागअं भिक्खुमणंतसंजयं, अणेलिसं विण्णु चरंतमेसणं।
तुदंति वायाहि अभिद्दवं णरा, सरेहिं संगामगयं व कुंजरं॥
३. तहप्पगारेहिं जणेहिं हीलिए, ससद्दफासा फरुसा उदीरिया।
तितिक्खए णाणि अदुट्ठचेयसा, गिरिव्व वाएण ण संपवेवए॥

रुप्प-दिट्ठंत-पदं

४. उवेहमाणे कुसलेहिं संवसे, अकंतदुक्खी तसथावरा दुही।
अलूसए सव्वसहे महामुणी, तहा हि से सुस्समणे समाहिए॥
५. विदू णते धम्मपयं अणुत्तरं, विणीयतण्हस्स मुणिस्स झायओ।
समाहियस्सऽग्गिसिहा व तेयसा, तवो य पण्णा य जसो य वड्ढइ॥
६. दिसोदिसंऽणंतजिणेण ताइणा, महव्वया खेमपदा पवेदिता।
महागुरू णिस्सयरा उदीरिया, तमं व तेजो तिदिसं पगासया॥
७ सितेहिं भिक्खू असिते परिव्वए, असज्जमित्थीसु चएज्ज पूअणं।
अणिस्सिओ लोगमिणं तहा परं, ण मिज्जति कामगुणेहिं पंडिए॥

---

१. विउ° (क, च, ब); वियो° (घ); °विओ (छ)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

८. तहा विमुक्कस्स परिण्णचारिणो, धिईमओ दुक्खखमस्स भिक्खुणो।
विसुज्झई जंसि मलं पुरेकडं, समीरियं रुप्पमलं व जोइणा[1]॥

भुजंगतय-दिट्ठंत-पदं

९. से हु प्परिण्णा समयंमि वट्टइ, णिराससे उवरय-मेहुणे[2] चरे।
भुजंगमे जुण्णतयं जहा जहे[3], विमुच्चइ से दुहसेज्ज माहणे॥

समुद्द-दिट्ठंत-पदं

१०. जमाहु ओहं सलिलं अपारगं, महासमुद्दं व भुयाहि दुत्तरं।
अहे य[4] णं परिजाणाहि पंडिए, से हु मुणी अंतकडे त्ति वुच्चइ॥
११. जहा हि बद्धं इह 'माणवेहि य'[5], जहा य तेसि तु विमोक्ख आहिओ।
अहा तहा बंधविमोक्ख जे विऊ, से हु मुणी अंतकडे त्ति वुच्चइ॥
१२. इमंमि लोए 'परए य दोसुवि'[6], ण विज्जइ बंधण जस्स किंचिवि।
से हु णिरालंबणे अप्पइट्ठिए, कलंकली भावपहं विमुच्चइ॥

—त्ति बेमि॥

ग्रन्थ-परिमाण
कुल अक्षर—९६९१०
अनुष्टुप् श्लोक—३००६, अक्षर १८

---

१. जोइणो (अ, घ, ब)।
२. मेहुणा (क, वृ)।
३. चए (च)।
४. व (अ, क, ब)।
५. माणवेहिं (अ, क)।
६. परलोयतेसुवि (च)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्टः

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट-१

संक्षिप्त-पाठ, पूर्त-स्थल और पूर्ति आधार-स्थल

आयारो

संक्षिप्त-पाठ,	पूर्त-स्थल	पूर्ति आधार-स्थल
अहमसी जाव अण्णयरीओ	१।३	१।१
आगममाणे जाव समत्तमेव	८।९५,९६,१२३,१२४	८।७८,८०
एवं जं परिघेतव्वं ति, मन्नसि जं	५।१०१	५।१०१
एवं हिययाए पित्ताए वसाए पिच्छाए पुच्छाए बालाए सिंगाए विसाणाए दंताए दाढाए नहाए ण्हारुणीए अट्ठीए अट्ठिमिंजाए अट्ठाए अणट्ठाए	१।१४०	१।१४०
गामं वा जाव रायहाणिं	८।१२६	८।१०६
जाएज्जा जाव एवं	८।६४-६७	८।४४-४८
धारेज्जा जाव गिम्हे	८।८८-९२	८।४६-५०
परक्कमेज्ज वा जाव हुरत्था	८।२३	८।२१
समारम्भ जाव चेएइ	८।२४	८।२३

आयारचूला

अंतलिक्खजाए जाव णो	५।३७,३८	५।३६
अकिरियं जाव अभूतोवघाइयं	४।११	४।१०
अक्कोसंति वा जाव उद्दवंति	३।६१	२।२२
अक्कोसंति वा तहेव तेल्लादि सिणाणादि सीओदगवियडादि णिगिणाइ य जहा सिज्जाए आलावगा णवरं ओग्गहवत्तव्वया	७।१६-२०	२।५१-५५
अक्कोसेज्ज वा जाव उद्दवेज्ज	३।६	२।२२
अणुवयंति तं चेव जाव णो सातिज्जंति बहुवयणेणं भाणियव्वं	५।४७	५।४६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अणेगाहगमणिज्जं जाव णो गमणाए	३।१३	३।१२
अणेसणिज्जं जाव णो	१।१७,६३,१०९,१३६	१।४
अणेसणिज्जं जाव लाभे	१।१०८,१२१	१।४
अणेसणिज्जं···णो	१।२१	१।४
अणेसणिज्जं···लाभे	१।८५,९७;८।१;९।१	१।४
अणेसणिज्जं···लाभे संते जाव[1] णो	१।१३५	१।४
अण्णमण्णमक्कोसंति वा जाव उद्दवेंति	२।५१	२।२२
अण्णयरं जहा पिंडेसणाए	७।५६	१।१५५
अतिरिच्छच्छिन्नं तहेव तिरिच्छच्छिन्नं तहेव	७।३४,३५	७।२७,२८
अपुरिसंतरकडं जाव अणासेवितं	१।२१,५।१२	१।१७
अपुरिसंतरकडं जाव णो	१।२४	१।१७;१।४
अपुरिसंतरकडं जाव बहिया अणीहडं वा··· अन्नयरंसि	१०।९	१।१७
अपुरिसंतरकडे जाव अणासेविए (ते)	२।१०,१२	१।१७
अपुरिसंतरकडे जाव णो	२।१४,१६	२।८
अपुरिसंतरकडे वा जाव अणासेविते	२।३	१।१२
अप्पंडए जाव संताणए	१।१३५	१।२
अप्पंडं जाव पडिगाहेज्जा अतिरिच्छच्छिन्नं तिरिच्छच्छिन्नं तहेव	७।३७,३८	७।३०,३१
अप्पंडं जाव मक्कडा	९।२	१।२
अप्पंडं जाव संताणगं (यं)	२।५८-६१,६९;५।२९,३०;७।२७,२८,३०,३१,३४	१।२
अप्पंडा जाव संताणगा	१।४३;३।५	१।२
अप्पंडे जाव चेतेज्जा	२।३२	२।२
अप्पापाणं जाव संताणगं	२।२	१।२
अप्पपाणंसि जाव मक्कडा	१०।२८	१।२
अप्पबीयं जाव मक्कडा	१०।३	१।२
अप्पुस्सुए जाव समाहीए	३।२६,५९,६१	३।२२
अफासुयं जाव णो	१।१२,६४,८२,८३,८७,९२,९६, १०७,११०,१११,१२८,१३३; २।४८;५।२२,२३,२५,२८,२९; ६।२६,४६;७।२६,२७,२९,३०	१।४
अफासुयं जाव लाभे	१।१०६	१।४
अफासुयं···लाभे	१।८४,१०२,१०४,१२३	१।४
अफासुयाइं जाव णो	६।१३,१४	१।४

१. अत्र 'जाव' शब्दस्य व्यत्ययोपि वर्तते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अब्भंगेत्ता वा तहेव सिणाणाइ तहेव सीओ- दगादि कंदादि तहेव	६।२२-२५	५।२३-२५
अभिकंखसि सेसं तहेव जाव णो	५।२४	५।२३
अभिहणेज्ज वा जाव उद्दवेज्ज	१५।४७,४८	१५।४४
अभिहणेज्ज वा जाव ववरोवेज्ज	२।१९,४६	१।८८
अयं तेण तं चेव जाव गमणाए	३।११	३।९,१०
अयबंधणाणि वा जाव चम्मबंधणाणि	६।१४	६।१३
असणं वा ४ अफासुयं	१।९२	१।९७
असणं वा ४ जाव लाभे	१।९०	१।४
असणं वा ४ लाभे	१।३६,४१,८८,९१	१।४
असत्थपरिणयंजाव णो	१।११३,११५-११९	१।९२;१।४
असावज्जं जाव भासेज्जा	४।२२	४।११
अस्सिंपडियाए एगं साहम्मियंसमुद्दिस्स अस्सिपडियाए बहवे साहम्मिया समुद्दिस्स अस्सिपडियाए एगं साहम्मिणिं समुद्दिस्स अस्सिपडियाए बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स अस्सिपडियाए बहवे समणमाहण पगणिय- पगणिय समुद्दिस्स पाणाइं ४ जाव उद्देसियं चेतेति, तहप्पगारं थंडिलं पुरिसंतरकडं वा अपुरिसंतरकडं वा जाव वहिया णीहडं वा अणीहडं वा	१०।४-८	१।१२-१६
आइक्खह जाव दूइज्जेज्जा	३।५५	३।५४
आएसणाणि वा जाव भवणगिहाणि	३।४७	२।३६
आगंतारेसु वा जाव परियावसहेसु	२।३४,३५	२।३३
आगंतारेसु वा जावोग्गहियंसि	७।४६,४७	७।२३,२४
आमज्जेज्ज वा जाव पयावेज्ज	३।३९;६।४८	१।५१
आयरिए वा जाव गणावच्छेइए	१।१३१	१।१३०
इक्कडे वा जाव पलाले	२।६५;७।५४	२।६३
ईसरे जाव एवोग्गहियंसि	७।३२,३३	७।२५,२६
उवज्झाएण वा जाव गणावच्छेइएण	२।७२	१।१३०
एवं अतिरिच्छच्छिन्ने वि तिरिच्छच्छिन्ने जाव पडिगाहेज्जा	७।४४,४५	७।३०,३१
एवं आउतेउवाउवणस्सइ	२।४१	२।४१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं णायव्वं जहा सद्द-पडियाए सव्वा वाइत्तवज्जा रूव-पडियाए वि	१२।२-१७	११।५-२०
एवं तसकाए वि	१।६८	१।६२
एवं पादणक्ककण्णउट्ठच्छिन्नेति वा	४।१६	४।१६
एवं बहवे साहम्मियथा एगं साहम्मिणिं बहवे साहम्मिणीओ	२।४,५,६	२।३
एवं बहवे साहम्मिया एगं साहम्मिणिं बहवे साहम्मिणीओ बहवे समणमाहणस्स तहेव, पुरिसंतरं जहा पिंडेसणाए	५।६-११	१।१३-१८
एवं बहवे साहम्मिया एगं साहम्मिणिं बहवे साहम्मिणीओ समुद्दिस्स चत्तारि आलावगा भाणियव्वा	१।१३-१:	१।१२
एवं बहिया विचारभूमिं वा विहारभूमिं वा गामाणुगामं दूइज्जेज्जा अहपुणेवं जाणेज्जा तिव्वदेसियं वा वासं वासमाणं पेहाए जहा पिंडेसणाए णवरं सव्वं चीवरमायाए	५।४३-४५	१३८-४०
एवं वहिया बियारभूमिं वा विहारभूमिं वा गामाणुगामं दूइज्जेज्जा । तिव्वदेसियादि जहा बिइयाए वत्थेसणाए णवरं एत्थ पडिग्गहे	६।५१-५८	५।४३-५०
एवं सेज्जागमेणं णेयव्वं जाव उदगपसूयाइं ति	८।२-१५	२।२-१५
एवं सेज्जागमेणं णेयव्वं जाव उदगप्पसूयाइंति	९।३-१५	२।३-१५
एवं हिट्ठिमो गमो पायादि भाणियव्वो	१३।४०-७५	१३।३-३८
एसणिज्जं जाव पडिगाहेज्जा	१।१८,२३;२।६४	१।५
एसणिज्जं जाव लाभे	१।७,१४३	१।५
एसणिज्जं…लाभे	२।६३;९।२	१।५
एस पइन्ना…जं	६।२८,४५	१।५६
ओवयंतेहि य जाव उप्पिजलगभूए	१५।४०	१५।३९
कंदाणि वा जाव बीयाणि	१०।१५	२।१४
कंदाणि वा जाव हरियाणि	५।२५	२।१४
कसिणे जाव समुप्पणे	१५।४०	१५।३८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कुट्टीति वा जाव महुमेहणी	४।१६	आयारो ६।८
कुलियंसि वा जाव णो	७।१२	५।३७
खंधंसि वा अण्णयरे वा तहप्पगारे		
जाव णो	७।१३	५।३८
खलु जाव विहरिस्सामो	७।२५	७।२३
गंडं वा जाव भगंदलं	१३।३०-३३	१३।२८
गच्छेज्जा जाव अप्पुस्सुए…तओ	५।४८	३।५९
गच्छेज्जा जाव गामाणुगामं	५।४९	३।५९
गच्छेज्जा तं चेव अदिण्णादाणवत्तव्वया		
भाणियव्वा जाव वोसिरामि	१५।६४	१५।५७
गामं वा जाव	७।२	१।२८
गामं वा जाव रायहाणिं	१।३४,१२२;२।१;३।२;८।१	१।२८
गामंसि वा जाव रायहाणिंसि	१।३४,१२२;३।२	१।२८
गामे वा जाव रायहाणी	३।४५,५७	१।२८
गाहावइं वा जाव कम्मकरिं	१।६३,५।१८;६।१७	१।२५
गाहावइ-कुलं जाव पविट्ठे	१।१६,१७	१।१
गाहावइ-कुलं जाव पविसितुकामे	१।८,४४	१।१९
गाहावइ-कुलं…पविसितुकामे	१।३७	१।१९
गाहावई वा जाव कम्मकरीओ	१।१२१, १२२, १४३;	
	२।२२,३६,५१;७।१६	१।४६
गोलेति वा इत्थी गमेणं णेतव्वं	४।१४	४।१२
छत्तए वा जाव चम्मछेदणए	७।२४	२।४६
छत्तगं वा जाव चम्मछेयणगं	३।२४	२।४६
जवसाणि वा जाव सेणं	३।५६	३।४३
जहा पिंडेसणाए जाव संथारगं	२।१२	१।२९
जाएज्जा जाव पडिगाहेज्जा	१।१४५;५।१९;६।१६,१७	१।१४१
जाएज्जा जाव विहरिस्सामो	७।४९	७।२३
जावज्जीवाए जाव वोसिरामि	१५।५७	१५।४३
जीवपइट्ठियंसि जाव मक्कडा	१०।१४	१।५१
झामथंडिलंसि वा जाव अण्णयरंसि	१५।१;५।३९	१।३
झामथंडिलंसि वा जाव पमज्जिय	१।१३५	१।३
ठाणं…चेतेज्जा	२।२८,२९	२।१
ठाणं वा जाव चेतेज्जा	२।२७,५१-५५	२।१
णगरं वा जाव रायहाणिं	८।१	१।२८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

णगरस्स वा जाव रायहाणीए	३।५८	१।२८
णिक्खमणपवेसाए जाव धम्माणुओग	७।१४	१।४२
तं चेव भाणियव्वं णवरं चउत्थाए णाणत्तं से भिक्खू वा जाव समाणे सेज्जं पुण पाणग-जायं जाणेज्जा तंजहा तिलोदगं वा तुसोदगं वा जवोदगं वा आयामं वा सोवीरं वा सुद्धवियडं वा अस्सिं खलु पडिग्गहियंसि अप्पे पच्छाकम्मे तहेव पडिगाहेज्जा	१।१४८-१५४	१।१४१-१४७
तहप्पगारं जाव णो	१।११४	१।४,९२
तहप्पगाराइं णो	११।१२-१४,१६	११।५
तहप्पगाराइं···सद्दाइं···णो	११।७-११,१५	११।५
तहेव तिन्निवि आलावगा णवर ल्हसुणं	७।३९-४२	७।२५-२८
दंडगं वा जाव चम्मछेदणगं	७।३	२।४६
दस्सुगायतणाणि जाव विहारवत्तियाए	३।९	३।८
दुब्बद्धे जाव णो	७।११	५।३६
देज्जा जाव पडिगाहेज्जा	१।१४४	१।१४१
देज्जा जाव[1] फासुयं···पडिगाहेज्जा	१।१४७	१।१४१
देज्जा जाव[2] फासुयं···लाभे	५।१८	१।१४१
दोहिं जाव सण्णिहिसण्णिचयाओ	१।२४	१।२१
निक्खमणपवेसाए जाव धम्माणु०	३।२	१।४२
निक्खिवाहि जहा इरियाए णाणत्तं वत्थपडियाए	५।५०	३।६१
पइण्णा जाव जं	२।१९,२२;६।२८,४५	१।५६
पगिज्भिय जाव णिज्झाएज्जा	३।४८,४९	३।४७
पडिक्कमामि जाव वोसिरामि	१५।५०	१५।४३
पडिमं जहा पिंडेसणाए	६।२०	१।१५५
पडिमाणं जहा पिंडेसणाए	५।२१	१।१५५
पडिमाणं जाव पग्गहियतरागं	८।२१-३०	२।६७-७६
पडिवज्जमाणे तं चेव जाव अण्णोण्णसमाहीए	२।६७	१।१५५

१,२. अत्र 'जाव' शब्दस्य व्यत्ययोपि वर्तते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पण्णस्स जाव चिताए	२।५०-५६;७।१५,२१	१।४२
पमज्जेत्ता जाव एगं	३।३४	३।१५
परक्कमे जाव णो	३।७	३।६
पागाराणि वा जाव दरीओ	३।४७	३।४१
पाडिपहिया जाव आउसंतो	३।५७	३।५४
पाणाइं जहा पिंडेसणाए	५।५	१।१२
पाणाइं जहा पिंडेसणाए चत्तारि आलावगा। पंचमे वहवे समणमाहणा पगणिय-पगणिय तहेव से भिक्खू वा २ अस्संजए भिक्खुपडियाए वहवे समणमहणा वत्थेसणालावओ	६।४-१२	१।१२-१८;५।५-१३
पाणाणि वा जाव ववरोवेज्ज	२।७१	१।८८
पायं वा जाव इंदिय	२।४६	१।८८
पायं वा जाव लूसेज्ज	२।७१	१।८८
पिहुयं वा जाव चाउलपलंबं	१।७,१४४	१।६
पुढविकाए जाव तसकाए	१५।४२	२।४१
पुढवीए जाव संताणए	१।१०२;५।३५;७।१०	१।५१
पुरिसंतरकड जाव आसेवियं	१।२२	१।१८
पुरिसंतरकडं जाव पडिगाहेज्जा	५।१३	५।११
पुरिसंतरकडं जाव बहिया णीहडं अण्णयरंसि	१०।१०	१।१८
पुरिसंतरकडे जाव आसेविए	२।९,११,१३	१।१८
पुरिसंतरकडे जाव चेतेज्जा	२।१५,१७	२।९
पुव्वोवदिट्ठा जाव चेतेज्जा	२।३०	२।२७
पुव्वोवदिट्ठा जाव जं	१।९१;२।२३,२४,२५,२७,२८,२९;३।९,१३,४९;५।२७	१।५६
पुव्वोवदिट्ठा जाव णो	१।९५	१।९१
पेहाए जाव चित्ताचिल्लडं	३।५९	१।५२
फलिहाणि वा जाव सराणि	११।५	नि० १७।१४१
फासिए जाव आणाए	१५।५६	१५।४९
फासिए जाव आराहिए	१५।७०	१५।४९
फासुयं जाव पडिगाहेज्जा	१।२२,२५,८१,१००,१४६;५।२०,३०;७।२८,३१	१।५
फासुयं···पडिगाहेज्जा	१।१४१	१।५
फासुयं···लाभे संते जाव[1] पडिगाहेज्जा	१।१०१,१२८;५।१८	१।५
बहुकंटगं···लाभे संते जाव[2] णो	१।१३४	१।४

१,२. अत्र 'जाव' शब्दस्य व्यत्ययोपि वर्तते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहुपाणा जाव संताणगा	३।४	१।२
बहुबीया जाव संताणगा	३।१	१।२
बहुरयं वा जाव चाउलपलंबं	१।८२	१।६
भगवंतो जाव उवरया	२।२५	१।१२१
भिक्खुणी वा जाव पविट्ठे	१।५,६,७,११,१२,४२,६२,९२,९६,९९, १०१,१०४,१०५,१०७-१०९,१११	१।१
भिक्खुणी वा सेज्जं पुण जाणेज्जा असणं वा ४ आउकायपइट्ठियं तह चेव। एवं अगणिकायपइट्ठियं लाभे	१।९३,९४	१।९२
भिक्खू वा जाव पग्गहियं०	१।१४६	१।१४५
भिक्खू वा जाव पविट्ठे	१।२३,४९,५०,५२	१।१
भिक्खू वा २ जाव सद्दाइं	११।१६	११।२
भिक्खू वा जाव समाणे	१।५३,५५,५८,६१,८३,८४,८७,८९, ९०,९७,१०२,१०६,११०,११२-११९, १२४,१२५,१२६,१३५,१३६, १४५,१४७,१५१	१।१
भिक्खू वा २ जाव सुणेति	११।१४,१५	११।२
भिक्खू वा'''सेज्जं	१।८२,१२८,१३३,१३४,१४४	१।१
मणी वा जाव रयणावली	५।२७	२।२४
मणुस्सं जाव जलयरं	४।२६	४।२५
मत्ते तहेव दोच्चा पिंडेसणा	१।१४२	१।१४१
महद्धणमोल्लाइं'''लाभे	५।१४	१।४
महव्वए'''	१५।५६,६३,८४,९१	१५।४९
मासेण वा जहा वत्थेसणाए	६।२१	५।२२
मूलाणि वा जाव हरियाणि	१०।१२	२।१४
रज्जमाणे जाव विणिग्घाय	१५।७३,७४	१५।७२
रज्जेज्जा जाव णो	१५।७३,७४	१५।७२
लाढे जाव णो	३।१२	३।८
वएज्जा जाव परोक्खवयणं	४।४	४।३
वत्थाणि'''लाभे	५।१५	१।४
वप्पाणि वा जाव भवणगिहाणि	४।२१	३।४७
वायण जाव चिंताए	२।४९	१।४२
वित्ती जाव रायहाणि	३।३	१।४३;३।२
सअंडं जाव णो	७।३३	७।२६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सअंडं जाव णो	७।३६,४३	७।२६
सअंडं जाव मक्कडा	८।१;६।१	१।२
सअंडं जाव संताणयं (गं)	२।१,४७,६८;५।२८;७।२६,२६	१।२
सअंडादि सव्वे आलावगा जहा वत्थेसणाए णाणत्तं तेल्लेण वा घएण वा णवणीएण वा वसाए वा सिणाणादि जाव अण्णयरंसि वा	६।२६-४२	५।२८-३६
सअंडे जाव संताणए	२।३१	१।२
संतिभेया [दा] जाव भंसेज्जा	१५।६७,६८,६६,७५	१५।६५
संतिविभंगा जाव धम्माओ	१५।६६	१५।६५
संतिविभंगा जाव भंसेज्जा	१५।७३,७४	१५।६५
संथारगं…लाभे	२।५७,५८,५६,६०	१।४
संथारयं जाव लाभे	२।६१	१।५
सकिरिया जाव भूओवघाइया	१५।४६	१५।४५
सज्जमाणे जाव विणिग्घाय	१५।७५,७६	१५।७२
सज्जेज्जा जाव णो	१५।७५	१५।७२
सत्ताइं जाव चेएइ तहप्पगारे उवस्सए अपुरिसंतरकडे जाव अणासेविए	२।७,८	१।१६,१७
सपाणं जाव मक्कडा	१०।२	१।२
सपाणे जाव संताणए	१।५१	१।२
समण जाव उवागया	३।३,४	३।२
समणमाहण जाव उवागमिस्संति	१।४३	१।४२
समणुजाणिज्जा जाव वोसिरामि	१५।७१	१५।४३
समारंभेणं जाव अगणिकाए	२।४२	२।४१
सम्मं जाव आणाए	१५।६३	१५।४६
सयं वा जाव पडिगाहेज्जा	६।१८	१।१४१
सयं वा णं जाव पडिगाहेज्जा	६।१६	१।१४१
ससिणिद्धेण सेसं तं चेव एवं ससरक्खे मट्टिया ऊसे, हरियाले हिंगुलए, मणोसिला अंजणे लोणे गेरुय वण्णिय सेडिय, पिट्ठ कुक्कस उक्कुट्ठ संसट्ठेण	१।६५-८०	१।६४
सामग्गिय	१।४८,६०,८६,१०३,१२०,१२६,१३७; २।२६,४३	१।२०
सामग्गियं	३।४६;५।४०,५१;७।२२,५८	२।७७
सामग्गियं जाव जएज्जासि	८।३१;१०।२६;११।२०	२।७७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सावज्जं जाव णो	४।२१	४।१०
सिणाणेण वा जाव आघंसित्ता	५।२३	२।२०
सिणाणेण वा जाव पधंसेज्ज	५।३१	२।२१
सिणाणेण वा तहेव सीओदगवियडेण		
वा उसिणोदग-वियडेण वा आलावओ	५।३३,३४	५।३१,३२
सिया जाव समाहीए	३।४४	३।२६
सिलाए जाव मक्कडासंताणए	१।८२	१।५१
सिलाए जाव संताणए	१।८३	१।५१
सीओदग-वियडेण वा जाव पधोएज्ज	५।३२	२।२१
सीलमंता जाव उवरया	२।३८	१।१२१
से आगंतारेसु वा जाव	७।६,८	७।४
सेसं तं चेव, एयं खलु० जइज्जासि	१४।३-८०	१३।३-८०
हत्थं जाव अणासायमाणे	३।५०,५२	२।७४
हत्थं वा जाव सीसं	२।१६	१।८८
हत्थिजुद्धाणि वा जाव कविंजल	११।१२	१०।१८
हत्थिट्ठाणकरणाणि वा जाव कविंजल	११।११	१०।१८

सूयगडो

अकेवले जाव असव्वदुक्ख०	२।५७,६२	२।३२
अकोहे जाव अलोभे	४।२४	२।५८
अखेत्तण्णा जाव परक्कमण्णू	१।६,१०	१।८
अगाराओ जाव पव्वइत्तए	७।२१	७।२०
अज्झारोहसंभवा जाव कम्माणियाणेणं	३।७,८,६	३।२
अणारिए जाव असव्वदुक्ख०	२।७५	३।३२
अणारिया वेगे जाव दुरूवा	१।४६	१।१३
अणिट्ठं जाव णो सुहं	१।५१	१।५०
अणिट्ठाओ जाव णो सुहाओ	१।५१	१।५०
अणिट्ठे जाव णो सुहे	१।५१	१।५०
अणिट्ठे जाव दुक्खे	१।५१	१।५०
अणुपुव्वट्ठिए जाव पडिरूवे	१।५	१।३
अणुपुव्वट्ठियं जाव पडिरूवं	१।७,८,६	१।६
अणुपुव्वेणं जाव सुपण्णत्ते	१।२३-२५	१।१३-१५
अणेगभवणसयसण्णिविट्ठा जाव पडिरूवा	७।२	७।५
अपच्छिमं जाव विहरित्तए	७।२६	७।२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपत्ते जाव अंतरा	१।१०	१।६
अपत्ते जाव सेयंसि	१।६	१।६
अप्पडिविरया जाव जे यावण्णे	२।७१	२।५८
अभिगयजीवजीवे जाव विहरइ	७।४	२।७२
अवहरइ जाव समणुजाणइ	२।२५,२६,३०	२।२४
अहम्मिया जाव दुप्पडियाणंदा जाव सव्वाओ परिग्गहाओ	७।२२	२।५८

अहावर पुरक्खायं इहेगइया सत्ता तेहिं चेव
(१) पुढविजोणिएहिं रुक्खेहिं
(२) रुक्खजोणिएहिं रुक्खेहिं
(३) रुक्खजोणिएहिं मूलेहिं जाव बीएहिं
(४) रुक्खजोणिएहिं अज्झारोहेहिं
(५) अज्झोरुहजोणिएहिं अज्झोरुहेहिं
(६) अज्झोरुहजोणिएहिं मूलेहिं जाव बीएहिं
(७) पुढविजोणिएहिं तणेहिं
(८) तणजोणिएहिं तणेहिं
(९) तणजोणिएहिं मूलेहि जाव बीएहिं
(१०-१२) एवं ओसहीहिं वि तिण्णि आलावगा[1]
(१३-१५) एवं हरिएहिं वि तिण्णि आलावगा
(१६) पुढविजोणिएहि वि आएहिं जाव कूरेहिं।
(१) उदगजोणिएहिं रुक्खेहिं
(२) रुक्खजोणिएहिं रुक्खेहिं
(३) रुक्खजोणिएहिं मूलेहिं जाव बीएहिं
(४-६) एवं अज्झोरुहेहिं वि तिण्णि (७-९)
तणेहिं वि तिण्णि आलावगा (१०-१२)
ओसहीहिं वि तिण्णि (१३-१५) हरिएहिं वि
तिण्णि (१६) उदगजोणिएहिं उदएहिं अवएहिं जाव
पुक्खलच्छिभएहिं तसपाणत्ताए विउट्टंति।
ते जीवा तेसिं पुढविजोणियाणं, उदगजोणियाणं
रुक्खजोणियाणं अज्झोरुहजोणियाणं
तणजोणियाणं ओसहिजोणियाणं

१. येषां चत्वारश्चत्वार आलापकास्तेषां तृतीय आलापको न ग्राह्यः।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हरियजोणियाणं रुक्खाणं अज्झोरुहाणं तणाणं ओसहीण हरियाणं मूलाणं जाव बीयाणं आयाणं कायाणं जाव कूरवाणं उदगाणं जाव पुक्खलच्छिभगाणं सिणेहमाहारेंति—ते जीवा आहारेंति पुढविसरीरं जाव संतं । अवरे वि य णं तेसिं रुक्खजोणियाणं अज्झोरुहजोणियाणं तणजोणियाणं ओसहिजोणियाणं हरियजोणियाणं मूल-जोणियाणं जाव बीयजोणियाणं आयजोणियाणं कायजोणियाणं जाव कूरवजोणियाणं उदगजोणियाणं अवगजोणियाणं जाव पुक्खलच्छिभगजोणियाणं तसपाणाणं सरीरा णाणावण्णा जाव मक्खायं ।	३।४४-७५	३।२-४३
अहीणं जाव मोहरगाणं	३।७९	३।७९
आतोडिज्जमाणस्स वा जाव उवद्दविज्ज०	४।२१	१।५६
आयहेउं वा जाव परिवारहेउं	२।९	२।३
आयाणं जाव कूराणं	३।२२	३।२२
आयारो जाव दिट्ठिवाओ	१।३५	नंदी सू० ८०
आरिए जाव सव्वदुक्ख०	२।७०,७५	२।३२
अट्टसालाओ वा जाव गद्दभ०	२।२८	२।२३
उदगजोणिया जाव कम्म०	३।८७,८८	३।८६
उदगसंभवा जाव कम्म०	३।२३,४३,८६	३।२
उदाहु······संतेगइया	७।२०	७।१७
उस्साणं जाव सुद्धोदगाणं	३।८५	३।८५
ऊसियं जाव पडिरूवं	१।६	१।३
एगखुराणं जाव सणप्फयाणं	३।७८	३।७८
एवं उदगबुब्बुए भणियव्वे	१।३४	१।३४
एवं ओसहीण वि चत्तारि आलावगा	३।१४-१७	३।२-५
एवं जहा मणुस्साणं जाव इत्थि	३।७८	३।७६
एवं जाव तसकाए त्ति भाणियव्व	४।११-१५	४।१०,३
एवं तणजोणिएसु तणेसु तणत्ताए विउट्टंति तणजोणियंतणसरीरं च आहारेंति जाव मक्खाय	३।१२	३।४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं तणजोणिएसु तणेसु मूलत्ताए जाव		
वीयत्ताए विउट्टंति ते जीवा जाव मक्खायं	३।१३	३।५
एवं दुरूव संभवत्ताए एवं खुरदगत्ताए	३।८३,८४	३।८२, चूर्णि, वृत्ति
एवं पुढविजोणिएसु तणेसु तणत्ताए		
विउट्टंति जाव मक्खायं	३।११	३।३
एवं विण्णू वेदणा	१।५१	१।५१
एवं सद्दहमाणा जाव इति	१।३७,३८	१।२१,२२
एवं हरियाण वि चत्तारि आलावगा	३।१८-२१	३।२-५
एवमाइक्खंति जाव परूवेंति	२।७८,७९;७।११	२।४१
एवमेव जाव सरीरे	१।१७	१।१७
एसो आलोवगो तहा णेयव्वो जहा पोंडरीए		
जाव सव्वोवसंता सव्वत्ताए		
परिणिव्वुड त्तिबेमि	२।३३-५४	१।४९-७०
कच्छंसि वा जाव पव्वयविदुग्गंसि	२।६	२।४
कण्हुईरहस्सिया जाव तओ	२।५६	२।१४
कम्म जाव मेहुणवत्तिए	३।७८	३।७६
कम्म तहेव जाव तओ	३।७७	३।७६
किंचिवि जाव आसंदीपेढियाओ	७।२१	७।२०
किब्बिसियाइं जाव उववत्तारो	७।२५	२।१४
किरिया इ वा जाव अणिरऐ	१।२९,३६	१।२०
किरिया इ वा जाव णिरए इ वा		
जाव चउत्थे	१।४५-४७	१।२९-३१
कुसले जाव पउमवरपोंडरीयं	१।७	१।६
केइ जाव सरीरे	१।१७	१।७
केवले जाव सव्वदुक्ख०	२।५५	२।३२
कोहाओ जाव मिच्छा०	२।५८	वृत्ति
कोहे जाव मिच्छा०	४।३	२।५८
खेत्तण्णे जाव परक्कमण्णू	१।९,१०	२।६
गाहावइपुत्ताण वा जाव मोत्तियं	२।२९	२।२४
गाहावइस्स जाव तस्स	४।६	४।५
गोहाणं जाव मक्खायं	३।८०	३।८०,२
चम्मपक्खीणं जाव मक्खायं	३।८१	३।८१,२
चाउद्दसट्ठमुद्दिट्ठपुण्णमासिणीसु जाव		
अणुपालेमाणा	७।२१	७।२०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जहा अगणीणं तहा भाणियव्वा चत्तारिगमा	३।९३-९६	३।८९-९२
जहा उरपरिसप्पाणं तहा भाणियव्वं जाव सारूविकडं	३।८०	३।७९
जहा उरपरिसप्पाणं नाणत्तं	३।८१	३।७९
जहा पुढविजोणियाणं रुक्खाणं चत्तारिगमा अज्झारोहणवि तहेव, तणाणं ओसहीणं हरियाणं चत्तारि आलावगा भाणियव्वा एक्केक्के	३।२४-४२	३।३-२१
जहा मित्तदोसवत्तिए जाव अहिते	२।५८	२।१२
जावज्जीवाए जाव जे यावण्णे	२।६३	२।५८
जावज्जीवाए जाव सव्वाओ	२।५८	ओ० सू० १६३
जीवणिकाएहिं जाव कारवेइ	४।१६	४।१६
झामेइ जाव झामेंतं	२।२६	२।२१
झामेइ जाव समणुजाणइ	२।२८	२।२३
णाणागंधा जाव णाणाविह०	३।५	३।२
णाणापण्णा जाव णाणाज्झवसाण०	२।७७	२।७७
णाणापण्णे जाव णाणाज्झवसाण०	२।७७	२।७७
णाणावण्णा जात ते जीवा	३।४	३।२
णाणावण्णा णाव भवंति	३।७६	३।२
णाणावण्णा जाव मक्खायं	३।६-९,२२,२३,४३,७७-७९, ८२,८५-८९,९७	३।२
णाणाविहजोणिया जाव कम्म०	३।८५,८९,९३,९७	३।८२
णो पाराए जाव सेयंसि	१।८	१।६
तं चेव जाव अगारं वएज्जा	७।१९	७।१८
तं चेव जाव उवट्ठावेत्तए	७।१९	७।१८
तालिज्जमाणा वा जाव उद्दविज्जमाणा	४।२१	१।५६
ते तसा⋯ते चिर जाव अयंपि भेदे से⋯	७।२९	७।२०
दंडगं वा जाव चम्मछेयणगं	२।३०	२।२५
दंडणाणं जाव नो बहूणं	२।७९	२।७८
दंडेण वा जाव कवालेण	१।५६;४।२१	१।५६
दुक्खइ वा जाव परितप्पइ	१।४२,४३	१।४२
दुक्खंतु वा जाव मा मे परितप्पंतु	१।५१	१।४२
दुक्खामि वा जाव परितप्पामि	१।४३	१।४२
धम्माणं जाव णाणाज्झवसाण०	२।७७	२।७७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धम्माणुया जाव एगच्चाओ परिग्गहाओ अप्पडिविरया	७।२४	२।७१
धम्माणुया जाव धम्मेणं	२।७१	ओ० सू० १६१
धम्माणुया जाव सव्वाओ	७।२३	२।६३
धम्मिट्ठा जाव धम्मेणं	२।६३	ओ० सू० १६१
पउमवरपोंडरीयं जाव सव्वं परिग्गहं	१।१०	१।६
पच्चक्खाइस्सामो जाव सव्वं परिग्गहं	७।२१	७।२०
पत्तियमाणा जाव इति	१।३०,३१	१।२१,२२
परियाए जाव णो णेयाउए	७।३०	७।१६
पवालाणं जाव बीयाणं	३।५	३।५
पाईणं वा जाव सुयक्खाते	१।३२-३४,३९-४१	१।२३-२५
पाणाइवाए जाव परिग्गहे	४।३	१।५९
पाणाइवायाओ जाव विरए	१।५९	ओ० सू० १७१
पाणा जाव सत्ता	१।५६,५७;२।७८	१।४७
पाणा जाव सव्वे	४।२१	१।४७
पाणाणं जाव सत्ताणं	४।१७	१।४७
पाणाणं जाव सव्वेसिं	४।५,६,१७	१।४७
पाणावि जाव अयं……	७।२९	७।२०
पाणावि जाव अयं पिभे……	७।२९	७।२०
पाणा वि जाव अय पिभेदे……	७।२९	७।२०
पासादिए जाव पडिरूवे	१।३	१।१
पासादीया जाव पडिरूवा	७।५	१।१
पुढविकाइया जाव तसकाइया	४।३,२१	१।५६
पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया	४।१७	१।५६
पुढविकाए जाव तसकाए	१।५६	ठाणं ७।७३
पुढविकाए जाव पुढविमेव	१।३४	१।३४
पुढविसंभवा जाव कम्म०	३।२२	३।२
पुढविसंभवा जाव णाणाविह०	३।१०	३।२
पुढविसरीरं जाव संतं	३।२२.२३,४३,७७-७९ ८१,८२,८५-८९, ९७	३।२
पुढविसरीरं जाव सारूविकड	३।६,७,८,७६	३।२
पुढवीणं जाव सूरकंताणं	३।९७	३।९७
पुरिसत्ताए जाव विउट्टंति	३।७८	३।७६
पुरिसस्स जाव एत्थ णं मेहुणे एवं तं चेव नाणत्तं	३।७९	३।७६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुरिसादिया जाव अभिभूय	१।३४	१।३४
पुरिसादिया जाव चिट्ठंति	१।३४	१।३४
पुरिसादिया जाव पुरिसमेव	१।३४	१।३४
बहुयरगा जाव णो णेयाउए	७।२७	७।१६
बोहिए जाव उवधारियाणं	७।३४	७।३४
भवित्ता जाव पव्वइत्तए	७।२९	७।२०
भेत्ता जाव इति	२।१६	२।१६
मच्छाणं जाव सुंमुमाराणं	३।७७	पण्ण० १
महज्जुइएसु जाव महासोक्खेसु सेसं तहेव जाव एस ट्ठाणे आयरिए जाव एगंतसम्मे	२।७३,७४	२।६९,७०
महज्जुइया जाव महासोक्खा	२।६९	२।६९
महया…जं णं तुब्भे वयह तं चेव जाव अयं	७।२०	७।१६
महया जाव उववखाइत्ता	२।२५,३०	२।१९
महया जाव णो णेयाउए	७।२८	७।१६
महया जाव भवंति	२।२२,२३,२४,२६	१।१९
मूलत्ताए जाव बीयत्ताए	३।९	३।५
मूलाणं जाव बीयाणं	३।९	३।५
रुइला जाव पडिरूवा	१।४	१।२
वुच्चंति जाव अयं	७।२१	७।२०
वुच्चंति जाव णो णेयाउए	७।२३,२४,२५	७।२०
वुच्चंति ते तसा ए महा ते चिर ते बहुतरगा आयाणसो इती से महता जेणं तुब्भे णो णेयाउए	७।२२	७।२०
समणुजाणइ……।	२।२७	२।१९
समणोवासगस्स जाव णो णेयाउए	७।२६	७।१६
सरीरं जाव सारूविकडं	३।५	३।२
सव्वपाणेहिं जाव सत्तेहिं	७।१८,	१।४७
सव्वपाणेहिं जाव सव्वसत्तेहिं	७।१८,२९	१।४७
सिज्झिस्संति जाव सव्व०	२।७९	२।८०
सिणेहमाहारेंति जाव अवरे	३।९	३।२
सिणेहमाहारेंति जाव ते जीवा	३।१०	३।२
सिया जाव उदगमेव	१।३४	१।३४
सिया जाव पुढविमेव	१।३४	१।३४
सेए जाव विसण्णे	१।९	१।६

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सेए जाव सेयंसि	१।८	१।६
सेसा तिण्णि आलावणा जहा उदगाणं	३।९०-९२,९८-१००	३।८६-८८
सोयण जाव परितप्पण	४।१७	४।१७
सोयाओ जाव फासाओ	१।५२	१।५२
सोयामि वा जाव परितप्पामि	१।५९	१।४२
हंतव्वा जाव ण उद्दवेयव्वा	४।२१	१।५६
हंतव्वा जाव कालमासे	७।२५	२।१४
हंता जाव आहारं	२।१९	२।१९
हंता जाव उवक्खाइत्ता	२।१९,२०	२।१९

ठाणं

अइवाइत्ता भवति जाव जधावाती	७।२९	७।२८
अगारातो जाव पव्वतिते	४।४५०	३।५२३
अट्ठ एवं चेव	८।६६	८।६५
अड्ढाइं जाव बहुजणस्स	८।१०	वृत्ति
अणासाएमाणे जाव अणभिलसमाणे	४।४५१	४।४५०
अणुत्तरे जाव केवलवर०	५।९७	५।८४
अणुत्तरे जाव समुप्पणे	६।१०५	५।८४
अणुत्तरे जाव समुप्पणे	१०।१०३	१०।१०३
अणुसोतचारी जाव सव्वचारी	५।१९९	५।१९९
अत्थि जाव समुप्पणे	७।२	७।२
अपढमसमयणेरतिता एवं जाव अपढम०	८।१०५	५।१७५
अपढमसमयणेरतिता जाव अपढमसमयदेवा	९।१०;१०।१५३	५।१७५
अब्भोवगमिओ जाव सम्मं	४।४५१	४।४५१
अमणुण्णा सद्दा जाव फासा	१०।१४०	५।५
अमणुण्णे जाव साइमे	८।४२	८।४२
अमुच्छिए [ते] जाव अणज्झोववण्णे	३।३६२;४।४३४	३।३६२
अयगोलसमाणे जाव सीसगोल०	४।५४६	४।५४६
अरहंतेहिं तं चेव	३।८५	३।८१
अरहा जाव अयं	१०।१०९	५।१९५;१०।१०९
अवट्ठिते जाव दव्वओ	५।१७४	५।१७०
अवलेहणित जाव देवेसु	४।२८२	४।२८२
अविसेस जाव पुव्वविदेहे	२।२७०	२।२६८

अविसेसमणाणत्ता जाव सद्दावाती	२।२७४	२।२७२
असावज्जे जाव अभूताभिसंकणे	७।१३३	७।१३१
असिपत्तसमाणे जाव कलंबचीरिया०	४।५४८	४।५४८
असुयणिस्सिते वि एमेव	२।१०३	२।१०२
असुरकुमाराणं वग्गणा चउवीसं दंडओ जाव एगा	१।१४३-१६३	२।३५४-३६२;४।३६६
असोगवणं जाव चूयवणं	४।३४०	४।३३९
अहासुत्तं जाव अणुपालित्ता	८।१०४	७।१३
अहासुत्तं जाव आराहिया	७।१३;९।४१;१०।१५१	वृत्ति[1]
अहीणस्सरे जाव मणामस्सरे	८।१०	८।१०
आउकाइओगाहणा जाव वणस्सइकाइओगाहणा	९।११	७।१३
आउक्खएणं जाव चइत्ता	८।१०	८।१०
आगमे जाव जीते	५।१२४	५।१२४
आगमेणं जाव जीतेणं	५।१२४	५।१२४
आघवइत्ता जाव ठावतिता	३।८७	३।८७
आढाति जाव बहुं	८।१०	८।१०
आधाकम्मितं वा जाव हरितभोयणं	९।६२	९।६२
अभिणिबोहियणाणावरणिज्जे जाव केवल०	५।२१९	५।२१८
आभिणिबोहिय [त] णाणी जाव केवल०	६।११;८।१०६	५।२१८
आमलगमहुरफलसमाणे जाव खंडमहुर०	४।४११	४।४११
आयारं जाव दिट्ठिवायं	१०।१०३	समवाओ १।२
आरंभिता जाव मिच्छादंसणवत्तिता	५।११७	५।११२
आलोएज्जा जाव अत्थि	८।१०	८।१०
आलोएज्जा जाव पडिवज्जेज्जा	३।३४२,३४३;८।१०	३।३३८
आलोयणारिहे जाव अणवट्ठप्पारिहे	१०।७३	९।४२
आलोयणारिहे जाव मूलारिहे	९।४२	८।२०
आवत्ते जाव पुक्खलावती	८।६९	२।३४०
आसपुरा जाव वीतसोगा	८।७५	२।३४१

१. वृत्तौ किञ्चिद् भेदेन लभ्यते—७।१३—अहासुत्तं यावत्करणात् अहाअत्थं अहातच्चं अहामग्गं अहाकप्पं सम्मं काएणं फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया आराहिया त्ति (पत्र ३६८) । ८।१०४—'अहासुत्ता अहाकप्पा अहामग्गा अहातच्चा सम्मं काएण फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया आराहिया' इति यावत्करणात् दृश्य अणुपालियं' त्ति (पत्र ४१७) । ९।१४१—यथासूत्रं यथाकल्प यथामार्गं यथातत्त्वं सम्यक् कायेन स्पृष्टा पालिता शोभिता तीरिता कीर्त्तिता आराधिता चापि भवतीति । (पत्र ४३०) १०।१५१—अहासुत्तं······यावत्करणात् अहाअत्थं अहातच्चं अहामग्गं अहाकप्पं सम्यक्कायेन, फासिया पालिया शोधिता शोभिता वा तीरिया कीर्त्तिता आराधिता भवति (पत्र ४६२) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आसाएइ [ति] जाव अभिलसति	४।४५०	४।४५०
आसाएमाणे जाव अभिलसमाणे	४।४५०	४।४५०
आसाएमाणे जाव मणं	४।४५०	४।४५०
आहारवं जाव अवातदंसी	१०।७२	८।१८
आहारसण्णा जाव परिग्गहसण्णा	१०।१०५	४।५७८
इंदा जाव महाभोगा	१०।२६	५।२२३
इंदियाइं जाव णिज्झाइत्ता	९।४	९।३
इंदेथावरकाताधिपती जाव पातावच्चे	५।२०	५।१९
इच्चेतेहिं जाव णो धरेज्जा	५।१०५,१०६	५।१०४
इच्चेतेहिं जाव संचातेति	४।४३४	४।४३४
इरिताऽसमिती जाव उच्चार०	१०।१४	१०।१३
ईसाणे जाव अच्चुते	१०।१४९	२।३८०-३८४
उज्जलं जाव दुरहियासं	९।६२	वृत्ति
उत्तरासाढा एवं चेव	४।६५६	४।६५४
उण्णए णामं	४।४	४।४
उण्णत्तावत्तसमाणं माणं एवं चेव गूढा-वत्तसमाणं मातमेवं चेव	४।६५३	४।६५३
उप्पण्णाण जाव जाणति	७।७८	५।१९५
उप्पायणविसोहि जाव सारक्खणविसोहि	१०।८५	१०।८४
उम्मीवीची जाव पडिबुद्धे	१०।१०३	१०।१०३
उरगजाति पुच्छा	४।५१४	४।५१४
उवचिण जाव णिज्जरा	८।१२६;९।७२	३।५४०
उर्वारि जाव पडिबुद्धे	१०।१०३	१०।१०३
उवहिअसंकिलेसे जाव चरित्त०	१०।८७	१०।८६
एगिंदितेहिंतो वा जाव पंचिंदिय०	५।२०५	भ० २।१३९
एगिंदियत्ताते वा जाव पंचिंदियत्ताते	५।२०५	भ० २।१३९
एगिंदियअसंजमे जाव पंचिंदिय०	५।१४५	भ० २।१३९
एगिंदियणिव्वित्तिते जाव पंचिंदिय०	५।२३८	भ० २।१३९
एगिंदियसंजमे जाव पंचिंदिय०	५।१४४	भ० २।१३९
एगिंदिया जाव पंचिंदिया	५।१८०,२०४;६।११	भ० २।१३९
एते चेव	५।१७९	५।१७८
एते तिण्णि आलावगा भाणितव्वा	१०।१५९	१०।१५९
एवं	२।१६८	२।१६७
एवं	२।२५६	२।२५५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एव	२।४६२	२।४६१
एव	३।३२२	३।३२१
एवं	३।४७५	३।४७४
एवं	६।३६	६।३८
एवं अग्गिच्चावि एवं रिट्ठावि	६।३६,३७	६।३५
एवं अजोगिभवत्थकेवलणाणे वि	२।६१	२।६०
एवं अणुण्णवेत्तए उवाइणित्तए	३।४२३,४२४	३।४२२
एवं अज्जरूवे अज्जमणे अज्जसंकप्पे अज्जपण्णे अज्जदिट्ठी अज्जसीलाचारे अज्जववहारे अज्जपरक्कमे अज्जवित्ती अज्जजाती अज्जभासी अज्जओभासी अज्जसंवी अज्जपरियाए अज्जपरियाले एवं सत्तरस्स आलावगा जहा दीणेण भणिया तहा अज्जेण वि भाणियव्वा	४।२१३-२२७	४।१९६-२१०
एवं अणभिग्गहितमिच्छादंसणे वि	२।८५	२।८४
एवं असंकिलेसे वि एवमतिक्कमे वि वइक्कमे वि अइयारे वि अणायारे वि	३।४३९-४४३	३।४३८
एवं असंयमो वि भाणितव्वो	१०।२३	१०।२२
एवं आगंता णामेगे सुमणे भवति ३ एमीतेगे सु३ एस्सामीति एगे सुमणे भवति	३।१९५-१९७	३।१८९-१९१
एव उवसंपया एवं विजहणा	३।३५३,३५४	३।३५१
एवं एएणं अभिलावेणं——		

संगहणी-गाहा

गंता य अगंता य, आगंता खलु तहा अणागंता।
चिट्ठित्तमचिट्ठित्ता[1], णिसिसित्ता[2] चेव णो चेव ॥१॥
हंता य अहंता य, छिंदित्ता खलु तहा अछिंदित्ता।
बूतित्ता अबूतित्ता, भासित्ता चेव णो चेव ॥२॥
'दच्चा य अदच्चा'[3] य, भुंजित्ता खलु तहा अभुंजित्ता।
लभित्ता अलभित्ता, पिबइत्ता[4] चेव णो चेव ॥३॥

---

१. चिट्ठित्त न चिट्ठित्ता (क)।
२. णिसितत्ता (क, ख)।
३. दत्ता अदत्ता (क)।
४. पिवइत्ता (क, ग); पिइता (क्व)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सुतित्ता असुतित्ता, जुज्झित्ता खलु तहा अजुज्झित्ता । जतित्ता अजयित्ता य, पराजिणित्ता चेव णो चेव ॥४॥ सद्दा रूवा 'गंधा, रसा य'[1] फासा तहेव ठाणा य । णिस्सीलस्स गरहिता, पसत्था पुण सीलवंतस्स ॥५॥ एवमिक्केक्के तिण्णि उ तिण्णि उ आलावगा भाणियव्वा ।	३।१९८-२८४	संगहणी-गाहा; ३।१८९-१९४
एवं एसा गाहा फासेतव्वा, जाव—ससरीरी चेव असरीरी चेव सिद्धसइंदियकाए, जोगे वेए कसाय लेसा य । णाणुवओगाहारे, भासग चरिमे य ससरीरी ॥१॥	२।४१०	संगहणी-गाहा
एवं ओसप्पिणीए नवरं पण्णत्ते आगमिस्साते उस्सप्पिणीए भविस्सति	३।११०,१११	३।१०९
एवं कंता पिया मणुण्णा मणामा	२।२३३	२।२३२
एवं कुलसंपण्णेण य बलसंपण्णेण य कुलसंपण्णेण य रूवसंपण्णेण य कुलसंपण्णेण य जयसंपण्णेण य	४।४७४-४७६	४।४७१-४७३
एवं कुलेण य रूवेण य कुलेण य सुतेण य कुलेण त सीलेण य कुलेण य चरित्तेण य	४।३९७-४००	३।३९६
एवं गंधाइं रसाइं फासाइं जाव सव्वेण वि	१।०।३	१।०।३;२।२०३,२०४
एवं गंधा रसा फासा एवमिक्किक्के छ-छ आलावगा भाणियव्वा	२।२३०-२३८	२।२३४
एवं चउभंगो तहेव	४।२५०	४।२५०
एवं चक्कवट्टिवंसा दसारवंसा	२।३१०,३११	२।३०९
एवं चक्कवट्टी एवं बलदेवा एवं वासुदेवा जाव उप्पज्जिस्संति	२।३१३-३१५	२।३१२
एवं चिणंति एस दंडओ एवं चिणिस्संति एस दंडओ एवमेतेणं तिण्णि दंडगा	४।६३,६४	४।६२
एवं चेव	३।४८४	३।४८३
एवं चेव	४।४२७	४।४२६
एवं चेव	४।६१७	४।६१७
एवं चेव	४।६१९	४।६१८
एवं चेव	५।१६१	५।१५९

१. रसा गंधा (क, ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं चेव	५।१६२	५।१५६
एवं चेव	६।२६	६।२५
एवं चेव	८।४६,५०	८।४८
एवं चेव	८।१२४	८।१२३
एवं चेव	१०।६४	१०।६३
एवं चेव एवं तिरियलोए वि	४।४८४,४८५	४।४८३
एवं चेव एवं फासामातो वि	६।८१	६।८१
एवं चेव एवमेतेणं अभिलावेणं इमातो		
गाहातो अणुगंतव्वातो––		
पउमप्पभस्स चित्ता, मूले पुण होइ पुप्फदंतस्स ।		
पुव्वाइं आसाढा, सीयलस्सुत्तर विमलस्स भद्दवता ॥१॥		
रेवतित अणंतजिणो, पूसो धम्मस्स संतिणो भरणी ।		
कुंथुस्स कत्तियाओ, अरस्स तह रेवतीतो य ॥२॥		
मुणिसुव्वयस्स सवणो, आसिणी णमिणो य णेमिणो चित्ता ।		
पासस्स विसाहाओ, पंच य हत्थुत्तरे वीरो ॥३॥	५।८६-९६	५।८४
एवं चेव जाव छच्च	६।२७	६।२५
एवं चेव णवरं खेत्तओ लोगालोगपमाणमिते		
गुणतो अवगाहणागुणे सेसं तं चेव	५।१७२	५।१७०
एवं चेव णवर गुणतो ठाणगुणे	५।१७१	५।१७०
एवं चेव णवरं दव्वओणं जीवत्थिगाते		
अणंताइं दव्वाइं अरूवि जीवे गुणतो		
उवओगगुणे सेसं तं चेव	५।१७३	५।१७०
एवं चेव मणुस्सावि	४।६१५	४।६१४
एवं छप्पि समाओ भाणियव्वाओ जाव		
दूसमदूसमा	३।६०	१।१२८-१३३
एवं छप्पि समाओ भाणियव्वाओ जाव		
सुसमसुसमा	३।६२	१।१३५-१४०
एवं जधा अट्ठट्ठाणे जाव खंते	१०।७१	८।१६
एवं जधा छट्ठाणे जाव जीवा	८।१४	६।३६
एवं जधा पंचट्ठाणे जाव आयरिय	७।६	५।४८
एवं जधा पंचट्ठाणे जाव बाहिं	७।८१	५।१६६
एवं जहण्णोगाहणगाणं उक्कोसोगाहणगाणं		
अजहण्णुक्कोसोगाहणगाणं जहण्णठितियाणं		
उक्कस्सट्ठितियाणं अजहण्णुक्कोसठितियाणं		

जहण्णगुणकालगाणं उक्कस्सगुणकालगाणं अजहण्णुक्कस्सगुणकालगाणं	१।२३८-२४६	१।२३५-२३७
एवं जहा उण्णत पणतेहिं गमो तहा उज्जु वंकेहि वि भाणियव्वो जाव परक्कमे	४।१२-२१	४।२-११
एवं जहा गरहा तहा पच्चक्खाणे वि दो आलावगा	३।२७	३।२६
एवं जहा जाणेण चत्तारि आलावगा तहा जुग्गेणवि पडिवेक्खो तहेव पुरिसजाया जाव सोभेति	४।३७६-३७८	४।३७२-३७४
एवं जहा तिट्ठाणे जाव लोगंतिता देवा माणुस्सं लोगं हव्वमागच्छेज्जा तं जहा अरहंतेहिं जायमाणेहिं जाव अरहंताणं परिणिव्वाणमहिमासु	४।४४२-४४९	३।७९-८६
एवं जहा पंचट्ठाणे जाव किण्णरे	७।११३	५।५७
एवं जहा विज्जुतारं तहेव थणियसद्दंपि	३।७१	३।७०
एवं जहा हयाणं तहा गयाणं वि भाणियव्वं पडिवेक्खो तहेव पुरिसजाया	४।३८५-३८७	४।३८१-३८३
एवं जाइस्सामीतेगे सुमणे भवति	३।१९१	३।१८९
एवं जातीते य रूवेण य चत्तारि आलावगा एवं जातीते य सुएण य एव जातीते य सीलेण य एवं जातीते य चरित्तेण य	४।३९२-३९५	४।३९०
एवं जाव अपढमसमयपंचिंदिता	१०।१५२	५।१४५
एवं जाव एगा	१।२१६-२२६	पण्ण० १
एवं जाव कम्मगसरीरे	५।२७-३०	५।२५,२६
एवं जाव काउलेसाणं	१।१९८	१।१९२
एवं जाव केवलणाणं	२।५३-६२;३।१६३-१७२	२।४२-५१
एवं जाव घोसमहाघोसाणं णेयव्वं	७।११७,११८	५।६२,६३
एवं जाव जहा से	५।१२४	५।१२४
एवं जाव तिणिस०	४।२८३	४।२८२,२८३
एवं जाव दुविहा	२।१२४-१२६	७।७३
एवं जाव पच्चुप्पणाणं	७।७	७।६
एवं जाव फासाइं	१०।४	१०।३
एवं जाव फासामतेणं	१०।२२	८।३३
एवं जाव फासामातो	८।३३	६।८१
एवं जाव फासामातो	८।३४	६।८२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं जाव मणपज्जवणाणं	२।४०४	२।५३-६१
एवं जाव लोभे वेमाणियाणं	४।७७-७९	४।७५,७६
एवं जाव लोभे वेमाणियाणं	४।८१-८३	४।७५,८०
एवं जाव लोभे वेमाणियाणं	४।८५-८७	४।७५,८४
एवं जाव लोभे वेमाणियाणं	४।८९-९१	४।७५,८८
एवं जाव वणस्सइकाइया	२।१२९-१३२,१३४-१३७ १३०-१४३	२।१२४-१२७
एवं जाव सव्वेण वि	१०।५	१०।३
एवं जाव सिद्धिगती	१०।९९	५।१७५
एवं जाव सुक्कलेसाणं	१।१९३-१९५	समवाओ ६।१
एवं जाव सेलोदग०	४।३५५	४।३५४
एवं जुत्तपरिणते जुत्तरूवे जुत्तसोभे सव्वेसिं पडिवेक्खो पुरिसजाता	४।३८१-३८३	४।३७२-३७४
एवं णिरयाउअंसि कम्मंसि अक्खीणंसि जाव णो चेव	४।५८	४।५८
एवं णेरइयाणं जाव वेमाणियाणं एवं जाव मिच्छादंसणसल्लाणं	२।४०७	१।९७-१०७;२।४०६
एवं णेसत्थियावि	२।२८	२।२७
एवं णो केवलं बंभचेरवासमावसेज्जा णो केवलं संजमेणं संजमेज्जा णो केवलेणं संवरेणं संवरेज्जा णो केवलमाभिणिबोहियणाणं उप्पाडेज्जा एवं सुयणाणं ओहिणाणं मणपज्जवणाणं केवलाणं	२।४४-५१	२।४३
एवं तिरियलोगं उड्ढलोगं केवलकप्पं लोगं	२।१९४-१९६	२।१९३
एवं तिरियलोगं उड्ढलोगं केवलकप्पं लोगं	२।१९८-२००	२।१९७
एवं तेइंदियाणं वि चउरिंदियाणं वि	१।१८१-१८४	१।१७९,१८०
एवं थावरकाए वि	२।१६६	२।१६५
एवं दंसणाराहणा वि चरित्ताराहणा वि	३।४३६,४३७	३।४३५
एवं दीणजाती दीणभासी दीणोभासी	४।२०५-२०७	४।१९५
एवं दीणमणे दीणसंकप्पे दीणपण्णे दीणदिट्ठी दीणसीलाचारे दीणववहारे	४।१९७-२०२	४।१९५
एवं दीणे णाममेगे दीणपरियाए एवं दीणे णाममेगे दीणपरियाले सव्वत्थ चउभंगो	४।२०९,२१०	४।१९५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं देवंधगारे देवुज्जोते देवसण्णिवाते देवुक्कलिताते देवकहकहते	४।४३७-४४१	४।४३५,४३६
एवं देवाणं भाणियव्वं	२।१५४	२।१५३
एवं देवुक्कलिया देवकहकहए	३।७७,७८	३।७६
एवं दोग्गतिगामिणीओ सोगतिगामिणीओ संकिलिट्ठाओ असंकिलिट्ठाओ अमणुण्णाओ मणुण्णाओ अविसुद्धाओ विसुद्धाओ अपसत्थाओ पसत्थाओ सीतलुक्खाओ णिद्धुण्हाओ	३।५१७,५१८	३।५१५,५१६
एवं पडिसडंति विद्धंसंति	२।२२४,२२५	२।२२३
एवं परिणते जाव परक्कमे	५।३६-४४	४।३-११
एवं परिग्गहिया वि	२।१६	२।१५
एवं पासे वि	३।५३३	३।५३२
एवं पुढ्ढियावि	२।२२	२।२१
एवं पुव्वफग्गुणी उत्तराफग्गुणी	२।४४५,४४६	२।४४३
एवं फुरित्ताणं एवं फुडित्ताणं एवं संवट्ट-इत्ताणं एवं णिवट्टतित्ताणं	२।३९९-४०२	२।३९८
एवं बलसंपण्णेण य रूवसंपण्णेण य बलसंपण्णेण य जयसंपण्णेण य सव्वत्थ पुरिसजाया पडिवक्खो	४।४७७,४७८	४।४७२,४७३
एवं बलेण य सुतेण य एवं बलेण य सीलेण य एवं बलेण य चरित्तेण य	४।४०२-४०४	४।४०१
एवं मणुस्साणवि	३।६५,६६	३।६३,६५
एवं मोहे मूढा	२।४२२,४२३	२।४०१
एवं मोहे मूढा	३।१७८,१७९	३।१७६
एवं रज्जंति मुच्छंति गिज्झंति अज्झो-ववज्जंति	५।७-१०	५।६
एवं रूवाइं गंधाइं रसाइं फासाइं एक्केक छ-छ आलावगा भाणियव्वा	३।२९१-३१४	३।२८५-२९०;२।२०२-२०५
एवं रूवाइं पासइ गंधाइं अग्घाति रसाइं आसादेति फासाइं पडिसंवेदेति	२।२०२-२०५	२।२०१
एवं रूवेण य सीलेण य एवं रूवेण य चरित्तेण य	४।४०६,४०७	४।४०५
एवं वइक्कमाणं अतिचाराणं अणायाराणं	३।४४५-४४७	३।४४४
एवं वंदति णाममेगे णो वंदावेइ	४।११२	४।१११

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं वाणमंतराणं एवं जोइसियाणं	७।१०७,१०८	७।१०६
एवं विततेवि	२।२१७	२।२१६
एवं विसोही	३।४३३	३।४३२
एवं वेदेंति एव णिज्जरेंति	२।३९६,३९७	२।३९५
एवं वेयावच्चे अणुग्गहे अणुसट्ठी उवालंभे एवमेक्केके तिण्णि-तिण्णि आलावगा जहेव उवक्कमे	६।४१२-४१५	३।४११
एवं संकप्पे पण्णे दिट्ठी सीमाचारे ववहारे परक्कमे एगे पुरिसजाए पडिवक्खो नत्थि	४।६-११	४।५
एवं सक्कारेइ सम्माणेति पूएइ वाएइ पडिच्छति पुच्छइ वागरेति	४।११३-११९	४।१११
एवं सम्मद्दिट्ठि परित्ता पज्जत्तग सुहुम सण्णि भविया य	३।३१८	३।३१८
एवं सव्वेसि चउभंगो भाणियव्वो	४।२०३	४।१९५
एवं सामंतोवणिवाइयावि	२।२५	२।२४
एवं सुंदरी वि	५।१६३	५।१५९
एवं सुत्तेण य चरित्तेण य	४।४०९	४।४०८
एवं मज्झोवज्जणा परियावज्जणा	३।५०९,५१०	३।५०८
एवमणारंभे वि एवं सारंभे वि एवमसारंभे वि एवं समारंभे वि एवं असमारंभे वि जाव अजीवकाय असमारंभे	७।८५-८९	७।८४
एवमणुण्णवत्तते उवातिणित्तते	३।४२०,४२१	३।४१९
एवमभेज्जा अडज्झा अगिज्झा अणड्डा अमज्झा अपएसा	३।३२९-३३४	३।३२८
एवमाधारातिणिताते	५।४९	५।४८
एवमासणाइं चलेज्जा सीहणातं करेज्जा चेलुक्खेवं करेज्जा	३।८२-८४	३।८१
एवमिट्ठा जाव मणामा	२।२३४,२३५	२।२३३
एवमिमीसे ओसप्पिणीए जाव पण्णत्ते एवं आगमिस्साए उस्सप्पिणीए जाव भविस्सति	२।३१०,३११	२।३०९
एवमेगसमयठितिया	१।२५५	१।२५४

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवमेतेणं अभिलावेणं इमा गाहा अणुगंतव्वा —		
सवणे णाणे य विण्णाणे पच्चक्खाणे य संजमे । अणण्हते तवे चेव वोदाणे अकिरिय णिव्वाणे ॥		
जाव से णं भंते !	३।४१८	३।४१८
एवमेतेणं अभिलावेणं उरपरिसप्पावि भाणियव्वा भुजपरिसप्पा वि भाणियव्वा एवं चेव	३।४२-४७	३।३६-६८
एवमेतेणं गमएणं दित्तचित्ते जक्खातिट्ठे उम्मायपत्ते	५।१०८	५।१०८
एवमेतेणमभिलावेणं चत्तारि कसाया पं तं कोहकसाए ४ पंचकामगुणे पं तं सद्दे ५ छज्जीवनिकाता पं तं पुढविकाइया जाव तसकाइया एवामेव जाव तसकाइया	६।६२	६।६२
कंते जाव मणामे	८।१०	८।१०
कंदे जाव पुप्फे	१०।१५५	८।३२
कक्खडे जाव लुक्खे	१।८४-८६	८।१३
कण्हलेस्सा जाव सुक्कलेसा	६।४७,४८;७।७३	समवाओ ६।१
कालोभासे जाव परमकिण्हे	६।६२	वृत्ति
किण्हा जाव सुक्किला	५।२२३,२२५	५।३
किण्हे जाव सुक्किले	५।२२६,२२८	५।३
किरियावादी जाव वेणइयावादी	४।५३१	४।५३०
कुंडला चेव जाव रयणसंजया	८।७४	२।३४६
कुलमतेण वा जाव इस्सरिय०	१०।१२	८।२१
केवली जाणइ पासइ जाव गंधं	८।२५	७।७८
कोहअपडिसंलीणे जाव लोभ०	४।१६१	४।१६०
कोहकसाई जाव लोभकसाई	५।२०८	४।७५
कोहणिव्वत्तिए जाव लोभ०	४।६२५	४।७५
कोहमुंडे जाव लोभमुंडे	१०।६६	५।१७७
कोहविवेगे जाव मिच्छादंसणसल्ल०	१।११५-१२५	१।६७-१०७
कोहसण्णा जाव लोभसण्णा	१०।१०५	४।७५
कोहे जाव एगे	१।६७,६८	४।७५
खिप्पमवेति जाव असंदिद्ध०	६।६३	६।६१
खेमपुरी जाव पुंडरीगिणी	८।७३	२।३४१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

गंगा जाव रत्ता	७।५६	७।५२
गतिकल्लाणं जाव आगमे०	८।११५	पइण्णगसमवाय सू० ४५
गमणं जाव अणाउत्तं	७।१३६	७।१३५
गोमुत्ति जाव कालं	४।२८२	४।२८२
गरहेज्जा जाव पडिवज्जेज्जा	३।४४४	३।३३८
चउभंगो	४।३	४।३
चउभंगो	४।१२	४।१२
चउभंगो	४।४५	४।२४
चउभंगो	४।४६८	४।४६८
चउभंगो	४।६११	४।६११
चउभंगो एवं जहेव सुद्धेणं वत्थेणं भणितं तहेव सुतिणा वि जाव परक्कमे	४।४५-५४	४।२४-३३
चउभंगो एवं परिणतरूवे वत्था सपडिवक्खा	४।२४-२६	४।२-४
चउभंगो एवं संकप्पे जाव परक्कमे	४।२७-३३	४।५-११
चक्खुदंसणे जाव केवलदंसणे	८।३८	७।७६
चिण जाव णिज्जरा	७।१५३	३।५४०
चित्तविचित्तपक्खगं जाव पडिबुद्धे	१०।१०३	१०।१०३
चुल्ल हिमवंते जाव मंदरे	७।५५	७।५१
जधा सालीणं जाव केवतितं	५।२०९	३।१२५
जह पंचट्ठाणे जाव परिहरणोवघाते	१०।८४	५।१३१
जहा दोच्चा णवरं दीहेणं परितातेणं	४।१	४।१
जहेव णंसत्थियाओ	२।३०,३१	२।२८
जाणइ जाव हेउं	५।७७	५।७५
जाणइ (ति) जाव हेउणा	५।७६,७८	५।७५
जाणइ जाव अहेउं	५।७९,८१	५।७५
जाणति जाव अहेउणा	५।८०,८२	५।७५
जातिणामणिहत्ताउते जाव अणुभाग०	६।११७	६।११६
जातिसंपण्णे जाव रूवसंपण्णे	४।२२९	४।२२९
जायमाणेहिं जाव तं चेव	३।८१	३।७९
जाव केवलणाणंउप्पाडेज्जा	२।६४-७३	२।४२-५१
जाव चउरिंदियाणं	२।१५७,१५८	१।१५८;२।१५६
जाव दव्वा	२।१४६-१५०	२।१४०-१४४
जिणे जाव सव्वभावेणं	६।४	५।१९५
जीवणिकाएहिं जाव अभिभवइ	३।५२३	३।५२३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ठाणं वा जाव णातिक्कमंति	५।१०७	५।१०७
ठाणाइं जाव अब्भणुण्णायाइं	५।३७-४२	५।३४
ठाणाइं जाव भवंति	५।४२,४३	५।३४
ठाणेहिं जाव णातिक्कमंति	५।१०७	५।१०७
ठाणेहिं जाव धरेज्जा	५।१०३	५।१०३
ठाणेहिं जाव णो खंभातेज्जा	५।२२	५।२२
ठाणेहिं जाव णो धरेज्जा	५।१०४	५।१०४
णगरंसि वा जाव रायहाणिंसि	५।१०७	आयारचूला १।२८
णग्गभावं जाव लद्धावलद्धवित्ती	९।६२	९।६२
णमसामि जाव पज्जुवासामि	३।३६२	३।३६२
णाणत्तं जाव विउव्विस्सा	७।२	७।२
णासि जाव णिच्चे	५।१७४	५।१७०
णिक्कंखिए जाव परिस्सहे	३।५२४	३।५२४
णिग्गंथीण वा जाव णो समुप्प०	४।२५४	४।२५४
णिग्गंथीण वा जाव समुप्प०	४।२५५	४।२५५
णिग्गंथे जाव णातिक्कमइ	५।१०२	५।१०२
णियमं जाव पगरेंति	६।१२२	६।११९
णिस्संकिते जाव णो कलुससमावण्णे	३।५२४	३।५२३
णिस्संकिते जाव परिस्सहे	३।५२४	३।५२४
णेरइयत्ताए वा जाव देवत्ताए	४।६१४	४।६१४
णेरइया जाव देवा	५।२०८	४।६०८
णेरतिआउते जाव देवाउते	४।२८६	४।६०८
णेरतिते जाव णो चेव	४।५८	४।५८
णेरतियणिव्वत्तिते जाव देवणिव्वत्तिते	७।१५३	७।७१
णेरतिय भवे जाव देवभवे	४।२८७	४।६०८
णेरतियसंसारे जाव देवसंसारे	४।२८५	४।६०८
णो आलोएज्जा जाव णो पडिवज्जेज्जा	३।३४०;८।१०	३।३३८
णो आसाएति जाव अभिलसति	४।४५१	४।४५०
णो चेव णं जाव करिस्सति	४।५१४	४।५१४
णो पडिक्कमेज्जा जाव णो पडिवज्जेज्जा	६।३३९;८।९	३।३३८
णो महिड्ढिए जाव णो चिरट्ठितिते	८।१०	८।१०
णो महिड्ढिएसु जाव णो दूरंगतितेसु	८।१०	२।२७१
तं चेव	४।२३८	४।२३८
तं चेव	४।२३९	४।२३८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तं चेव जाव संकिण्णे	४।२४०	४।२४०
तं चेव विवरीतं जाव मणुण्णा फासा	१०।१४१	१०।१४०
तंजहा जाव मिच्छादंसणवत्तिया	५।११३	५।११२
तत्थेगओ जाव णातिक्कमंति	५।१०७	५।१०७
तयक्खायसमाणे जाव सारक्खायसमाणे	४।५६	४।५६
तलवर जाव अण्णमण्णं	६।६२	६।६२
तहेव	४।४२८	४।४२६
तहेव	४।५६३	४।५६३
तहेव	४।५६४	५।५६४
तहेव चउभंगो	४।४	४।४
तहेव चत्तारिगमा	४।४२६	४।४२६
तहेव जाव अवहरति	५।७३,७४	५।७३
तहेव जाव पणते	४।२	४।२
तहेव जाव हलिद्द०	४।२८४	४।२८४,२८२
तित्ता जाव मधुरा	५।४,३३	१।७६-८१
तित्ते जाव मधु (हु) रे	५।२६,२२८	५।४
तिरियगती जाव सिद्धिगती	८।५५	५।१७५
दरिसणावरणिज्जे कम्मे एवं चेव	२।४२५	२।४२४
दिणयरं जाव पडिबुद्धे	१०।१०३	१०।१०३
दुब्भिक्खंसि वा जाव महता	५।६६	५।६८
दुस्समदुस्समा जाव एगा	१।१३६-१३६	वृत्ति
दुस्समदुस्समा जाव सुसमसुसमा	६।२४	१।१३६-१३६
देवलोगे [ए] सु जाव अणज्झोववण्णे	३।३६२;४।४३४	३।३६२

दो अद्दाओ एवं भाणियव्वं--

संगहणी-गाहा

कत्तिया[1] रोहिणिमगसिर 'अद्दा य'[2] पुणव्वसू अ पूसो य।
तत्तोऽवि[3] अस्सलेसा महा य दो फग्गुणीओ य ॥१॥
हत्थो चित्ता साई[4] विसाहा तह य होंति अणुराहा।
जेट्ठा मूलो पुव्वाऽऽसाढा तह उत्तरा चेव ॥२॥

---

१. कत्तिय (कग)।
२. अद्दाओ (क, ग)।
३. तत्तो य (क, ग)।
४. साई य (क, ख, ग)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अभिई सवणे धणिट्ठा, सयमिसया दो य होंति भद्दवया ।		
रेवति अस्सिणि भरणी, णेयव्वा अणुपुव्वीए ॥३॥		
एवं गाहाणुसारेणं णेयव्वं जाव दो भरणीओ।	२।३२३	संगहणीगाहा
दोसे जाव एगे	१।१०२-१०४	वृत्ति
धणिट्ठा जाव भरणी	६।१६	चंद० १०।११
धम्मत्थिकातं जाव परमाणुपोग्गलं	५।१६५	५।१६५
धम्मत्थिकातं जाव सद्दं	६।४	६।४
धम्मत्थिकायं जाव गंधं	७।७८;८।२५	७।७८
धम्मत्थिगातं जाव वातं	१०।१०६	८।२५
पउमसरं जाव पडिबुद्धे	१०।१०३	१०।१०३
पचमहव्वतितं जाव अचेलगं	६।६२	६।६२
पंचाणुव्वतितं जाव सावगधम्मं	६।६२	६।६२
पडिक्कमेज्जा जाव पडिवज्जेज्जा	३।३४१	३।३३८
पढमसमयएगिंदियणिव्वत्तिए जाव पंचिंदियणिव्वत्तिए	१०।१७३	१०।१५२
पढमसमयणेरतितणिव्वत्तिते जाव अपढम०	८।१२६	८।१०५
पणगसुहुमे जाव सिणेहसुहुमे	१०।२४	८।३५
पण्णवेति जाव उवदंसेति	१०।१०३	१०।१०३
पण्णवेहिति·········	६।६२	६।६२
पमिलायति जाव जोणी	७।६०	३।१२५
पमिलायति जाव तेण परं	५।२०६	३।१२५
पम्हकूडे जाव सोमणसे	१०।१४५	५।१५०,१५१
पम्हे जाव सलिलावती	८।७१	२।३४०
परिताले जाव पूतासक्कारे	६।३३	६।३२
पल्लाउत्ताणं जाव पिहियाणं	७।६०	३।१२५
पाणाइवायवेरमणे जाव परिग्गहवेरमण	१।११०-११२	१०।१३
पाणातिवाए जाव एगे	१।६२-६४	१०।१३
पाणातिवातवेरमणे जाव परिग्गह०	५।१७,१२६	१०।१३
पाणातिवाते जाव परिग्गहे	१०।१४	१०।१३
पाणातिवातेणं जाव परिग्गहेणं	५।१६,१२८	१०।१३
पाणातिवायाओ जाव सव्वातो	५।१	१०।१३
पातीणाते जाव अधाते	६।३८	६।३७
पायत्ताणिते जाव उसभाणिते	५।६४	५।६५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पायत्ताणिते जाव रधाणिते	५।५८	५।५७
पावते जाव भूताभिसंकणे	७।१३४	७।१३२
पुढविकाइएहिंतो वा जाव तस०	६।६	७।७३
पुढविकाइएहिंतो वा जाव पंचिदिएहिंतो	६।८	६।७
पुढविकाइएत्ताए जाव पंचिदियत्ताए	६।१२	६।७
पुढविकाइएत्ताए वा जाव पंचिदियत्ताते	६।८	६।७
पुडविकाइयणिव्वत्तिमे जाव तस०	६।१२८	७।७३
पुढविकाइयणिव्वत्तिते जाव पंचिदियणिव्वत्तिते	६।७२	६।७
पुढविकाइया जाव तसकाइया	६।६,८	७।७३
पुढविकाइया जाव वणस्सइकाइया	६।७;१०।१५३	७।७३
पुढविकातितअसंजने जाव तस०	७।८३	७।७३
पुढविकातितअसंजमे जाव वणस्सति०	५।१४१	७।७३
पुढविकातितआरंभे जाव अजीव०	७।८४	७।८२
पुढविकातितत्ताते वा जाव तस०	६।६	७।७३
पुढविकातितसंजमे जाव तस०	७।८२	७।७३
पुढविकातित [य] संजमे जाव वणस्सति०	५।१४०;१०।८	७।७३
पुप्फए जाव विमलवरे	१०।१५०	८।१०३
पुरिसे जाव अवहरति	५।७४	५।७३
पुव्वासाढा एवं चेव	४।६५५	४।६५४
पोतगत्ताते वा जाव उब्भिगत्ताते	७।४	७।३
पोतगत्ताते वा जाव उववातितत्ताते	८।३	८।२
पोतगा जाव उब्भिगा	८।२	७।३
पोतजेहिंतो वा जाव उब्भिगेहिंतो	७।४	७।३
पोततेहिंतो वा जाव उववातितेहिंतो	८।३	८।२
फरिस जाव गंधाइं	१०।७	१०।७
फुसित्ता जाव विकुव्वित्ता	७।२	७।२
बहुमीहति जाव असंदिद्धमीहति	६।६२	६।६१
बेइंदिया जाव पंचिदिया	६।७	६।११
बेंदिता जाव पंचेंदिता	१०।१५३	६।११
भरहे जाव महाविदेहे	७।५४	७।५०
भवति जाव फासामतेणं	६।८२	६।८१
भवित्ता जाव पव्वइए [तिते]	३।५३२;४।१,४५०;५।१९७;६।६२	३।५२३
भवित्ता जाव पव्वयाहिति	६।६२	३।५२३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

भवेत्ता जाव पव्वतिता	१०।२८	३।५२३
भासासमिती जाव पारिट्ठावणियासमिती	५।२०३	८।१७
भिण्णे जाव अपरिस्साई	४।५६५	४।५६५
मंडुक्कजातिआसीविसस्स पुच्छा	४।५१४	४।५१४
मणअपडिसंलीणे जाव इंदिय०	४।१६३	४।१६२
मणदुप्पणिहाणे जाव उवकरण०	४।१०६	४।१०४
मणसुप्पणिहाणे जाव उवगरण०	४।१०५	४।१०४
मणुस्सजाति पुच्छा	४।५१४	४।५१४
मणुस्साणं वि एवं चेव	२।१६०	२।१५९
मणस्सा भाणियव्वा	४।३२३,३२४,३२५,३२६	४।३२२,३२३, ३२४,६२५,३२६
मरणाइं जाव णो णिच्चं	२।४१३	२।४११
महावीरेणं जाव अब्भणुण्णायाइं	५।३५	५।३४
महिड्ढिए जाव चिरट्ठितिते	८।१०	८।१०
महिड्ढिएसु जाव चिरट्ठितिएसु	८।१०	८।१०
महिड्ढियं जाव महासोक्खं	५।२१	२।२७१
महिड्ढिया जाव महासोक्खा	२।२७१;९।६१	वृत्ति
मातति वा जाव सुण्हाति	३।३६२;४।४३४	सूय०¹ २।२।७
माहणस्स वा जाव समुप्पज्जंति	७।२	७।२
मुंडा जाव पव्वतिता	५।२३४	३।५२३
मुंडे जाव पव्वइए [तिते]	४।४५०,४५१;६।७९,१०४	३।५२३
मुच्छिते जाव अज्झोववण्णे	३।३६१	३।३६१
मुत्ते जाव सव्वदुक्ख०	१।२४९	वृत्ति
मुसावाते जाव परिग्गहे	९।२६	१०।१३
रत्ताओ जाव अट्ठुउसभकूडा	८।८४	८।८२
रयणप्पभा जाव अहेसत्तमा	८।१०८	७।२४
रूवा जाव मणुण्णा	७।१४३	५।५
लोगविजओ जाव उवहाणसुयं	९।२	वृत्ति
वंजण जाव सुरूवं	९।६२	ओ०सू० १४३
वंदामि जाव पज्जुवासामि	४।४३४	३।३६२
वंशीमूलकेतणासमाणा जाव अवलेह०	४।२८२	४।२८२

स्थानाङ्गवृत्तौ—'पिया इ वा भज्जा इ वा भाया इ वा भगिणी इ वा पुत्ता इ वा धूया इ वे' त्ति यावच्छब्दाक्षेपः (पत्र १३४)। 'भाया इ वा भज्जा इ वा भइणी इ वा पुत्ता इ वा धूया इ वे' त्ति यावच्छब्दाक्षेपः (पत्र २१३)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वण्णियाइं जाव अब्भणुण्णायाइं	२।४१४	।४११
वणस्सतिकातितअसंजामे जाव अजीवकाय०	१०।६	१०।८
वदमाणे जाव विवक्कतव०	५।१३४	५।१३३
वसित्ता जाव पव्वाहिती	६।६२	६।६२
विज्जुप्पभे जाव गंधमातणे	१०।१४६	५।१५२,१५३
वीइक्कंते जाव वारसाहे	६।६२	ओ०सू० १४४
वेजयंति जाव अउज्भा	८।७६	२।३४१
वेयड्ढ······	६।५३	६।४३
वेरमणं जाव सव्वतो	४।१३७	४।१३६
संकिते जाव कलुसमावण्णे	३।५२३	३।५२३
संजमबहुले जाव तस्स णं	४।१	४।१
संवच्छराइं जाव बावत्तरिवासाइं	६।६२	६।६२
संवरबहुले जाव उवहाणवं	४।१	४।१
संवाहण जाव गातु०	४।४५०	४।४५०
सक्के जाव सहस्सारे	८।१०२	२।३८०-३८३
सत्त भयट्ठाणा पं तं	६।६२	७।२७
सद्दं सुणेत्ताणामेगे सुमणे भवति ३ एवं सुणमीति[1] ३ एवं सुणेस्सामीति ३ एवं असुणेत्ताणामेगे सु ३ ण सुणमीति ३ ण सुणिस्सामीति	३।२८५-२६०	३।१८६-१६४
सद्द जाव अवहरिंसु	१०।७	१०।७
सद्द जाव अवहरिस्सति	१०।७	१०।७
सद्द जाव उवहरिंसु	१०।७	१०।७
सद्द जाव उवहरिस्सति	१०।७	१०।७
सद्द जाव गंधाइं	१०।७	१०।७
सद्दहति जाव णो से	३।५२३	३।५२३
सद्दा जाव फासा	५।१२-१५,१२५-१२७	५।५
सद्दा जाव वतिदुहता	७।१४४	७।१४३
सद्देहिं जाव फासेहिं	५।६,११	५।५
सभासुहम्मा जाव ववसातसभा	५।२३६	५।२३५
समणस्स जाव समुप्पज्जति	७।२	७।२
समणेणं जाव अब्भणुण्णायाइं	५।३६	५।३४
सव्वरयणा जाव पडिबुद्धे	१०।१०३	१०।१०३

१. सुणेमाणे (ख); सुणेमीति (ग)।

सव्वदीवसमुद्दाणं जाव अद्धंगुलगं	१।२४८	ज०[1] २
सहमाणस्स जाव अहियासेमाणस्स	४।४५१	४।४५१
सहमाणस्स जाव अहियासेमाणस्स	५।७३	५।७२
सहिस्संति जाव अहियासिस्संति	५।७४	५।७३
सहेज्जा जाव अहियासेज्जा	५।७३,७४	५।७३
सिंधू जाव रत्तावती	७।५७	७।५३
सिज्झति जाव मंतं	४।१	४।१
सिज्झति जाव सव्वदुक्खाण०	४।१	४।१
सिज्झिहिति जाव अंतं	६।६१	४।१
सिज्झिहिती जाव सव्वदुक्खाण०	६।६२	४।१
सिज्झिस्सं जाव सव्वदुक्खाण०	६।६२	४।१
सिद्धसुग्गता जाव सुकुल०	४।१४१	४।१३६
सिद्धाइं जाव सव्वदुक्ख०	८।३६	१।२४६
सिद्धाओ जाव सव्वदुक्ख०	८।५३	१।२४६
सिद्धे जाव प्पहीणे	१०।७५,७६,७८,७६	१।२४६
सिद्धे जाव सव्वदुक्ख०	६।१०६	१।२४६
सुंबकडसमाणे जाव कंबलकड०	४।५४६	४।५४६
सुक्किलपक्खगं जाव पडिबुद्धे	१०।१०३	१०।१०३
सुभाते जाव आणुगामियत्ताए	५।१३	५।१२
सुमिणे जाव पडिबुद्धे	१०।१०३	१०।१०३
सुवच्छे जाव मंगलावती	८।७०	२।३२६
सुवप्पे जाव गंधिलावती	८।७२	२।३२६
सुसमसुसमा जाव एगा	१।१२६-१३२	वृत्ति
सुसमसुसमा जाव दूसमदूसमा	६।२३	१।१२६-१३२
से जहाणामते·········	६।६२	६।६२
सेलथंभसमाणे जाव तिणिस०	४।२८३	४।२८३
सेसं जहा पंचट्ठाणे एवं जाव अच्चुतस्सवि णेतव्वं	७।१२१,१२२	५।६६,६७
सेसं तं चेव जाव करिस्संति	४।५१४	४।५१४
सेसं तहेव जाव भवणगिहेसु	५।२२	५।२२
सेसं तहेव जाव भासं	१०।१५६	१०।१५६

१. वृत्तो अस्य पाठस्य पूर्ति निम्नप्रकारा विद्यते—यावद्ग्रहणादेव सूत्रं द्रष्टव्यम्—सव्वब्भंतरए सव्वखुड्डाए वट्टे तेल्लापुयसंठाणसंठिए एगं जोयणसयसहस्सं आयामविक्खंभेणं तिन्नि जोयणसयसहस्साइं सोलससहस्साइं दोन्नि सयाइं सत्तावीसाइं तिन्नि कोसा अट्ठावीसं धणुसयं तेरस अंगलाइं (पत्र ३३)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सोइंदियत्थे जाव फासिंदियत्थे	६।१४	पण्ण० १५।१
सोइंदियत्थोग्गहे जाव णोइंदिय०	६।६८	समवायाओ २८।३
सोइंदियपडिसंलीणे जाव फासिंदिय०	५।१३५	पण्ण० १५।१
सोइंदियसंवरे जाव फासिंदिय०	८।११	पण्ण० १५।१
सोतिंदितअसंवरे जाव सूचीकुसग्ग०	१०।११	१०।१०
सोतिंदितबले जाव फासिंदितबले	१०।८८	पण्ण० १५।१
सोतिंदितमुंडे जाव फासिंदित०	१०।६६	पण्ण० १५।१
सोतिंदियअपडिसंलीणे जाव फासिंदिय०	५।१३६	पण्ण० १५।१
सोतिंदियअसंजमे जाव फासिंदिय०	५।१४३	पण्ण० १५।१
सोतिंदियअसंवरे जाव कायअसंवरे	८।१२	८।११
सोतिंदियअसंवरे जाव फासिंदिय०	५।१३८;६।१६	पण्ण० १५।१
सोतिंदियअसाते जाव णोइंदियअसाते	६।१८	६।१४
सोतिंदियत्थे जाव फासिंदियत्थे	५।१७६	पण्ण० १५।१
सोतिंदियमुंडे जाव फासिंदिय०	५।१७७	पण्ण० १५।१
सोतिंदियसंजमे जाव फासिंदिय०	५।१४२	पण्ण० १५।१
सोतिंदियसंवरे जाव फासिंदिय०	५।१३७;६।१५;१०।१०	पण्ण० १५।१
सोतिंदियसाते जाव णोइंदियसाते	६।१७	६।१४
सोहम्मे जाव सहस्सारे	८।१०१;१०।१४८	२।३८०-३८४
हरिवेरुलित जाव पडिबुद्धे	१०।१०३	१०।१०३
हव्वमागच्छति·········	३।८०	३।७६
हिताते जाव आणुगामित[य]त्ताते	३।५२४;६।३३	३।५२३
हिरण्णगोलसमाणे जाव वइरगोल०	४।५४७	४।५४७
हेमवए···········	३।६३	६।८३

समवाओ

अक्खराइं जाव एवं चरण	[1]प० ६५	प० ८६
अक्खरा जाव एवं चरण	प० ६६	प० ८६
अक्खरा जाव चरण-करण	प० ६१,६४	प० ८६
अक्खराणि जाव एवं चरण	प० ६७,६६	प० ८६
अक्खराणि जाव सेत्तं	प० ६२	प० ८६

---

१. पइण्णगसमवाय-सूत्र ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अक्खरा तं चेव जाव परित्ता	प० ९०	प० ८९
अगाराओ जाव पव्वइए	९७।४	१९।५
अजित जाव वद्धमाणे	२४।१;प० २२२	अ० सू० २२७
अणंतागमा जाव चरण-करण	प० ९८	प० ८९
अणंतागमा जाव सासया	प० ९३	प० ८९
अणुओगदारा जाव संखेज्जाओ	प० ९४,९५,९८,९९,१३१	प० ८९
अणुओगदारा संखेज्जाओ	प० ९७	प० ९१
अभिणंदण जाव पास	२३।३,४	अ० सू० २२७
अयले जाव रामे	प० २४१	वृत्ति
अवसेसाइं परिकम्माइं पाढाइयाइं एक्कारसविहाइं पण्णत्ताइं	प० १०४-१०८	प० १०१,१०२
अस्सगीवे जाव जरासंधे	प० २४६	वृत्ति
अहासुत्तं जाव आराहिया	४९।१;६४।१;८१।१;१००।१	वृत्ति[1]
आघविज्जंति जाव उवदंसिज्जंति	प० ९०	प० ८९
आघविज्जंति जाव एवं	प० ९३	प० ८९
आघविज्जंति जाव नाया०	प० ९४	वृत्ति; प० ८९
आघविज्जंति०	प० ९०,९१,९३-९९,१३१	प० ८९
आहारय जह देसूणारयणि उ पडिपुण्णारयणी	प० १६६	पण्ण० २१
आहारयसरीरे समचउरंससंठाण संठिते	प० १६५	पण्ण० २१
उववाएणं	प० १८३	पण्ण० ६
एवं अट्ठासीइ सुत्ताणि भाणियव्वाणि जहा नंदीए	८८।२	नंदी १०२
एवं गतिनाम…ओगाहणानाम	प० १७६	प० १७६
एवं चउदिसिंपि नेयव्वं	५८।४	५८।३;५२।३
एवं चउसुवि दिसासु नेयव्वं[2]	८८।४,५,६	८८।३
एवं चेव दोमासिया आरोवणा सपंचराय दोमासिया आरोवणा एवं तेमासिया आरोवणा एवं चउमासिया आरोवणा	२८।१	२८।१
एवं चेव मंदरस्स	८७।४	८७।१

---

१. वृत्तौ किञ्चिद् भेदेन लभ्यते, यथा —६४।१ यावत्करणात् 'अहाकप्पं फासिया पालिया सोहिया तीरिया किट्टिया सम्मं आणाए आराहियावि भवति । ८१।१ 'जाव' तिकरणाद्यथाकल्पं यथामार्गं यथातत्त्वं सम्यक्कायेन स्पृष्टा पालिता शोभिता तीरिता कीर्त्तिता आज्ञयाऽऽराधितेति ।

२. नायव्वं (क); नातव्वं (ख, ग) ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एवं जइ मणुस्स किं गब्भवक्कंतिय संमुच्छिम गो गब्भवक्कंतिय णो संमुच्छिम जइ गब्भ-वक्कंतिय किं कम्मभूमग अकम्मभूमग गो कम्मभूमग णो अकम्मभूमग जइ कम्मभूमग किं संखेज्जवासाउय असंखेज्जवासाउय गो संखेज्जवासाउय णो असंखेज्जवासाउय जइ संखेज्जवासाउय किं पज्जत्तय अपज्जत्तय गोयमा पज्जत्तय णो अपज्जत्तय जइ पज्जत्तय किं सम्म मिच्छ सम्मामिच्छ गो सम्मद्दिट्ठि नो मिच्छदिट्ठि नो सम्मामिच्छदिट्ठि जइ सम्म-दिट्ठि किं संजतं असंजत संजतासंजत गो संजय णो असंजय णो संजतासंजत जति संजय किं पमत्तसंजय अपमत्तसंजय गो पमत्तसंजय णो अपमत्तसं जइ पमत्तसंजय किं इड्ढिपत्त अणिड्ढिपत्त गो इड्ढिपत्त नो अनिड्ढिपत्त वयणावि भतियव्वा	प० १६४	प० १६४
एवं थेरे वि अज्जसुहम्मे	१००।५	१००।४
एवं दक्खिणिल्लाओ उत्तरे	६६।३	६६।२
एवं दिवसोऽवि नायव्वो	१२।६	१२।८
एवं धणू नालिया जुगे अक्खे मुसले वि	६६।४-८	६६।३
एवं पंचवि	२७।१	५।२
एवं पंचवि इंदिया	२५।१	पण्ण० १५।१
एवं पंचवि रसा	२२।६	ठा० १।७८-८२
एवं पडुप्पण्णेवि अणागएवि	प० १३२	प० १३२
एवं मंदरस्स पच्चत्थिमिल्लाओ चरिमंताओ संखस्स पुरत्थिमिल्ले च	८७।३	८७।१
एवं माणे माया लोभे	१६।२;२१।२	अस्य पूर्तिः अत्रैव
एवं संतिस्सवि	६०।३	६०।२
एवं सगरे वि राया चाउरंतचक्कवट्टी एकसत्तरिं पुव्व जाव पव्वइए	७१।४	७१।३
कंतं वण्णं लेसं जाव णंदुत्तरवडेंसगं	१५।१३	३।२१
कालगए जाव सव्वदुक्खप्पहीणे	८६।२	८६।१
कालगयाइं जाव सव्वदुक्ख०	प० ६३	८६।१
कीयं आहट्टु जाव अभिक्खणं	२१।१	दसा० २

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कोहविवेगे जाव लोभ	२७।१	४।१
चउरंसा जाव असुभा	प० १४१	वृत्ति
जातिनाम जाव ओगाहणानाम	प० १७७	प० १७६
जुवे जाव माउया	प० २४५	वृत्ति
णितिया जाव णिच्चा	प० १३३	प० १३३
ताइं चेव माउया पयाणि जाव नंदावत्तं	प० १०३	प० १०२
तिविट्ठू य जाव कण्हे	प० २४१	वृत्ति
धम्मत्थिकाए जाव अद्धासमए	प० १३७	पण्ण० १
नेरइया०	प० १७३	पण्ण० ३५
पज्जत्तगाणं०	प० १५५	प० १५४
पडिसत्तू जाव सचक्केहिं	प० २४६	वृत्ति
पढभाए पढमं भागं जाव पण्णरसेसु	१५।३	केवलं संख्यापूरिता
पम्हलेसं जाव पम्हुत्तरवडेंसगं	६।१७	३।२१
परूवेई जाव से णं	प० ६६	प० ६५
पुढवीकायसंजमे एवं जाव कायसंजमे	१७।२	१७।१
बलिस्स णं······	१७।८	ठा० ४।१५१
बुद्धे·········	६२।२	४२।१
बुद्धे जाव प्पहीणे	५५।१,४;७२।३;८४।२;६५।४;प० ४०	४२।१
बुद्धे जाव सव्वदुक्ख०	३०।२;५१।४;प० ६१	४२।१
बे ते चउ पंच	प० १६७	प० १६७
भद्दवए णं मासे कित्तिए णं पोसे णं फग्गुणे णं वइसाहे णं मासे	२६।३-७	२६।२
भवित्ता जाव पव्वइए	७१।३;७५।२	१६।५
भवित्ता णं जाव पव्वइए	८३।४	१६।५
भविस्सइ य जाव अवट्ठिए	प० १३३	प० १३३
भूयाणंदे जाव घोसे	३२।२	ठा० २।३५५-३६१
महुरा जाव हत्थिणपुरं	प० २४४	वृत्ति
मुंडे जाव पव्वइए	५६।२	१६।५
मुंडे जाव पव्वइया	७७।२	१६।५
मुसावायाओ जाव सव्वाओ	५।२	५।६
रुइल्लप्पभं जाव रुइल्लुत्तरवडेंसगं	६।१७	३।२१
लोगप्पभं जाव लोगुत्तरवडेंसगं	१३।१४	३।२१
वइरावत्तं जाव वइरुत्तरवडेंसगं	१३।१४	३।२१
वायणा जाव अंगट्ठयाए	प० ९३	प० ९१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वायणा जाव संखेज्जा	प० ९१	प० ८९
वायणा जाव से णं	प० ९२	प० ९१
विजया एवं चेव जाव वासुदेवा	६८।४-६	६८।१-३
वीइक्कंते जाव सव्वदुक्खप्पहीणे	८९।१	जं० २
सणंकुमारे जाव पाणए	३२।२	ठा० २।३८१-३८४
सत्तमाए णं पुढवीए पुच्छा	प० १४३	प० १४१
सवणो जाव भरणी	९।६	चंद० १०।११
सिज्झिस्संति जाव अंतं	५।२२;७।२३;८।१८;१०।२५; १३।१७;१५।१६;१६।१६	१।४६
सिज्झिस्संति जाव सव्वदुक्खाण०	३।२४;४।१८;६।१७;९।२०;११।१६; १२।२०;१४।१८;१७।२१;१८।१८; १९।१५;२०।१७;२१।१४;२२।१७; २३।१३;२४।१५;२५।१८;२६।११; २७।१५;२८।१५;२९।१८;३०।१६; ३१।१४;३२।१४;३३।१४	१।४६
सिद्धाइं जाव प्पहीणाइं	४४।२	४२।१
सिद्धे जाव प्पहीणे	७२।४;७३।२;७४।१;७८।२;८३।३; ८४।४;९५।५;१००।४	४२।१
सिद्धे जाव सव्वदुक्ख०	४२।१	वृत्ति[1]
सुज्जकंतं जाव सुज्जुत्तरवडेंसगं	९।१७	३।२१
सेवणया [सेवित्ता] जाव सायासोक्ख०	९।२	९।१
सेहस्स जाव सेहे राइणियस्स	३३।१	दसा० ३
सोइंदियधारणा जाव णोइंदियधारणा	२८।३	२८।३
सोइंदियनिग्गहे जाव फासिंदिय०	२७।१	२८।३
सोतिंदियईहा जाव फासिंदियईहा	२८।३	२८।३
सोतिंदियावाते जाव णोइंदियावाते	२८।३	२८।३
हंता गोयमा !·········	प० १७५	प० १७५

१- वृत्तौ किञ्चद्भेदेन लभ्यते यथा—

४२।१ जाव त्तिकरणात् 'बुद्धे मुत्ते अंतगडे परिनिव्वुडे सव्वदुक्खप्पहीणे'त्ति दृश्यम् ।

४४।२ जाव त्तिकरणेण 'बुद्धाइं मुत्ताइं अंतयडाइं सव्वदुक्खप्पहीणाइं'ति दृश्यम् ।

८९।१ जाव त्तिकरणात् 'अंतगडे सिद्धे बुद्धे मुत्ते' ति दृश्यम् ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट-२

आलोच्य-पाठ तथा वाचनान्तर

आलोच्य-पाठ

परियावेणं [आयारो २।२, पृ० १७]

यद्यपि चूर्णौ वृत्तौ च 'परियावेणं' इति पाठो व्याख्यातोऽस्ति, आदर्शेष्वपि एष एव पाठो लभ्यते। तथापि 'माया मे, पिया मे' इत्यादि पदानां अर्थप्रसंगतया 'परियारेणं' इति पाठस्य परिकल्पना सहजमेव जायते। प्राचीनलिप्यां रकारवकारयोः सादृश्यात् एतत् परिवर्तनं नास्वाभाविकमस्ति।

मानवा [आयारो ५।६३, पृ० ४३]

वृत्तिकृता 'मानवा' मनुजाः इति विवृतम्। चूर्णिकृता च नैतत् पदं विवृतम्। किन्तु 'एवं थंभे मायाए वि लोभे वि जोएयव्वं' इति निर्देशः कृतः। तेन 'माणवा' इति पदस्य स्थाने 'माणओ' इति पाठस्य परिकल्पना जायते।

अचिरं [आयारो ८।८।२०, पृ० ७१]

चूर्णौ वृत्तौ च 'अचिरं, पदं स्थानार्थे व्याख्यातमस्ति। यद्येतत् स्थानावाची स्यात् तदा 'अइर' मिति पाठः संगच्छते। 'अजिरं प्रांगणम्,' इति तस्यार्थो भवेत्। 'अइर' इति अतिरोहितार्थवाची देशीशब्दोपि विद्यते। केनापि कारणेन इकारस्य चकारो जात इति प्रतीयते। अथवा चूर्णिकारेण वैकल्पिकरूपेण कालार्थे अचिरशब्दस्य प्रयोगो निर्दिष्टः, सोपि युक्तः स्यात्।

एस खलु भगवया सेज्जाए अक्खाए [आयारचूला १।२६, पृ० ६०]

आयारचूलायाः पाठ-संशोधने षड्आदर्शाः प्रयुक्ताः, चूर्णिर्वृत्तिश्च। तत्र पञ्चादर्शेषु उक्तपाठस्य ये पाठ-भेदास्ते तत्रैव पादटिप्पणे प्रदर्शिताः सन्ति। वृत्तौ (पत्र ३००) 'एस विलुंगयामो सेज्जाए' इति पाठो व्याख्यातोस्ति—"गृहस्थश्चानेनाभिसन्धानेन संस्कुर्याद्—यथैष साधुः शय्यायाः संस्कारे विधातव्ये 'विलुंगयामो' त्ति निर्ग्रन्थः अकिञ्चन इत्यतः स गृहस्थः कारणे संयतो वा स्वयमेव संस्कारयेदिति।" अस्माभिः 'ध' प्रत्यनुसारी पाठः स्वीकृतः। चूर्णावपि (पृ० ३३२) 'एस खलु भगवया' इति पाठो लभ्यते। 'सेज्जाए अक्खाए'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अत्र दोषशब्दः अध्याहर्त्तव्यः । वस्तुतः उक्तपाठः व्याख्यागतः प्रतीयते । 'संथरेज्जा' इति पाठस्यानन्तरं 'तम्हा से संजए' इत्यादि पाठः स्यात्तदानीमपि स खण्डितो न प्रतिभाति । वृत्तिकृता उक्तपाठस्य या व्याख्या कृता, तथापि पूर्वानुमानस्य पुष्टिर्जायते । वृत्तिकारस्य सम्मुखे 'विलुंगयामो' पाठ आसीत् स केषुचिदेव आदर्शेषु उपलभ्यते, नतु सर्वेषु ।

कप्पस्स [पइण्णगसमवाय सू० २१५, पृ० ६४१]

अत्र 'कप्पस्स' इति पाठस्याशयो वृत्तिकृता कल्पभाष्यत्वेन सूचितः, वाचनान्तरे च पर्युषणाकल्पत्वेन सूचितः, यथा—'कप्पस्स समोसरणं नेयव्वं' ति इहावसरे कल्पभाष्यक्रमेण समवसरणवक्तव्यताऽध्येया, सा चावश्यकोक्ताया न व्यतिरिच्यते, वाचनान्तरे तु पर्युषणाकल्पोक्तक्रमेणेत्यभिहितम् (वृत्ति, पत्र १४४) ।

पर्युषणाकल्पे समवसरणवक्तव्यता इत्थमस्ति—तेणं कालेणं तेणं समएणं समणस्स भगवओ महावीरस्स नव गणा एक्कारस गणहरा होत्था ।।२०१।।

से केणट्ठेणं भंते ! एवं वुच्चइ—समणस्स भगवओ महावीरस्स नव गणा एक्कारस गणहरा होत्था ? समणस्स भगवओ महावीरस्स जेट्ठे इंदभूई अणगारे गोयमे गोत्तेणं पंच समणसयाइं वाएइ, मज्झिमे अणगारे अग्गिभूई नामेणं गोयमे गोत्तेणं पंच समणसयाइं वाएइ, कणीयसे अणगारे वाउभूई नामेणं गोयमे गोत्तेणं पंच समणसयाइं वाएइ, थेरे अज्जवियत्ते भारद्दाये गोत्तेणं पंच समणसयाइं वाएइ, थेरे अज्जसुहम्मे अग्गिवेसायणे गोत्तेणं पंच समणसयाइं वाएइ, थेरे मंडियपुत्ते वासिट्ठे गोत्तेणं अद्धुट्ठाइं समणसयाइं वाएइ, थेरे मोरियपुत्ते कासवगोत्तेणं अद्धुट्ठाइं समणसयाइं वाएइ, थेरे अकंपिए गोयमे गोत्तेणं थेरे अयलभाया हारियायणे गोत्तेणं ते दुन्नि वि थेरा तिन्नि तिन्नि समणसयाइं वाइंति, थेरे मेयज्जे थेरे य प्पभासे एए दोन्नि वि थेरा कोडिन्ना गोत्तेणं तिन्नि तिन्नि समणसयाइं वाएंति, से एतेणं अट्ठेणं अज्जो ! एवं वुच्चइ—समणस्स भगवओ महावीरस्स नव गणा एक्कारस गणहरा होत्था ।।२०२।।

सव्वे एए समणस्स भगवओ महावीरस्स एक्कारस वि गणहरा दुवालसंगिणो चोद्दसपुव्विणो समत्तगणिपिडगधरा रायगिहे नगरे मासिएणं भत्तेणं अपाणएणं कालगया जाव सव्वदुक्खप्पहीणा । थेरे इंदभूई थेरे अज्जसुहम्मे सिद्धिं गए महावीरे पच्छा दोन्नि वि परिनिव्वुया ।।२०३।।

जे इमे अज्जत्ताते समणा निग्गंथा विहरंति एए णं सव्वे अज्जसुहम्मस्स अणगारस्स आवच्चिज्जा, अवसेसा गणहरा निरवच्चा वोच्छिन्ना ।।२०४।। कल्पसूत्र, पृ० ६०,६१

प्रस्तुताङ्गस्य उपसंहारसूत्रे ऋषि-यति-मुनि-वंशानां वर्णनस्योल्लेखोस्ति । वृत्तिकृतास्य संबन्धः पर्युषणाकल्पगतसमवसरणप्रकरणेन सह्योजितः, यथा—गणधरव्यतिरिक्ताः शेषा जिनशिष्या ऋषयस्तद्वंशप्रतिपादकत्वादृषिवंश इति च तत्प्रतिपादनं चात्र पर्युषणाकल्पस्य ऋषिवंशपर्यवसानस्य समवसरणप्रक्रमेण भणितत्त्वादत एव यतिवंशो मुनिवंशश्चैतदुच्यते, यतिमुनिशब्दयोः ऋषिपर्यायित्वात् । वृत्ति, पत्र १४७, १४८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पूर्वोक्तसमर्पणेन पर्युषणाकल्पस्य २०१ सूत्रात् २०४ पर्यन्तानां सूत्राणां ग्रहणं जायते, किन्तु वृत्तिकृता ऋषिवंशस्य यद् व्याख्यानं कृतं तेन २०१ सूत्रात् २२३ पर्यन्तानां सूत्राणां ग्रहणामावश्यकं भवति। अत्र महती समस्या वर्तते। यदि पूर्ववर्ति समर्पणं मान्यं क्रियेत तदा ऋषिवंशस्य वर्णनं नान्यत्र क्वापि समुपलभ्यते। यदि च ऋषिवंशस्य वर्णनं समवसरणप्रक्रमेण सह संबध्यते तदा पूर्वोक्तसमर्पणस्याप्रयोजनीयता सिध्यति। वृत्तिकारेण नास्या असंगतेः कापि चर्चा कृता। किमत्र रहस्यमिति निश्चयपूर्वकं वक्तुं न शक्यते, तथापि संभाव्यते समवसरणस्य संक्षेपीकरणसमये किंचित् परिवर्तनं जातम्।

ऋषिवंशवर्णनम्—

समणे भगवं महावीरे कासवगोत्ते णं। समणस्स णं भगवओ महावीरस्स कासवगोत्तस्स अज्जसुहम्मे थेरे अंतेवासी अग्गिवेसायणसगोत्ते। थेरस्स णं अज्जसुहम्मस्स अग्गिवेसायणसगोत्तस्स अज्जजंबुनामे थेरे अंतेवासी कासवगोत्ते। थेरस्स णं अज्जजंबुनामस्स कासवगोत्तस्स अज्जप्पभवे थेरे अंतेवासी कच्चायणसगोत्ते। थेरस्स णं अज्जप्पभवस्स कच्चायणसगोत्तस्स अज्जसेज्जंभवे थेरे अंतेवासी मणगपिया वच्छसगोत्ते। थेरस्स णं अज्जसेज्जंभवस्स मणगपिउणो वच्छसगोत्तस्स अज्जजसभद्दे थेरे अंतेवासी तुंगियायणसगोत्ते ॥२०५॥

संखित्तवायणाए अज्जजसभद्दाओ अग्गओ एवं थेरावली भणिया, तं०—थेरस्स णं अज्जजसभद्दस्स तुंगियायणसगोत्तस्स अंतेवासी दुवे थेरा—थेरे अज्जसंभूयविजए माढरसगोत्ते, थेरे अज्जभद्दबाहु पाइणसगोत्ते। थेरस्स णं अज्जसंभूयविजयस्स माढरसगोत्तस्स अंतेवासी थेरे अज्जथूलभद्दे गोयमसगोत्ते। थेरस्स णं अज्जथूलभद्दस्स गोयमसगोत्तस्स अंतेवासी दुवे थेरा—थेरे अज्जमहागिरी एलावच्छसगोत्ते थेरे अज्जसुहत्थी वासिट्ठसगोत्ते। थेरस्स णं अज्जसुहत्थिस्स वासिट्ठसगोत्तस्स अंतेवासी दुवे थेरा—सुट्ठियसुपडिबुद्धा कोडियकाकंदगा वग्घावच्चसगोत्ता। थेराणं सुट्ठियसुपडिबुद्धाणं कोडियकाकंदगाणं वग्घावच्चसगोत्ताणं अंतेवासी थेरे अज्जइंददिन्ने कोसियगोत्ते। थेरस्स णं अज्जइंददिन्नस्स कोसियगोत्तस्स अंतेवासी थेरे अज्जदिन्ने गोयमसगोत्ते। थेरस्स णं अज्जदिन्नस्स गोयमसगोत्तस्स अंतेवासी थेरे अज्जसीहगिरी जाइस्सरे कोसियगोत्ते। थेरस्स णं अज्जसीहगिरिस्स जातिसरस्स कोसियगोत्तस्स अंतेवासी थेरे अज्जवइरे गोयमसगोत्ते। थेरस्स णं अज्जवइरस्स गोयमसगोत्तस्स अंतेवासी चत्तारि थेरा—थेरे अज्जनाइले थेरे अज्जपोमिले थेरे अज्जजयंते थेरे अज्जतावसे। थेराओ अज्जनाइलाओ अज्जनाइला साहा निग्गया, थेराओ अज्जपोमिलाओ अज्जपोमिला साहा निग्गया, थेराओ अज्जजयंताओ अज्जजयंती साहा निग्गया, थेराओ अज्जतावसाओ अज्जतावसी साहा निग्गया इति ॥२०६॥

वित्थरवायणाए पुण अज्जजसभद्दाओ परओ थेरावली एवं पलोइज्जइ, तं जहा—थेरस्स णं अज्जजसभद्दस्स इमे दो थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया होत्था, तं जहा—थेरे अज्जभद्दबाहू पाईणसगोत्ते, थेरे अज्जसंभूयविजये माढरसगोत्ते। थेरस्स णं अज्जभद्दबाहुस्स पाईणगोत्तस्स इमे चत्तारि थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिण्णाया होत्था, तं०—थेरे गोदासे थेरे अग्गिदत्ते थेरे जण्णदत्ते थेरे सोमदत्ते कासवगोत्ते णं। थेरेहिंतो णं गोदासेहिंतो कासवगोत्तेहिंतो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एत्थ णं गोदासगणे नामं गणे निग्गए, तस्स ण इमाओ चत्तारि साहाओ एवमाहिज्जंति, तं जहा— तामलित्तिया कोडीवरिसिया पोंडवद्धणिया दासी खब्बडिया ॥२०७॥

थेरस्स णं अज्जसंभूयविजयस्स माढरसगोत्तस्स इमे दुवालस थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिण्णाया होत्था, तं जहा—

नंदणभद्दे उवनंदभद्द तह तीसभद्द जसभद्दे ।
थेरे य सुमिणभद्दे मणिभद्दे य पुन्नभद्दे य ॥१॥
थेरे य थूलभद्दे उज्जुमती जबुनामधेज्जे य ।
थेरे य दीहभद्दे थेरे तह पंडुभद्दे य ॥२॥

थेरस्स णं अज्जसंभूइविजयस्स माढरसगोत्तस्स इमाओ सत्त अंतेवासिणीओ अहावच्चाओ अभिन्नाताओ होत्था, तं जहा—

जक्खा य जक्खदिन्ना भूया तह होइ भूयदिन्ना य ।
सेणा वेणा रेणा भगिणीओ थूलभद्दस्स ॥१॥ ॥२०८॥

थेरस्स णं अज्जथूलभद्दस्स गोयगोत्तस्स इमे दो थेरा अहावच्चा अभिन्नाया होत्था, तं जहा— थेरे अज्जमहागिरी एलावच्छसगोत्ते, थेरे अज्जसुहत्थी वासिट्ठसगोत्ते । थेरस्स णं अज्जमहागिरिस्स एलावच्छसगोत्तस्स इमे अट्ठ थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया होत्था, तं०—थेरे उत्तरे थेरे बलिस्सहे थेरे धणड्ढे थेरे सिरिड्ढे थेरे कोडिन्ने थेरे नागे थेरे नागमित्ते थेरे छलुए रोहगुत्ते कोसिए गोत्तेणं । थेरेहिंतो णं छलुएहिंतो रोहगुत्तेहिंतो कोसियगोत्तेहिंतो तत्थ णं तेरासिया निग्गया । थेरेहिंतो णं उत्तरबलिस्सहेहिंतो तत्थ णं उत्तरबलिस्सहगणे नामं गणे निग्गए । तस्स णं इमाओ चत्तारि साहाओ एवमाहिज्जंति, तं जहा—कोसंबिया सोतित्तिया कोडवाणी चंदनागरी ॥२०९॥

थेरस्स णं अज्जसुहत्थिस्स वासिट्ठसगोत्तस्स इमे दुवालस थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया होत्था, तं जहा—

थेरे त्थ अज्जरोहण भद्दजसे मेहगणी य कामिड्ढी ।
सुट्ठियसुप्पडिबुद्धे रक्खिय तह रोहगुत्ते य ॥१॥
इसिगुत्ते सिरिगुत्ते गणी य बंभे गणी य तह सोमे ।
दस दो य गणहरा खलु एए सीसा सुहत्थिस्स ॥२॥ ॥२१०॥

थेरेहिंतो णं अज्जरोहणेहिंतो कासवगुत्तेहिंतो तत्थ णं उद्देहगणे नामं गणे निग्गए । तस्सिमाओ चत्तारि साहाओ निग्गयाओ छच्च कुलाइं एवमाहिज्जंति । से किं तं साहाओ ? एवमाहिज्जंति—उदुंबरिज्जिया मासपूरिया मतिपत्तिया सुवन्नपत्तिया, से तं साहाओ । से किं तं कुलाइं ? एवमाहिज्जंति, तं जहा—

पढमं च नागभूयं बीयं पुण सोमभूइयं होइ ।
अह उल्लगच्छ तइयं चउत्थयं हत्थिलिज्जं तु ॥१॥
पंचमगं नंदिज्जं छट्ठं पुण पारिहासियं होइ ।
उद्देहगणस्सेते छच्च कुला होंति नायव्वा ॥२॥ ॥२११॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थेरेहिंतो णं सिरिगुत्तेहिंतो णं हारियसगोत्तेहिंतो एत्थ णं चारणगणे नामं गणे निग्गए तस्स णं इमाओ चत्तारि साहाओ सत्त य कुलाइं एवमाहिज्जंति। से किं तं साहातो? एवमाहिज्जंति, तं जहा - हारियमालागारी संकासिया गवेधूया वज्जनागरी, से त्तं साहाओ। से किं तं कुलाइं? एवमाहिज्जंति, तं जहा—

पढमेत्थ वत्थलिज्जं बीयं पुण वीचिधम्मकं होइ।
तइयं पुण हालिज्जं चउत्थगं पूसमित्तेज्जं ॥१॥
पंचमगं मालिज्जं छट्ठं पुण अज्जवेडयं होइ।
सत्तमगं कण्हसहं सत्त कुला चारणगणस्स ॥२॥ ॥२१२॥

थेरेहिंतो भद्दजसेहिंतो भारद्दायसगोत्तेहिंतो एत्थ णं उडुवाडियगणे नामं गणे निग्गए। तस्स णं इमाओ चत्तारि साहाओ तिन्नि कुलाइं एवमाहिज्जंति। से किं तं साहाओ? एवमाहिज्जंति, तं० —चंपिज्जिया भद्दिज्जिया काकंदिया मेहलिज्जिया, से त्तं साहाओ। से किं तं कुलाइं? एवमाहिज्जंति—

भद्दजसियं तह भद्दगुत्तियं तइयं च होइ जसभद्दं।
एयाइं उडुवाडियगणस्स तिन्नेव य कुलाइं ॥१॥ ॥२१३॥

थेरेहिंतो णं कामिड्ढिहिंतो कुंडिलसगोत्तेहिंतो एत्थ णं वेसवाडियगणे नामं गणे निग्गए। तस्स णं इमाओ चत्तारि सहाओ चत्तारि कुलाइं एवमाहिज्जंति। से किं तं साहाओ? एव०—सावत्थिया रज्जपालिया अन्तरिज्जिया खेमलिज्जिया, से तं साहाओ। से किं तं कुलाइं? एव०—

गणियं मेहिय कामड्ढियं च तह होइ इंदपुरगं च।
एयाइं वेसवाडियगणस्स चत्तारि उ कुलाइं ॥१॥ ॥२१४॥

थेरोहतो णं इसिगोत्तेहिंतो णं काकंदएहिंतो वासिट्ठसगोत्तेहिंतो एत्थ णं माणवगणे नामं गणे निग्गए। तस्स णं इमाओ चत्तारि साहाओ तिण्णि य कुलाइं एव०। से किं तं साहाओ? साहाओ एवमाहिज्जंति—कासविज्जिया गोयमिज्जिया वासिट्ठिया सोरट्ठिया, से त्तं साहाओ। से किं तं कुलाइं? २ एवमाहिज्जंति, तं जहा—

इसिगोत्तियऽत्थ पढमं, बिइयं इसिदत्तियं मुणेयव्वं।
तइयं च अभिजसंत तिन्नि कुला माणवगणस्स ॥१॥ ॥२१५॥

थेरेहिंतो णं सुट्ठियसुप्पडिबुद्धेहिंतो कोडियकाकंदिएहिंतो वग्घावच्चसगोत्तेहिंतो एत्थ णं कोडियगणे नामं गणे निग्गए। तस्स णं इमाओ चत्तारि साहाओ चत्तारि कुलाइं एव०। से किं तं साहाओ? २ एवमाहिज्जंति, तं जहा—

उच्चानागरि विज्जाहरी य वइरी य मज्झिमिल्ला य।
कोडियगणस्स एया, हवंति चत्तारि साहाओ ॥१॥

से किं तं कुलाइं? २ एव० तं जहा—

पढमेत्थ बंभलिज्जं बितियं नामेण वच्छलिज्जं तु।
ततियं पुण वाणिज्जं चउत्थयं पन्नवाहणयं ॥१॥ ॥२१६॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

थेराणं सुट्ठियसुपडिबुद्धाणं कोडियकाकंदाणं वग्घावच्चसगोत्ताणं इमे पंच थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया होत्था तं जहा—थेरे अज्जइंददिन्ने थेरे पियगंथे थेरे विज्जाहरगोवाले कासवगोत्ते णं थेरे इसिदत्ते थेरे अरहदत्ते। थेरेहिंतो णं पियगंथेहिंतो एत्थ णं मज्झिमा साहा निग्गया। थेरेहिंतो णं विज्जाहरगोवालेहिंतो तत्थ णं विज्जाहरी साहा निग्गया ॥२१७॥

थेरस्स णं अज्जइंददिन्नस्स कासवगोत्तस्स अज्जदिन्ने थेरे अंतेवासी गोयमसगोत्ते थेरस्स णं अज्जदिन्नस्स गोयमसगोत्तस्स इमे दो थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया वि होत्था, तं०—थेरे अज्जसंतिसेणिए माढरसगोत्ते थेरे अज्जसीहगिरी जाइस्सरे कोसियगोत्ते। थेरेहिंतो णं अज्जसंतिसेणिएहिंतो णं माढरसगोत्तेहिंतो एत्थ णं उच्चानागरी साहा निग्गया ॥२१८॥

थेरस्स णं अज्जसंतिसेणियस्स माढरसगोत्तस्स इमे चत्तारि थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया होत्था, तं०—थेरे अज्जसेणिए थेरे अज्जतावसे थेरे अज्जकुबेरे थेरे अज्जकुबेरे थेरे अज्जइसिपालिते। थेरेहिंतो णं अज्जसेणितेहिंतो एत्थ णं अज्जसेणिया साहा निग्गया। थेरेहिंतो णं अज्जतावसेहिंतो एत्थ णं अज्जतावासी साहा निग्गया। थेरेहिंतो णं अज्जकुबेरेहिंतो एत्थ णं अज्जकुबेरा साहा निग्गया। थेरेहिंतो णं अज्जइसिपालेहिंतो एत्थ णं अज्जइसिपालिया साहा निग्गया ॥२१९॥

थेरस्स णं अज्जसीहगिरिस्स जातीसरस्स कोसियगोत्तस्स इमे चत्तारि थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिण्णाया होत्था, तं०—थेरे धणगिरी थेरे अज्जवइरे थेरे अज्जसमिए थेरे अरहदिन्ने। थेरेहिंतो णं अज्जसमिएहिंतो एत्थ णं बंभदेवीया साहा निग्गया। थेरेहिंतो णं अज्जवइरेहिंतो गोयमसगोत्तेहिंतो एत्थ णं अज्जवइरा साहा निग्गया ॥२२०॥

थेरस्स णं अज्जवइरस्स गोत्तमसगोत्तमस्स इमे तिन्नि थेरा अंतेवासी अहावच्चा अभिन्नाया होत्था, तं०—थेरे अज्जवइरसेणिए थेरे अज्जपउमे थेरे अज्जरहे। थेरेहिंतो णं अज्जवइरसेणिएहिंतो एत्थ णं अज्जनाइली साहा निग्गया। थेरेहिंतो णं अज्जपउमेहिंतो एत्थ णं अज्जपउमा साहा निग्गया। थेरेहिंतो णं अज्जरहेहिंतो एत्थ णं अज्जजयंती साहा निग्गया ॥२२१॥

थेरस्स णं अज्जरहस्स वच्छसगोत्तस्स अज्जपूसगिरी थेरे अंतेवासी कोसियगोत्ते। थेरस्स णं अज्जपूसगिरिस्स कोसियगोत्तस्स अज्जफग्गुमित्ते थेरे अंतेवासी गोयमसगुत्ते ॥२२२॥

वंदामि फग्गुमित्तं च गोयमं धणगिरिं च वासिट्ठं।
कोच्छिं सिवभूइं पि य कोसिय दोज्जितकंटे य ॥१॥
तं वंदिऊण सिरसा चित्तं वंदामि कासवं गोत्त।
णक्खं कासवगोत्तं रक्खं पि य कासवं वंदे ॥२॥
वंदामि अज्जनागं च गोयम जेहिलं च वासिट्ठं।
विण्हुं माढरगोत्तं कालगमवि गोयमं वंदे ॥३॥
गोयमगोत्तभारं सप्पलयं तह य भद्दयं वंदे।
थेरं च संघवालियकासवगोत्तं पणिवयामि ॥४॥
वंदामि अज्जहत्थिं च कासवं खंतिसागरं धीरं।
गिम्हाण पढममासे कालगयं चेत्तसुद्धस्स ॥५॥

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वंदामि अज्जधम्मं च सुव्वयं सीसलद्धिसंपन्नं ।
जस्स निक्खमणे देवो छत्तं वरमुत्तमं वहइ ।।६।।
हत्थं कासवगोत्तं धम्मं सिवसाहगं पणिवयामि ।
सीहं कासवगोत्तं धम्मं पि य कासवं वंदे ।।७।।
सुत्तत्थरयणभरिए खमदममद्दवगुणेहिं संपन्ने ।
देविड्ढिखमासमणे कासवगोत्ते पणिवयामि ।।८।। ।।२२३।।

कल्पभाष्ये समवसरणवक्तव्यता—

गाथा ११७७-१२१७ बृहत्कल्पसूत्र, भाग २, पृ० ३६६-३७७

आवश्यकनिर्युक्तौ समवसरणवक्तव्यता—गा० ५४५-६५८

आवश्यकनिर्युक्तिमलयगिरीया वृत्ति, पत्र ३०१-३३६

वाचनान्तर
[आयारचूला १५।३५ के पश्चात् पृ० २४०]

स्थानाङ्गसूत्रे महापद्मप्रकरणे (९।६२) वृत्तिकारप्रदर्शिते वाचनान्तरे "कंसपाईव मुक्कतोए जहा भावणाए जाव सुहुयहुयासणेतिव तेयसा जलंते" इति पाठे आयारचूलाया भावनाध्ययनस्य समर्पणं सूचितमस्ति । वृत्तिकृता श्रीमदभयदेवसूरिणाऽपि एतत् संवादि समुल्लिखितम्—"यथा भावनायामाचाराङ्गद्वितीयश्रुतस्कन्ध-पञ्चदशाध्ययने तथा अयं वर्णको वाच्य इति भावः, कियद्दूरं यावदित्याह—'जाव सुहुये' त्यादि" (वृत्ति, पत्र ४४०) ।

औपपातिकसूत्रे (सूत्राङ्क २७, वृत्ति पृष्ठ ६६) "वक्ष्यमाणपदानां च भावनाध्ययनायुक्ते इमे संग्रहगाथे—

कंसे सखे जीवे, गयणे वाए य सारए सलिले ।।
पुक्खरपत्ते कुम्मे, विहगे खग्गे य भारंडे ।।
कुंजर वसहे सीहे, नगराया चेव सागरमखोहे ।
चंदे सूरे कणगे, वसुंधरा चेव सुहुयहुए ।।"

इति वृत्तिकृता भावनाध्ययनगतसंग्रहगाथयोः सूचनं कृतमस्ति ।

एतयोर्द्वयोः समर्पण-सूचनयोः सन्दर्भे भावनाध्ययनं दृष्टं तदा क्वापि समर्पितः पाठो नोपलब्धः । भावनाध्ययनस्य वृत्तिरत्यन्तं संक्षिप्ताऽसि, तत्र तस्य पाठस्य नास्ति कोपि संकेतः आदर्शेषु चापि तस्यानुपलब्धिरेव । चूर्णौ उक्तपाठस्य व्याख्या समुपलब्धा तेनेति निर्णयः कर्तुं शक्यते—चूर्णिव्याख्याताद् पाठाद् आदर्शगतः पाठो भिन्नोस्ति । अयं वाचनाभेदः चूर्णिकारस्य समक्षमासीन्नवेति नानुमानं कर्तुं किञ्चित् साधनं लभ्यते ।

स्थानाङ्गस्य वाचनान्तर-पाठे भावनाध्ययनस्य समर्पणमस्ति तस्यं सम्बन्धः चूर्ण्यनुसारीपाठेनैव विद्यते, तथैव औपपातिकवृत्तेः सूचनस्यापि सम्बन्धस्तेनैव ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्थानाङ्गे महापद्मप्रकरणे एव स्वीकृतपाठेपि 'जहा भावणाते' इति समर्पणमस्ति। तस्यापि सम्बन्धश्चूर्ण्यनुसारिपाठेन विद्यते।

आलोच्यमानपाठः किञ्चिद् भेदेनानेकेषु आगमेषु लभ्यते। तस्य तुलनात्मकमध्ययनमत्र प्रस्तूयते। आचाराङ्गचूर्णौ पूर्णः पाठो विवृतो नास्ति। स. स्थानाङ्गस्य, कल्पसूत्रस्य, जम्बूद्वीपप्रज्ञप्तेः, आचाराङ्गचूर्णेश्च सम्बन्ध-समीक्षा-पूर्वकं संयोजितः। स च इत्थं सम्भाव्यते––

संयोजित पाठः

तए णं से भगवं अणगारे जाए इरियासमिए भासासमिए जाव गुत्तबंभयारी अममे अकिंचणे छिन्नसोते निरुपलेवे कंसपाईव मुक्कतोए संखो इव निरंगणे जीवो विव अप्पडिहयगई जच्चकणगं पिव जायरूवे आदरिसफलगे इव पागडभावे कुम्मो इव गुत्तिदिए पुक्खरपत्तं व निरुवलेवे गमणमिव निरालंबणे अणिलो इव निरालए चंदो इव सोमलेसे सूरो इव दित्ततेए सागरो इव गंभीरे विहग इव सव्वओ विप्पमुक्के मंदरो इव अप्पकंपे सारयसलिलं व सुद्धहियए खग्गविसाणं व एगजाए भारंडपक्खी व अप्पमत्ते कुंजरो इव सोंडीरे वसभे इव जायत्थामे सीहो इव दुद्धरिसे वसुंधरा इव सव्वभासविसहे सुहुयहुयासणे इव तेयसा जलंते।

[कंसे संखे जीवे, गगणे वाते य सारए सलिले।
पुक्खरपत्ते कुम्मे, विहगे खग्गे य भारंडे ॥१॥
कुंजर वसहे सीहे, नगराया चेव सागरमखोहे।
चंदे सूरे कणगे, वसुंधरा चेव सुहुयहुए ॥२॥]

नत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबंधे भवइ। से य पडिबंधे चउव्विहे पण्णत्ते, तंजहा–– अंडए वा पोयएइ वा उग्गहेइ वा पग्गहिएइ वा, जं णं जं णं दिसं इच्छइ तं णं तं णं दिसं अपडिबद्धे सुचिभूए लहुभूए अणुप्पगंथे संजमेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरइ।

तस्स णं भगवंतस्स अणुत्तरेणं नाणेणं अणुत्तरेणं दंसणेणं अणुत्तरेणं चरित्तेणं एवं आलएणं विहारेणं अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं खंतीए मुत्तीए सच्च-संजम-तव-गुण-सुचरिय-सोवचिय-फल-परिनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने।

तए णं से भगवं अरहे जिणे जाए केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी सनेरइयतिरियनरामरस्स लोगस्स पज्जेव जाणइ पासइ, तं जहा––आगतिं गतिं ठितिं चयणं उववायं तक्कं मणोमाणसियं भुत्तं कडं परिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं अरहा अरहस्स भागी, तं तं कालं मणसवयसकाएहिं जोगेहिं वट्टमाणाणं सव्वलोए सव्वजीवाणं सव्वभावे अजीवाण य जाणमाणे पासमाणे विहरइ।

तए णं से भगवं तेणं अणुत्तरेणं केवलवरनाणदंसणेणं सदेवमणुयासुरं लोगं अभिसमिच्चा समणाणं निग्गंथाणं पंचमहव्वयाइं सभावणाइं छज्जीवनिकाए धम्मं अक्खाइ [देसमाणे विहरइ], तंजहा––पुढविकाए आउकाए तेउकाए वाउकाए वणस्सइकाए तसकाए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्नानाङ्ग (६।६२) :

तस्स णं भगवंतस्स[1] साइरेगाइं दुवालसवासाइं निच्चं वोसट्ठकाए चियत्तदेहे जे केइ उवसग्गा उप्पज्जिहिंति तं दिव्वा वा माणुसा वा तिरिक्खजोणिया वा, ते सव्वे सम्मं सहिस्सइ खमिस्सइ तितिक्खिस्सइ अहियासिस्सइ ।

तए णं से भगवं अणगारे भविस्सइ इरियासमिए, भासासमिए, एसणासमिए, आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिए, उच्चारपासवणखेलजल्लसिंघाणपारिट्ठावणियासमिए, मणगुत्ते, वयगुत्ते, कायगुत्ते, गुत्ते, गुत्तिंदिए गुत्तबंभयारी अममे अकिंचणे छिन्नगंथे [वृ० पा० किन्नगंथे] निरुपलेवे कंसपाईव मुक्कतोए जहा भावणाए जाव सुहुयहुयासणे तिव तेयसा जलंते ।

कंसे संखे जीवे, गगणे वाते य सारए सलिले ।
पुक्खरपत्ते कुम्मे विहगे खग्गे य भारंडे ॥१॥
कुंजर वसहे सीहे, नगराया चेव सागरमखोहे ।
चंदे सूरे कणगे, वसुंधरा चेव सुहुयहुए ॥२॥

नत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबधे भविस्सइ, सेय पडिबधे चउव्विहे पन्नत्ते, तंजहा— अंडएइ वा पोयएइ वा उग्गहेइ वा पग्गहिएइ वा, जं णं जं णं दिसं इच्छइ तं णं तं णं दिसं अपडिबद्धे सुचिभूए लहुभूए अणुप्पगंथे संजमेणं अप्पाणं भावेमाणे विहरिस्सइ, तस्स णं भगवंतस्स अणुत्तरेणं नाणेणं अणुत्तरेणं दंसणेणं अणुत्तरेणं चरित्तेणं एवं आलएणं विहारेणं अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं खंतिए मुत्तीए गुत्तीए सच्च-संजम-तव-गुण-सुचरिय-सोय-विय-[चिय ?]-फल-परिनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवलवरणाणदंसणे समुप्पज्जिहिंति ।

तए णं से भगवं अरहे जिणे भविस्सति, केवली सव्वण्णसव्वदरिसी सदेवमणुआसुरस्स लोगस्स परियागं जाणइ पासइ सव्वलोए सव्व जीवाणं आगइं गतिं ठियं चयणं उववायं तक्कं मणोमाणसियं भुत्तं कडं परिसेवियं आवीकम्मं रहोकम्मं अरहा अरहस्स भागी तं तं कालं मणसवयसकाइए जोगे वट्टमाणाणं सव्वलोहे सव्वजीवाणं सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विहरिस्सइ ।

तए णं से भगवं तेणं अणुत्तरेणं केवलवरनाणदंसणेणं सदेवमणुआसुरं लोगं अभिसमिच्चा समणाणं निग्गंथाणं सणेरइए जाव पंचमहव्वयाइं सभावणाइं छजीवनिकाया धम्मं देसेमाणे विहरिस्सति ।

कल्पसूत्र :

तए णं समणे भगवं महावीरे अणगारे जाए इरियासमिए, भासासमिए, एसणासमिए, आयाणभंडमत्तनिक्खेवणासमिए, उच्चारपासवणखेलसिंघाणजल्लपारिट्ठावणियासमिए, मणसमिए, वइसमिए, कायसमिए, मणगुत्ते, वयगुत्ते, कायगुत्ते, गुत्ते, गुत्तिंदिए, गुत्तबंभयारी, अकोहे, अमाणे, अमाए, अलोभे, संते, पसंते, उवसंते परिनिव्वुडे, अणासवे, अममे, अकिंचणे, छिन्नगंथे निरुवलेवे, कंसपाई इव मुक्कतोये १, संखो इव निरंजणे २, जीवो इव अप्पडिहयगई ३, गगणं पिव निरालंबणे ४,

१. अस्य स्थाने 'से णं भगवं' युज्यते ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वायुरिव अप्पडिबद्धे ५, सारयसलिलं व सुद्धहियए ६, पुक्खरपत्तं व निरुवलेवे ७, कुम्मो इव गुत्तिंदिए ८, खग्गिविसाणं व एगजाए ९, विहग इव विप्पमुक्के १०, भारुंडपक्खी इव अप्पमत्ते ११, कुंजरो इव सोंडीरे १२, वसभो इव जायथामे १३, सीहो इव दुद्धरिसे १४, मंदरो इव अप्पकंपे १५, सागरो इव गंभीरे १६, चंदो इव सोमलेसे १७, सूरो इव दित्ततेए १८, जच्चकणगं व जायरूवे १९, वसुंधरा इव सव्वभासविसहे २०, सुहुयहुयासणो इव तेयसा जलंते २१। एतेसिं पदाणं इमातो दुन्नि संघयणगाहाओ—

कंसे संखे जीवे, गगणे वायू य सरयसलिले य।
पुक्खरपत्ते कुम्मे, विहगे खग्गे य भारंडे ॥१॥
कुंजरे वसभे सीहे, णगराया चेव सागरमखोभे।
चंदे सूरे कणगे, वसुंधरा चेव हूयवहे ॥२॥

नत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबंधो भवति। से य पडिबंधे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ। दव्वओ णं सचित्ताचित्तमीसिएसु दव्वेसु। खेत्तओ णं गामे वा नगरे वा अरण्णे वा खित्ते वा खले वा घरे वा अंगणे वा णहे वा। कालओ णं समए वा आवलियाए वा आणापाणुए वा थोवे वा खणे वा लवे वा मुहुत्ते वा अहोरत्ते वा पक्खे वा मासे वा उऊ वा अयणे वा संवच्छरे वा अन्नयरे वा दीहकालसंजोगे वा। भावओ णं कोहे वा माणे वा मायाए वा लोभे वा भये वा हासे वा पेज्जे वा दोसे वा कलहे वा अब्भक्खाणे वा पेसुन्ने वा परपरिवाए वा अरतिरती वा मायामोसे वा मिच्छादंसणसल्ले वा। तस्स णं भगवंतस्स नो एवं भवइ।

से णं भगवं वासावासवज्जं अट्ठ गिम्हहेमंतिए मासे गामे एगराईए वासीचंदणसमाणकप्पे समतिणमणिलेट्ठुकंचणे समदुक्खसुहे इहलोगपरलोगअपडिबद्धे जीवियमरणे निरवकंखे संसारपारगामी कम्मसंगनिग्घायणट्ठाए अब्भुट्ठिए एवं च णं विहरइ।

तस्स णं भगवंतस्स अणुत्तरेणं नाणेणं अणुत्तरेणं दंसणेणं अणुत्तरेणं चरित्तेणं अणुत्तरेणं आलएणं अणुत्तरेणं विहारेणं अणुत्तरेणं वीरिएणं अणुत्तरेणं अज्जवेणं अणुत्तरेणं मद्दवेणं अणुत्तरेणं लाघवेणं अणुत्तराए खंतीए अणुत्तराए मुत्तीए अणुत्तराए गुत्तीए अणुत्तराए तुट्ठीए अणुत्तरेणं सच्चसंजमतवसुचरियसोवचइयफलपरिनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स दुवालस संवच्छराइं विइक्कंताइं। तेरसमस्स संवच्छरस्स अंतरा वट्टमाणस्स जे से गिम्हाणं दोच्चे मासे चउत्थे पक्खे वइसाहसुद्धे तस्स णं वइसाहसुद्धस्स दसमीए पक्खेणं पाईणगामिणीए छायाए पोरिसीए अभिनिविट्टाए पमाणपत्ताए सुव्वएणं दिवसेणं विजएणं मुहुत्तेणं जंभियगामस्स नगरस्स बहिया उजुवालियाए नईए तीरे वियावत्तस्स चेईयस्स अदूरसामंते सामागस्स गाहावइस्स कट्ठकरणंसि सालपायवस्स अहे गोदोहियाए उक्कुडुयनिसिज्जाए आयावणाए आयावेमाणस्स छट्ठेणं भत्तेणं अपाणएणं हत्थुत्तराहिं नक्खत्तेणं जोगमुवागएणं झाणंतरियाए वट्टमाणस्स अणंते अणुत्तरे निव्वाघाए निरावरणे कसिणे पडिपुन्ने केवलवरनाणदंसणे समुप्पन्ने।

तए णं से भगवं अरहा जाए जिणे केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी सदेवमणुयासुरस्स लोगस्स परियायं जाणइ पासइ, सव्वलोए सव्वजीवाणं आगइं गइं ठिइं चवणं उववायं तक्कं मणो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माणसियं भुत्तं कडं पडिसेवियं आविकम्मं रहोकम्मं अरहा अरहस्सभागी तं तं कालं मणवयणकायजोगे वट्टमाणाणं सव्वलोए सव्वभावे जाणमाणे पासमाणे विहरइ।

जम्बूद्वीप प्रज्ञप्ति, वक्ष २ (पत्र १४६)

तए णं से भगवं समणे जाए इरिआसमिए जाव परिट्ठावणिआसमिए मणसमिए वयसमिए कायसमिए मणगुत्ते जाव गुत्तबंभयारी अकोहे जाव अलोहे संते पसंते उवसंते परिणिव्वुडे छिण्णसोए निरुवलेवे संखमिव निरंजणे जच्चकणगं व जायरूवे आदरिसपडिभागे इव पागडभावे कुम्मो इव गुत्तिंदिए पुक्खरपत्तमिव निरुवलेवे गगणमिव निरालंबणे अणिले इव णिरालए चंदो इव सोमदंसणे सूरो इव तेअंसी विहग इव अपडिबद्धगामी सागरो इव गंभीरे मंदरो इव अकंपे पुढवी विव सव्वफासविसहे जीवो विव अप्पडिहयगइत्ति। णत्थि णं तस्स भगवंतस्स कत्थइ पडिबंधे, से पडिबंधे चउव्विहे भवंति, तंजहा—दव्वओ खित्तओ कालओ भावओ, दव्वओ इह खलु माया मे माया मे भगिणी में जाव संगंथसंथुआ मे हिरण्णं मे सुवण्णं मे जाव उवगरणं मे, अहवा समासओ सचित्ते वा अचित्ते वा मीसए वा दव्वजाए सेवं तस्स ण भवइ, खित्तओ गामे वा णगरे वा अरण्णे वा खेत्ते वा खले वा गेहे वा अंगणे वा एवं तस्स ण भवइ, कालओ थोवे वा लवे वा मुहुत्ते वा अहोरत्ते वा पक्खे वा मासे वा उऊए वा अयणे वा संवच्छरे वा अन्नयरे वा अन्नयरे वा दीहकाल-पडिबंधे एवं, तस्स ण भवइ, भावओ कोहे वा जाव लोहे वा भए वा हासे वा एवं तस्स ण भवइ, से णं भगवं वासावासवज्जं हेमंतगिम्हासु गामे एगराइए णगरे पंचराइए ववगयहा ससोगअरइभव-परित्तासे णिम्ममे णिरहंकारे लहुभूए अगंथे वासीतच्छणे अट्ठे चंदणाणुलेवणे अरत्ते लेटंठुमि कंचणंमि असमे इह लोए अपडिबद्धे जीवियमरणे निरवकंखे संसारपारगामी कम्मसंगणिग्घायणाए अब्भुट्ठिए विहरइ। तस्स णं भगवंतस्स एतेणं विहारेणं विहरमाणस्स एगे वाससहस्से विइक्कंते समाणे पुरिमतालस्स नगरस्स बहिआ सगडमुहंसि उज्जाणंसि णिग्गोहवरपायवस्स अहे झाणंतरिआए वट्टमाणस्स फग्गुणबहुलस्स इक्कारसिए पुव्वण्ह कालसमयंसि अट्ठमेणं भत्तेणं अपाणएणं उत्तरा-साढाणक्खत्तेणं जोगमुवागएणं अणुत्तरेणं ताणेणं जाव चरित्तेणं अणुत्तरेणं तवेणं बलेणं वीरिएणं आलएणं विहारेणं भावणाए खंतीए गुत्तीए मुत्तीए तुट्ठीए अज्जवेणं मद्दवेणं लाघवेणं सुचरिअसोवचि-अफलनिव्वाणमग्गेणं अप्पाणं भावेमाणस्स अणंते अणुत्तरे णिव्वाघाए णिरावरणे कसिणे पडिपुण्णे केवल-वरनाणदंसणे समुप्पण्णे जिणे जाए केवली सव्वन्नू सव्वदरिसी सणेरइअतिरियनरामरस्स लोगस्स पज्जवे जाणइ पासइ, तंजहा—आगइं गइं ठिइं उववायं भुत्तं कडं पडिसेविअं आवीकम्मं रहोकम्मं तं तं कालं मणवयकायजोगे एयमादी जीवाणवि सव्वभावे अजीवाणवि सव्वभावे मोक्ख-मग्गस्स विसुद्धतराए भावे जाणमाणे पासमाणे एस खलु मोक्खमग्गे मम अण्णेसिं च जीवाणं हिय-सुहणिस्सेसकरे सव्वदुक्खविमोक्खणे परम सुहसमाणणे भविस्सइ। तते णं से भगवं समणाणं निग्गं-थाणं य णीग्गंथीण य पंच महव्वयाइ सभावणगाइं छच्च जीवणिकाए धम्मं देसेमाणे विहरति, तंजहा—पुढविकाइए भावणागमेणं पंच महव्वाइं सभावणागाइं भाणिअव्वाइं ति।

सूत्रकृतांगे (२।६४-६६) प्रश्नव्याकरणे (संवरद्वार ५।११) रायपसेणइयसूत्रे (सूत्रांक ८१३-८१६) औपपातिकसूत्रे (सूत्र २७-२९, १५२,१५३,१६४,१६५) चालोच्यमानपाठेनांशिकी क्वचिच्च तदधिकापि तुलना जायते। किन्तु एतेषां सूत्राणां पाठाः अनगार-वर्णन-संबद्धाः सन्ति, ततः पूर्णा तुलना प्रस्तुतपाठेन न नाम जायते।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

शुद्धि-पत्र

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३	१	मंदस	मंदस्स
१५	२७	सत्थ	सत्थं
१६	४	वियंति	वयंति
२६	१८	जाणे	जाण
४२	२२	पाव	पावं
४५	१७	समण०	समणु०
४८	१५	णियाणाओ	णियाणओ
५२	७	णिज्झोसइत्ता	णिज्झोसइता
५४	३	णियट्टंति	णियट्टंति
५५	६	तितिक्खा०	तितिक्खा
६५	१	×	उवगरण-पदं
७१	१	×	पाओवगमण-पदं
८४	१८	भुंज्जियं	भुज्जियं
८६	१५	अणासेविय	अणासेवियं
६१	१०	पट्टणसि	पट्टणंसि
१०३	१६	जाणज्आ	जाणेज्जा
११५	७	उवाणिमतेज्जा	उवणिमंतेज्जा
१६४	२६	ज	जं
१७४	२१	अणसणिज्जं	अणेसणिज्जं
१७८	११	वियडण	वियडेण
१८१	१८	पहाए	पेहाए
१८७	१२	पण	पुण
२६६	५	सोसं	सीसं
३४८	३	परक्कमण्ण	परक्कमण्णू
३४८	१५	गंधमंत	गंधमंतं
३६३	१२	मारत्था	गारत्था
५३७	१२	मच्छा-पदं	मुच्छा-पदं
६२२	१७	अलमंथ	अलमंथू
६५२	११	मुडे	मुंडे
८६५	२३	निगर०	नगर०

पाठान्तर

२६६	पा० २६	विधीत	विधंति
३१०	,, २	समक्खाय	समक्खातं
३२०	,, २१	आय	आयं
३२१	,, ६	तेउ	तेउं
४००	,, ७	अतोमतेण	अतोमतेणं
४३५	,, १	धृत	धृतं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org